

य-वारिन्न
क. १४६६
१६६



REFBK-0015282

वरंत भाईक

मा. कपुराकर ऑफिस लायब्ररी, मुंबई

आजकड न नजर व. पोस्ताने १७१५६७.
६१६७१

-पारिभा-

११२

आ. न. लायब्ररी

११२५

श्री. वसंतराव नाईक

गौरव ग्रंथ

७५३

१५२०२

५३३

१५२०२

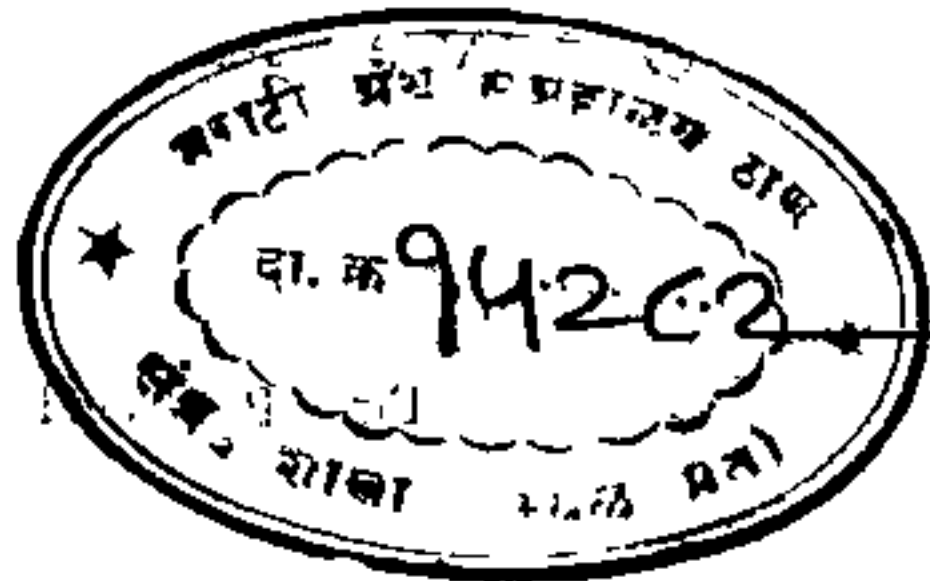
५३३

५३३

SHRI VASANTRAO NAIK

GAURAV GRANTH

५३३



REFBK-0015282

REFBK-0015282

त्रेपन्नावा जन्मदिन प्रकाशन

Fifty-third Birthday Publication

संपादक

य. गो. नित्सुरे

संपादक मंडळ

प्रा. वि. ना. आडारकर

प्राचार्य डॉ. मा. गो. देशमुख

प्रा. वामन कृष्ण चोरघडे

© Shri V. P. Naik Gaurav Granth Samiti

First Published 1966

मूल्य: रु. ९-२५

Printed by D. S. Sharma for Messrs. Khemraj Shrikrishnadas, at their Shri Venkateshwar Press, 7th Khetwadi, Bombay 4, and Published by Dr. N. N. Kailas, President, Shri V. P. Naik Gaurav Granth Samiti, 170, Kalbadevi Road, Bombay 2.



दृश्य साजिरे भवितव्याचे होते वलयांकित
अशी समाधि नव्या योजना करण्या कार्यान्वित

शतं जीव शरदो वर्धमानः
शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् ।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः
शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥

तू शंभर शरद ऋतू, शंभर हेमन्त
व शंभर वसंत ऋतूपर्यंत आयुष्य-
वंत हो. इंद्र, अग्नी, सूर्य व
बृहस्पती हे देवदेवता तुला शंभर
वर्ष आयुष्य जगण्याची शक्ती
प्रदान करोत.

यह ग्रंथ क्यों ?

मानव की महानता दो रूपों में प्रगट होती है, एक तो उस व्यक्ति के निहित गुणों-द्वारा या अनेक गुणों द्वारा जो वह व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवोंद्वारा प्राप्त करता है और वे उसे महान बनाने में सहायक होते हैं । श्री. वसंतराव नाईक के विषय में, जैसा मैं समझ पाया हूँ, उन्हें महानता जीवन से अनुभव-प्राप्त अनेक गुणों की रक्षा के कारण मिली है, अनेक व्यक्तियों के साथ कार्य करते रहने के कारण उनमें मुख्यतः दो गुणों का अद्भुत प्रादुर्भाव हुआ । एक तो अनेक व्यक्तियों तथा क्षेत्रों में काम करने से “सहकार के गुण” का तथा दूसरे व्यक्तियों से “कुशलतापूर्वक कार्य” ले सकनेके गुण का । उनके विचारों में दृढता है, कार्य की लगन है, बालकों के समान सहृदयता तथा पवित्रता है । कठोरता उनके जीवन में मुझे देखने तक को नहीं मिली । कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि मुख्य मंत्री बनने के बाद शायद वे अपने साथियों को समझ लेने के लिये पर्याप्त समय नहीं दे पाते । किन्तु इस की सत्यता तो भविष्य ही तय कर सकेगा । वैसे उनका हृदय विशाल है, दण्ड देने या बदला लेने की भावना उनमें उत्पन्न तक नहीं होती । क्षमा को भी वे इस प्रकार छिपा लेते हैं कि दूसरे को ऐसा न लगे कि वे उसपर कुछ दया कर रहे हैं । यही कारण है कि वे जनसेवा तथा जन-कल्याण के कार्यों में इतने सफल हो सके हैं ।

श्री. जवाहरलाल दर्डा तथा उनके साथियों ने यवतमाल में श्री. वसंतराव नाईक की जन्मतिथिपर समारोह करने का निश्चय किया । बम्बई के कार्यकर्ताओं ने भी सोचा कि अब श्री. वसंतराव नाईक सिर्फ यवतमाल के ही नहीं रहे और इसलिये उनकी जन्मतिथि हमें भी मनानी चाहिये । मैंने कुछ साथियों के साथ विचार कर यह निश्चय किया

कि 'वसंतराव नाईक गौरव ग्रंथ' का प्रकाशन किया जाये, जिसमें उनका राजनैतिक या मुख्यमंत्री के व्यक्तित्व को न दिखाकर उनके समग्र व्यक्तित्व पर ही प्रकाश डाला जाये । कुछ अभ्यासी लेखक मित्रों से बात की । मेरे साथी सर्वश्री मधुसूदन वैराले, श्री. व्ही. एन्. आडारकर तथा श्री. आडिवरेकर तथा अन्य मित्रों से भी सलाह की और इन सबको यह कल्पना पसन्द आई । उनके तथा अन्य कई मित्रों के सहयोग तथा सहकार के परिणाम स्वरूप यह ग्रंथ है । यह सिर्फ बम्बई केही नहीं, वरन समस्त महाराष्ट्र के मित्रों के प्रेम का प्रतीक है । अगर नयी पीढी इस ग्रंथ से कुछ प्राप्त कर सकी तो मैं इसे एक सफल प्रयास समझूंगा । क्यों कि मेरा यह विश्वास है कि यह ग्रन्थ नई पीढी के लिये एक दीपस्तम्भ का कार्य करेगा ।

डा. कैलास

अध्यक्ष

श्री. वसंतराव नाईक गौरव ग्रंथ समिति.

बम्बई,

१-१२-६६

SHRI V. P. NAIK GAURAV GRANTH SAMITI

Chief Patron

Shri Vinayakrao Patil
(PRESIDENT, M.P.C.C.)

Patrons

Shri P. G. Kher
(PRESIDENT, B.P.C.C.)

Shri S. B. Chavan
Shri M. D. Chaudhari
Shri Radhakrishna R. Ruia

President

Dr. N. N. Kailas

Chairman

Shri Vadilal C. Gandhi

Members

Shri Bhavanji A Khimji
Shri Basudeo Somani
Shri G. R. Jolly
Shri S. M. Dahanukar
Shri S. R. Patkar
Shri N. C. Jhaveri
Shri Pravir H. Hazarat
Shri Mangaldas Varma
Shri Shri Ram Taparia
Shri G. B. Newalkar
Shri Mayabhai C. Shah
Shri Poonambhai M. Shah
Shri Panalal B. Shah
Shri Keshavlal Shah
Prof. V. N. Adarkar
Shri Deepchand S. Gardi

Shri F. R. Irani
Shri Brijnarain
Shri Adi N. Chinoy
Smt. Nargis Dutt
Shri Sushila Desai
Dr. V. K. Toraskar
Shri Shankarrao Adivarekar
Shri Murlidhar S. Bajaj
Shri Sadanand Danait
Shri Narayandas Kakad
Shri S. M. Bhadkamkar

Convenors

Shri Madhusudan Vairale
Shri Shivajirao Patil
Shri Jawaharlal Darda
Shri Chimanlal C. Sheth
Shri Shankarrao Ajinkya

Editor

Shri Y. G. Nitsure

Editorial Board

Prof. V. N. Adarkar

Dr. M. G. Deshmukh

Prof. Waman Krishna Chorghade

Finance Committee

Dr. N. N. Kailas

Dr. V. K. Toraskar

Shri F. R. Irani

Shri S. M. Bhadkamkar

Shri Chimanlal C. Sheth

निवेदन तथा आभार

महाराष्ट्र के अग्रगण्य नेताओं को अखिल भारतीय नेतृत्व प्राप्त हो तथा उनसे नवयुवकों को स्फूर्ति तथा प्रेरणा मिले ऐसा कदम समय समय पर जिम्मेदार व्यक्तियों को उठाना चाहिये । कोई भी कार्यकर्ता, राज-नैतिक नेता या समाजसेवक एकाएक नहीं बना करता । उसके लिये उसे निरंतर प्रयास करना पड़ता है । जब वह व्यक्ति चोटीपर पहुँच जाता है तो उसका अभिनंदन करना कार्यकर्ताओं का कर्तव्य हो जाता है जिससे कि उसकी उन्नति में वे भी उसके सहायक बन सकें । इस प्रयोजन को लेकर ही इस ग्रंथ के प्रकाशन का निर्णय किया गया ।

श्री. वसंतरावजी नाईक तो समस्त देश में प्रसिद्ध हैं । उनकी सेवाएँ भी विविध हैं । परन्तु महाराष्ट्र अन्न के विषय में स्वयंपूर्ण दो वर्षों में हो जायेगा इसकी घोषणा करना, उनकी कार्यक्षमता तथा आत्म-विश्वास का द्योतक है । विद्यार्थीजीवन भी उनका संघर्षमय बीता । पर जबसे सौ. वत्सलाताई घर में आयीं, ऐसा लगता है कि वे अपने साथ श्री. वसंतराव के लिये सौभाग्य भी लेकर आईं क्योंकि तब से ही उन्होंने जनकार्यों में सक्रिय भाग लेना शुरू किया तथा इतने ऊँचे उठे । उनकी लोकप्रियता क्षेत्रीय न रहकर अब भारत में फैल गयी है । यह हमारी कामना है कि वे राष्ट्रीय स्तर के सुयोग्य नेता बने तथा यह ग्रंथ उनके लिये आशीर्वाद बने ।

श्री. वसंतराव नाईक गौरव ग्रंथ समिति के प्रत्येक सदस्य के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ क्योंकि उनके सहयोग के बिना यह कार्य मेरी मर्यादा के बाहर ही था ।

श्री. मधुसूदनजी वैराले, श्री. व्ही. एन्. आडारकर तथा श्री. वाय्. जी. नित्सुरे ने जो परिश्रम इस ग्रंथ के लिये किये उनके प्रति समिति सदा

आभारी रहेगी। प्राध्यापक व्ही. एन्. यन्दे, प्रा. जी. के. देशपांडे, श्री. भगवन्त देशपांडे का तथा श्री. शां. शं. रेगे, श्री. म. द. कोतवाल, श्री. अरविंद जोशी तथा श्री. मो. ज. भिडे का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक की सुंदरता व शुद्धता के लिये अथक परिश्रम किये। मैंने पुस्तक के सम्पादन में अनेक मित्रों से सलाह ली। सब के नाम यहां उल्लेख करना कठिन है, परन्तु श्री. वामनराव चोरघडे तथा श्री. माधवराव देशमुख के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने सम्पादन में योग्य सलाह दी।

“ इलस्ट्रेटेड वीकली ” में मुद्रित एक बहुत ही सुंदर ट्रैन्स्पेरन्सी का इस ग्रंथ के कव्हर के लिये उपयोग करने की मे. बेनेट कोलमन अँण्ड कंपनी ने स्वीकृति प्रदान की इस के लिये समिति उन की भी आभारी है।

डॉ. तोरसकर, श्री. फरदून रुस्तमजी ईरानी, श्री. एस्. एम्. भडकमकर तथा श्री. चिमनलाल सी. सेठ का भी मैं आभारी हूँ कि उन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये लगनेवाले धन को एकत्रित किया।

समिति आभारी है इन मित्रों की जिन्होंने इस ग्रंथ के लिये लेख भेजे तथा सौ. वत्सलाताई नाईक की कि जिन्होंने हमें ऐसे ऐसे चित्र दिये जिनका उपयोग हम इस ग्रंथ में कर सके। इससे इस ग्रंथ का महत्व ही नहीं, सुंदरता भी बढ़ी है।

पू. श्री. बापूजी अणे का समिति जितना आभार माने उतना ही थोडा है क्योंकि उन्होंने हमारे इस ग्रंथ की आशीर्वादात्मक प्रस्तावना लिखी तथा हमें सदा के लिये अनुगृहित किया।

उपराष्ट्रपति डा. जाकिरहुसेन जी तथा अन्य महानुभाओं ने इस पुस्तक की सफलता के शुभ संदेश भेजे हैं उनकी भी समिति कृतज्ञ है।

समिति आभारी है श्रीवेंकटेश्वर प्रेस के मालिक, श्री. मुरलीधरजी वजाज की जिन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी इस ग्रंथ का प्रकाशन इतने सुंदर ढंग से संपन्न किया।

SI. 

बम्बई
ता. १-१२-१९६६

श्री. वसंतराव नाईक गौ. ग्रंथ समिति
की ओर से

आशीर्वाद

वसंतराव नाईक यांच्या ५३ व्या वाढदिवसानिमित्त त्यांचा सत्कार करण्याच्या ज्या बहुविध योजना आहेत त्यात त्यांना एक गौरवग्रंथ प्रकाशित करून समर्पण करण्याचाही संकल्प करण्यात आला आहे. या संबंधी त्यांचे सहकारी डॉ. कैलास यांनी मी नागपूर मुक्कामी आजारी असताना माझी भेट घेतली व त्या ग्रंथाला मी पुरस्कार लिहावा अशी सूचना केली. मी ती तत्काळ मान्य केली. पण त्यांना असे सुचविले की, ज्या अर्थी मी गौरवग्रंथास पुरस्कार किंवा प्रस्तावना लिहावी असे आपण म्हणता त्या अर्थी मला त्या ग्रंथाकरिता इतरांनी लिहिलेले लेख पाहण्यास व वाचण्यास मिळाले पाहिजेत, ते वाचल्यावर मी ज्या विदर्भात ते जन्मले व वाढले त्यातील एक वयोवृद्ध लोकसेवक म्हणून माझे आशीर्वादाचे चार शब्द आनंदाने अवश्य लिहीन. डॉ. कैलास यांनी माझ्या सूचनेप्रमाणे त्याजकडे आलेल्या लेखांच्या मुद्रित प्रती मजकडे पाठविल्या. त्या नागपूर महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. माधवरावजी देशमुख यांचे हस्ते मला ता. २७ आक्टोबरला मिळाल्या. ता. २८ ला मी नागपूरहून न्यू दिल्लीस येण्यास निघालो व ता. २९ ला १२ वाजता न्यू दिल्लीतील माझ्या निवासस्थानी पोहोचलो.

ता. ३० ला त्यांचेकडून आलेले लेख चाळीत बसलो. तेव्हा काही लेख मराठीत आहेत व काही इंग्रजीत आहेत. मजकडाले आलेल्या २५ लेखात १२ इंग्रजी व १३ मराठी आहेत.

मला हे लेख वाचून आनंद झाला. त्यांचे सहकारी मंत्री त्याचप्रमाणे महाराष्ट्रातील प्रतिष्ठित लोक व विशेषतः शेतकरी वर्गातील प्रागतिक कार्यकर्ते हे वसंतरावकडे कोणत्या भावनांनी पहात होते याची कल्पना आली आणि त्या दिशेने वसंतरावच्या नेतृत्वाखाली महाराष्ट्र सरकार जें कार्य करीत आहे त्याविषयी त्यांचे मत काय आहे याचाही अंदाज करणे सुकर झाले.

वसंतरावशीच नव्हे तर प्रस्तुत महाराष्ट्र सरकारशी, मी पृथक विदर्भ राज्य निर्मितीच्या प्रश्नाचा पुरस्कर्ता असल्यामुळे, माझा विरोध मूलगामी स्वरूपाचा आहे, ही गोष्ट डॉ. कैलास यांना विदित आहे. असे असूनही त्यांनी या महाराष्ट्र राज्याचे मुख्य मंत्री असलेल्या वसंतराव नाईक यांच्या वाढदिवसानिमित्त प्रसिद्ध होणाऱ्या

गौरव ग्रंथास मला प्रस्तावना किंवा पुरस्कार लिहावयाला सांगून मजविषयी जी मनोभावना न बोलता व्यक्त केली तीबद्दल मी त्यांचे मनःपूर्वक आभार मानतो. हा गौरव ग्रंथ असल्याकारणाने लेखकांनी वसंतरावच्या व्यक्तिविषयक कर्तृत्वाचा आणि कामगिरीचाच प्रामुख्याने उल्लेख करून आपली मते ग्रंथात व्यक्त केली आहेत. एकंदर महाराष्ट्रातील राज्यव्यवस्थेचे समीक्षण करण्याचा कोणी प्रयत्न केला नाही असे म्हणण्यास हरकत नाही. देशात ज्या भिन्न-भिन्न विचारांचे वारे वहात आहेत व त्यातून भारतासंबंधीच्या राष्ट्रीय ऐक्याच्या भावनेस तडे जाऊ पहात आहेत त्यांचा परिपोष होईल अशा काही घटना महाराष्ट्रात होत आहेत की नाहीत, असल्यास प्रस्तुत महाराष्ट्र सरकार त्याविषयी कितपत जागरूक आहे या दृष्टीने कोणत्याही लेखकाने आपल्या व्यक्तिगुणवर्णनपर लेखात निर्देश केलेला माझ्या दृष्टीस पडला नाही व ते स्वाभाविक आहे. वारशास निमंत्रित केलेला ब्राह्मण जर बाराव्याचे मंत्र म्हणावयास लागला तर ते जितके अप्रयोजक व तिरस्कारार्ह होईल तितकेच एखाद्या थोर व्यक्तीच्या वाढदिवसाच्या मंगलप्रसंगी कोणी जाऊन त्याच्या राज्यव्यवस्थेतील निरनिराळ्या खात्यांतील मंत्र्यांच्या व अधिकाऱ्यांच्या तंत्राने चालविण्यात येणाऱ्या राज्ययंत्राच्या कमी जास्त विघाडामुळे होणाऱ्या अडचणीचे व आपत्तीचे पोवाडे गाण्यास सुरवात करील तर त्यास त्या मंगल प्रसंगात विक्षेप आणणारा म्हणून वाहेर घालवून देणे हेच समर्पक होईल. म्हणून या गौरवग्रंथाकडे पाहताना हा महाराष्ट्र राज्याचा गौरवग्रंथ नसून त्याच्या अग्रस्थानी बसलेल्या एका महनीय व्यक्तीच्या गुणांचा गौरव ग्रंथ आहे या दृष्टीनेच वाचकांना पहावे लागेल व त्या दृष्टीने पाहिले असता वसंतराव नाईक यांच्या खात्यात जमेची रक्कम ही नावेच्या रकमेपेक्षा फार अधिक असल्याचे कोणाही निःपक्षपाती माणसास कबूल करावे लागेल.

वसंतराव हे जरी माझ्या जिल्ह्यात जन्मले, वाढले आणि आता महत्वाच्या जबाबदारीची कामगिरी करण्याची संधी त्यांना प्राप्त झाली आहे, तरी ते महाराष्ट्र राज्यातील विधानसभेचे सदस्य व पुढे मंत्री होईपर्यंत त्यांची माझी भेट झाल्याचे मला स्मरण येत नाही. माझे पुत्र दत्तात्रेय, जे हल्ली मुंबईत 'इंडस्ट्रियल ट्रायब्यूनल'च्या जागेवर आहेत ते व वसंतराव हे यवतमाळ येथील हायस्कूलात सहाध्यायी होते व त्याचेबरोबर ते कधी कधी माझे राहत्या घरी येत असत असे त्यांचे म्हणण्यावरून मला कळले.

मी त्यांचे एक भाषण ऐकले. नागपूर येथील राष्ट्रीय अधिवेशनात सोशॅलिझमच्या प्रमुख तत्त्वानुसार भारतातील प्रगतीचे धोरण राहिल अशा आशयाचा महत्वाचा ठराव मंजूर झाला त्यावर वसंतराव नाईकाचे जे भाषण झाले त्यात सोशॅलिझमच्या प्रमुख तत्त्वांचे प्रतिपादन त्यांनी मोठ्या आकर्षक व वक्तृत्वसंपन्न भाषेत केले होते. त्याच वेळी ज्यांचे वाणीत दुसऱ्याचे मन आकर्षित करण्याची शक्ती आहे

असा एक नवीन उदयोन्मुख कार्यकर्ता यवतमाळ जिल्ह्यात पुढे येत आहे हे पाहून मला अतिशय समाधान वाटले.

वसंतरावशी त्यानंतर मला बोलण्याचालण्याचे अनेक प्रसंग आले. त्यांत मला त्यांचे विशेष गुण म्हणून जे मनावर ठसले ते त्यांची शालीनता आणि आपण कोणत्याही स्थितीत असलो तरी सद्गृहस्थ म्हणून जे गुणवैशिष्ट्ये माणसांत असायला पाहिजे त्याची सदैव जाणीव हे आहेत. तिसरी गोष्ट म्हणजे सर्व राज्यव्यवस्थेच्या दृष्टीने आज भारतीय चतुर्थ पंचवार्षिक योजनेत ज्या कृषी-उत्पादनाला अत्यंत महत्वाचे स्थान मिळाले आहे त्यासंबंधाने महाराष्ट्र राज्याचे मुख्यमंत्री या नात्याने येणाऱ्या जबाबदारीतून पार पडण्याकरितां ते करीत असलेले प्रयोग व परिश्रम हे खरोखरीच वाखाणण्यासारखे आहेत. महाराष्ट्रातील शेतीची उत्पादनक्षमता वाढविण्यासाठी त्यांजकडून होत असलेल्या सर्वांगीण प्रयत्नांचे सविस्तर वर्णन करण्याचे हे स्थान नव्हे. पण या बाबतीत त्यांनी कृषितज्ञांच्या शास्त्रीय सल्लेस शेतकरी म्हणून जो आपला खास अनुभव आहे त्याची जोड देऊन शक्य तितक्या अल्पावधीत महाराष्ट्र राज्यात समाविष्ट झालेल्या मराठवाडा, विदर्भ इत्यादी भागातील शेतीची उत्पादनशक्ती वाढविण्याकडेही लक्ष दिले आहे. त्याने दोन वर्षांत अन्नधान्य तुटीबद्दल सर्वत्र ज्ञात असलेला दुर्दैवी महाराष्ट्र हा त्या बाबतीत स्वयंसंपन्न करीन म्हणून जी भीष्म प्रतिज्ञा केली आहे ती शब्दशः खरी होवो की न होवो पण त्यांनी तयार केलेल्या निरनिराळ्या योजनांत जर सर्व अधिकारी वर्गांनी, स्वयंशासित संस्थांनी, महाराष्ट्रातील कर्मचारी वर्गाने प्रामाणिकपणे साह्य दिले तर, त्या अवधीत महाराष्ट्र सर्व भारत खंडास एक आदर्शभूत उदाहरण घालून देईल यात काही एक संशय येण्यास जागा नाही. आजपर्यंतच्या पंचवार्षिक योजनांची कारवाई अत्यंत असमाधानकारक झाली असल्यामुळे सरकारी योजनांतून आपले देशाचे भवितव्य बरे होईल ही कल्पना देखील लोकास करवत नाही. लोक नाउमेद झाले आहेत. सरकारच्या कर्तृत्वाविषयी लोकांच्या मनांत एक प्रकारची निराशाच निर्माण झाली आहे. ही निराशा नाहीशी करण्यास महाराष्ट्रात वसंतरावजीच्या देखरेखीखाली होणाऱ्या प्रयोगाचे यश हेच मोठे रामबाण औषध आहे असे मी समजतो. अन्नधान्याच्या तुटीचा प्रश्न महाराष्ट्र सोडवू शकला (व तो होऊ शकेल असा मलाही त्या योजनांचे लक्षपूर्वक अध्ययन केल्यावर वाटू लागले आहे) तर महाराष्ट्राने केलेली कामगिरी ही भारताच्या आर्थिक स्थितीत स्थैर्य देण्यास आणि भारताला परावलंबी घोरणापासून स्वतःचा बचाव करण्यास व स्वदेशीच्या मार्गावर आणण्यास आणि स्वयंसंपन्नतेचे ध्येय गाठण्यास निःसंशय सहाय्यक होईल, म्हणून मी महाराष्ट्रातील सर्व बंधु-भगिनीस अत्यंत कळकळीने विनवितो की त्यांनी वसंतरावजीच्या प्रतिज्ञापूतीसाठीच म्हणून नव्हे तर अखिल भारताच्या आत्मोद्धारार्थ त्यांनी चालविलेल्या या कृषी उत्पादन

वाढीच्या प्रयोगास तनमनधनाने साह्य करावे. परावलंबनाचे पंकात रूतलेल्या भारत-मातारूप गायीचे उद्दारास सज्ज व्हा. सर्व मतभेद विसरा आणि काम करण्यास कंबर कसा. त्यामुळे एका राज्यात जी गोष्ट घडू शकली ती इतर राज्यांतही घडेलच हा विश्वास आजच्या निराश झालेल्या भारतात खडबडून जागा होईल. देश स्वावलंबनाचे मार्गास लागेल व परधार्जिणेपणाचे दैन्य नष्ट व्हावयास लागेल. वसंतरावच्या नेतृत्वाखाली व त्यांच्याच कल्पकतेमुळे या कृषि-उत्पादन वृद्धीचे कार्य यशस्वी झाले तर महाराष्ट्रातील जनता आजच्यापेक्षा अधिक डोके उंच करून मोठ्या अभिमानाने दिल्लीच्या राजपथावरून फिरू लागेल.

त्यांनी सुरू केलेल्या इतर सुधारणा व धाडसी प्रयोग यांचा विस्तार मी या पुरस्कार-लेखात करून आधीच लांबलेली ही प्रस्तावना अधिक वाढवून अवजड अथवा बोजड करू इच्छित नाही. पण त्यांनी दारूबंदीच्या बाबतीतील घोरणा-संबंधाने दाखविलेला कणखरपणा व मराठी भाषेचा सर्वत्र राज्यकारभाराचे व्यवहारात उपयोग करण्याचा उपक्रम करण्यात दाखविलेली दूरदृष्टि या प्रशंसनीय गोष्टींचा निदान उल्लेख करणे तरी अवश्य आहे असे समजतो व त्याबद्दल मी त्यांचे अभिनंदन करतोच.

वसंतरावला परमेश्वर दीर्घायुष्य देवो. अधिक कर्तबगारीची महत्कार्ये करण्याचे प्रसंग परमेश्वर त्यांना देवो आणि त्यांचे हातून भारतोद्दाराचे कार्यास भरीव साह्य होत राहो. त्याचप्रमाणे त्यांना सहकुटुंब सहपरिवार दीर्घकाळ परमेश्वर सुखी व आनंदित ठेवो अशी परमकारुणिक भगवंताची प्रार्थना करून माझा हा आशीर्वादात्मक पुरस्कार पुरा करतो.

ता. ३१-१०-१९६६

५ मीना बाग, नवी दिल्ली

५११. ३२५१.



सत्यमेव जयते

VICE-PRESIDENT, INDIA

New Delhi,

September 13, 1966.

I am very happy to know that a Gaurav Granth is proposed to be presented to Shri V. P. Naik, Chief Minister of Maharashtra. It has been my privilege and pleasure to reckon Shri Naik among my friends. Ever since I came in contact with him I have been deeply impressed by his cheerful disposition, suave manners, robust commonsense and his humane approach to administrative problems. All these qualities have, indeed, made a great impact on the progressive development of the State of Maharashtra.

I join the members of the V. P. Naik Gaurav Granth Samiti in offering my hearty felicitations to Shri Naik and in wishing him a long, happy life of continued service and fruitful activity.

Zakir Husain

RAJ BHAVAN
Poona,
July 11, 1966.

I am glad I have been given the opportunity to write a few lines about our Chief Minister, Shri V. P. Naik.

I met Shri Naik and Shrimati Naik long before my appointment as Governor of Maharashtra was even thought of. They came to Ootacamund for a holiday when we too were there; but that incident we had forgotten till 1964, when Shri Naik reminded me about it when he came to Madras. Soon after that I was appointed Governor of Maharashtra, and now I have the opportunity of working very closely with Shri V. P. Naik as our Chief Minister.

I have found Shri Naik always co-operative and very friendly in his dealings. In fact, my wife and I are very closely attached to Shri and Shrimati Naik. Shri Naik has made a very great name for himself during the last so many years that he has been in politics. His administration of the State is exemplary. I have always been happy to see the attachment of the whole Cabinet to him.

A man of very calm temperament, who does not get ruffled by any disturbances, he is working very hard for the settlement of the boundary dispute between Mysore and Maharashtra. I hope this will be settled very soon and the areas that belong legitimately to us will come to us. We have been able to carry on this fight for the Marathi-speaking areas without any disturbance, thanks to Shri Naik's guidance.

Shri Naik is very young and has many years of useful service not only to the State but to the whole country before him. He can always be depended on to work for the good of our country. Personally, I hope to see him in even higher positions of responsibility and dignity.

I have great pleasure in sending this message and wish Shri V. P. Naik and his family all the best in the future.

P. V. Cherian

MINISTER OF DEFENCE

New Delhi,

July 14, 1966.

I have known Shri Vasantao P. Naik for quite some years so intimately that it is only with an effort I can write a few words about him formally. To add to my difficulty, Shri Naik himself is so informal and unconventional that any attempt on my part to recollect our meetings tends further to scatter whatever thoughts I try to gather to draw his pen-picture. Yet try to do so I must, for I cannot but associate myself with this occasion chosen by his friends and admirers to honour him on his fifty-third birthday.

Shri Vasantao Naik is truly a man from the countryside. All the polish and finesse that education and residence in bigger towns may have given him are just not enough to prevent him from identifying himself completely with the village and the villager, whenever he comes in touch with either. His undoubted sympathy with the rural folk has well attuned him for dedicated work for their uplift. Whatever his immediate preoccupation and whichever his portfolio in a Government, this work he has always kept well in view. Being one of them, Shri Naik feels more than sorry to see the rural people in a state of backwardness. His mind is ever full of their problems and he looks upon their prosperity and happiness as symbolic of India's prosperity. He is at his best while planning for it and truly in his elements when working for it.

In face of the present food crisis, it would have been surprising if Shri Naik had not made the 'Grow More Food' question a personal issue. His vast knowledge of agricultural affairs and his experience of matters relating to land revenue and rural development have made him single out agricultural development as the kingpin of India's economic progress. This fact is now recognised by all, but Shri Naik has his own technique of proceeding about it. I have no doubt in my mind that whatever the weather conditions and other difficulties, he will succeed in stepping up food production in Maharashtra substantially.

By virtue of these traits and other leaderlike qualities, Shri Vasantao Naik has endeared himself to all classes and strata of people in Maharashtra. His sturdy commonsense and amiable temperament go a long way in helping him to be on the right side of things and men. I feel sure that under his stewardship Maharashtra will continue its crusade against poverty and backwardness.

On the happy occasion of his 53rd birthday, I send Shri Vasantao Naik my best wishes and gladly associate myself with the views and object of the compilers of the Gaurav Granth.

Y. B. Chavan

“SEVASHRAMA”,

Sigra,

VARANASI-1.

On the happy occasion of the 53rd birthday of Shri V. P. Naik, Chief Minister of the Maharashtra State, I am happy to find that friends and admirers have decided to publish a Gaurav Grantha, and I should like to join them in offering my greetings and felicitations to our distinguished comrade and colleague, and send my very best wishes for all health and happiness to him. May he long be spared to carry on his good work in the service of our country and our people.

I had the pleasure of coming in close contact with Shri Naik when I went to Bombay as Governor. He was then Minister for Agriculture, and I knew how hard and devotedly he worked, and what improvements he was able to effect in the departments under his care. After the bifurcation of the composite State of Bombay and the formation of a separate State of Maharashtra, he continued in the Council of Ministers as Minister of Revenue. He belongs to Vidarbha; and when that was a part of Madhya Pradesh he had already served as a Deputy Minister of that State. In the reorganisation of States in 1956, Vidarbha became a part of Bombay, and then he came to the Bombay Ministry. On the sad death of Shri Kannamwar, Shri Naik became the Chief Minister of Maharashtra, and has been carrying on with rather courage and capacity despite endless difficulties created both by nature and by man.

Shri Naik is an essentially human person, and that is what has particularly attracted me to him. He is a person of wide sympathies and most scrupulously keeps up his associations with colleagues when once those are formed. I have personally always felt most grateful to him for the great courtesy and consideration he has been pleased to extend to me even after I had retired from the Governorship of the Maharashtra State.

In Shrimati Vtsalabai, his wife, he has indeed a great comrade who has stood by him through thick and thin in a life which has been devoted to public service from the very start because of which very often men cannot give much time to their families which feel neglected and unhappy. I join my Bombay friends on this occasion in wishing Mr. and Mrs. Naik long years of useful public service and the ever-abiding love and esteem of their fellow-citizens.

Sri Prakasa

**Calcutta,
August 10, 1966.**

Seldom we find in a man's nature the rare admixture of firmness and tenderness, of determination and respect for other's opinion. Shri Vasant Rao Naik is one of such outstanding personalities. He is inherently a man of sweet and amiable disposition and sometimes it appears that he can be easily persuaded by others but one who knows him well shall find that he never gives up the work which he considers as his duty to perform.

Shri Naik is truly a son of the soil. He believes that progress and economic salvation of India depends mainly on the development of agriculture in the country. Time and again he has emphasised on this vital problem and its satisfactory solution. At the time of discussion with his co-workers he will inevitably raise this question and give top priority to agrarian problems of the country.

Shri Naik is at the helm of the administration and always makes it a point to mix with common people in order to get a first-hand knowledge of their problems and difficulties. As such he is loved and respected by people from all walks of life.

It is most befitting that a Gaurav Granth is being presented to him by the Shri Vasant Rao Naik Birthday Celebration Committee as Vasant Rao Naik is truly an object of pride in India.

Atulya Ghosh

**New Delhi,
August 3, 1966.**

I am glad you have formed into a Committee to honour Shri V. P. Naik on his birthday. Shri Naik deserves to be honoured for the great services he has been rendering to the country and I send my hearty felicitations to Shri Naik on this happy occasion. Let us all wish him long life and useful service.

N. Sanjiva Reddy

**New Delhi,
July 21, 1966.**

It is a matter of pleasure to learn that the Gaurav Granth Committee is going to bring out 'Shri V. P. Naik Gaurav Granth' on the occasion of the 53rd birthday of Shri V. P. Naik.

Shri V. P. Naik is an able administrator and a statesman. He possesses all the qualities of a strong leadership. May he live long to serve the nation.

I wish the Birthday celebration all success.

Jagjivan Ram

**BHARATIYA VIDYA BHAVAN,
Bombay,
July 18, 1966.**

SHRI VASANTRAO P. NAIK has a background of selfless service rendered to different causes for several years. His services to the State and to India are well-known and needs no recital.

He was successful as a Revenue Minister; as a Chief Minister he is wise and well-balanced. His attitude on difficult problems has been characterised by quiet statesmanship.

The outstanding quality in Vasantaoji endearing him to most people is his sense of proportion which keeps on leash linguistic and regional chauvanism, harmonising conflicts as best as he can.

Many more years of useful service are before him and I wish him success.

K. M. Munshi



आणि सताचे !





सौजन्याची भेट सौजन्याशी !

हार्दिक स्वागत



ब्रह्मर्षीचि



महाराष्ट्राबद्दल तुम्ही निःशक रहा



आणि राजर्षींचे !



सुफलानि रत्नानि

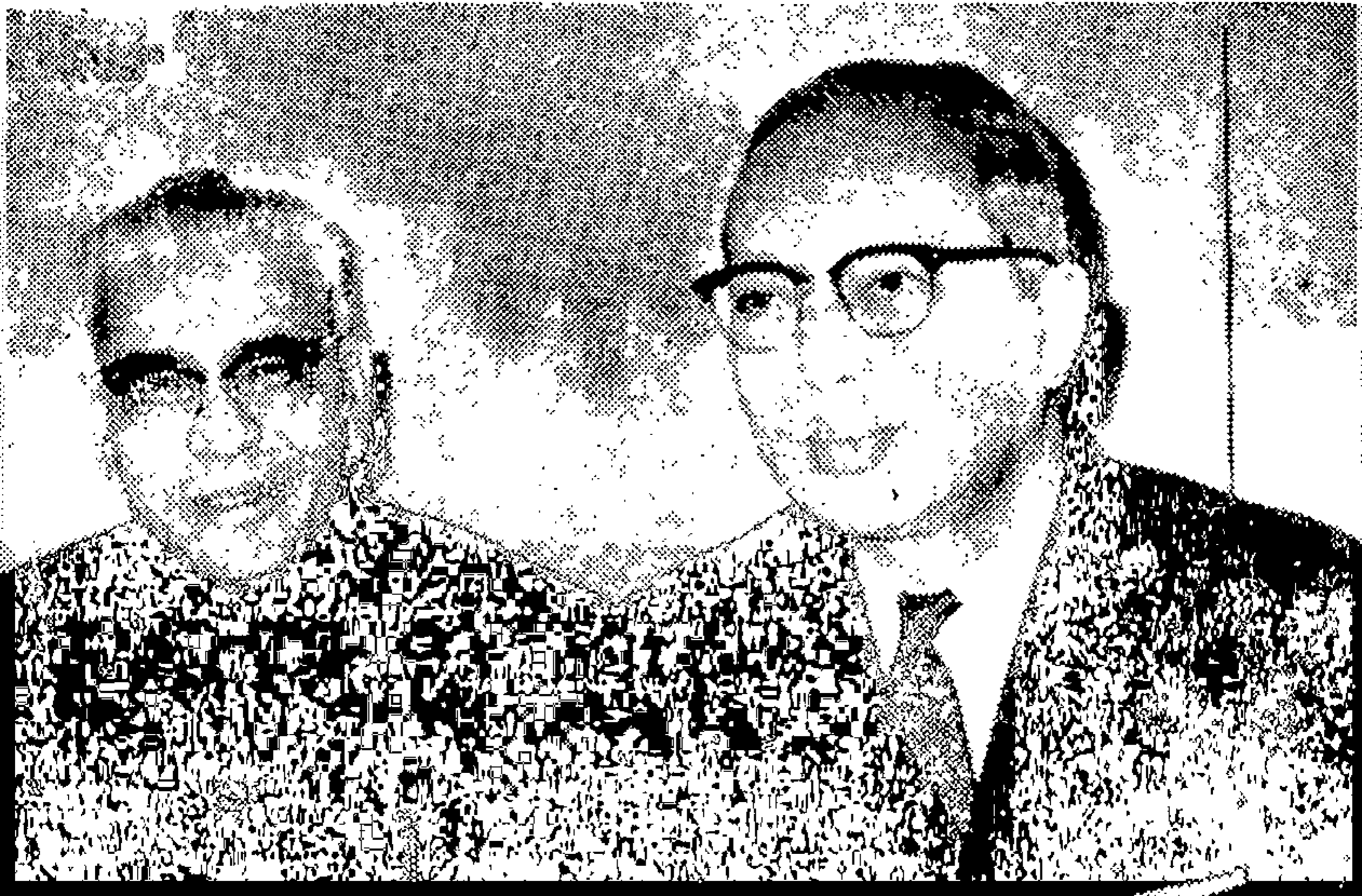


परदेशी पाहुण्याचे स्वागत



इराकचे पंतप्रधान, उपराष्ट्रपति डॉ. झकीर हुसेन
व श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित यांचेसह

संयुक्त राष्ट्रसंघाचे सरचिटणीस ऊ थांट यांचेसह



३ जुलै १९६६ : ५७ व्या वाढीदिवसाचा घरगुती समारंभ



वर्धापनदिनी स्वजन शुभेच्छा प्रतीक प्रेमाचे ।



नित्य घडावे कर्तृत्वे तव, त्वर्धन राज्याचे ॥



वसंतराव ... एक माणूस

ना. शेषराव वानखेडे

महाविद्यालयीन जीवनाचा शेखमहंमदी काळ ज्यांनी वसंतरावांबरोबर काढला ते महाराष्ट्र राज्याचे अर्थमंत्री व. शेषराव वानखेडे यांनी अत्यंत मोजक्या शब्दात आपल्या सुहृदाचे सुंदर व्यक्तिचित्र यथे रेखाटले आहे.

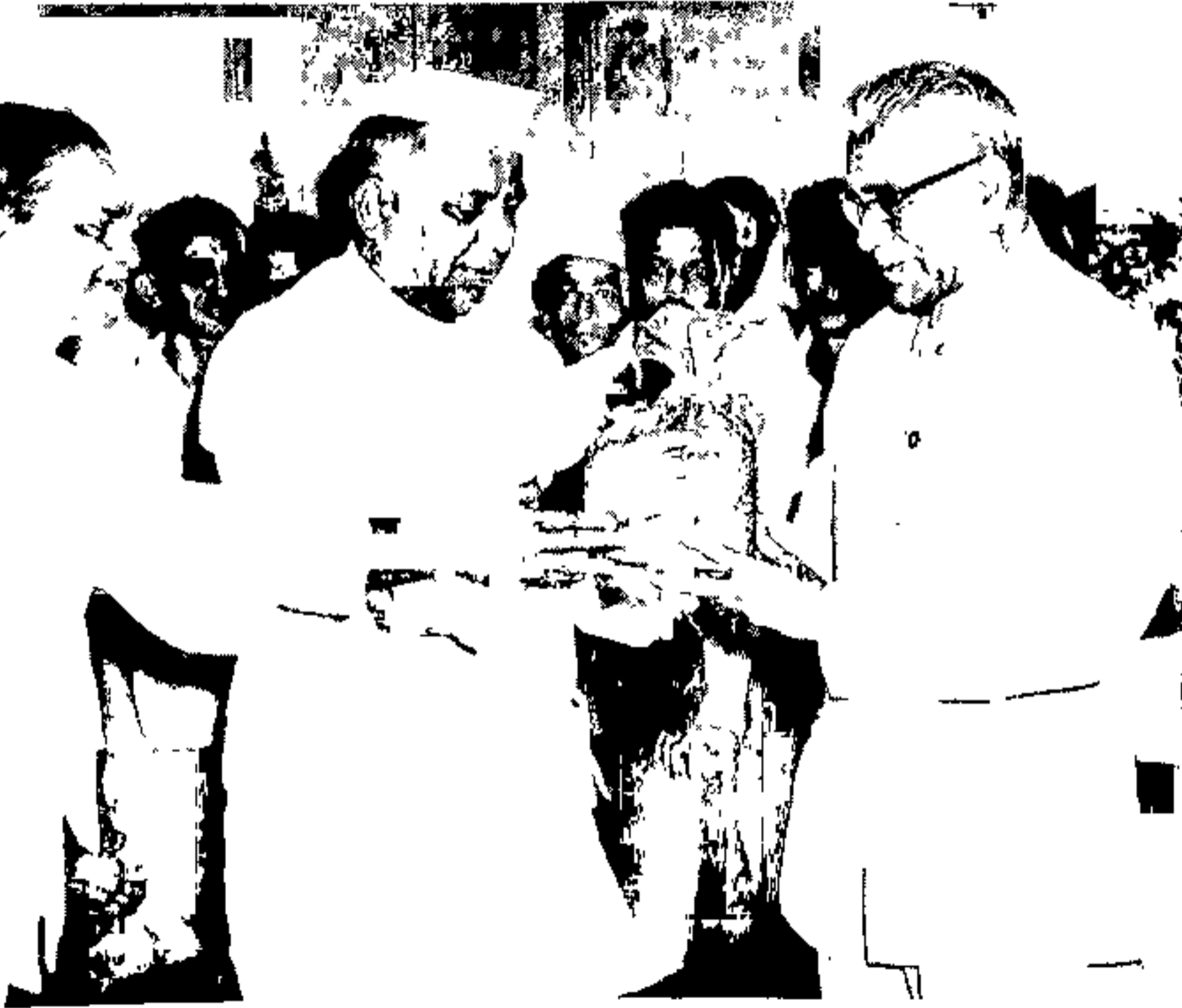
सुहृदाविषयी चार शब्द लिहिणे किती कठिण असते हे हातात लेखणी घेऊन वसल्याशिवाय समजत नाही. जुन्या आठवणींची एकच गर्दी मनात उसळते. कित्येक वर्षापूर्वी घडलेले प्रसंग, स्मृतीच्या कपाटात बंद राहिल्यामुळे प्रसंगी विसरले गेले असले, तरी कपाट उघडल्याबरोबर हसत हसत पुढे उभे राहतात. माननीय वसंतरावांसंबंधी दोन शब्द लिहिताना माझी नेमकी हीच स्थिती झाली आहे.

वसंतरावांचा आणि माझा फार जुना स्नेह. एकाच कॉलेजमध्ये आम्ही शिकलो. महाविद्यालयीन जीवनाचा तो शेखमहंमदी काळ. आम्हा दोघानाही कसलीही ददात नव्हती. चिंता नव्हती. वाचन, खेळ, गप्पा, थट्टामस्करी, विनोद, भोजन, विश्रांती, यातच बहुतेक वेळ जायचा. पण तरीसुद्धा त्यातही वसंतरावांचा कधी बेजबाबदारपणा दिसला नाही. या सर्व गोष्टी करीत असताना त्यांच्यातला माणूस नेहमी जागा असे. आणि तोच त्यांच्या स्वभावाचा स्थायीभाव. प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव करण्याच्या जिद्दीने ते कधीही खेळ खेळले नाहीत. खेळासाठी खेळ. मग त्यात पराभव कुणाचा हा प्रश्नच उद्भवत नसे. शिवाय प्रतिस्पर्धी हरलाच तरी त्याच्याशी दिलखुलास हस्तांदोलन करून क्रीडांगणावरचा अटीतटीचा सामना तेथेच सोडून देण्याची वसंतरावांची खिलाडू वृत्ती आणि माणुसकी आजही त्यांच्या व्यवहारात आणि राज्यकारभारात दिसून येते. कोणत्याही प्रश्नाचे सत्य स्वरूप न समजल्यामुळेच विरोध निर्माण होतो हे ध्यानी ठेवून, विरोधकाशी समजुतीने वागण्याची त्यांची वृत्ती म्हणजे उच्चपदप्राप्तीच्या अहंकारावर त्यांनी मिळविलेला प्रचंड विजयच आहे असे मी मानतो. सर-

१ जुलै १९६६ ५३ व्या वाढीदिवसाचो घरगुती समारंभ



वर्धापनदिनी स्वजन शुभेच्छा प्रतीक प्रेमाचे ।



नित्य घडावे कर्तृत्वे तव, तवर्धन राज्याचे ॥



वसंतराव ... एक माणूस

ना. शेषराव वानखेडे

महाविद्यालयीन जीवनाचा शेखमहंमदी काळ ज्यांनी वसंतरावांबरोबर काढला ते महाराष्ट्र राज्याचे अर्थमंत्री वॅ. शेषराव वानखेडे यांनी अत्यंत मोजक्या शब्दात आपल्या सुहृदाचे सुंदर व्यक्तिचित्र येथे रेखाटले आहे.

सुहृदाविषयी चार शब्द लिहिणे किती कठिण असते हे हातात लेखणी घेऊन वसल्याशिवाय समजत नाही. जुन्या आठवणींची एकच गर्दी मनात उसळते. कित्येक वर्षापूर्वी घडलेले प्रसंग, स्मृतीच्या कपाटात बंद राहिल्यामुळे प्रसंगी विसरले गेले असले, तरी कपाट उघडल्याबरोबर हसत हसत पुढे उभे राहतात. माननीय वसंतरावांसंबंधी दोन शब्द लिहिताना माझी नेमकी हीच स्थिती झाली आहे.

वसंतरावांचा आणि माझा फार जुना स्नेह. एकाच कॉलेजमध्ये आम्ही शिकलो. महाविद्यालयीन जीवनाचा तो शेखमहंमदी काळ. आम्हा दोघानाही कसलीही ददात नव्हती. चिंता नव्हती. वाचन, खेळ, गप्पा, थट्टामस्करी, विनोद, भोजन, विश्रांती, यातच बहुतेक वेळ जायचा. पण तरीसुद्धा त्यातही वसंतरावांचा कधी बेजबाबदारपणा दिसला नाही. या सर्व गोष्टी करीत असताना त्यांच्यातला माणूस नेहमी जागा असे. आणि तोच त्यांच्या स्वभावाचा स्थायीभाव. प्रतिस्पर्धांचा पराभव करण्याच्या जिद्दीने ते कधीही खेळ खेळले नाहीत. खेळासाठी खेळ. मग त्यात पराभव कुणाचा हा प्रश्नच उद्भवत नसे. शिवाय प्रतिस्पर्धी हरलाच तरी त्यांच्याशी दिलखुलास हस्तांदोलन करून क्रीडांगणावरचा अटीतटीचा सामना तेथेच सोडून देण्याची वसंतरावांची खिलाडू वृत्ती आणि माणुसकी आजही त्यांच्या व्यवहारात आणि राज्यकारभारात दिसून येते. कोणत्याही प्रश्नाचे सत्य स्वरूप न समजल्यामुळेच विरोध निर्माण होतो हे ध्यानी ठेवून, विरोधकाशी समजुतीने वागण्याची त्यांची वृत्ती म्हणजे उच्चपदप्राप्तीच्या अहंकारावर त्यांनी मिळविलेला प्रचंड विजयच आहे असे मी मानतो. सर-

कारी नोकरांच्या महागाई भत्यापासून तो महाराष्ट्र-म्हैसूर सीमावादापर्यंत कोण-
ताही विवाद्य प्रश्न असो. त्यात, प्रसंगी स्वतःकडे कमीपणा घेऊन सुद्धा, प्रतिपक्षाशी
वाटाघाटी करण्याची त्यांची रीत त्यांच्या माणुसकीतूनच जन्माला आली आहे. नेभ-
ळटपणातून नव्हे. काळाची पावले ओळखून परिस्थितीचा समतोल राखण्यासाठी
त्यांनी आजवर घेतलेले पवित्रे, केलेल्या मनघरण्या व घातलेल्या समजुती यांचा
चुकीचा अर्थ लावण्यात विरोधकांनी कितीही शक्ती खर्च केली तरी त्याची त्यांना
खंत नाही. कारण त्यांच्या ध्येयघोरणातल्या आर्जवाला भित्रेपणाचा गंधहि नाही.
वसंतरावांचे आणखी एक वैशिष्ट्य आहे. त्यांना अघळपघळ सार्वजनिक गप्पा मार-
ताना मी फारसे कधी पाहिले नाही. वृत्ती निसर्गतःच अंतर्मुख. पांढरे शुभ्र कपडे घालून
स्वस्थ एकीकडे वाचत किंवा विचारात बसलेल्या वसंतरावांना ज्यानी पाहिले असेल
त्यांना हाच तरुण पुढे मोठमोठ्या सभा गाजवील असे स्वप्नात देखील वाटले नसेल.
पण तसे झाले खरे. आज कुणालाही हवेसे वाटणारे महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्रीपद वसंत-
रावांना सहजी प्राप्त झाले आहे. महाराष्ट्रासारख्या अग्रेसर राज्याचा कारभार सांभा-
ळण्यासाठी लागणारी कुशलता आपल्यापाशी आहे हे त्यांनी सिद्ध करून दाखविले
आहे. विरोधी पक्षाच्या पुढाऱ्यांनाही वसंतरावांबद्दल व्यक्तिशः आदर आहे. मित्रांचे
सहकार्य तर त्यांना सदैव आहे. त्यामुळे दिवसेंदिवस राज्याचे, राष्ट्राचे किंबहुना जग-
ताचेही आर्थिक व राजकीय प्रश्न अधिकाधिक गुंतागुंतीचे होत असताना या गुंत्याचा
फास महाराष्ट्राच्या लोकशाही राजवटीला बसू न देण्याचे कठिण कार्य वसंतरावजी
यशस्वी रीतीने पार पाडू शकतील याबद्दल संदेह नाही. वसंतरावजी शतायुषी होवोत
आणि त्यांचे कार्य भारतमातेपाशी रुजू होवो. महाराष्ट्राच्या कुलस्वामिनीपाशी मी
या प्रसंगी एवढाच जोगवा मागतो. मग तिला अनंत हस्तांनी काय द्यायचे ते ती खुशाल
देवो.



महाराष्ट्राने इतिहास घडविला आहे तसाच भविष्यकाळ घडविण्याच्या कामात
महाराष्ट्राने सिंहाचा वाटा उचलला पाहिजे. अडचणी, संकटे आज आहेत तशी उद्याहि
येतील. परंतु संकटकालात समाज कसा वागतो यावरच त्याच्या कर्तबगारीची, साम-
र्थ्याची व धैर्याची परीक्षा होते.

—ना. वसंतराव नाईक.

आमचे मुख्य मंत्री

ग. त्र्यं. माडखोलकर

महाराष्ट्राने भारताला जसा नव्या दृष्टीचा संरक्षणमंत्री दिला, तसाच पुढे मागे महाराष्ट्र त्याला वसंतरावांच्या रूपाने नवा कृषिमंत्रीही देणार काय ?

कोणत्याही मनुष्य अधिकारावर असताना त्याच्याविषयी लिहिणे कठिण जाते. त्याची स्तुती केली तर तोंडपुजेपणाचा आरोप येतो आणि त्याच्यावर टीका केली तर त्याला राग येतो. पण महाराष्ट्र राज्याचे मुख्य मंत्री श्री. वसंतराव नाईक यांच्या-वावतीत ही दुहेरी अडचण काही जाणवत नाही.

कारण त्यांचे सौजन्य आणि व्यवहारबुद्धि हे सौजन्य तोंडदेखले नाही. ते कमावलेले आहे, असेही म्हणता येणार नाही. त्यांच्या स्वभावाचाच तो एक भाग आहे. ते मुख्य मंत्री झाल्यापासून गेल्या अडीच वर्षांत त्यांच्याशी माझा सतत आणि निकट संबंध आला. त्या संबंधात त्यांच्या या सौजन्याचे तीन पैलू मला विशेष जाणवले.

पहिला पैलू म्हणजे श्री. वसंतराव नाईक यांचा स्वतःच्या वाणीवर असलेला ताबा. हा वाणीचा संयम मला तरी असामान्य वाटतो. पुन्हा त्यांत कोणत्याही प्रकारचे ढोंग नाही, हे विशेष होय. गेल्या अडीच वर्षांत गोवा, वेळगाव-कारवार, नद्यांच्या पाण्याचे वाटप, दारूबंदीच्या घोरणात व्यवहाराच्या आणि माणुसकीच्या दृष्टीने सुधारणा करण्याची आवश्यकता इत्यादी प्रश्नावर त्यांचे आणि काँग्रेसभ्रष्टींचे जे मतभेद झाले, ते प्रसिद्धच आहेत. त्याहिपेक्षा ऑगस्ट महिन्याच्या शेवटल्या आठवड्यात मुंबई प्रदेश काँग्रेस कमिटीने महाराष्ट्र सरकारला अडचणीत आणण्यासाठी अचानक जो राजिनामे देण्याचा डाव टाकला, तो प्रसंग तर तसा विकटच होता. कारण हे राजिनामे महाराष्ट्र सरकार व त्याची कायदा आणि सुव्यवस्था यांच्या वावतीतील नीती यांचा धक्कार करण्यासाठीच मुळी जाणून बुजून दिलेले होते.

पण यांपकीं कोणत्याही मतभेदाच्या किंवा मतसंघर्षाच्या वेळी त्यांचा वाक्संयम रतिमात्रसुद्धा सुटलेला मी पाहिलेला नाही. दारूबंदीच घोरण माणुसकीच्या

आणि गुन्हेगारीला आळा घालण्याच्या दृष्टीने योग्य प्रमाणात सैल करण्याचा आपला निर्णय जेव्हा त्यांनी जाहीर केला, तेव्हा जवळ जवळ सगळ्या देशातील काँग्रेस कार्यकर्त्यांत प्रतिकूल भावनेचे काहूर उठले; व वकिंग कमिटीपासून तो टेकचंद कमिटीपर्यंत सगळ्या श्रेष्ठींचा त्या निर्णयाविषयीचा विरोध कमी अधिक तीव्रतेने प्रकट होऊन गेला. पण, आपल्या या निर्णयापासून जसे ते ढळले नाहीत, त्याचप्रमाणे त्या निर्णयाला विरोध करणाऱ्या श्री. मुरारजी देसाई, श्री. डेवर प्रभृति श्रेष्ठींविरुद्धहि त्यांनी कधी चकार शब्द खाजगी बैठकीतसुद्धा काढला नाही. याहिपेक्षा त्यांच्या वाक्संयमाचा अनुभव मुंबई प्रदेश काँग्रेस कमिटीने घडवडीत शिस्तभंग करून जो पेचप्रसंग उत्पन्न केला, त्या वेळी माझ्या अनुभवाला आला. त्या राजिनाम्यामुळे यत्किंचितहि न गडवडतां ते जसे ठरल्याप्रमाणे तां. २८ ऑगस्ट रोजी मुंबईहून नागपुरात राहावयाला आले, तसाच मनाचा समतोल आणि शांतपणा तो पेच सोडवितानाहि त्यांनी दाखविला. ता. ३० ऑगस्ट रोजी सायंकाळी या प्रसंगाविषयी आमचे बरेच बोलणे झाले. पण त्या बोलण्यात मुंबई प्रदेश काँग्रेसचे अध्यक्ष श्री. खेर, त्या काँग्रेसचे नेते आणि सूत्रधार श्री. स. का. पाटील किंवा राजिनामा देणारे मंत्री यांच्याबद्दल त्यांनी एकहि दुरुद्गार काढला नाही. उलट, श्री. पाटील यांच्याविषयी बोलताना त्यांनी असे म्हटले की, “ त्यांच्या उंचीचा (stature) मुत्सद्दी अशा प्रकारच्या बनावाला पाठिंबा देईल, असे मला वाटत नाही. ” बेळगाव-कारवारच्या बाबतीत म्हैसूरचे मुख्य मंत्री श्री. निजलिंगप्पा आणि काँग्रेसश्रेष्ठी यांचे जे वर्तन सध्या घडत आहे, त्यामुळे त्यांच्या मनाला जरी विषाद वाटत असला, तरी तो व्यक्त करतानादेखील ते एकदा असे म्हणाले की, “ या सगळ्या दिरंगाईबद्दल आणि एकदा घेतलेले निर्णय बदलण्यात आल्याबद्दल तुम्हा-आम्हाला वाईट वाटणे स्वाभाविक आहे. पण त्यांच्याहि काही अडचणी आहेत, हे आपण ध्यानात घेतले पाहिजे. आता त्यांच्या आणि आमच्या या रस्सीखेचीमुळे केव्हा केव्हा मन कंटाळावे आणि वैतागावे, हे ठीक आहे. पण म्हणून आपण एकदम त्यांच्यावर आरोप करणे बरोबर होणार नाही. ” हा वाणीचा संयम मी दुसऱ्या कोणत्याहि राजकारणी आणि विशेषतः सत्ताधारी व्यक्तीत पाहिलेला नाही. मुंबई राज्याचे पहिले मुख्य मंत्री श्री. बाळासाहेब खेर यांच्याहि तोंडून कधी कोणाविषयी दुःशब्द निघत नसे. पण श्री. नाईक यांच्या मानाने त्यांच्यावर कटुतेचे आणि कसोटीचे प्रसंग फारसे आलेच नाहीत. शिवाय ते मृदुप्रकृति होते. उलट, श्री. वसंतराव हे सौम्य आहेत असे वाटले, तरी स्वतःच्या मतानुसार निर्णय घेताना, ते धसाला लावताना आणि अंमलात आणताना त्यांचा जो कणखरपणा गेल्या अडीच वर्षांत अनुभवाला आलेला आहे, त्यामुळे मला तरी केव्हा केव्हा असे वाटते की, चिलखतावर मलमलीचा मुलायम अंगरखा घालावा तसा तो त्यांचा सौम्यपणा आहे.

या वाक्संयमाच्या जोडीला तितकाच महत्त्वाचा त्यांच्या सौजन्याचा दुसरा पैलू म्हणजे त्यांचा स्पष्टपणा, कोणतेहि गाऱ्हाणे, मागणी किंवा अडचण ही एकाद्या कार्यकर्त्याने म्हणा किंवा शिष्टमंडळाने म्हणा त्यांच्यापुढे ठेवली, म्हणजे प्रथम ते त्यांचे सर्व म्हणणे ऐकून घेतात. ते जर योग्य आहे असे त्यांना वाटले, तर लगेच जेवढा मुद्दा त्यांना पटलेला असेल, तेवढ्या मुद्यापुरता ते स्पष्ट खुलासा करतात आणि आश्वासनहि देतात. जर म्हणणे पटले नाही, तर तसेहि अगदी सौम्यपणाने पण स्पष्टपणाने सांगून मोकळे होतात. पण, उगाच गोड बोलणे किंवा गुळमुळीत आश्वासन देणे नाही. त्यांनी एकदा शब्द दिल्यावर तो पुरा करावयाला कदाचित वाजवीपेक्षा जास्त वेळहि लागेल. पण दिलेला शब्द पुरा केल्याशिवाय मात्र ते रहात नाहीत. केव्हा केव्हा तर आपल्याकडे आलेले गाऱ्हाणे किंवा तक्रार जर त्यांना रास्त वाटली, तर तियल्या तियेच ते राज्ययंत्रणेचा दांप कबूल करतात आणि गाऱ्हाणे दूर करण्याचेहि आश्वासन देतात. चालू हंगामात शेतकऱ्यांना बियाणे आणि खते ही दोन्हीहि वेळेवर आणि पुरेशी मिळाली नाहीत, व जे हायब्रीड बियाणे मिळाले, ते सदोष असल्यामुळे शेतकऱ्यांची जी नाडगूक आणि नुकसान झाले, तिच्यासंबंधी ता. ३० ऑगस्ट रोजी मी त्यांच्या-जवळ बोललो. तेव्हा त्यांनी बियाणे तयार करण्यात तज्ज्ञांची जी चूक झाली ती कबूल केली आणि मला समजावूनहि सांगितली. त्याचप्रमाणे, बियाणे, खते आणि पंप बसविण्यामाठी आवश्यक असलेली उपकरणे वगैरे वक्तशीर आणि पुरेशी मिळाली नाहीत, ही तक्रारहि काहीं प्रमाणात आणि काही ठिकाणी बरोबर असल्याचे त्यांनी चटकन मान्य केले. अशा प्रकारचा स्पष्टपणा आणि विशेषतः सरकारी यंत्रणेतील दोष किंवा चुका कबूल करण्याची प्रवृत्ती सत्ताधारी व्यक्तीत सहसा आढळत नाही.

त्यांच्या सौजन्याचा तिसरा पैलू म्हणजे सरळपणा. राजकारणांत सरळपणा ही चीज कधी अनुभवालाच येत नाही. अर्थात्, राजकारणातील नाना प्रकारची गुंता-गुंत, डाव आणि पेच हे ध्यानात घेतले असता, राजकारणी माणसाला सरळपणाने वागणे जर गैरसोईचे वाटत असेल, तर त्याबद्दल त्याला दोष देणे कठिण जाईल. त्यामुळे एखादा पुढारी किंवा मंत्री हा एखाद्या प्रसंगी किंवा बाबतीत आपल्याशी सरळ वागला नाही आणि त्यामुळे आपली फसवणूक झाली, असे जरी अनुभवाला आले, तरी ते तितकेसे अक्षम्य वाटत नाही. पण, असल्या तोंडदेखल्या गोड बोलण्याचा आणि त्यामुळे होणाऱ्या फसवणुकीचा अतिरेक झाला, म्हणजे मात्र मन विटून जाते. श्री. वसंतराव नाईक यांचा सरळपणा हा या दृष्टीने अपवादच म्हणावा लागेल. त्यांच्या या सरळपणामुळे आणि स्पष्टपणामुळे त्यांनी केव्हा केव्हा काँग्रेसश्रेष्ठींची तर केव्हा केव्हा आपल्या सहकारी मंत्र्यांचीहि नाराजी स्वतःवर ओढवून घेतल्याचे मला माहीत आहे. अशा प्रसंगाविषयी बोलताना ते उसळून विचारतात, " मग काय मी खोटे बोलू ? आणि खोटी आश्वासने देऊन फसवणूक करू ? त्यापेक्षा मला नाराजी पत्करेल.

आज ना उद्या मी सरळपणाने वागलो, याची जाणीव होऊन ती आपली नाराजी अना-
ठायी होती, असे त्या मंडळींच्याहि ध्यानात आल्याशिवाय रहाणार नाही.” मला
वाटते, ही त्यांची विचारसरणी अगदी योग्य आहे.

श्री. वसंतराव नाईक यांच्या गेल्या अडीच वर्षांच्या राजवटीतील त्यांची सग-
ळ्यात महत्वाची प्रशंसनीय कामगिरी जर कोणती असेल, तर ती म्हणजे महाराष्ट्र
राज्याच्या पांचवीला पुजलेले अन्नधान्याचे दुर्भिक्ष्य दूर करण्यासाठी त्यांनी सतत
चालविलेले विविध आणि यशस्वी प्रयत्न. कै. काकासाहेब गाडगीळ हे मजजवळ
बोलताना एकदा उद्गारले होते, “ तुमचे वसंतराव नाईक शेतीशिवाय दुसरी गोष्ट
बोलत नाहीत. त्यांच्या डोक्यात शेतीशिवाय दुसरा विषय नाही. शेतकऱ्यांच्या हित-
संबंधांच्या दृष्टीने त्यांचा सगळा कारभार आज चाललेला आहे.” त्यावर मी त्यांना
विचारले, “ पण यात वाईट काय आहे ? आपला देश शेतीप्रधान आहे. शेतकरी हा
आपल्या देशाचा कणा आहे आणि शेतीकडे दुर्लक्ष केल्यामुळेच आज आपल्यावर भिक्षां-
देहीची पाळी आलेली आहे. म्हणून सध्याच्या परिस्थितीत शेती हा एकच विषय
डोक्यात असलेला मुख्य मंत्री महाराष्ट्राला लाभला, हे आपले सुदैव समजले पाहिजे.”
माझ्या समजुतीने श्री. वसंतराव नाईक यांचे शेतीवर भर देण्याचे धोरण आणि शेतीच्या
निरनिराळ्या सुधारलेल्या योजना अंमलात आणण्याच्या बाबतीतील त्यांची तळमळ
आजच्या आपल्या स्थितीत तरी वरदानच ठरणार आहे. त्यांच्या या धोरणाची छाप
केंद्रीय कृषिमंत्री आणि केंद्रीय सरकारचे शेती आणि शेतकरी यांच्या संबंधीचे धोरण
यांच्यावरही पडली असल्याचे स्पष्ट दिसते. त्यामुळे, माझ्या मनात केव्हा केव्हा अशी
कल्पना चमकून जाते की, महाराष्ट्राने भारताला जसा नव्या दृष्टीचा संरक्षणमंत्री
दिला, तसाच पुढे मागे महाराष्ट्र त्याला नव्या दृष्टीचा कृषिमंत्रीहि देईल !!

शेती आणि शेतकरी यांच्यासंबंधीची श्री. वसंतराव नाईक यांची कळकळ
आणि तळमळ जिवंत आणि अंगभूत आहे. म्हणजे असे की, त्यांच्या शासकीय जीवना-
प्रमाणेच त्यांचे कौटुंबिक जीवनहि त्या तळमळीने व्यापलेले आहे. त्यांनी आपल्या
दोन्ही पुतण्यांना शेती आणि बागाईत यांच्या कामात घालून त्यांना उत्पादनाची
नवीन दृष्टि दिली; व त्यांचे जीवन समृद्धीच्या मार्गाला लावले. खुद्द त्यांच्या स्वतःच्या
मलबार हिलवरील बंगल्याच्या मागल्या आवारात त्यांनी बागायतीचे निरनिराळे
प्रयोग चालविलेले असून, जो काय थोडासा फुरसतीचा वेळ त्यांना राजकारणाच्या
घकाषकीत मिळतो, तो सर्व वेळ ते स्वतः, त्यांच्या पत्नी सौ. वत्सलाबाई आणि त्यांचे
दोघे मुलगे असे सर्वच बागायतीच्या कामात हीसेने घालवतात. ता. ३ ऑगस्ट रोजी
सकाळी आम्ही त्यांच्या बंगल्यावर बोलत बसलो असता, त्यांनी मला आपल्या बगि-
च्यात लावलेल्या पोफळीच्या झाडाला आलेल्या ताज्या पोफळांचा घड मोठ्या उत्सा-
हाने दाखविला. तो पहात असताना माझ्या मनात असा विचार आला की, श्री. वसंत-

राव नाईक यांचा हा शेतीचा आणि वागायतीचा छंद जर आपल्या केंद्रीय कृषिमंत्र्यांच्या ठिकाणी असता, तर आपले दैन्य गेल्या अठरा वर्षांत थोडे तरी फिटले असते.



शेतीसंबंधी मालकीची भावना बाळगून कोणतेच हित होणार नाही. ती भावना आता मागे पडली पाहिजे. उत्पादन वाढविण्याचा शेती हा पवित्र धंदा आहे, तसेच शेतमजूर हा प्रतिष्ठित माणूस आहे असे समजण्यात आले पाहिजे.

कारखानदाराने शेतकऱ्याकडे पिळवणुकीच्या भावनेने पहाणे म्हणजे आपण ज्या फांदीवर बसलो आहोत ती फांदीच बुंध्यापासून तोडून टाकण्यासारखे होय.

—ना. वसंतराव नाईक.

आदर्श राजकारणी

ना. शंकरराव चव्हाण

राजकारणी मनुष्याला सर्वांची मने सांभाळणे कठिण असते. मग वसंतरावजींच्या लोकप्रियतेचे रहस्य काय ? त्यांचे ज्येष्ठ सहकारी नामदार श्री. शंकररावजी चव्हाण मुख्यमंत्र्यांच्या स्वभाववैशिष्ट्यावर प्रकाश टाकताना म्हणतात—

माणूस कितीही मोठा असला तरी अगदी जवळच्या माणसांना तो मोठा वाटत नाही. श्री. वसंतराव नाईक यांच्या वावतीतहि आम्हा सहकाऱ्यांची स्थिती काहीशी अशीच झाली आहे. सौजन्यशील मित्राची त्यांची प्रतिमा मनावर इतकी पक्की ठसली आहे की, त्यांच्या मोठेपणाची नीट कल्पना येऊ नये. त्यांचा उदार, मनमोकळा व निगर्वी स्वभाव, कार्यतत्परता, सामान्य जनाविषयींची प्रामाणिक कळकळ, सहकाऱ्यांशी सौजन्यशील वागणूक, विरोधाविषयीही त्यांना वाटणारा आदर आदी बहुविध गुणामुळेच श्री. वसंतरावजीं इतके लोकप्रिय झाले आहेत. आम्हा सहकाऱ्यांना तर ते अगदी जवळच्या मित्रासारखे वाटतात. त्यामुळे त्यांच्या सन्मानार्थ निघणाऱ्या गौरव ग्रंथात त्यांच्यासंबंधी लेख लिहिताना प्रथम लेखणी घोटाळते, परंतु या प्रसंगाच्या निमित्ताने त्यांचेसंबंधी चार शब्द लिहणे हे मी माझे कर्तव्य समजतो.

श्री. वसंतरावजींच्या मुख्यमंत्रीपदाच्या कारकीर्दीला फार तर तीन वर्षे झाली असतील. परंतु या अवधीत त्यांनी राष्ट्रीय राजकारणातहि अग्रगण्य स्थान मिळविले. ते पुरोगामी विचारसरणीचे लोकप्रिय मुख्यमंत्री म्हणूनच ओळखले जातात. विशेषतः शेतकऱ्यांविषयी त्यांना असलेली कळकळ सर्वश्रुत आहे. वसंतरावजींच्या या यशामागे गेल्या सुमारे दीड तपांच्या निरलस जनसेवेची तपश्चर्या आहे, तसेच त्यांचे समयानुकूल व्यवहारी व लोकाभिमुख धोरणहि आहे. यंदाच त्यांनी त्यांच्या वाढदिवसानिमित्त होणारा सत्कारसोहळा राज्यातील व देशातील एकूण परिस्थिती विचारात घेऊन स्वतःच रद्द केला व घरगुती समारंभात यवतमाळ जिल्ह्यातील

त्यांच्या चाहत्यांनी अर्पण केलेली रु. १,५३,००० ची थैली, स्वतःचे रु. ११,१५३ घालून ते जनकल्याणाच्या हितासाठी विश्वस्ताकडे सोपविण्याचे जाहीर केले आहे. श्री. वसंतरावांच्या परोपकारी व लोकाभिमुख विचारसरणीचेच हे द्योतक आहे.

श्री. वसंतरावजींना प्रशासनाचा प्रदीर्घ अनुभव आहे. पुसद येथील नगरपालिकेचे ते अनेक वर्षे नगराध्यक्ष होते. १९५२ मध्ये ते मध्यप्रदेश विधानसभेवर निवडून आले व स्व. रविशंकर शुक्ल यांच्या मंत्रिमंडळात महसूल उपमंत्री झाले. महाराष्ट्र राज्य स्थापन झाल्यावर कृषी व महसूल खात्यांची सूत्रे त्यांनी सांभाळली. आता त्यांनी मुख्यमंत्रीपदाव्यक्तिरिक्त उद्योग-विभागाचीहि जबाबदारी सांभाळली आहे. उपमंत्रीपदापासून मुख्यमंत्रीपदापर्यंतच्या प्रवासात त्यांनी उल्लेखनीय असे कार्य केले आहे.

त्यांनी सांभाळलेल्या प्रत्येक खात्यावर त्यांनी आपल्या व्यक्तिमत्त्वाची छाप उमटविली.

महाराष्ट्रातील कमाल जमीन-धारण कायद्याची आखणी करण्यासाठी नेमलेल्या समितीचे ते अध्यक्ष होते. हा कायदा, समाजवादाच्या मार्गावरील महत्त्वाचा टप्पा गणला जातो.

महाराष्ट्रातील पंचायत राज्य व्यवस्था भारतात आदर्श मानली जाते. महाराष्ट्रातील पंचायत राज्य संस्थांची भक्कम पायावर उभारणी करण्यात नाईक-साहेबांचा फार मोठा हात आहे. सत्तेच्या विकेंद्रीकरणाची रूपरेषा आखण्यासाठी नेमलेल्या समितीचे ते अध्यक्ष होते. या समितीचा अहवाल नाईक समितीचा अहवाल म्हणून प्रसिद्ध आहे. या दृष्टीने, पंचायत संस्थांच्या कार्यक्षमतेचे व यशाचे वरेच श्रेय श्री. वसंतरावांकडेच जाते.

श्री. वसंतरावजींनी केलेली आणखी एक अत्यंत महत्त्वाची कामगिरी म्हणजे शेतमालाचे भाव ठरवून देणे ही होय. मध्यंतरी राज्यात अन्नधान्याची चणचण निर्माण झाली तेव्हा अन्नधान्याच्या उत्पादनाला कशी चालना देता येईल असा प्रश्न निर्माण झाला. व्यापारी शेतकऱ्याजवळून पडत्या किंमतीत माल खरेदी करून तो लोकांना वाढत्या किंमतीत विकत. शेतकऱ्यांच्या पदरात योग्य किंमतीचे माप पडल्याशिवाय शेतकरी धान्याचे उत्पादन वाढवू शकणार नाही म्हणून अन्नधान्याचे भाव निश्चित करून पेरणीपूर्वी ते जाहीर करण्याचा निर्णय महाराष्ट्र सरकारने घेतला. अन्नधान्याचे भाव निश्चित करणारे महाराष्ट्र हे देशातील पहिले राज्य होय. या धोरणावर प्रथम टीका झाली तरी आता केंद्र सरकारही या धोरणाचे अनुकरण करीत आहे हे उल्लेखनीय होय.

श्री. नाईक यांचा एकूण दृष्टिकोणच पुरोगामी आणि सुधारणावादी आहे. सर्वच गरीब व पददलिताविषयी श्री. वसंतरावजींना फार सहानुभूती आहे. त्यामुळे

शासनाचे घोरण ठरवितांना लहान शेतकरी, मोठ्या गावाशी दळणवळण नसल्यामुळे आर्थिक दृष्ट्या मागासलेली खेडी, शिक्षणापासून वंचित राहिलेला समाज, यांच्या कल्याणाच्या योजनांचा ते हिरीरीने पुरस्कार करतात. कल्याणकारी राज्याची कल्पना मुळातच त्यांच्या स्वभावात भिनलेली आहे असे वाटते. आधुनिकता, उपयुक्तता व व्यवहार्यता यांची माफक सरमिसळ त्यांच्या स्वभावात आणि विचारसरणीत दिसून येते. शतकानुशतकांच्या वर्दळीने निर्माण झालेल्या चाकोरीतून बाहेर पडण्यास ते नेहमीच उत्सुक असतात. महाराष्ट्राचे कृषी मंत्री असताना त्यांनी महाराष्ट्रातील शेतीला आधुनिकतेची जोड देऊन चालना देण्याचा प्रयत्न केला व आज ते मुख्यमंत्री असले तरी शेती कशी सुधारेल व शेतकऱ्यांची स्थिती कशी सुधारेल याचाच सतत विचार करीत असतात. अन्नधान्यासाठी प्रत्येक वेळी हाती झोळी घेऊन जावे लागते म्हणून त्यांनी महाराष्ट्रातील अन्नधान्याची तूट त्वरित भरून काढण्यासाठी जोमाने प्रयत्न सुरू केले. त्यामुळे, आज महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांमध्ये आत्मविश्वास निर्माण झाला आहे व याचा एकूण ग्रामीण व्यवस्थेवर इष्ट असाच परिणाम होईल.

श्री. वसंतरावजींना शेतकरी व इतर मागासलेल्या वर्गाविषयी सहानुभूती वाटते याचा अर्थ इतरांकडे त्यांचे दुर्लक्ष होते असे नाही. त्यांचा दृष्टिकोन विशाल व समतेचा आहे. महाराष्ट्रात शेतीप्रमाणेच उद्योगधंद्यांनाहि महत्त्वाचे स्थान आहे. मुख्यमंत्र्यांनी उद्योगखाते स्वतःकडे घेतले असून उद्योगपतींशी त्यांनी अत्यंत स्नेहाचे संबंध निर्माण केले आहेत. सरकार व उद्योगपती यांच्यात चांगले सहकार्य राहून उद्योगधंद्यांची वाढ व्हावी यासाठी ते सतत प्रयत्नशील असतात.

राजकारणी मनुष्याला सर्वांची मने सांभाळणे कठिण असते. मग श्री. वसंतरावांच्या लोकप्रियतेचे रहस्य काय ? मला वाटते की, पुरोगामी आणि आधुनिक दृष्टिकोन, भेदभावविरहित विचारसरणी व वचनात आणि वर्तनात प्रामाणिकपणा हेच त्यांच्या लोकप्रियतेचे कारण आहे. ते बोलतात ते प्रामाणिकपणे वाटते तेच बोलतात. केवळ कुणाला खूष करण्यासाठी ते बोलत नाहीत. त्यामुळेच त्यांच्या वचनात कुणाविषयीहि पूर्वग्रहदूषितता नसते. कोणत्याही नवीन विचारांचा स्वीकार करावयास ते सदैव तयार असतात. परंतु त्याचबरोबर असे नवीन विचार व्यवहाराच्या व सचोटीच्या कसोटीला उतरले पाहिजेत असा त्यांचा आग्रह असतो. त्यामुळेच त्यांच्याशी सहमत न होणारा माणूससुद्धा त्यांच्या प्रामाणिकपणाविषयी शंका घेऊ शकत नाही. त्यांच्या मनमोकळ्या स्वभावामुळे त्यांच्या संपर्कात येणाऱ्या प्रत्येक व्यक्तीला — सेनापती बापटांसारखे उपोषणाला बसलेले नेते असोत की पक्षातला एखादा कार्यकर्ता असो — ते त्याच मनमोकळेपणाने, जबाबदारीने व सौजन्याने त्यांच्याशी बोलतील व त्यांना आपलेसे करून घेतील.

श्री. वसंतराव महाराष्ट्राचा कारभार दक्षतेने व कार्यक्षमतेने पहात आहेत. त्यांच्या मार्गदर्शनाचा महाराष्ट्राला लाभ होत राहो व त्यांच्या उत्कर्षाची कमान वाढत राहो अशी शुभेच्छा मी व्यक्त करतो.



महाराष्ट्र गरीब असला तरी महाराष्ट्राची जनता विचारी आहे. महाराष्ट्र सरकार योग्य मार्गाने समाजवाद आणण्याचा यत्न करीत आहे हे जनतेने लक्षात घ्यावे. यात जर कोठे फुचराई झाली असे वाटत असेल तर जरूर टीका करा. आपल्या सर्व अडचणी तुम्ही मंत्र्यांपुढे अवश्य मांडा. श्री. यशवंतराव चव्हाण यांनी जनतेच्या अडीअडचणी समजावून घेऊन त्या सोडविण्याबाबत प्रयत्न करण्याची जी परंपरा निर्माण केली ती यापुढेही कायम राहाणार आहे असे मी आश्वासन देतो.

—ना. वसंतराव नाईक

(ता. १६-२-१९६४ च्या भाषणातून).

भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य

तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी

भारतीय लोकशाहीवर सध्या अंतर्बाह्य संकटे कोसळत आहेत. विचारवंतांना तिचे भवितव्य चिंताजनक वाटू लागले आहे. कृषि-क्रांतीचा लढाऊ कार्यक्रम तातडीने हाती घेणे ही केवळ आर्थिक नसून सर्वांगीण गरज झाली आहे. नाईकसाहेबांच्या कृषिविषयक क्रांतिकारक कार्यक्रमाचे तात्त्विक अधिष्ठान कोणते याचा शास्त्रीबुवांनी येथे शोध घेतला आहे.

भारतीय लोकशाही चिनी आक्रमणापासून तो आजच्या क्षणापर्यंत झपाट्याने अंतर्बाह्य संकटांच्या तावडीत दिवसेंदिवस अधिक सापडत आहे. भारतीय लोकशाहीला अनुकूल आर्थिक पाया नसतानाच व विकासाच्या दीर्घकालीन अवस्थामधून न जातानाच ती संपूर्ण स्वरूपात उभारली गेली. जादूगाराच्या मंत्रातील अक्षरांच्या प्रभावाप्रमाणे असलेल्या लिखित संविधानाच्या अक्षरांनी राजकीय स्वरूपात ती अवतरली. येथील परंपरागत संस्कृती व समाजरचना सुद्धा अजून लोकशाहीच्या नैतिक मूल्यांशी अत्यंत विसंगत अशीच राहिली आहे. आर्थिक, सांस्कृतिक किंवा सामाजिक असे कसलेच अनुरूप अधिष्ठान नसताना ती अघांतरी उभी आहे.

भारतातील सर्व प्रौढ व्यक्तींना मताधिकार प्राप्त झालेला आहे. त्यातील फार मोठा जनसमाज मताधिकार कसा व कशाकरिता वापरावा, प्रतिनिधी कशाप्रकारचा असावा यासंबंधी फारसे राजकीय शिक्षण न मिळालेला असाच आहे. जाति-भावेने तो बद्ध आहे. त्या बंधनाच्या पलीकडे, राजकीय जाणीवेच्या अभावामुळे पाहण्याची शक्ती त्याच्यात नाही. त्याला आधुनिक मानवी जीवनाला परिपोषक अशी उच्चतम निष्ठा प्राप्त झालेली नाही. अशी उच्चतम आधुनिक निष्ठा प्राप्त होण्यास व वाढण्यास परिपोषक असा प्रगतीचा दैनंदिन जीवनात अनुभव न मिळाल्यामुळे त्याच्यात आत्मविश्वासाने कोणतीही विधायक कृती करण्याची धमक वाढलेली

नाही. जे सामुदायिक मानवी जीवन विधायक कृती करीत असताना प्राप्त होणाऱ्या सुखदुःखांचा उत्साहाने अनुभव घेत नाही ते सामुदायिक मानवी जीवन विध्वंसक शक्तींच्या स्फोटक द्रव्यांचे हळूहळू कोठार बनत जाते. तसे कोठार भारतातील बहुजन समाज बनू लागला आहे.

बहुजन समाज हा शब्द सत्तास्पर्धेच्या राजकारणात जातिलक्षी बनला आहे. आर्थिक व सांस्कृतिक मोजमापे लावल्यास तो सर्व जातींना व धर्मांना आडवा छेदून जातो. प्रत्येक जातीत व धर्मात हरिजन व जनजातौ सोडल्यास आर्थिक व सांस्कृतिक उच्चनीचता कर्मांजास्त प्रमाणात आहेच. ग्रामीण विभागात विशेषतः उच्च स्तरात सुमारे ३० टक्के व नीच स्तरात सुमारे ७० टक्के जनता विभागलेली दिसते. उच्च-स्तरात बागायतदार व वीस एकरावरील जमिनीचा मालक, भरभराटीस आलेला सागवानी दुमजली भक्कम इमारतीचा मालक असलेला व्यापारी व काही तुरळक वाकबगार कारागीर मोडतात, व बाकीच्या नीच स्तरातील वर्ग म्हणजे चार पाच एकरापर्यंत कोरडवाहू व नापिकी जमिनीचे मालक, शेतमजूर, डबघाईस आलेले बलुतेदार व कारागीर जाती खितपत पडल्या आहेत. शहरातही हेच तीस टक्के व सत्तर टक्के सरासरी प्रमाण उच्च स्तरातील व नीच स्तरातील जनतेला लागू पडते. रोजमजुरी करणारे स्त्री-पुरुष, प्राथमिक शिक्षक, शंभर दीडशेपर्यंत मासिक वेतन मिळविणारे कारकून व कामगार, सेवानिवृत्त अल्पवेतनी माणसे आणि बेकार, या सर्व खालच्या थरातील लोकांवर सर्वस्वी अवलंबून असलेले वृद्ध व बालक हे दुस्थितीत जीवन कंठीत आहेत. पगारवाढ ज्या प्रमाणात होते त्याच्या चौपटीच्या वेगाने जीवनोपयोगी वस्तूंच्या किंमती भडकत आहेत. भविष्यकाली काय होईल याबद्दल साशंक व निराश अनंत मने भकास जीवनाकडे किलकिल्या व स्तिमितदृष्टीने बघत आहेत, त्यामुळे ते निरुत्साही व कृतिशून्य अधिकाधिक बनत आहेत. ह्या बहुजन समाजाच्याच आधारावर भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य अवलंबून आहे. राजकीय दृष्ट्या भारतीय लोकशाहीचा कायदेशीर व संविधानसिद्ध आकार भव्य दिसतो. आशियातील व आफ्रिकेतील राष्ट्रामध्ये अशी संविधान दृष्ट्या भव्य लोकशाही कोठेही नाही. ही लोकशाही निर्माण करण्याचे श्रेय ऐतिहासिक दृष्ट्या ब्रिटिश राज्यकर्ते व काँग्रेसचे स्वातंत्र्याचे आंदोलन या दोघांकडेही जाते. विशेषतः स्वातंत्र्योत्तर काळात या लोकशाहीची रचना करण्याचे सर्व श्रेय काँग्रेसच्या नेतृत्वाकडे जाते. काँग्रेसने ही लोकशाही उभारून तिला स्थिर करण्याकरिता क्रमाने वृद्धिगत होणाऱ्या आर्थिक, राजकीय व सांस्कृतिक योजना कार्यान्वित करण्यास प्रारंभ केला आहे. परंतु अलीकडची एक दोन वर्षे सोडल्यास या लोकशाही राजकीय क्रांतीला स्थिर व बळकट करण्याकरिता आवश्यक असलेल्या आर्थिक पायाकडे बरेचसे दुर्लक्ष केले. शेतकरी क्रांति हा ऐतिहासिक दृष्ट्या व राज्यशास्त्र दृष्ट्या लोकशाहीचा मुख्य पाया होय. शेतकरी क्रांतीच्या मुख्य

कार्यक्रमामध्ये सामाजिक संबंधांचे परिवर्तन व शेतीच्या उत्पादनाची वाढ या दोन भागांचा समावेश होतो. कसेल त्याची जमीन या तत्त्वाची कायदेशीर व वास्तविक अंमलबजावणी केल्याने सामाजिक संबंधांमध्ये बदल होऊन क्रांति होते. आणि शेती-व्यवसाय आर्थिक दृष्ट्या सधन व समृद्ध केल्याने शेतमजुरांच्या आर्थिक परिस्थितीत सुधारणा होते व ग्रामीण विभागातील कारागीर वर्गाच्या व्यवसायालाही तेजी येते. या दोन्हीही बाबतीत गेल्या १८ वर्षांत प्राप्त झालेले यशाचे प्रमाण निराशाजनक ठरले आहे. जमीनदारी, जहागीरदारी व इनामदारी नष्ट झाली हे जरी खरे असले तरी कसेल त्याची जमीन हे उद्दिष्ट फारसे सिद्ध झालेले नाही. हे सिद्ध झाले नाही तरी शेतीचा व्यवसाय समाजाच्या अन्नवस्त्राचा प्रश्न सोडविण्याइतका भरभराटीस आला असता तरी कसेल त्याची जमीन या सिद्धान्ताचे आर्थिक उद्दिष्ट साध्य झाले, असे म्हणता आले असते. मालकी हक्क कसणाऱ्यांकडे देण्यामध्ये कसणाऱ्यांचा आत्म-विश्वास वाढून त्यांचे कर्तृत्व वाढीस लावावे आणि त्यामुळे शेतीव्यवसाय भरभराटीस यावा असा त्या आर्थिक उद्दिष्टाचा अर्थ आहे. हे शेतकीसंबंधी आर्थिक उद्दिष्ट सिद्ध झाले असते तर भरभराट भाववाढीलाही आळा बसला असता. जीवनाची व उपभोगाची साधने मुबलक प्रमाणात उपलब्ध करून दिल्याने मागणी व पुरवठा यांचा समतोल ढळत नाही. तो पूर्णपणे ढळल्यामुळेच भयंकर भाववाढीचे संकट भारतावर कोसळले आहे.

भारत संघराज्य सरकार व विशेषतः महाराष्ट्र राज्य सरकार या बाबतीत अलीकडे अधिक सावध होऊन हा शेतकरी क्रांतीचा कार्यक्रम अंमलात आणण्यास सन्नद्ध झाले आहे ही गोष्ट म्हणजे निराशेच्या अंधकारामध्ये दूर अंधूक दिसणारी प्रकाशकिरणेच होत. विशेषतः महाराष्ट्र राज्याचे माननीय मुख्यमंत्री यांनी या प्रश्नाचे गांभीर्य कोणाही इतर भारतीय प्रशासकापेक्षा अधिक तीव्रतेने ओळखले आहे असे त्यांच्या मंत्रीमंडळाने आखलेल्या शेतकीसंबंधी धोरणावरून सहज लक्षात येते.

परंतु त्यांनी आखलेल्या शेतकीसंबंधी कार्यक्रमाची अंमलबजावणी यशस्वी होण्याच्या मार्गात जुनी, मंद व दिरंगाईच्या धोरणाची शासनयंत्रणा किंवा नोकरशाही हिचाच अडथळा येणार आहे. ब्रिटिशांनी ही नोकरशाही यंत्रणा उभारून एक शतकापेक्षा अधिक काळपर्यंत यशस्वी रीतीने साम्राज्यसत्ता राबविली. लोकशाहीच्या संदर्भात, परकीय साम्राज्य सत्ता राबविण्याची ही प्रचंड यंत्रणा किंवा ही पद्धती अत्यंत अकार्यक्षम ठरली आहे. लोकशाहीच्या ध्येयधोरणांची उत्साहाने व कर्तव्यबुद्धीने अंमलबजावणी करण्याचा दृष्टिकोणच या शासनयंत्रणेच्या मुळाशी नाही. सचिव, सहसचिव, उपसचिव, आयुक्त, संचालक इत्यादि पदांवर असलेला अधिकारी वर्ग शिक्षित असला तरी त्याची कार्यपद्धति त्यांच्यात नेतृत्व निर्माण करणारी नाही.

त्यांच्यात आदर्शवाद नाही, योजकता नाही, सर्जनशील प्रेरणा तर नाहीच नाही- त्यांच्या हाती असलेल्या शासनशक्तीचा महिमा नवी सृष्टी किंवा नवे विश्व घडविणारा आहे याची त्यांना मुळीच प्रतीती नाही. कायदेबाजपणा हा प्रशासकाचा मुख्य गुण ते समजतात. कोणत्याही कार्यक्रमाची अंमलबजावणी करण्याची तातडी लागली आहे याचे लक्षण या शासनयंत्रणेत क्वचितच आढळते. महाराष्ट्र राज्याच्या मंत्रीमंडळाने जो उत्कृष्ट व आदर्शवादी कार्यक्रम हाती घेतला आहे ते केवळ असल्या शासनयंत्रणेमुळे स्वप्नरंजन ठरण्याचा धोका आहे असे अनेक विचारवंतांना वाटत आहे. परंतु हा धोका आहे असे ध्यानात घेऊन शासनयंत्रणा सुधारण्यात यश येईल याबद्दलही कोणी खात्री देऊ शकत नाही. बदलण्याचा प्रयत्न केल्यास आगीतून फोफाट्यात पडण्याचाही संभव आहे हे नाकारून चालत नाही. भारत व महाराष्ट्र सरकार दुष्टचक्राच्या आपत्तीत सापडले आहे.

शेतीच्या उत्पादनाच्या वाढीचे लक्ष्य महाराष्ट्र सरकार व भारत सरकार येत्या चतुर्थ पंचवार्षिक योजनेच्या कालावधीत साध्य करण्यात यशस्वी झाले तरच भारतीय लोकशाहीचा अंतर्बाह्य आक्रमणापासून बचाव होईल व तिची मुळे खोलवर रुजतील. संघःस्थिति हळूहळू स्फोटक रूप धारण करीत आहे. दुसऱ्या महायुद्धाच्या नंतरच्या काळात एक नवीन प्रकारचे गनिमी युद्धाचे तंत्र उभारले जात आहे. हे तंत्र भारतातही हळूहळू सरहद्दीवरून प्रवेश करीत आहे. दुरवस्थेत सापडलेला बहुजन समाज या सशस्त्र युद्धाच्या गनिमी तंत्रात गोवला जाण्याचे भयही नजीकच्या काळात विचारवंतांच्या मनात डोकावत आहे. भारतीय लोकशाहीचे भवितव्य यामुळेच शंकाग्रस्त होत आहे.



कृषि-औद्योगिक समाज निर्माण करण्याच्या महत्तम व पवित्र कामासाठी महाराष्ट्रातील सर्व जनतेने वंश, जात, धर्म, पंथ व पक्ष बाजूस सारून संघटित रीतीने कार्य करावे.

—ना. वसंतराव नाईक.

स्फूर्तिशाली नेतृत्व

ना. अण्णासाहेब शिंदे

अल्प आणि मागासलेल्या जमातीचाही माणूस मुख्यमंत्री होऊ शकतो याचे विलोभनीय व राष्ट्रवादी महान आदर्श असे उदाहरण सबंध देशाला महाराष्ट्राने घालून दिले आहे. भारत सरकारचे शेती व अन्न खात्यातील उद्योगमंत्री नामदार अण्णासाहेब शिंदे यांनी केलेले वसंतरावांच्या तेजस्वी ध्येयवादाचे मर्मग्राही विवेचन :

एक साधा, सरळ, प्रेमळ आणि अक्षरशः शेतकरी मनाचा, शेतकरी स्वभावाचा आणि खरोखरच शेतकरी खाक्याचा मराठामोळा बाणा म्हणजेच श्री. वसंतराव होत. धनधान्यसमृद्धि, धरती मातेची प्रफुल्लता आणि शेतकऱ्यांची उन्नती यांचा अहोरात्र ध्यास, अंतर्गामी तळमळ व कर्तव्यातील कळकळ यांचा जिवंत आविष्कार वसंतरावांच्या चैतन्यमय व स्फूर्तिशाली जीवनात सतत बहरत असतो. त्यांनी महाराष्ट्राच्या कृषिक्षेत्रात निःसंशय पुरुषार्थ व एक नवीन चैतन्य निर्माण केले. त्यांच्याइतका शेतिसुधारणेचा ध्यास लागलेला मुख्यमंत्री क्वचितच. त्यांनी महाराष्ट्रातील कष्टशील आणि त्यागी शेतकऱ्यापुढे एक तेजस्वी ध्येयवाद ठेवला आहे.

महाराष्ट्रात मराठी मातृभाषा असणारे मराठवाडा, विदर्भ हे विभाग एकत्र येऊन विशाल महाराष्ट्र प्रांताची निर्मिती व्हावी हे मराठी माणसाचे स्वप्न संयुक्त महाराष्ट्राची स्थापना झाल्यानंतर साकार झाले. नव्याने निर्माण झालेल्या संयुक्त महाराष्ट्रात या महाराष्ट्राचे थोर व आदरणीय नेते श्री. यशवंतरावजी चव्हाण यांनी एक उज्वल अशी परंपरा घातली होती. आणि तीच थोर परंपरा त्याच ध्येयाने, नेटाने आणि जोमाने नामदार वसंतरावजींनी अतिशय यशस्वीपणाने चालविली आहे. महाराष्ट्राचा मुख्यमंत्री हा प्रादेशिक वादापासून अलिप्त आणि खऱ्या अर्थाने सर्व महाराष्ट्राचे प्रतिनिधित्व नैतिक अर्थाने करणारा असावा ही नामदार यशवंतरावजींनी घालून दिलेली परंपरा आणि त्यांच्या ध्येयपूर्तीचा योग्य वारसा नामदार वसंतरावजींनी समर्थपणे चालविला आहे.

हल्ली अनेक प्रांतात शासन, संसदीय पक्ष व पक्षसंघटना यामधील संबंध चांगले राहिलेले नाहीत. अनेक प्रांतात शासन व पक्षसंघटना यांचे परस्परातील संबंध दुरावलेले आहेत. परंतु नामदार वसंतरावजींच्या बाबतीत तसे घडले नाही. याउलट महाराष्ट्रात शासन, संसदीय विभाग व प्रदेश काँग्रेस आणि संघटनात्मक विभाग यांचे आपसातील संबंध हे अतिशय चांगले व स्वच्छ आहेत. तेथे विचारांची देवाण-घेवाण आहे, सल्लामसलत आहे, सर्वांना बरोबर घेऊन काम करण्याची कळकळ व प्रभावी भावना आहे. शासन आणि शासनकर्ता पक्ष यांचे उत्कट ऐक्य राखण्यात नामदार वसंतरावजी यशस्वी ठरले आहेत.

महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्रीपदाची स्वगिरावरील जबाबदारी सोडून जेव्हा नामदार यशवंतरावजी देशाच्या संरक्षणकार्यासाठी केंद्र सरकारात गेले त्यावेळी महाराष्ट्राचा नवीन मुख्यमंत्री कोण होतो याविषयी सर्व महाराष्ट्रभर एक विशेष औत्सुक्य निर्माण झाले होते. नवीन मुख्यमंत्री कोण होतो व तो महाराष्ट्राचा हा गाडा कितपत हाकू शकतो याविषयी जनतेच्या मनांत कुतुहल व उत्सुकता होती. तथापि नामदार वसंतरावजींनी आपल्या यशस्वी कारकीर्दीने महाराष्ट्रातील सामान्य जनतेच्या अपेक्षा पूर्ण केल्या व विश्वास संपादन केला एवढेच नव्हे तर नामदार यशवंतरावजींचा संपूर्ण विश्वास संपादन केला आहे.

महाराष्ट्रात बहुजन म्हणून समजल्या जाणाऱ्या मराठा जातीच्याच माणसांचे पुढारीपण असावे आणि म्हणूनच मराठा जातीचाच मनुष्य महाराष्ट्राचा मुख्यमंत्री होऊ शकतो, इतरांना तेथे अजिवात स्थान नाही अशा प्रकारच्या शंका व भावना महाराष्ट्रातील अनेकांच्या मनात डोकावत होत्या. नामदार नाईक मुख्यमंत्री झाल्यामुळे महाराष्ट्रात लायकीनेच मुख्यमंत्रीपद मिळते, त्याला जातीचा शिक्का लागत नाही आणि विशेषतः अल्प आणि मागासलेल्या जमातीचाहि माणूस मुख्यमंत्री होऊ शकतो याचे विलोभनीय व राष्ट्रवादी महान आदर्श असे उदाहरण संबंध देशाला महाराष्ट्राने नामदार वसंतरावजींना मुख्य मंत्री करून घालून दिले आहे. काँग्रेसच्या निघर्मी राज्याची कल्पना मूर्त स्वरूपात खऱ्या अर्थाने महाराष्ट्रात आली आहे आणि निघर्मी राज्याचे खरे स्वरूप, समाजातील विविध जातीजमातीमधील ऐक्य आणि राष्ट्रनिष्ठा यांचा आज महाराष्ट्रात सुरेख संगम झाला आहे.

महाराष्ट्र हा काही कोणा एका जमातीचा नाही. सर्व जातीजमातीचे दणकट ऐक्य हीच खरी महाराष्ट्राची आणि पर्यायाने आमच्या मायभूमीची खरी शक्ती आहे. आणि नामदार वसंतरावजींनी नेमके तेच साधले आहे. ही एकजूट आणि अभेद्य ऐक्य वळकट करण्याचे कार्यात नामदार वसंतरावजी फार मोठी मोलाची भर घालीत आहेत.

“ वसंतराव नाईक यांच्या हाती महाराष्ट्र सुरक्षित आहे ” असे जे विश्वास-पूर्ण गौरवोद्गार नामदार यशवंतरावजींनी त्यांच्या ५३ व्या वाढदिवस समारंभात काढले त्यातच नाईकांच्या आजवरच्या कार्याचे मूल्यमापन झाले आहे. माणूस पाह-वाच कर्तृत्व पटावे असे प्रभावी व्यक्तिमत्व नामदार वसंतरावजींच्या ठायी आहे असे नामदार यशवंतरावजींनी बोलून दाखविले आहे. नामदार वसंतरावजींच्या रूपाने खराखुरा शेतकरीच महाराष्ट्राचा मुख्यमंत्री झाला हे जे गौरवाचे उद्गार ना. यशवंतरावजींनी काढले आहेत त्याविषयी कोणाही मराठी माणसास आदर वाटल्या-शिवाय राहणार नाही. इतकी दृढ आत्मीयता ना. नाईकांनी महाराष्ट्रातील जनतेत स्वतःविषयी निर्माण करविली आहे. महाराष्ट्राचा सर्वांगीण अभ्युदय करण्याकरिता ना. वसंतराव नाईक यांना उदंड आयुष्य लाभो हीच ईश्वराजवळ प्रार्थना.



एवढ्या मोठ्या देशांत लहान मोठे वाद असणारच. परंतु अशा प्रकारचे वाद अथवा मतभेद हे राष्ट्रीय एकात्मतेला जितके घातक होतात त्यापेक्षा ते ज्या रीतीने हाताळले जातात ती रीत अधिक घातक होऊ शकते. उदाहरणार्थ, जेव्हा भाऊ-भाऊ भांडतात, पण आपले मतभेद शांततेने मिटवितात, तेव्हा त्यांच्यातील बंधुत्वाची भावना नाहीशी होत नाही. पण तेच भाऊ जर भडकून जातील व एक-मेकांस मारू लागतील, तर बंधुत्वाची भावना नष्ट होईल. हीच गोष्ट राष्ट्रातील जनतेची आहे. भारतीय भारतीयावरच हल्ला करतील, व एकमेकांचे प्राण घेतील, तसेच जाती, पंथ, धर्म, भाषा, किंवा प्रदेश यांच्या नावाखाली जाळपोळ व लुटालूट करू लागतील तर त्याचा परिणाम द्वेष, कटुता व सूड बुद्धी निर्माण होण्यात होईल. असे घडू नये म्हणून आपसातील वाद शांततामय मार्गांनी मिटविणे जरूरीचे आहे. त्यातच राष्ट्राची शक्ती व जनतेचे हित सामावलेले आहे. सुसंस्कृत समाजाची ही विचारप्रणाली आहे.

—ना. वसंतराव नाईक.

ज्यांनी महाराष्ट्राची शान वाढवली

डा. भ. कर्णिक

ना. यशवंतराव चव्हाण यांच्या पाबलावर पाऊल टाकून वसंतराव नाईक यांनी केंद्रीय नेतृत्वात आपले पाय रोवले आहेत व भारतामध्ये महाराष्ट्राची शान वाढविली आहे. या यशाचे रहस्य कशात आहे ?

वसंतराव नाईक हे अशा काही निवडक मुख्य मंत्र्यांत मोडतात की ज्यांचे कार्यक्षेत्र प्रदेश राज्यापुरते मर्यादित असूनही ज्यांचा अखिल भारतीय राजकारणावर पगडा बसलेला आहे. अशा निवडक मुख्य मंत्र्यांत कामराज यांची गणना होते. त्यांनी मद्रास राज्याचा कारभार इतक्या कार्यक्षमतेने केला की केंद्रीय नेत्यांना त्यांची सल्लामसलत घेणे अपरिहार्यच झाले. इतके अपरिहार्य की केंद्रीय राज्यकर्त्यांपैकी कांही मंत्र्यांना अधिकारपदावरून निवृत्त करण्यासाठी पंडित नेहरूंना कामराज यांची मदत घ्यावी लागली. यशवंतराव चव्हाण यांनी महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री म्हणून असेच नाव मिळविले आणि मुख्यमंत्री असतानाच त्यांची अखिल भारतीय पुढाऱ्यात गणना होऊ लागली व वेळ येताच संरक्षण मंत्रीपदाची जबाबदारी खुद्द पंडितजींना त्यांच्या शिरावर टाकावी लागली. कै. बिधनचंद्र राय हे तर असे एक मुख्यमंत्री होते की ज्यांच्या स्वागतासाठी पंडितजी पालम विमानतळावर जात असत. पंडितजींच्या अगदी आवडत्या सल्लागारांपैकीच ते एक होते. वसंतराव नाईक हे तसे राजकारणात नवीन आणि पंडितजी व बिधनचंद्र राय यांच्या मानाने वयाने लहान. पण महाराष्ट्र राज्याचे मुख्य मंत्री झाल्यानंतर त्यांनी पंडितजी व इतर केंद्रीय नेते यांच्यावर अशी काही छाप टाकली की मुख्य मंत्र्यांची किंवा राष्ट्रीय विकास मंडळाची बैठक भरली की वसंतरावांचा विधायक विचार आणि अनुभवी सल्ला पंडितजींच्यापासून सर्वजण मोठ्या आस्थेने समजावून घेत असत. वसंतराव नाईक यांचे वागणे आणि बोलणे तसे निर्भीड पण तितकेच आर्जवी. आपल्या सुसंस्कृतपणामुळेच त्यांनी पंडितजींवर प्रभाव टाकला. तसे ते स्वभावाने संकोची व भिडस्त. आपल्या यशाची विरुदे मिर-

विण्याची त्यांना सवयही नाही. पण पंडितजींशी आपल्या जडलेल्या संबंधाबद्दल मात्र ते अगत्याने बोलतात. एकदा असेच शिळोप्याच्या गप्पा मारीत असताना त्यांनी पाइप-मध्ये तंबाखू भरताना प्रसन्नपणे म्हटल्याचे मला आठवते, “ काय बुवा माझे भाग्य आहे. पंडितजींचा आणि माझा फार थोडा संबंध आला. पण तेवढ्या काळात त्यांनी माझ्यावर फार प्रेम केले. ” वसंतराव नाईक हे मुख्यमंत्री झाल्यानंतर त्यांना लगेच जे यश प्राप्त झाले त्याचे, पंडितजींचा त्यांच्यावर जडलेला लोभ हे एक मुख्य कारण असू शकेल. पंडितजींच्या स्वभावाची ज्यांना कल्पना आहे, त्यांना कोणते व कसे आचरण आवडत होते यांचा ज्यांनी आडाखा बांधला आहे आणि पंडितजींच्या क्षणिक उत्स्फूर्त रागालोभाची अटकळ बांधून मुत्सद्दीपणाने त्यांच्याशी कसे वागले पाहिजे याचे ज्यांना इंगित कळलेले होते त्यांना नाईक हे पंडितजींच्या हृदयाला स्पर्श करून का गेले याचा बोध झाल्याशिवाय राहणार नाही. पंडितजी खानदानीत वाढलेले. त्या खानदानीची ऐष त्यांच्या आविर्भावात प्रगट होत असे. पण त्यांतूनच त्यांचा दिलही मोहरून आलेला असे. तो दिल प्रसन्न व्यक्तित्वाचा षोकिन असे. आदबशीर वागणुकीवर निहायत खूष होत असे. निर्भीड पण दिलखुलास बोलण्याची बूज राखीत असे. वसंतराव नाईक यांच्या ठायी त्या व्यक्तित्वाची खुमारी पंडितजींना आढळली आणि क्षणाघात त्या दोघात एक सुसंवाद निर्माण झाला.

वसंतराव नाईक यांनी आपल्या कारकीर्दीच्या पहिल्या काही दिवसातच पंडितजींना आपल्याबद्दल का आपलेपणा वाटला याचे इंगित दिलखुलासपणे पत्रकारांना सांगितले होते. त्यांची अशी कल्पना आहे की, आपण नैसर्गिकपणे पंडितजींशी वागलो, बोललो, याचेच त्यांना कौतुक वाटले असावे. तसे कौतुक वाटणे साहजिक होते. पंडितजी आणि इतर नेते यांच्यामध्ये जे नाते होते ते गुरुशिष्यांचे. राज्यकारभाराची घुरा पंडितजींनी हाती घेतल्यानंतरही राष्ट्रीय आंदोलनाचे एक तेजस्वी, दैर्घ्यमान नेते म्हणून त्यांच्या सहकाऱ्यांनी त्यांच्याविषयीचा भक्तिभाव कधी सोडला नाही. म्हणून लालबहादूर शास्त्री म्हणा, यशवंतराव चव्हाण म्हणा हे पंडितजींच्या जवळ जाऊनही त्यांच्यापासून दूर राहिले. त्यांच्यामध्ये परस्पराबद्दलचा आदरभाव राहिला. जिव्हाळा राहिला. पण दोन सुहृदांच्या मैत्रीची जवळीक कधी निर्माण झाली नाही. किंवा असे म्हणता येईल की आपले मन निर्धोकपणे व्यक्त करण्याचा आत्मविश्वास त्यांना वाटला नाही. तसे वाटणे शक्य नव्हते. कारण नेता व अनुयायी यांच्यामधील नात्यात तो निःसंकोच मोकळेपणा येऊच शकत नाही. वसंतराव नाईक यांची परिस्थिती थोडी वेगळी होती. ते पंडितजींच्या जवळ आले तेव्हा आंदोलनाचा काळ मागे पडला होता, त्यांच्या आठवणी सुद्धा बुजू लागल्या होत्या. साहजिकच भारताचे सूत्रधार असे पंडितजी आणि एका मातबर राज्याचे कर्तबगार सूत्रधार असे वसंतराव नाईक या दोघांची इतिहासाच्या पार्श्वभूमीवर नव्हे तर वर्तमान परिस्थितीच्या

संदर्भात ही गांठभेट होत होती. वसंतराव नाईक यांच्या वाजूने तेथे आदर होता, भक्तिभावही होता. पण संकोच नव्हता. भीतीचे दडपणही नव्हते.

एकदा रात्रीच्या वेळी खुलेपणाने गप्पाष्टके करताना जेव्हा पंडितजींनी वसंतरावांना विचारले की, “ तुम्ही कधी सर्वर्या सोडण्याचा प्रयत्न केला आहे का ? ” तेव्हा त्यांनी लगेच हंसत हंसत उत्तर दिले, “ पंडितजी, सोडण्यासारख्या वाईट सर्वर्या मी कधी लावूनच घेत नाही.” त्या क्षणी पंडितजी खळखळून हंसले आणि वसंतराव नाईक व पंडितजी यांच्यामध्ये एक नाजूक जवळीक निर्माण झाली.

नाईकांना हे एक भाग्य वाटते. कोणी म्हणेल हा एक अपूर्व योगायोग आहे. वसंतराव नाईक यांचे निःसंकोच वागणेही पंडितजींना आकस्मिकपणे विलोभनीय वाटले असेल. पण त्या दिवसापासून तीन मूर्तींच्या परिसरात नाईक यांना जिव्हाळ्याचे स्थान मिळाले आणि महाराष्ट्राच्या अनेक प्रश्नांना तेथे वाचा फोडण्याची नाईक यांना संधी मिळाली. बेळगाव-कारवारचा सीमा प्रश्न, गोव्याच्या विलीनीकरणाचा प्रश्न, कृष्णागोदावरीच्या पाण्याचा प्रश्न, नगरहवेलीतील प्रवेशबंदीचा प्रश्न असे अनेक प्रश्न नाईक यांनी पंडितजींशी सहजगत्या बोलता बोलता उकरून काढले आणि पंडितजींच्या मध्ये व त्यांच्यामध्ये जो सुसंवाद निर्माण झाला होता त्यामुळे पंडितजींनी ते कधी झाडून टाकले नाहीत. उलट त्यांची सोडवणूक करण्याची पंडितजींनी नुसती आश्वासने दिली नाहीत, तर प्रत्यक्षपणे आपले व आपल्या सहकाऱ्यांचे मन त्यात ओतले. वसंतराव नाईक यांना अभिमान वाटावा असाच हा प्रतिसाद होता. नाईक यांनी मुख्यमंत्री झाल्यानंतर या प्रश्नांवर भरच दिला नाही तर कधी निर्भीडपणे, कधी झणझणीतपणे त्यांवर वक्तव्ये आणि भाष्ये केली. महाराष्ट्र प्रांतिक काँग्रेस कमिटीचे अध्यक्ष विनायकराव पाटील यांच्यावर नगरहवेलीत प्रवेशबंदी लादल्याबद्दल अशीच एकदा त्यांनी परराष्ट्र खात्याची कानउघाडणी केली होती. उपपरराष्ट्रमंत्री लक्ष्मी मेनन यांनी लोकसभेत जे या प्रश्नावर उत्तर दिले होते त्यातील वर्म काढून नाईक यांनी पंडितजींना म्हटले होते, “ म्हणजे भारतातील एका प्रदेशातून दुसऱ्या प्रदेशात जावयालाही परवानगी लागणार आहे की काय यापुढे ? ” पंडितजी त्या उद्गारावर रागावले नाहीत. त्यांनी शांतपणे या प्रश्नात लक्ष घालावयाचे कबूल केले.

कधी कधी वाटते, पंडितजी भुवनेश्वरला आजारी पडले नसते तर ? तर बेळगाव-कारवारच्या सीमाप्रश्नाची खास सोडवणूक झाली असती. वसंतराव नाईक यांच्या वागणुकीचा खाक्या काही वेगळाच आहे. ते हळूच विषय काढतात तो प्रसंग सावून. मुंबईतील काँग्रेसच्या बैठकीसाठी पंडितजी आले तेव्हा सांताक्रूझच्या विमानतळावरून राजभवनपर्यंत जातानाच नाईक यांनी बेळगावच्या प्रश्नाचे सूतोवाच केले. पंडितजी निस्तब्धपणे ऐकत होते. राजभवन आले तरी पंडितजींनी आपला विचार

व्यक्त केला नाही. पण वसंतराव नाईक यांनी आपला निर्धार सोडला नाही. त्यांनी मोटारीतून उतरताना पंडितजींना हात देतदेतच विचारले, “पंडितजी, आपने राय नहीं दी.” “किसके बारेमें?” पंडितजींनी किंचित् उसळून म्हटले. “बेळगावके प्रदन-पर,” नाईक किंचित् हंसत म्हणाले. पंडितजीही क्षीणपणे हंसले आणि म्हणाले, “हां भाई हां. इंदिराजीसे बात करो. मैं भी बोलूंगा.”

ते क्षीण हास्य पुढील काळात अस्फुट होत गेले हे नाईक यांचे दुर्दैव तसेच महाराष्ट्राचेही दुर्दैव होय. पंडितजींनी मनाशी योजलेले संकल्प अपुरे राहिले. योजलेली वाटचाल पुरी करण्यापूर्वीच ते चिरनिद्रेच्या आधीन झाले. वसंतराव नाईक यांना व्यक्तिगत घाला पडल्यासारखे वाटावे असे काही ऋणानुबंध या थोडक्या काळातच त्यांच्यामध्ये निर्माण झाले होते. त्या ऋणानुबंधाच्या साहाय्याने महाराष्ट्राच्या काही समस्या सोडविण्याची आशाआकांक्षा त्यांच्यामध्ये निर्माण झाली होती. ती आकांक्षा पंडितजींच्या निधनाने नष्ट केली. वसंतराव नाईक यांना आपल्या भावविश्वात ही पोकळी निर्माण झाली असे त्यामुळे वाटले असेल तर त्यात नवल काय ?

नेहरूंच्यावर वसंतरावांनी जी छाप टाकली होती ती केवळ व्यक्तित्वामुळेच नव्हे. वसंतराव नाईक यांच्या शेतीसुधारणेबद्दलच्या कल्पना, शेतीचे उत्पादन वाढविण्यासाठी त्यांनी योजिलेले उपाय आणि एकंदरीने औद्योगिक व ग्रामीण जीवनाबद्दलचा त्यांचा पुरोगामी दृष्टिकोण यांचे पंडितजींना जे ज्ञान झाले होते त्यामुळेच भारतातील आगामी नेतृत्वात पंडितजींनी वसंतराव नाईक यांचे स्थान हेरून ठेवले होते. वसंतराव नाईक यांची व्यवहार्यता ही ध्येयवादाला मारक ठरत नाही हेच त्यांचे वैशिष्ट्य आहे. उलट अनुभव असा येतो की ते लोकांना स्फूर्ती देऊन, कार्यप्रवण करून प्रत्यक्षपणे कामाचा डोंगर उभा करतात आणि तो आदर्श डोळ्यासमोर उभा राहिल्यामुळे उत्पादन वाढविण्याकडे, प्रगतीच्या नवनवीन पाऊलवाटा चोखाळण्याकडे लोकांचा अधिकाधिक कल होऊ लागतो.

व्यवहार्यतेबद्दलच्या आस्थेमुळेच पंडितजींच्या निधनानंतर वसंतराव नाईक हे लालबहादुर शास्त्री यांच्या फार जवळ आले. नाईक यांचा वाणा असा की ते निर्णय घेतात आणि मग पुन्हा कधी मागे फिरत नाहीत. पंडितजींच्या निधनानंतर त्यांच्या वारसदाराची निवड वसंतराव नाईक यांनी त्याच रात्री केली आणि दुसरा दिवस उजाडण्यापूर्वी त्यांनी याची वाच्यताही केली होती. या निर्णयाचे परिणाम काय होतील, आपल्या भवितव्याला कलाटणी देण्याइतकेसुद्धा ते परिणाम होतील काय याचा नाईक यांच्या मनात विचारही आला नाही. त्यांनी शास्त्रीजींना आपली निष्ठा दिली आणि मग शास्त्रीजींचीच निवड पंतप्रधानपदावर व्हावी म्हणून त्यांनी निक्षून प्रयत्न केला. त्या दिवसापासून शास्त्रीजींच्या निधनापर्यंत वसंतराव नाईक हे त्यांच्या दृष्टीने शास्त्रीजींचे अनुयायी आणि शास्त्रीजींच्या दृष्टीने त्यांचे मित्र राहिले. वसंतराव व

शास्त्रीजी यांच्यामध्ये अधिकच जिद्दाळाचा दुवा निर्माण झाला, त्याचे कारण असे की दोघेही स्वतःला शेतकरी मानीत आले आणि म्हणून भारताचे नियोजन हे शेती-प्रधान असावे अशी दोघांचीही भूमिका असे. वसंतराव नाईक यांनी शास्त्रीजींच्या राजवटीत शेती व अन्नप्रश्न यावर चर्चा असलेली प्रत्येक राष्ट्रीय बैठक गाजविली, याचे मुख्य कारण असे आहे की, शास्त्रीजींनी त्यांच्या मुखातून आपल्या घोरणाची मुहूर्त-मेढ उभारली. शास्त्रीजींनी नियोजनाच्या बाबतीत सारा भर शेतीवर दिला. वसंतराव नाईक यांनी शेतीवर भरच दिला नाही तर शेतीचे उत्पादन वाढविण्यासाठी शेतमालाच्या किमती बांधून देण्याचा आग्रह धरला. त्यांनी आव्हानपूर्वक असे सांगितले की शेतकऱ्यांच्या उत्पादनाला चांगली किंमत मिळण्याची ग्वाही मिळाली तर शेतकरी नुसतेच उत्पादन वाढविणार नाहीत तर ते उत्पादन खुषीने सरकारच्या हवाली करतील. केंद्रस्थानीच्या नियोजकांचा विरोध असतानाही वसंतरावांनी महाराष्ट्रात तो प्रयोग हाती घेतला व तो यशस्वीही करून दाखविला. वसंतराव नाईक यांनी अन्नधान्याच्या समस्येवर हा जो उपाय शोधून काढला तो साहसी होता, पण व्यवहार्यही होता. ते साहस म्हणूनच त्यांच्या अंगलटी आले नाही आणि अखेरीस महाराष्ट्रात सुरु करण्यात आलेल्या प्रयोगाला अखिल भारतीय मान्यताही मिळाली.

वसंतराव नाईक हे हाडाचे शेतकरी. त्यांचा व्यवसाय वकिलीचा असला तरी त्यांचे चित्त लागलेले असते ते शेतमळ्याकडे. त्यांनी शेतीच्या मार्गातील अडचणी प्रत्यक्ष पाहिल्या आहेत, अनुभवल्याही आहेत. म्हणून शेतीसुधारणेसाठी काय केले पाहिजे याचे मार्गदर्शन त्यांनी एकाद्या तज्ज्ञाच्या आत्मविश्वासाने केले आहे. महाराष्ट्रावर दुष्काळाची छाया पडताच त्यांनी नुसती केंद्राकडे विनवणी करण्यात समाधान मानले नाही. त्यांनी कंबर कसली ती बंडिंगचे काम करण्यासाठी, नदीच्या पाण्याचा विद्युत्प्रवाहाच्या सहाय्याने उपयोग करून घेण्यासाठी, लहान लहान ओढ्या-ओहाळावर सुद्धा बंधारे घालून दुबार पिकांना चालना देण्यासाठी. वसंतराव नाईक यांनी दोन वर्षांत महाराष्ट्र अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण करण्याची घोषणा केली ती या आकांक्षेने की उभा महाराष्ट्र उत्तेजित होऊन उत्पादनवाढीचा प्रयत्न करील आणि आपल्या हिमतीवर आपला अन्नप्रश्न सोडवील. त्या दृष्टीने वसंतराव नाईक यांची घोषणा फोलही झालेली नाही. ठिकठिकाणी आज बंधारे बांधले जात आहेत. लिफ्ट इरिगेशनच्या योजना अमलात आणल्या जात आहेत. दूरवरच्या शेतांना आज नदीच्या पाण्याचा लाभ होऊ लागला आहे. वसंतराव नाईक यांनी केलेली घोषणा ही प्रचारघोषणा नव्हे. प्रत्यक्षात जिची फळे दिसून येऊ लागली आहेत अशी ही घोषणा आहे.

त्यातील नाट्यमयता ही जनमनात उत्साह निर्माण करण्यासाठी होती. त्या-मागे विश्वास होता तो हा की महाराष्ट्र आपले अन्नधान्याच्या उत्पादनाचे प्रमाण

वाढवील आणि केवळ केंद्राकडे डोळे लावून वसणाऱ्या इतर प्रदेशांना तो आपल्या आदर्शाने प्रभावित करील. श्री. नाईक यांनी अन्नधान्याच्या उत्पादनावद्दल, शेती-सुधारणेवद्दल नेहमीच चांगले मार्गदर्शन केले आहे आणि ते मार्गदर्शन पसंत पडल्या-मुळेच लालबहादुर शास्त्री यांचा पूर्वापार चालत आलेला त्यांच्याकडील ओढा अधिकाधिक प्रबळ होत गेला. शास्त्रीजींच्या राजवटीत वसंतराव नाईक यांचा केंद्र-स्थानीचा प्रभाव अतिशय वाढला. त्याच राजवटीत भारत-पाकिस्तान संघर्षाचे युद्धात रूपांतर झाले. त्याचा ताण इतर प्रदेशां राज्याप्रमाणेच महाराष्ट्रावरही पडला. वसंतराव नाईक यांच्या कसोटीचाच तो काळ होता. योगायोग असा की, पाकिस्तानी आक्रमकांचा वंदोवस्त करण्यासाठी आपल्या सीमा रेषेपलीकडे आणि आंतरराष्ट्रीय सीमा रेषेपलीकडे पाऊल टाकण्याचा निर्णय घेण्यात आला त्यावेळी वसंतराव नाईक हे दिल्लीतच होते. अत्यंत महत्वाच्या प्रसंगी शास्त्रीजी ज्या थोड्या मुख्य मंत्र्यांची सल्लामसलत घेत असत त्यात वसंतराव नाईक हे प्रमुख होते. यावेळी साहजिकच नाईकांच्या पोक्त सल्ल्याचा शास्त्रीजींना लाभ झाला आणि वसंतरावही आपल्यावरील जबाबदारीच्या जाणीवेने उभ्या महाराष्ट्राला कार्यप्रवण करण्यासाठी राजधानीतून मुंबईला परतले.

ताश्कंद करारानंतर शास्त्रीजींचे जे आकस्मिक निघन झाले तोही पुन्हा वसंतराव नाईक यांच्यावरील घालाच होता-पूर्वपेक्षाही व्यक्तिगत जीवनात अधिक पोकळी निर्माण करणारा घाला. कारण पंडितजींना वसंतराव नाईक यांनी श्रद्धास्थान मानले होते. शास्त्रीजींचा व त्यांचा ऋणानुर्वच अधिक जिऱ्हाळ्याचा होता. कारण त्यात आदर होता. पण दरारा नव्हता. भक्तिभाव होता. पण गाभान्यात प्रवेश न करता नंतमस्तक होण्याची ती भक्ती नव्हती. यात हितगुंज करण्याइतकी जवळीक होती. वसंतराव नाईक यांना विधानसभेत आणले ते शास्त्रीजींनी. त्यांच्या राजकीय जीवनाची घडणूक जणु त्यांनी घडविली. पुढे अखिल भारतीय क्षेत्रात शास्त्रीजींचढत गेले. वसंतराव प्रकाशात येण्याची घडपड न करताही केवळ आपल्या निरलस कामगिरीच्या जोरावर महाराष्ट्राच्या राजकीय जीवनात पुढे आले. शास्त्रीजीं पुढे पंतप्रधान झाले वसंतराव नाईक महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री झाले. दोघांनीही सत्तेची अभिलाषा घरली नव्हती. पण सत्ता दोघांच्याही पायाशी चालत आली. दोघांचेही वैशिष्ट्य असे की ते सत्तारूढ झाले ते विनम्र भावनेने. हा विनम्र भाव दोघांनीही कधी सोडला नाही. त्यांच्यामध्ये दुसरे साम्य असे की दोघांनीही आपली निष्ठा कधी सोडली नाही आणि आपल्या नेत्यावद्दलच्या निष्ठेत तर कधीही कसूर होऊ दिली नाही. शास्त्रीजी हे पंडितजींचे अनन्यभक्त राहिले वसंतराव नाईक यांनी यशवंतराव चव्हाण यांच्याशी कधीही प्रतारणा केली नाही. सत्तास्थानी आरूढ झाल्यानंतर स्वर्गला तोंड द्यावेच लागते. पण वसंतरावांची स्वभावधारणा काही वेगळीच आहे.

कधी सत्तास्पर्धेचा विषय निघाला की पाईपचे शांतपणे झुरके घेत ते म्हणतात — “मला कोठे स्पर्धा करावयाची आहे ? यशवंतराव आमचे नेते आहेत. त्यांनीच सारी घडी घालून द्यावयाची आहे. ”

वसंतराव नाईक यांचा हा विमेषणाच कोणताही निर्णय घेण्याच्या बाबतीत, कोणत्याही परिस्थितीला तोंड देण्याच्या बाबतीत त्यांना उपयोगी पडतो. शास्त्रीजींच्या निधनानंतर पुन्हा एकदा वारसदार निवडण्याची वेळ आली तेव्हाही वसंतराव नाईक यांच्या मनाची चलबिचल झाली नाही. त्यांनी इंदिरा गांधी यांची निवड केली. एवढेच नव्हे तर त्यांची निवड मंजूर करून घेण्याच्या बाबतीत पुढाकार सुद्धा घेतला. त्यामुळे केंद्रस्थानीचा त्यांच्याशी प्रस्थापित झालेला दुवा तुटला नाही. उलट तो दुवा अधिकच बळकट झाला. वसंतराव नाईक यांनी शास्त्रीजी व इंदिरा गांधी यांच्या निवडगुकीच्या बाबतीत जी कामगिरी केली तिच्यामुळे अखिल भारतीय नेत्यात तर त्यांना स्थान मिळालेच पण त्यांना आणखी एक पायंडा पाडण्याच्या बाबतीत सुद्धा श्रेय दिले पाहिजे. हा पायंडा म्हणजे प्रदेश राज्यांच्या मुख्य मंत्र्यांना केंद्रस्थानी सल्लामसलतीच्या बाबतीत मिळू लागलेले अग्रस्थान होय. वसंतराव नाईक यांनीच प्रामुख्याने तो पायंडा पाडला आणि तेव्हापासून नियोजन असो, अन्नधान्य-विषयक धोरण ठरवावयाचे असो, किंवा पंतप्रधानांची निवड असो, प्रदेश राज्यातील मुख्य मंत्र्यांच्या शब्दाला फार मोठा मान मिळू लागला. यात काँग्रेस पार्लमॅटरी पक्षाचा कोठल्याही प्रकारे अधिक्षेप होतो असे समजण्याचे कारण नाही. पंडितजींनीच एकदा त्या आरोपाचा इन्कार करताना म्हटले होते की, पार्लमॅटरी पक्षाचा नेता म्हणजेच पंतप्रधान निवडावयाचा झाला तर तो पार्लमॅटरी पक्षाचाच एक घटक असला पाहिजे असे नव्हे. त्यांची निवड वेळप्रसंगी प्रदेश राज्यातील नेतृत्वातून सुद्धा होऊ शकेल. पंडितजींनी ही भूमिका घेतल्यानंतरच अखिल भारतीय धोरण ठरविण्याच्या बाबतीत, समस्या सोडविण्याच्या बाबतीत प्रदेश राज्यांच्या मुख्यमंत्र्यांची सल्लामसलत घेण्याची प्रथा पडली. ही प्रथा फलदायी होण्याच्या दृष्टीने वसंतराव नाईक यांनी वेळोवेळी मोलाचा सल्ला देऊन फार मोठा हातभार लावला आहे. त्यांच्या इतर कामगिरीइतकेच किंबहुना त्यापेक्षाही अधिक या कामगिरीला महत्त्व आहे. महाराष्ट्राला प्रथम भारतीय आघाडीवर स्थान देण्यात यशवंतराव चव्हाण यांचे कर्तृत्व उपयोगी झाले. त्यांच्या पावलावर पाऊल टाकून वसंतराव नाईक यांनी केंद्रीय नेतृत्वात आपले पाय रोवले आहेत, भारतामध्ये महाराष्ट्राची शान वाढविली आहे. ही शान राखण्याच्या बाबतीत वसंतरावांचे वैयक्तिक गुणच त्यांना उपयोगी पडले. धीमा स्वभाव, सुसंस्कृत वागणे, आपल्यासमोर येणाऱ्या प्रश्नांची अभ्यासपूर्वक माहिती मिळविल्यामुळे त्यावर मतप्रतिपादन करताना प्रगट होणारा निश्चयीपणा, निर्भीडपणे पण संयमपूर्ण रीतीने मतप्रदर्शन करण्याची शैली आणि विशेषतः आपल्या समो-

रच्या लोकांमध्ये—विरोधासहित सर्वांमध्ये—विश्वास निर्माण करण्याची हातोटी या सर्व गुणांमुळे वसंतराव नाईक यांनी महाराष्ट्रातच नव्हे तर केंद्रस्थानीही आपली पकड बसविली आहे. निरहंकारी आणि निरपेक्ष अशा त्यांच्या व्यक्तित्वाचे भवितव्य म्हणूनच उज्वल आहे.

या महाराष्ट्रांत पैशाची पूजा कधीच झालेली नाही. कुबेराऐवजी पैशाला तुच्छ मानणाऱ्यांची येथे पूजा झाली आहे. जो पैशाला देव मानीत नाही तोच प्रथम समाजवाद आणू शकेल. त्यादृष्टीने महाराष्ट्रात समाजवादाला पोषक असे वातावरण असल्यामुळे भारतात महाराष्ट्रामध्ये सर्वांत आधी समाजवाद निर्माण होईल.

—ना. वसंतराव नाईक.

नव्या पुरुषार्थाची प्रेरणा

ना. नरेन्द्र तिडके

ऊन-थंडीत राबणाच्या व वाऱ्यावादळाला तोंड देत निर्धाराने शेती करणाऱ्या भूमिपुत्रांचे जीवन आनंदमय करण्याचा वसंतरावजींचा संकल्प आहे. शेतकऱ्यांना नव्या पुरुषार्थाची प्रेरणा देणाऱ्या वसंतरावजींच्या व्यवहारी अन पुरोगामी धोरणाची मजूर मंत्री नामदार तिडके यांनी केलेली मूलगामी चिकित्सा.

महाराष्ट्राच्या इतिहासावरून एक गोष्ट आपणास निश्चितपणे सांगता येईल की, ज्या ज्या वेळी महाराष्ट्रात एखाद्या गोष्टीची निकड प्रकर्षाने भासू लागते त्या त्या वेळी ती पूर्ण करण्यासाठी एखादी व्यक्ती समर्थपणे उभी राहत असल्याचे दाखले आपणास अनेक देता येतील. महाराष्ट्राचा पूर्वीचा इतिहास जरी सोडला तरी अलिकडच्या पांचदहा वर्षांच्या काळात याच एका गोष्टीची प्रचिती आपणास आल्या-शिवाय राहत नाही. अनेक वर्षांपासून निरनिराळ्या राज्यात विभागलेल्या मराठी भागांना एकसंध करण्याची व त्यांच्यात एक राज्याची अस्मिता निर्माण करण्याची ऐतिहासिक कामगिरी पूर्वीचे महाराष्ट्र राज्याचे मुख्य मंत्री व आजचे संरक्षण मंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण यांनी पार पाडली. अशाच प्रकारचे, राज्यातील अन्नधान्याच्या बिकट समस्येवर मात करण्याचे महत्त्वाचे कार्य सध्याचे मुख्य मंत्री श्री. वसंतराव नाईक हे पार पाडीत आहेत.

श्री. वसंतरावजींनी अगदी अल्पावधीतच मुख्यमंत्री या नात्याने राज्यातील जनतेवरच नव्हे तर केंद्रीय नेत्यांवर आपली छाप वसविली. गेल्या तीनचार वर्षांत महाराष्ट्र राज्यासमोर अनेकविध प्रश्न 'आ' वासून उभे असतानाहि त्यांनी आपल्या व्यवहारकुशल धोरणाने व खंबीर नेतृत्वाने राज्यातील जनतेचे केवळ प्रभावी मार्गदर्शनच केले नाही तर तिला आपल्यासमोरील घान्यटंचाईसारखे बिकट प्रश्न सोडविण्यासाठी उद्युक्त केले यातच त्यांच्या यशाचे मर्म साठविले आहे. महाराष्ट्र राज्या-

सारख्या पुरोगामी व अग्रेसर राज्याचे मुख्य मंत्रीपद यशस्वीपणे सांभाळणे ही कांही सामान्य वाव नव्हे. याकरिता कर्तृत्ववान अशा संपन्न व्यक्तित्वाची गरज असते. श्री. वसंतरावजींच्या रूपाने महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्रीपदाची वुरा यशस्वीपणे सांभाळणारी व्यक्ती लाभली आहे हे महाराष्ट्राचे खरोखरच भाग्य आहे. त्यांच्या त्रेपन्नाव्या वाढदिवसानिमित्त त्यांच्या कार्यकर्तृत्वाचा विचार करणे खात्रीनेच योग्य ठरेल.

श्री. वसंतरावजींचा जन्म आदिवासी समाजातील बंजारा जमातीत झाला. ज्या जमातीत ते जन्मले तो समाज अतिशय मागासलेला, अडाणी व दरिद्री असा होता. त्यांच्या चालीरीती अनिष्ट व पोषाखही विचित्र. परंतु वसंतरावजींचे वडील मात्र सुधारक वृत्तीचे. त्यांचे संस्कार लहानपणी वसंतरावावर होणे अगदी स्वाभाविक होते. याशिवाय आपल्या मुलास चांगले शिक्षण मिळावे अशी त्यांच्या वडिलांची तीव्र इच्छा होती. यवतमाळ जिल्ह्याच्या पुसद तालुक्यातील गहूली या खेडेगावी त्यांचे लहानपणी वास्तव्य झाल्यामुळे, ग्रामीण विशेषतः शेतकरी जीवनाशी त्यांचा जवळून परिचयच झाला असे नव्हे तर त्या जीवनाचे अतिशय आकर्षण त्यांना वाटू लागले. आपले शिक्षण पूर्ण केल्यावर, त्यांनी वकिलीचा व्यवसाय निवडला असला तरी ते हाडाने व वृत्तीने शेतकरीच राहिले. आज मुख्य मंत्री या नात्याने शासनाचे अनेकविध व्याप सांभाळत असताना देखील त्यांचे शेतकरी जीवनाचे आकर्षण यत्किचितही कमी न होता, ते सतत वाढतच आहे. त्यांच्यातील शेतीविषयक जिद्दाळ्यामुळेच राज्यातील शेतीच्या क्षेत्रांत विविध प्रकारच्या विधायक योजनांचा उपक्रम हाती घेण्यात आला आहे.

देशाचा झपाट्याने विकास घडवून आणावयाचा असल्यास, शेतीच्या विकासास अग्रप्राधान्य दिले पाहिजे असे ना. वसंतरावजींचे ठाम मत आहे. शेतीच्या प्रगतीवरच देशाचा उत्कर्ष अवलंबून आहे या दृष्टीनेच त्यांचे प्रयत्न चालू आहेत. भारतासारख्या शेतीप्रधान देशाने धान्यासाठी परदेशावर अवलंबून राहणे स्वाभिमानी व स्वतंत्र देशाला शोभणारे नाही आणि मा. वसंतरावजी हाडाचे शेतकरी असल्यामुळे हे लार्जीरवाणे अन्नपरावलंबन त्यांना सहन होणे शक्य नव्हते. महाराष्ट्र राज्य अन्नधान्याच्या बाबतीत तुटीचे राज्य आहे याची त्यांच्या मनाला सतत खंत वाटत अमते. धान्याच्या बाबतीत तुटीचे राज्य असले तरी शेतीच्या क्षेत्रात जोमदार प्रयत्न केल्यास ही तूट भरून काढता येईल असे त्यांचे प्रामाणिक मत आहे. परंतु या बाबतीत शेतकऱ्याने निर्धारपूर्वक प्रयत्न करण्याची आवश्यकता आहे. यासाठी राज्यातील प्रत्येक शेतकऱ्याने शेतकीबाबतच्या चतुर्विध कार्यक्रमाची काटेकोरपणे अंमलबजावणी करण्याची आवश्यकता आहे. ही चतुःसूत्री म्हणजे, पाण्याच्या प्रत्येक थेंबाचा कसोशीने वापर करणे, जास्त उत्पादन देणाऱ्या सुधारलेल्या वियाणांचा वापर करणे, रासायनिक खते वापरणे, पिकांचे रोगापासून व किडीपासून संरक्षण करणे ही होय.

या कार्यक्रमांमुळे अगदी सहजपणे शेतकऱ्यांना दरसाल अन्नधान्यात येणारी तूट भरून काढता येणे फारसे कठीण नाही असा त्यांचा विश्वास आहे आणि याच निर्वाराने त्यांनी गेल्या वर्षात राज्यातील निरनिराळ्या जिल्ह्यांचे दौरे केले. संबंधित लोकांना अधिक उत्पादनासाठी कसे जोमदार प्रयत्न करता येतील हे समजावून दिले. त्यासंबंधी त्यांना काही अडचणी असल्यास त्या कशा रीतीने त्वरित दूर करता येतील याचाही ते विचार करू लागले. धान्योत्पादनास जोराची चालना देण्याच्या दृष्टीने मा. वसंतरावजींनी जे दौरे केले त्यामुळे राज्यातील शेतकरी वर्गामध्ये एक प्रकारचा नवा जोम व उत्साह निर्माण झाला. त्यामुळेच ते महाराष्ट्र राज्य दोन वर्षांच्या आंत अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वावलंबी बनणे ही गोष्ट कठीण नाही असे म्हणू लागले. “दोन वर्षात स्वावलंबी ” ही केवळ पोकळ घोषणा केलेली नसून ती कृषि-क्षेत्रातील सखोल अनुभवाच्या पोटी आकारास आली आहे. मा. वसंतरावजी अन्नस्वावलंबनाची घोषणा करूनच केवळ थांबले नाहीत तर त्यांनी धान्योत्पादनाच्या क्षेत्रात झपा-झप पावले टाकायला सुरुवात केली.

शेतकऱ्यांना त्यांच्या जीवनात निरुत्साही करणारी जर कोणती गोष्ट असेल तर ती म्हणजे भावाची अनिश्चितता ! मोठ्या कष्टाने व आशेने शेतकऱ्याने पीक काढावे व त्या मेहनतीचा योग्य मोबदला त्याला मिळू नये ही गोष्ट शेतकऱ्यांवर खरोखर अन्याय करणारी आहे, याची खोल जाणीव वृत्तीने शेतकरी असणाऱ्या वसंतरावांना अनेक वर्षांपासून होती. तो अन्याय दूर करण्यासाठी त्यांनी योग्य परिस्थिती येताच कोणाच्याही हर्षमर्षाची पर्वा न करता शेतकऱ्यांना त्यांच्या मालाच्या किमती ठरवून दिल्या. ठरविलेल्या किमतीत शेतकऱ्याने पिकविलेले धान्य सरकारने खरेदी केले पाहिजे असे धोरण त्यांनी निश्चित केले. सुरुवातीस या धोरणास केंद्र सरकारची मान्यता मिळाली नाही. एकाधिकार खरेदी व धान्यविषयक भाव पेरणी-पूर्वी ठरविण्याचे धोरणच बरोबर असल्याचे मत महाराष्ट्र राज्याच्या मुख्य मंत्र्यांनी व्यक्त केले. सुरुवातीला या धोरणास केंद्र सरकारचा विरोध होता. परंतु त्यांनाही या धोरणाचे महत्व पटून, तेही याच मताचे झाले. केंद्र सरकारने हे तत्व मान्य करण्यात महाराष्ट्र सरकारचा गौरव आहे. वसंतरावजींच्या धोरणाचा एक प्रकारे तो विजयच आहे हे तर खरेच पण त्याबरोबर या धोरणाची जी प्रतिक्रिया केंद्र व राज्य सरकारे यांच्यावर झाली यात त्यांचा खरा विजय आहे.

मा. वसंतरावजींनी गेल्या दहा वर्षात कृषी क्षेत्रात नेत्रोद्दीपक कामगिरी बजाविली आहे. राज्यातील कमाल जमीनधारण कायदा यापासून तो एकाधिकार धान्य-खरेदी पद्धती, अग्रिम मूल्य निर्धारणाची योजना, दुबार व संकरित पिकांची व शेतीला पाणी देण्याची पद्धती (वसंत बंधारे) आदी राज्यात सुरू असलेल्या सर्व बाबींवर वसंतरावांच्या व्यक्तित्वाची व कर्तृत्वाची छाप पडलेली आढळून येते. या सर्व गोष्टींचा

विचार केला असता असे वाटू लागते की, मा. वसंतरावजींच्या डोळ्यासमोर कृषि-क्रांतीचे स्वप्न आहे. ऊन-थंडीत रावणाऱ्या व वाऱ्यावादळाला तोंड देत निर्धाराने शेती करणाऱ्या भूमिपुत्राचे जीवन आनंदमय करण्याचा त्यांचा निर्धार त्यांच्या खंबीर व व्यवहारी घोरणात दिसून येतो. महाराष्ट्रात अन्नधान्याची कठिण परिस्थिती आहे. या कठिण परिस्थितीवरहि त्यांचे व्यवहारी घोरण मात करून शेतकऱ्यांना नवीन पुरुषार्थाची प्रेरणा देईल अशी मला खात्री वाटते.

कामगार चळवळीतून आलेल्या माझ्यासारख्याला कामगाराविषयी जिव्हाळा व आत्मीयता वाटणे अगदी स्वाभाविक आहे, एवढेच नव्हे तर त्यांच्यावद्दल मला सार्थ अभिमान वाटतो. परंतु श्री. वसंतराव कांही मजूर चळवळीतून आलेले नाहीत. तरीही त्यांच्यात कामगारांच्या हिताविषयी दक्षता, जिव्हाळा व कळकळ ही माझ्यासारख्या अनेक कामगारकार्यकर्त्यांपेक्षा किती तरी अधिक असल्याचा प्रत्यय येतो. कामगारासंबंधींचा त्यांचा विशिष्ट असा दृष्टिकोण हेच महाराष्ट्र राज्याच्या पुरोगामित्वाचे लक्षण आहे.

श्री. वसंतरावांचा शांत, निगर्वी व शालीन स्वभाव व या गुणांना उजाळा देणारी त्यांच्यातील संयमित वृत्ती व चिकाटी यामुळे त्यांचे व्यक्तिमत्व अगदी उठून दिसते.

सर्वांना सोबत घेऊन कार्य करण्याची त्यांची पद्धती व विरोधकांनाहि विश्वासात घेऊन त्यांना आपल्या बाजूला वळविण्याचे त्यांचे कौशल्य, खरोखरच वाखाणण्यासारखे आहे. कोणत्याही कठिण व प्रतिकूल परिस्थितीत किंचित्ही न डगमगता, खंबीरपणे व शांतपणे त्या परिस्थितीवर मात करण्याचा त्यांचा निर्धार हा तर त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा एक विशेषच होय. श्री. वसंतरावांच्या हातात 'महाराष्ट्र सुरक्षित आहे' हे श्री. यशवंतरावजी चव्हाण यांनी काढलेले उद्गार किती सूचक आणि समर्पक आहेत याची साक्ष पटते.

श्री. वसंतरावांचे प्रभावी मार्गदर्शन व संयमित पण खंबीर असे पुरोगामी नेतृत्व महाराष्ट्राच्या जनतेला अनेक वर्षे लाभो अशी शुभेच्छा मी व्यक्त करतो.



लहान गाव, मोठा माणूस

देवराव पाटील, चौढीकर

जंगलात असणाऱ्या गहुली या छोट्या, मागासलेल्या खेड्यात व अशिक्षित कुटुंबात जन्माला आलेला मुलगा महाराष्ट्र राज्याचा मुख्य मंत्री होतो ही किमया ज्यांनी जवळून पाहिली ते यवतमाळ जिल्हा परिषदेचे अध्यक्ष श्री. देवराव पाटील, चौढीकर सांगतात. . .

व्यक्तित्व, कर्तृत्व व नेतृत्व यांचा गोड संगम व मिलाफ असणारी व्यक्ती म्हणजेच वसंतराव नाईक. ज्याप्रमाणे दैदिप्यमान हिऱ्याचे पैलू कोंदणात उठून दिसतात तसेच नाईकांचे व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, समाजावरील प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेमळ मनमिळावूपणा, संघटना कौशल्य, सहनशीलता, कोणत्याही प्रसंगी बुद्धीचा समतोलपणा दाखवण्याची वृत्ती यांच्या कोंदणात खुलून दिसत आहे.

त्यांचे व माझे खेडे एकास एक लागून असल्यामुळे व शिवाय बालपणापासून सहवास असल्यामुळे मला त्यांचे सामाजिक जीवन तसेच राजकीय जीवन जितके जवळून पाहता आले व अभ्यासिता आले तितके जवळून फार थोड्या लोकांनी ते पाहिले असेल.

वसंतराव नाईकांचे आईवडील हे अशिक्षित व एका जंगली खेड्यात राहाणारे व मागासलेल्या समाजातील असताना सुद्धा आजच्या सुधारलेल्या समाजातील सुधारकापेक्षाहि सुधारक, विचारवंत व धोरणी होते. वसंतराव नाईकांना जी गुणांची जोड मिळाली ती आईच्या प्रेमळ शिकवणुकीतूनच मिळाली. त्यांच्या आईचा स्वभाव अति प्रेमळ, मनमिळाऊ, निश्चयी, न्यायप्रिय होता. त्यांना गरिबाविषयी कनवाळूपणा होता व वेळप्रसंगी गरिबांना मदत करण्याची इच्छा होती. याच सर्व गुणांचा ठसा खरोखर नाईकांच्या मनावर उमटला. त्यांचा जन्म जंगलात असलेल्या गहुली या छोट्याशा मागासलेल्या खेड्यात झाला. जेथे ना रहदारीची व्यवस्था ना शिक्षणाची सोय. या खेड्यात शिक्षणाची सोय नसताना सुद्धा दूरदृष्टी असणाऱ्या त्यांच्या धोरणी मातापित्यांनी शिक्षणाचे महत्व जाणून चार मैल अंतरावर असणाऱ्या बान्सी या गांवी

खाजगी रीतीने चालत असलेल्या गावठी शाळेत दोन्ही मुलांना म्हणजे मोठे राजुसिंग आणि धाकटे हादुसिंग यांना घातले. वसंतरावांना बालपणी हादुसिंग या नावानेच ओळखत असत. जेथे शाळेचीच व्यवस्था नव्हती तेथे वसतिगृहांचा प्रश्नच नव्हता. त्यामुळे चार मैलावरून कधी उन्हातान्हातून, तर कधी गड्याचे पाठुंगुळी वसून, तर कधी घोड्यावर स्वार होऊन त्यांना शिक्षणाची सुरवात करावी लागली. कधी अडचण आल्यास किंवा नदीनाल्यास पूर आल्यास बान्सी येथील त्यांचे वडिलांचे मित्र श्री. भोजराज देशमुख यांचे येथेच त्यांना कित्येक दिवस मुक्काम करावा लागत असे. अशा रीतीने त्यांनी पहिल्या वर्गाचे शिक्षण घेतले. त्यानंतर दुसऱ्या वर्गाच्या शिक्षणाकरिता त्यांना अकोला जिल्ह्यातील मंगरूळ तालुक्यातील उमरी या गावी जावे लागले. त्या ठिकाणीहि त्यांना वरीलप्रमाणेच कष्ट व परगावचा मुलगा म्हणून स्थानिक मुलांकडून चेष्टा व छळ सहन करावा लागला. त्यानंतर गहुली येथून सात मैलावर असलेल्या भोजला या गावी कधी शिक्षकाच्या घरी राहून, कधी घरून जेवण बोलावून, तर कधी प्रतिष्ठित लोकांकडे जेवून त्यांनी चवथ्या वर्गापर्यंतचे शिक्षण पुरे केले.

अशा कष्टमय परिस्थितीतून शिक्षण घेत असताना मुलाचे होणारे हाल पाहून आईच्या मनाला यातना होतातच व त्याचाच परिणाम असा झाला की ज्या वेळी वसंतरावांना मंगरूळ तालुक्यातील १५ मैल अंतरावरील विठोली या गावी माध्यमिक शाळेत शिक्षणासाठी जावे लागले, त्या वेळी आईवडिलांचे समाधानाकरिता वडील भावाला म्हणजे राजुसिंग नाईक यांना शिक्षणास रामराम ठोकून त्यांचे सान्निव्यात रहावे लागले. विठोली येथील शिक्षण संपवून हायस्कूलचे व पुढील शिक्षणाकरिता नागपूर येथे जाऊन त्यांनी शिक्षणक्रम पूर्ण केला व पुसद येथे वकिलीच्या व्यवसायाला सुरवात केली. १९४१ साली नागपूर येथील सुप्रसिद्ध घाटे घराण्यातील वत्सलाबाईशी त्यांनी रजिस्टर पद्धतीने विवाह केला. हा विवाह म्हणजे आमचे विभागातील पहिलाच आंतरजातीय स्वरूपाचा विवाह होय. या विवाहाने जिल्ह्यामध्ये सुधारणामतवादित्वाचा एक आदर्श घालून देण्यात आला.

तथापि नाईकसाहेबांना हे सुधारणामतवादित्वाचे बाळकडू त्यांच्या बालपणापासूनच मिळाले. त्यांचे आईवडील हे विदर्भातील त्यांच्या समाजाचे आद्य सुधारक होते. समाजातील अनिष्ट रूढी, समाजातील वाईट वर्तणूक व समाजातर्फे होणारा अन्याय दूर करण्यास ते सदैव तत्पर असत. त्यांच्या वडिलांना सर्व लोक फुलसिंग नाईक म्हणूनच संबोधित असत. हायस्कूलचे शिक्षण घेत असताना वसंतरावांनी समाजसुधारणेचे कंकण बांधून व मिळेल त्या सवंगड्यांची साथ घेऊन आणि येणाऱ्या संधीचा फायदा घेऊन अनेक बिकट प्रसंगांना व कठिण परिस्थितीला तोंड देऊन वडीलांच्या समाजसुधारणेच्या प्रयत्नांना वळकटी आणली व समाजाचे नेतृत्व स्वतःकडे आकर्षित करून घेतले. हे कार्य करीत असताना समाजाकडून वसंतरावांच्या घराण्याचा अतोनात

छळ होऊ लागला. एक वेळ तर समाजातील पेहेराव बदलण्याच्या भूमिकेवर तीव्र मतभेद होऊन झगडे व लढा पत्कारावा लागला व समाजाने या घरावर बहिष्कार पुकारला. अशाही कठिण परिस्थितीत समाजसुधारणेचे घेतलेले असिधाराव्रत व केलेला निश्चय व ध्येय यापासून विचलित न होता आलेल्या विकट परिस्थितीला धैर्याने तोंड देऊन वसंतरावांनी आपला मित्रपरिवार वाढविला व समाजातून बऱ्याच मोठ्या प्रमाणात अनुयायीही मिळविले व समाजाने त्यांचे अनुयायित्व पत्करून नेतृत्व वसंतरावांना वहाल केले. अशा रीतीने नेतृत्वाचा वृक्ष वाढण्यास सुरुवात झाली व लवकरच त्याने संपूर्ण महाराष्ट्र आपल्या छायेखाली आणला. त्यांच्या नेतृत्वाची सुरुवात प्रथम घरातून व नंतर खेडेगावातून विकसित होऊन तालुक्याचे ठिकाणी नगरपालिकेचे अध्यक्षपद भूषविले व तेथूनच राजकीय जीवनास सुरुवात झाली. ज्या पुसद नगरपालिकेचे ते अध्यक्ष झाले त्या पुसद नगरपालिकेच्या मतदारसंघात असलेले पाचही मतदार त्यांचे समाजाचे नव्हते. असे असतानासुद्धा जनतेने त्यांना पुसद नगरीच्या प्रथम नागरिकत्वाचा मान दिला. ते पुसद नगरपालिकेचे अध्यक्षपद भूषवित असताना राज्यातील आदर्श नगरपालिकामध्ये पुसद नगरपालिकेची गणना होत होती. आपल्या कारकीर्दीत गावामध्ये खेळीमेळीचे वातावरण व मित्रत्वाची भावना निर्माण करून जनता-जनार्दनाच्या सुखसोयीकडे त्यांनी लक्ष पुरविले.

याच काळात कॉटन मार्केटमध्ये व ग्रेन मार्केटमध्ये होत असलेली शेतकऱ्यांची पिळवणूक पाहून त्यांचा जीव कासाविस होत असे. ग्रेन मार्केटमध्ये शेतकऱ्यांचा आलेला माल कधी कधी २-२ तर कधी ३-३ दिवस विक्रीवाचून पडून रहात असे. अशा वेळी आपल्या सहकाऱ्यांना घेऊन व्यापाऱ्यांसह रात्री २-२ वाजेपर्यंत मार्केटमध्ये शेतकऱ्यांचा माल विकण्यास व शेतकऱ्यांवर अन्याय होणार नाही याबद्दलची दक्षता घेण्यास वसंतराव फिरत असत. कापूस बाजारात लहरीप्रमाणे भावात चढउतार करून शेतकऱ्यांची पिळवणूक केली जात असे. डोळ्यादेखत होणारी ही पिळवणूक पाहून वसंतरावांचा जीव कासावीस होत असे. त्याला तोंड देण्याकरिता म्हणून वसंतरावांनी धारिष्ट्याने भावाची जुनी पद्धत बदलून कापसाची प्रत्येक गाडी खुल्या भावाने व चढाओढीने, शेतकऱ्यास भाव मिळावे म्हणून 'हरीस पद्धति' लागू केली. त्याला त्या वेळी अनेक हितसंबंधी लोकांकडून कडवा विरोध झाला परंतु तो मोडून काढून त्यांच्या कारकीर्दीमध्येच हरीस पद्धती त्यांनी यशस्वी करून दाखविली व शेतकऱ्यांची मने आनंदाने फुलविली. समाजात आर्थिक न्याय प्रस्थापित करण्याच्या कार्याची ही पहिली सलामी म्हणता येईल.

स्वराज्यातील पहिली निवडणूक म्हणजे १९५२ ची. या वेळी काँग्रेस पक्षाने पुसद मतदार संघातून प्रतिनिधी म्हणून वसंतरावांना तिकिट दिले. त्या वेळी प्रतिगामी विचारसरणीच्या काँग्रेसमधील व बाहेरीलही अनेक लोकांकडून त्यांना विरोध

झाला. परंतु असे असूनही पुसद तालुक्यातील जनतेने त्यांना प्रचंड बहुमताने निवडून दिले व पुसद तालुक्याचे प्रतिनिधित्व व नेतृत्व बहाल केले.



मुख्यमंत्री झाल्यानंतर सुमारे सात आठवड्यांनी दिनांक २१ जानेवारी १९६४ रोजी नाईकसाहेबांनी ' गहुली' या आपल्या जन्मगावास प्रथमच भेट दिली. त्या प्रसंगी ग्रामवासीयांसमोर भाषण करताना ते म्हणाले :

“पन्नास वर्षापूर्वी मी येथे जन्मलो तेव्हा मी मुख्यमंत्री होईन असे कोणी भविष्य केले असते तर तुम्ही हसला असता. पण वयाच्या १७ व्या वर्षापासून बंजारी लोकांची सामाजिक सुधारणा करण्याचे कार्य हाती घेऊन या खेड्यातील ५२ झोपड्या पाडून तुमच्या सहकार्याने १९५३ साली गहुली एक नमुनेदार खेडे आपण बनविले. तेव्हापासून तुमचे प्रेम, आशीर्वाद व या भूमीचे पावित्र्य यामुळे मी वाढत गेलो. मी या खेड्याला व तुम्हाला कधीही विसरणार नाही.”

समाजकार्याच्या महाद्वारातून

ना. मधुसूदन वैराळे

वसंतरावजींचा राजकीय जीवनात झालेला प्रवेश मूलतः समाजकार्याच्या महाद्वारातून झाला आहे आणि त्यामुळे त्यांच्या राजकीय विचारांना व कर्तृत्वाला सामाजिक समंजसपणाचे विशाल अधिष्ठान लाभले. ना. यशवंतरावजींनी गतिमान केलेला समाजवादी 'महाराष्ट्राचा जगन्नाथाचा रथ वसंतरावजींच्या नेतृत्वाखाली सारखा पुढे चालला आहे.

आपले मुख्यमंत्री ना. वसंतराव नाईक महाराष्ट्राला चांगलेच सुपरिचित आहेत. भारतीय संघराज्यातील एक अग्रेसर व महत्वपूर्ण राज्याचे मुख्यमंत्री म्हणून देशातील जागृत लोकमत त्यांच्या विचारांची दखल घेते. केंद्र सरकारमध्ये ज्या काही चारदोन मुख्यमंत्र्यांच्या कर्तृत्वाबद्दल अपेक्षेने पाहिले जाते त्यापैकी ते एक ! अशा व्यक्तीबद्दल लिहिणे म्हणजे नाही म्हटले तरी मर्यादा पडतात. दोन वर्षापूर्वी आम्ही काही मित्र त्यांचेकडे वाढदिवस साजरा करण्याची परवानगी मागायला गेलो. तेव्हांची प्रतिक्रिया आठवली की, आणखीच संकोच वाटतो. त्यांनी नेमका त्याच तारखांना चारसहा दिवस महाराष्ट्राबाहेर कार्यक्रम ठेवला आणि 'लोकशाहीमध्ये कोण्या एका व्यक्तीचा उदोउदो करण्याचा काळ आता इतिहासजमा झाला आहे' असे सांगून स्पष्ट नकार दिला. 'वाढदिवसच करायचा तर पं. नेहरू आणि यशवंतराव चव्हाण यांचा करा' हा सल्ला न मागता दिला.

यंदा मात्र यवतमाळ जिल्ह्यातील मित्रांनी अगदी नकोसे केले आणि मग मात्र तुम्ही जमा केलेल्या थैलीच्या रकमेत मी स्वतः शक्तीनुसार रक्कम घालीन व त्याचा शेतकीशी संबंधित असा ट्रस्ट करू ह्या अटीवर त्यांनी संमती दिली. मुंबईतील मंडळींना मात्र त्यांनी चक्क नकार दिला ! पण ज्यांनी ना. नाईकांना जवळून पाहिले त्यांना ह्या प्रकाराचे आश्चर्य वाटणार नाही. इतरांना काय वाटते ते प्रत्येकाच्या

दृष्टीवर व हेतूवर अवलंबून असेल. पूर्वीपासूनच ना. नाईक प्रसिद्धीपासून दूर ! गाजावाजा, हारतुरे, फोटो-मुलाखती, घोषणा ह्यांचा त्यांना मनस्वी कंटाळा ! कोणत्याही पुढाऱ्याला हे शोभत नाही हे जरी खरे असले तरी त्यांना टाळ्यांचा कडकडाट झाल्यावर मूठभर मांस चढल्यासारखे वाटत नाही हा माझा गेल्या १२ वर्षांचा अनुभव आहे.

त्यांच्या व्यक्तिगत आवडी-निवडीदेखील 'पुढारी' ह्या शब्दाच्या लोकमान्य व्याख्येत बसतील की नाही ह्याची मला शंका आहे. राजकारणात प्रतिस्पर्ध्याला चीत करण्यापेक्षा जंगलात वाघाला ठार करण्यात त्यांचे मन अधिक रमते. ते एक चांगले शिकारी आहेत हे थोड्यांना ठाऊक असेल. शिकार हा त्यांचा मोठा विरंगुळा आणि श्रमपरिहार. त्यांना शिकारी माणसाचा मोठा दिलदार आणि उमदा स्वभाव लाभला आहे. एका गोळीत वाघाला टिपणारा हा माणूस व्यवहारात व दैनंदिन जीवनात मात्र कोणालाही कधीही दुखवायला तयार नसतो !

ना. नाईक यांना सुसूत्र योजना आखून वा काही शास्त्राचा अवलंब करून नेतेपद मिळालेले नाही. त्यांच्या स्वभावातील काही मूलभूत गुणामुळे ते त्यांना लाभले आहे. त्यांच्या स्वभावाचा व व्यक्तित्वाचा विचार करताना पुष्कळदा विरोधाभास वाटतो. पण सखोल विचार केल्यावर नी त्यांच्याशी दृढ परिचय झाल्यावर हा विरोधाभास लुप्त होतो.

वसंतरावांचा जन्म अत्यंत मागासलेल्या समाजात झाला. हा समाज वंजारी म्हणून ओळखला जातो. त्याला लमाणी समाज म्हणून देखील ओळखतात. शिक्षणाचा व सुधारणेचा गंध नसलेल्या, पण सुखवस्तु आणि संस्कारशील वडिलांच्या मार्गदर्शनात त्यांचे बालपण गेले. शिक्षणाची सोय गांवाहून आठ मैलावर ! पायी घेणे-जाणे करून कसेबसे प्राथमिक शिक्षण केले. वडिलांची जिद्द की 'वसंत'ला शिकवायचेच. ही जिद्द व चिकाटी ना. नाईकसाहेबांना फार फलदायी ठरली. शिक्षण मिळविण्यासाठी पडलेल्या परिश्रमांनी त्यांच्यात चिकाटी व सहनशीलता निर्माण केली. वडिलांनी त्यांना शिकविण्याचे बाबतीत कांहीही कमी पडू दिले नाही. मला वाटते निदान जुन्या मध्यप्रदेशमध्ये तरी लमाणी समाजातील पहिले वकील म्हणून ना. वसंतराव पुसदला आले. शिक्षणामुळे त्यांच्या जीवनाला नवे वळण मिळाले आणि जीवनाकडे पहाण्याची त्यांना नवी दृष्टी प्राप्त झाली. वकील म्हणून पुसदला आल्यावर त्यांना प्रथम सामाजिक मागासलेपणाविरुद्ध जोराची झुंज द्यावी लागली.

शिक्षणानंतर त्यांनी ब्राह्मण समाजातील मुलीशी प्रेम-विवाह केला ही घटना केवळ वंजारी समाजातीलच नव्हे तर सर्वसाधारण ग्रामीण समाजाला व समजुतींना फार मोठा हादरा देणारी होती. ह्या गुन्ह्याचे प्रायश्चित्त म्हणून त्यांना समाजाने बराच काळपर्यंत वाळीत टाकले होते. मागासलेल्या जातीमधील ह्या माणसाला

मिळालेल्या आधुनिक विचारासाठी जबर किंमत द्यावी लागली. पण त्यामुळे मध्य-युगीन वातावरणातील परंपरागत बुरसटलेल्या विचारसरणीचे गुलामगिरीतून त्यांची मुक्तता झाली. ही आधुनिक विचार-दृष्टी त्यांच्या जीवनाच्या इतर दालना-मध्ये त्यांना वरदान ठरली.

त्यांनी पहिली चळवळ हाती घेतली ती वंजारी समाजाच्या पोषाखात क्रांती करण्याची ! स्वतःचे घरापासून त्यांनी प्रारंभिलेल्या ह्या कार्याला बदलत्या काळाने फार मद्दत केली व त्यांचे स्वप्न बऱ्याच मोठ्या प्रमाणात विदर्भाच्या भागात साकार झाले. नंतर त्यांनी वंजारी समाजाला दारूच्या व्यसनापासून दूर ठेवण्याची चळवळ आखली व गावेच्या गावे ह्या परिवर्तनाला अनुकूल करून घेतली.

एकदा समाजकार्यात पडल्यावर त्यांचे क्षेत्र व्यापक होत गेले. त्यानंतर त्यांना पुसद नगरपालिकेचे अध्यक्षपद लागोपाठ ८-१० वर्षे मिळाले. त्यांच्या कारकीर्दीचे वैशिष्ट्य म्हणजे ते अध्यक्ष असताना एकदाही नगरपालिकेत मतदानाचा प्रसंग उद्भवला नाही. त्यांचा राजकीय जीवनात झालेला प्रवेश हा मूलतः समाजकार्याच्या महाद्वारामधून झाला आणि त्यामुळे त्यांच्या राजकीय विचारांना व कर्तृत्वाला सामाजिक समंजसपणाचे विशाल अधिष्ठान लाभले. आजही त्यांच्या विचारांतून आणि आचारांतून आग्रही अभिनिवेश दिसत नाही किंवा त्यांच्या राजकीय मतांना इतरामध्ये पुष्कळदा दिसणारा पक्षीय अभिनिवेशाचा आग्रही अणकुचीदारपणा जाणवत नाही ह्याचे मूळ कारण याच गोष्टीमध्ये आहे.

पुसद नगरपालिकेच्या अध्यक्षीय अनुभवानंतर १९५२ मध्ये त्यांची मध्य-प्रदेशच्या विधानसभेत काँग्रेस सभासद म्हणून निवड झाल्यावर त्यांची महसूल विभागाचे उपमंत्री म्हणून नेमणूक झाली. ती त्यांच्या राजकीय मोठेपणाची रोवलेली एक प्रकारची मुहूर्तमेढ ठरली. मध्य प्रदेशचे माजी मुख्य मंत्री श्री. भगवंतराव मंडलोई यांच्यासारख्या मुरब्बी राजकारणी मंत्र्यांचे उपमंत्री म्हणून काम करायला मिळणे ही खरोखरच एक संधी होती. लवकरच वसंतरावांनी कळकळीच्या कामाने, अभ्यास वृत्तीने आणि समंजस समतोलपणाच्या वागणुकीने केवळ आपल्या खात्याच्या मंत्र्यांचाच नव्हे तर मुख्यमंत्री कै. पं. रविशंकर शुक्ल या ज्येष्ठ पुढाऱ्याचा विश्वास संपादन केला. ना. नाईकाकडे काम सोपविले की, अत्यंत चोखपणाने व अभ्यास विकाटीने ते पार पडते हा त्यांचा लौकिक तेव्हापासूनच सुरू झाला.

उपमंत्रीपदापासून मुख्यमंत्रीपदापर्यंतची वाटचाल ना. नाईक ह्यांनी केली असली तरी त्यांचे सर्वात मोठे आणि त्यांच्या व्यक्तित्वाच्या इतर सर्व वैशिष्ट्यांना झाकून टाकेल असे वैशिष्ट्य म्हणजे ते हाडाचे शेतकरी आहेत ! वकिली करताना आणि सरकारात असताना देखील त्यांचा शेतीबद्दलचा जिन्हाळा हा कधीच कमी झाला नाही. उलटपक्षी द्विभाषिकाचे नंतर महाराष्ट्रातील मेहनती शेतकऱ्यांचे

नवे दर्शन घडल्यावर त्यांचा शेतीसंबंधीचा जिऱ्हाळा उजळून निघाला. शेती हे त्यांचे वेड आहे असे म्हटले तरी मुळीच वावगे नाही.

खेड्यापाड्यातून जेव्हा हजारो शेतकरी आपल्या मुख्यमंत्र्यांच्या तोंडून शेतीसंबंधीची त्यांच्या इतकीच तपशीलवार माहिती ऐकतात तेव्हा त्यांना वेगळेच समाधान लाभते. जमिनीचा पोत, नांगरणीची पद्धत, बी निवडण्याची काळजी, बी-बियाण्याचे वेगवेगळे प्रकार व उपप्रकार, पेरण्याचे शास्त्र, लागवड करण्याची पद्धती, पिकाच्या संरक्षणाची काळजी, ग्रामीण विभागात भासणाऱ्या अडचणी, गुरा-ढोरांची निवड व त्यांची जोपासना, पीक हाती आल्यावर शेतकऱ्यांची होणारी नाडवणूक इत्यादी एक ना अनेक बाबींचा इतका सूक्ष्म तपशील त्यांना ठाऊक आहे की, शेतीचे इतके प्रत्यक्ष व बारीक ज्ञान आणि त्यासंबंधीचा तेवढाच जिऱ्हाळा व कळकळ असणारा मंत्री दुसरा असेल की नाही ह्यांची शंका उद्भवणे रास्त ठरते.

त्यांनी स्वतः शेती केली आहे. शेतीइतका प्रतिष्ठित व्यवसाय दुसरा नाही ही त्यांची श्रद्धा आहे. त्यांच्या स्वतःच्याच शेतीचे स्वरूप केवळ सहा-आठ वर्षांच्या काळात त्यांनी पार बदलून टाकले आहे. दहा वर्षांपूर्वी वऱ्हाडात जी पिके घेतली तर वेड्यात काढले असते अशी पिके प्रयोग म्हणून त्यांनी स्वतःच्या शेतीवर यशस्वीपणे घेतली आहेत. आज पुसदच्या परिसरातील त्यांच्या कुटुंबाची शेती हा वऱ्हाडात कौतुकाचा विषय तर झालाच आहे पण प्रत्यक्षात कास्तकारी पहाण्यासाठी तेथे शेतकऱ्यांची जा-ये सारखी सुरू असते. ते दौऱ्यात कोठेहि असले तरी कोणत्या शेतावर काय काम चालले, खत टाकले की नाही, काय पेरायचे ठरविले, पेरणी कशा पद्धतीने करावी इ. अनेक गोष्टींची माहिती रोज मिळाल्याखेरीज त्यांना चैन पडत नाही.

त्यांच्या ह्या शेतीच्या प्रेमातूनच महाराष्ट्रातील बांधवंदिस्तीच्या लाखो एकरांच्या योजनांनी ते शेतकी मंत्री असताना जन्म घेतला. ते शेतकी मंत्री असताना ट्रॅक्टर्सची योजना मोठ्या प्रमाणावर सुरू झाली. कोकणातल्या काजू लागवडीच्या योजनेने मूळ घरले आणि पशुसंवर्धनाच्या कामालाही नवी दृष्टी मिळाली. ते मुख्यमंत्री झाले, पण पुष्कळदा असे वाटते की, त्यांना त्याचा विसर पडतो की काय ? कारण त्यांची सर्व भाषणे, दौऱ्यातील बहुतेक वेळ आणि कल्पनाशक्ती व चर्चा इ. शेतीभोवतीच केंद्रित झालेल्या असतात.

महाराष्ट्राला दोन वर्षांत वान्याचे बावतीत स्वयंपूर्ण करण्याची त्यांनी केलेली घोषणा अनेकांना तेवढी आवडली नाही. पण खुद्द नाईकांचा आत्मविश्वास दांडगा आहे. त्यांनी त्याबाबत सखोल व प्रदीर्घ विचार केला आहे. ते कामाला लागले व गेल्या वर्षातच महाराष्ट्रात लाखो एकरात मोठ्या अहमहमिकेने शेत-

कन्यांनी दुसरे पीक काढले. अवर्षणाने हे यश पाहिजे तसे उठून दिसले नसेल, पण पाया घातला गेला. अजून दोन हंगाम आहेत. त्यांत ३० लाख एकरांत दुसरे पीक उभारायची त्यांची जिद्द आहे. हा मुख्यमंत्री हाडाचा शेतकरी आहे. पण सुटाबुटा-तला आहे. विचारातील व्यवस्थितपणाबरोबरच पोषाखातला व्यवस्थितपणा त्यांना फार आवडतो. जुन्या शेतीचे प्रेम आणि आधुनिक पोषाखाची आवड हे त्यांचे वैशिष्ट्य-भावी शेतकऱ्यांचेही कदाचित हेच चित्र असेल !

मुख्यमंत्री झाल्यानंतर शेतकऱ्यांसंबंधी अनेक मूलभूत निर्णय ना. नाईकांनी घेतले. जमिनीच्या सिलींगचा कायदा करण्याचे अत्यंत बिकट, कटकटीचे व सहन-शीलतेची परीक्षा पाहणारे काम ना. चव्हाणांनी नाईक यांचेकडे सोपविले व ते त्यांनी यशस्वी रीतीने पार पाडले. आता मुख्यमंत्री झाल्यावर शेतकऱ्यांच्या हिता-साठी त्यांनी धान्याची एकाधिकार खरेदीची अत्यंत घाडसी योजना स्वीकारली. समाजवादी समाजरचनेकडे अशा रीतीने पाऊल टाकणारे महाराष्ट्र राज्य हे पहिले राज्य व ना. नाईक हे पहिले मुख्यमंत्री ! विरोध झाला. राज्यातून व केंद्रातूनहि ! पण त्यांनी त्याला तोंड दिले आणि आतां केंद्रानेहि हे तत्व स्वीकारले आहे. इतर राज्येहि हळू हळू त्या मार्गावर आहेत.

शेतकऱ्यांना जास्त कर्ज मिळण्याची व्यवस्था, ३५ हजार एकरांत संकरित बियाणे निर्माण करण्याची योजना, हजारो बंधारे घालून व हजारो विहिरींचा कार्य-क्रम जलद गतीने हाती घेऊन पंप्स, इंजिने, मोट इ० द्वारे ओलित शेतीचा भव्य कार्य-क्रम इ० अनेक निर्णय हे फार महत्वाचे आहेत व त्यावर ना. नाईकांच्या शेतकरी व्यक्तित्वाची स्पष्ट छाप आहे. गेल्या मे महिन्यात मुंबईमध्ये झालेल्या अ. भा. कां. क. च्या अधिवेशनात शेतीच्या विम्यासंबंधीचा ठराव मांडायला सांगून काँग्रेस श्रेष्ठींनी एक प्रकारे ना. नाईकांच्या ह्या वैशिष्ट्यावर पसंतीचे शिक्कामोर्तबच केले आहे.

ना. नाईकांचे व्यवितत्व तसे अबोल आहे. ते फारसे बोलत नाहीत. समोरच्या माणसाचे ऐकत असतात. त्याला सहसा थांबवीत नाहीत. एकाग्र चित्ताने डाव्या हातातील पाईप सावरीत ऐकत रहातात. ह्यामुळेच की काय बरेचसे भेटणारे आपले म्हणणे लवकर थांबवीत नाहीत. मध्येच ते एखादा सूचक प्रश्न विचारतात. त्यांच्या स्वभावातले सर्वांत मोठे वैशिष्ट्य म्हणजे ते कोणालाही दुखविण्याचे टाळतात. त्या-मुळे अनेकदा त्यांचे श्रम व वेळ दोन्हीही खर्ची पडतात. हा शांत स्वभाव व संयमी-पणा त्यांच्या स्वभावाचा मूलगामी भाग आहे. प्रत्येकाचे ऐकले पाहिजे हा समजस भाव त्यांमार्गे आहे. त्यांच्या बरोबर ज्यांनी सिलेक्ट कमिटीचावर काम केले त्यांना हे ठाऊक आहे. सांगणारे थकतील पण ते ऐकून दमत नाहीत. दमले तरी तसे सांगणार नाहीत. त्यांना कमालीचे श्रम पडतात पण त्यांचा तोल सुटत नाही. सर्वांना सांभाळून

घेऊन चालण्याच्या त्यांच्या वृत्तीमुळे कित्येकांना ना. नाईक हे इतरांना जरूरीपेक्षा जास्त वाव देतात असेही वाटते. पण एवढे झाले तरी विचारानंतर वनलेल्या स्वतः-च्या मताला ते मुरड घालतात असे मात्र नाही. शक्य तो कोणास न दुखवता निर्णय घेता आले तर अधिक चांगले हे त्यांचे धोरण व त्या अनुरोधाने वागणे. कडक भाषेत सांगितल्यानेच आपली मते पटविता येतात असे नाही !

राज्यकारभारात 'ह्युमन इलेमेंट' असण्यावर त्यांचा जास्त भर. मागच्या महाराष्ट्रभरच्या दौऱ्यात त्यांनी मुद्दाम अधिकाऱ्यांच्या सभा घेऊन सांगितले की, 'जे काम करणार नाहीत त्यांच्या चुका होणार नाहीत; म्हणून चूक न होण्यासाठी निर्णय न घेणे व काम न करणे इष्ट नाही. काम करताना प्रामाणिक चूक झाली तर त्याकडे कडकपणाने पाहिले जाणार नाही. '

शेतकी, सहकार आणि महसूल अशा तीन वेगवेगळ्या विभागामध्ये ना. नाईकांनी मंत्री म्हणून काम केले व कर्तृत्वाची छाप पाडली. ना. यशवंतराव चव्हाणां-सारख्या कुशल, मुत्सद्दी व दूरदृष्टीच्या नेत्याच्या कसोटीला उतरणे ही काही साधी वाव नाही. जमिनीच्या सिलींगचा कायदा आणि राजसत्तेच्या विकेंद्रीकरणाचा कायदा ह्यासाठी नेमलेल्या समित्यांचे घुरीणत्व त्यांनी अत्यंत कळकळीने, चिका-टीने, अभ्यासूपणाने व विचारपूर्वक केले. मुख्य मंत्री झाल्यानंतर त्यांनी दारूबंदी-संबंधीचे वास्तववादी धोरण जाहीर केल्यानंतर मोठे वादळ झाले. पण त्यांनी आपला विचार चांगल्या आणि वाईट टीकांना उत्तर देऊन पुढे मांडला. केंद्र सर-कारच्या धोरणावर हल्ला करण्याचे कटू कर्मही त्यांना करावे लागले. राजकीय स्वरूपाच्या सार्वत्रिक संपांना तोंड द्यावे लागले. वेळगाव व कारवार आणि गोव्याच्या प्रश्नावर जनतेचे मनोगत खंबीरपणे मांडण्याचे आणि त्याचबरोबर राज्याचे स्थैर्य कायम ठेवण्याचे अत्यंत नाजूक कार्य त्यांच्या वाटचाला आले. कृष्णा-गोदावरीच्या प्रश्नावरदेखील केंद्राला योग्य जाणिवेने जागृत ठेवावे लागले.

दुष्काळ व अवरुपणाच्या आणि अन्नधान्याच्या तुटीच्या प्रश्नाने त्यांची सत्व-परीक्षा पाहिली. पण ना. यशवंतरावजींच्या मार्गदर्शनाने आणि ना. बाळासाहेब देसाई, ना. आवासाहेब खेडकर, ना. बाळासाहेब सावंत, ना. वानखेडे, ना. शंकरराव चव्हाण इत्यादी खंबीर व ज्येष्ठ सहकाऱ्यांच्या सल्ल्याने ना. वसंतराव नाईकांनी हिंमतीने व कुशलतेने ही सर्व जबाबदारी पार पाडण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला. मंत्रिमंडळ व विधान सभेतील सर्व सहकाऱ्यांना त्यांनी समंजसपणाची वागणूक दिली. त्यांचेजवळ मन मोकळे करायला कोणालाही भीति किंवा संकोच वाटत नाही. राहुरीच्या शिबिरामध्ये ना. यशवंतराव चव्हाण म्हणाले होते की, 'महाराष्ट्रात प्रगती होते आहे की नाही आणि महाराष्ट्र राज्य कसे चालले आहे हे कोणाला राज्यात राहून कळणार नाही. राज्याबाहेरून ह्या राज्याकडे इतर राज्यांच्या

तुलनेने पाहिल्यास हे जास्त प्रभावीपणे कळू शकेल. ' भारतांतील सर्व राज्यांच्या मुख्यमंत्र्यांमध्ये ना. नाईकांनी आपले स्थान आपल्या विचारांनी व कार्याने निर्माण केले आहे ही वस्तुस्थिती आहे.

विरोधी पक्षांना जास्तीत जास्त सन्मानाने आणि विश्वासात घेऊन वागण्याचा ना. नाईकांनी सातत्याने प्रयत्न केला आहे. मित्रांचे मित्र राहूनही विरोधकांना मैत्रीच्या पातळीवरून वागणूक देण्याचा त्यांनी कळकळीचा प्रयत्न केला आहे. महाराष्ट्र राज्याचे राजकीय स्थैर्य व शासकीय कर्तृत्व राखावयाचे असेल तर फुटीर वृत्तीने राहता कामा नये असे त्यांना वाटते आणि म्हणून महाराष्ट्र काँग्रेसमध्ये वेगवेगळे तट पडू नयेत याकरिता त्यांनी सर्वांना सारखे वागवून सतत प्रयत्न केला आहे. संघटनेच्या पुढाऱ्यांना ह्याची जाणीव असल्याने ना. यशवंतरावजींनी घालून दिलेली वाट विचारपूर्वक चोखाळण्याचे प्रयत्न होत आहेत.

ना. नाईकांच्या रूपाने महाराष्ट्राला एक विचारी, दूरदृष्टीचे, शांत, समंजस व कर्तृत्वशील असे व्यक्तिमत्व मुख्यमंत्रीपदावर मिळाले आहे. त्यांची कारकीर्द अवघी दोन-अडीच वर्षांची ! त्यामुळे त्यांच्या कर्तृत्वाबद्दलचे निदान आग्रहीपणाने सांगणे ना. नाईकांना स्वतःला रुचणारे जरी नसले तरी एक गोष्ट मात्र निश्चित की आतापर्यंत जे दिसले, जो अनुभव आला, जे निर्णय घेतले त्या सर्वांवरून ना. नाईकांबद्दलच्या अपेक्षा आणखी उंचावतात. ना. यशवंतराव चव्हाणांनी आपल्या हस्ते गतिमान केलेला समाजवादी महाराष्ट्राचा जगन्नाथचा रथ त्यांच्या ध्येय-घोरणानुसार ना. नाईकांच्या सारथ्याखाली. सारखा पुढे चालला आहे ही खात्री बळावते.

ना. नाईकांनी आपल्या वाढदिवसाचा सोहळा स्वतःच रद्द करण्यास भाग पाडल्याचे परवाच जाहीर झाले. सद्यःपरिस्थितीत नेत्याने कसे वागावे याची एक इष्ट दिशा त्यांनी दाखविली असेच कोणीही म्हणेल. ह्या त्रेपन्नाच्या वाढदिवशी महाराष्ट्राच्या ह्या लोकप्रिय मुख्यमंत्र्याला यशस्वी कारकीर्द, उज्ज्वल भवितव्य आणि दीर्घायुरारोग्य लाभावे ही हार्दिक शुभेच्छा व विनम्र अभिवादन !



गरीबी कायद्याने किंवा कुणाच्या दानाने दूर होणार नाही, तर आपल्या जवळील साधनांचा चातुर्याने उपयोग करून उत्पादन वाढविल्यानेच होईल व त्यामुळे देश समृद्ध होईल.

—ना. वसंतराव नाईक.

नत्या पिठीचे प्रतिनिधी

नरूभाऊ लिंमये

मला वाटते, वसंतरावजी कामाच्या गर्दीत ज्या असंख्यांना भेटू शकले नसतील त्यांनाही त्यांची मूर्ती माझ्यासारखीच दिसली असेल . . .

महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री श्री. वसंतराव नाईक यांचा एक जुलै हा वाढदिवस आहे. स्वाभाविकच त्यांचे मित्र, चहाते आणि महाराष्ट्रातील वृत्तपत्रे व वाचक, वसंतरावजींच्या व्यक्तिमत्त्वाची आठवण करतील. आपल्याला वसंतराव कसे दिसले, केव्हा भेटले, काय बोलले यावरून प्रत्येक माणूस त्यांच्याबद्दल काहीतरी भावना बाळगून असेल. ज्याला संवी मिळेल तो ती व्यक्त करून दाखवील.

प्रथमच कबूल केले पाहिजे की, मला आमचे मुख्यमंत्री तसे परिचित नाहीत की ज्यांच्याबद्दल अधिकारवाणीने काही लिहावे, पण इतके परिचित निश्चित आहेत की, थोड्या दूरच्या अंतरावरूनही या सद्गृहस्थ मुख्यमंत्र्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा ठसा आपल्या मनावर जसा उमटला तो नमूद करावा. कारण मला वाटते वसंतरावजी कामाच्या गर्दीत ज्या असंख्यांना भेटू शकले नसतील त्यांनाही त्यांची मूर्ती माझ्यासारखीच दिसली असेल आणि म्हणून माझे शब्दचित्र प्रातिनिधिक ठरेल. ते एका पत्रकाराचे निरीक्षण आहे.

सचिवालयाच्या प्रवेशद्वारापासून आमच्या मुख्यमंत्र्यांच्या मागोमाग जावे. गाडीतून पाऊल खाली टाकले की, एका ठराविक मध्यम गतीने मुख्य मंत्री लिफटकडे जातात. मान किंचित खाली वळलेली, तोंडात खुशबुदार तंबाखू जळत असलेली पाईप, त्यावर उजव्या हाताची बोटे स्थिरावलेली, कपाळावर कामाचा ताण कमीजास्त असेल त्या मानाने आठ्यांची संख्या कमीजास्त, खाली नजर असली तरी समोरून येणाऱ्या-जाणाऱ्याने केलेल्या अभिवादनाचा अचूक स्वीकार झाल्याशिवाय रहात नाही. जणू शोधक नजरेला नकळतच सर्व समजते. पण मुख्यमंत्री झाला तरी दुतर्फा सर्वांनी सलाम आणि खडी ताजीम देत रहावे आणि आपण ती घेत प्रेमकटाक्ष टाकत

किंवा रागलोभाची छटा भोवतालच्या मंडळींना पटवून देत कुणाच्या खांद्यावर हा टाकत पुढे जावे ही तथाकथित राज्यकर्त्यांची पद्धत. वसंतरावजीच्या गावी नाही. उलट चटकन आपली खोली गाठावी म्हणजे आजूबाजूच्या मंडळींची अडचण नको असाच भाव त्यांच्या जलद पडणाऱ्या पावलातून दिसतो.

कुणी लिफ्टमध्येच गेला तर लगेच 'हं काय' असा प्रतिसाद त्याला मिळाल्या-शिवाय रहात नाही. वर सहाव्या मजल्यावर गेले की मागे वळून त्या व्यक्तीचा निरोप घेतील. लिफ्टपुरती सोबत तशीच लांबवून कुणी त्यांच्या बरोबरच खोलीत शिरू शकेल असा संभव त्या सौजन्याच्या सहावासातही आढळत नाही. आलेल्या त्या माण-साला साहेबांचे व्यक्तिगत कार्यवाह श्री. साळवींच्याकडे जाऊन भेटीची मागणी व भेटीची वेळ ठरवून घ्यावी लागेल.

मुख्यमंत्र्यांच्या दारावर परिचित दोन द्वाररक्षक विठोबा किंवा महंमद हसून इतराना मागेच थोपवून मुख्यमंत्र्यांना तेवढे आत जाऊ देतील. आणि वसंतरावजी-सुद्धा एकटेच आत शिरतील. कारण त्यांना आपल्या टेबलावरची तातडीची कामे दिसत असतात. आदल्या दिक्शी ठरलेल्या गाठीभेटींची मंडळी शेजारच्या खोलीत येऊन बसलेली असतील याची जाणीव असते. तेव्हा सौजन्यालाही मर्यादा असतात हे इतरांच्या लक्षात येते आणि पटते.

मला वाटते वसंतराव-आमचे मुख्यमंत्री- हे काही निराळे आहेत. सचिवा-लयाच्या त्या खोलीत यापूर्वी जी माणसे बसून कारभार करून गेली त्यापेक्षा हा नवा मुख्यमंत्री कांही निराळा आहे. त्यांचा पोषाख बदललेला आहे. नेहरू शर्ट, जाकीट, लांब पांढरा खादीचा कोट, टोपीचा कोन काळजीपूर्वक व व्यवस्थित बसविण्याची काळजी घेणारे यशवंतराव किंवा अंगात कोट आहे एवढेच पहाणारे बाळासाहेब खेर या सर्वांच्या परंपरेपेक्षा ही व्यक्ती कांही निराळी आहे. यापूर्वी कुणा मुख्यमंत्र्यांच्या हातात सदैव पाईप कुणी पाहिलेला नाही, एवढेच नव्हे तर सिगरेट ओढणे, चहा पिणे वगैरे गोष्टी देशभक्तीच्या कोशात बसत नाहीत असे मानणारांची पिढी जणू इतिहासजमा झाली आणि स्वातंत्र्यानंतरच्या कालात मोठ्या विकास योजनांच्या युगाला आवश्यक असा तंत्रज्ञ यंत्रज्ञांचा हा प्रतिनिधी स्थानापन्न झाला असे वाटते. फरक लक्षात येतो. क्षण-भर मन चमकते पण नंतर वाटते हीच आजची गरज आहे.

वसंतरावजी एखाद्या विषयावर बोलू लागले की, हा टेक्नोक्रेट कसा आहे ते लक्षात येते. कोठलाही विषय भावनाविरहित हिशेबनिसाच्या पद्धतीने ते मांडतात. साखर कारखानदारांची बैठक असो की द्राक्षे पिकविणाऱ्या श्रीमान, सधन बागाईत-दारांची परिषद असो. कुणी मनात म्हणेल 'सी. एम्.' आमचे आहेत. ते स्वतः बागाईत-दार आहेत तेव्हा-पण वसंतरावजी चारदोन शब्द बोलल्याबरोबर लक्षात येते की, या माणसाकडून योग्य तेवढे आणि आवश्यक तेवढेच मिळेल. पण त्याचबरोबर केवळ

भांडवलदार आणि बागाईतदार ही नावे उच्चारल्याबरोबर जुन्या पिढीचे गरिबांचे प्रतिनिधी असे चळवळीतले लोक जसे कपाळाला आठी घालून मैदानी वक्तव्य करू लागतील तसे वसंतराव करणार नाहीत. ज्वारी कापसाइतकीच द्राक्षे, ऊस हवा. द्राक्षे उद्या शेतकऱ्याला खरी फायदेशीर व्हावी म्हणून आसवे, मद्ये काढण्याइतके पुढे जाणारा हा नव्या पिढीतील प्रतिनिधी आहे. स्वातंत्र्यपूर्व काळात राष्ट्रीय लढ्यात उपयुक्त ठरलेल्या आश्रमीय संकेतावद्दल त्यांना आदर असेल पण स्वातंत्र्योत्तर कालात त्या-पेक्षा काही निराळे माप आणि साधन हवे याची त्यांना जाणीव आहे व ती जाणीव ते इतरांना निर्भयपणे करून देतात. उगाच मागच्या परंपरेत गुरफटण्यातच विनय आणि श्रद्धा आहे असे ते मानत नसावेत, ती परंपराच त्यांना परिचित नसावी.

वसंतरावजींच्या नजरेत घाडस आहे. हिशेब थोडा मागे ठेवून घाडसी उडी कशी घ्यावी याची वमक यांच्याजवळ आहे. एकाधिकार ज्वारी खरेदी योजना असो की, दुष्काळाचे आव्हान स्वीकारताना केलेल्या घोषणा, पुरविलेली इंजिने आणि जनतेला दिलेली हाक असो. त्यात इतरांना हिशेब कमी दिसतो. सुरुवातीलाच मुंबई सचिवालयात शक-शंका निघू लागतात तेव्हा नागपुरी पद्धतीने वसंतरावजी आपला विश्वास व्यक्त करत असतात. ज्यावेळी उद्या अन्न काय खावे असा प्रश्न महाराष्ट्रा-समोर गेल्या साली उभा राहिला तेव्हा मुख्यमंत्र्यांनी घोषणा केली ती दोन वर्षात महाराष्ट्र स्वावलंबी करण्याची. त्या घोषणांचा परिणाम अजून जनतेसमोर यावयाचा आहे. कुणी त्या घोषणांना म्हणजेच त्यांना स्वप्नाळू म्हटले तर कुणी तीच भावना निराळ्या शब्दात मांडली की, आमच्या मुख्यमंत्र्यांना झोपेतून जागे केले आणि विचारले तर पहिला शब्द ते हायब्रिड फर्टिलायझर असा उच्चारतील. वसंतरावजींच्या घोषणेची थोडी चेष्टाच झाली. पण परवा पुण्यात महामंत्री इंदिराजींच्या समोर त्यांनी पुन्हा तीच घोषणा केली. आणि या योजनेप्रमाणे गेले वर्षभर जे काम महाराष्ट्रात झाले त्याची प्रचिती वऱ्याच प्रमाणात घेईल असा सूर आज ऐकू येत आहे. काँग्रेसविरोधक १९६५-६६ सालात महाराष्ट्रात भूकवळी पडणार आणि आपण ते मोजून निवडणूक मोसमात मुख्यमंत्र्यांना जाब विचारणार अशा तयारीत होते. पण तसे घडले नाही. मला वाटते मराठी शेतकऱ्याचे मन अचूक ओळखून त्यांच्या मरगळलेल्या मनाला उत्तेजन देण्यासाठीच ही भव्य घोषणा मुख्यमंत्र्यांनी केली. पहिला पाऊस पडून घात झाला की लाख कामे बाजूस सारून शेतात धावणारा शेतकरी आपल्या कणगीत धान्य नाही म्हटले तर हजार किमतीची नगदी पिके तोडून शाळू पेरील, त्याला पाणी दिले पाहिजे हा वसंतराव नाईक हिशेब करीत असले पाहिजेत. १९६५-६६ सालात महाराष्ट्रात उपसासिंचन योजनांना जो वेग आला आहे त्याचे दृश्य फल येत्या वर्षभरात दिसू लागेल. लोकच म्हणतील की महाराष्ट्र काटेकोर रीतीने स्वयंपूर्ण झाला नाही तरी आमच्या मुख्यमंत्र्यांना फाशी देऊ नका

उलट त्यांचा गौरव करा कारण त्यांनी उत्पादनाला जो वेग आणि वळण लावले ते लाख मोलाचे आहे. एकाधिकार ज्वारी खरेदी योजनेची तीच गोष्ट आहे. वसंतरावजींनी ही घोषणा केली पण त्यामागे डॉ. वनंजयराव गाडगिळासारख्यांचा अनुकूल अभिप्राय घेऊन उडी मारली ही गोष्ट आता उघडे गुपित झालेली आहे. म्हणजे कार्यकर्त्या पुढाऱ्याची उडी आणि तज्ञाच्या हिशेबाची मर्यादा या दोन्हींचा मिलाफ या योजनेत दिसला. दिल्लीपर्यंतच्या मंडळीसमोर या योजनेचा पाठपुरावा मुख्यमंत्र्यांनी ज्या हिरीरीने केला त्यावरून महाराष्ट्राला दिल्लीकडे तोंड करून निर्भय, निर्भीड बोलणारा मुख्य मंत्री मिळाला असे वाटले. केंद्रीय अन्नमंत्री सुब्रह्मण्यम् यांची परिषद आणि राहूरी काँग्रेस शिवीर या मधली मुख्यमंत्र्यांची भाषणे परखड आहेत. एक तऱ्हेने राहूरी शिविरात वसंतरावजींनी साऱ्या काँग्रेसलाही परिस्थितीचे आव्हान स्वीकारण्याची हाक दिली. थोडे मागे वळून पाहिले तर या टेक्नोकॅट मुख्यमंत्र्यांना काँग्रेस संघटनेकडून खरेखुरे सहकार्य मिळाले नाही अशा निर्णयाला यावे लागेल. संघटनेतून वर येणारा आणि संघटनेला बरोबर घेऊन नव्या युगाची वाटचाल करायला लावणारा इतका सव्यसाची नेता क्वचितच मिळतो पण या मुख्यमंत्र्यांच्या यशापयशाचा हिशेब होईल तेव्हा महाराष्ट्र काँग्रेसला आपण वाटा किती उचलला याचा जांब द्यावा लागेल असे मला प्रामाणिकपणे वाटते.

मुख्यमंत्री वसंतराव नाईक हे काँग्रेस संघटना किंवा स्वातंत्र्य पूर्वकालातील लढा या संदर्भात थोडे नवेच आहेत असे त्यांच्या जीवनचरित्रावरून दिसते. १९५० साली ते वऱ्हाड काँग्रेस कार्यकारिणीचे सभासद झाले. आणि लगेच एकदोन वर्षात महसूल मंत्री बनले. त्यांचे खरे कार्यक्षेत्र शेतीमहसूल खात्यातलेच म्हणावे लागेल. अँग्रीकल्चरल रिसर्च कौन्सिलच्या फायनान्स कमिटीचे ते सभासद होते. चीन-जपानचा दौरा वसंतरावांनी केलेला आहे. लोकशाही विकेंद्रीकरण, आदीवासींचा प्रश्न वगैरे गोष्टीत त्यांच्या शोधक अभ्यासक नजरेचा फायदा झालेला आहे. पण माझ्या मते त्यांचे खरे कार्यक्षेत्र भारताच्या राजकीय जीवनात दोन कसोट्यांच्या वेळी दिसून आले. पंतप्रधान पंडित नेहरूंच्या निघनानंतर दिल्लीत जो धक्का बसला त्यावेळी नाजूक हाताने पडद्याआड समर्थपणे काम करणाऱ्या मंडळींची दिल्लीत गरज होती. महाराष्ट्रातर्फे बोलू शकणारे यशवंतरावजी अमेरिकेत होते आणि क्षणाक्षणाचा उशीर झाला तर कार्य बिघडेल इतक्या तातडीने निर्णय घ्यावयाचा होता. असे म्हणतात की, वसंतरावजींनी यशवंतरावांचे म्हणजेच महाराष्ट्राचे मत गृहीत धरून शास्त्रीजींना पाठिंबा देऊन टाकला व तो पाठिंबा योग्य ठिकाणी कळवून शास्त्रीजींच्या यशाचा मार्ग खुलाही करून दिला. त्या घटनेनंतर मुंबईत त्यांनी पत्रकारांना दिलेली एक मुलाखत त्यांच्या दिल्लीतल्या कामाची आणि स्थानाची ओळख करून देण्याइतकी बोलकी होती. दुसरा अधिक अडचणीचा प्रसंग शास्त्रीजींच्या निघनानंतरचा होता.

पंडितजीनंतर शास्त्रीजी ही निदान खुद्द पंडितजींनी अप्रत्यक्ष रीतीने व्यक्त केलेली निवड होती पण शास्त्रीजीनंतरचा पेच अवघड होता. स्वतंत्र भारताच्या जीवनातला तो आगळा प्रसंग होता. तेव्हाही आपल्या जुन्या सहकाऱ्यांशी संपर्क साधून वसंतरावजींनी आजच्या महामंत्र्यांच्या निवडीत मोठा वाटा उचलला. क्षणभर असे वाटते की, वसंतरावजींजवळ जे सौजन्य, मृदू भाषा, परिस्थितीचे निदान करण्याची शोधक हिशेबी नजर आहे त्यांचे स्थान दिल्लीत आहे. बदलत्या इतिहासात नव्या टेक्नो-क्रॅटना मोठे काम करावयाचे आहे. परवाच माझ्या वाचनात इंडोनेशियाच्या एका पोक्त मुत्सद्याचे उद्गार आले. तो म्हणाला आमचा अध्यक्ष सोकार्नो अजून चाळीस सालच्या स्वातंत्र्य लढ्याचे पोवाडे गात आहे. त्याच गीतगायनाने आपण नव्या पिढीलाही गुंगवू शकू अशी सोकार्नोची वेडी आशा आहे. त्याने ओळखले पाहिजे की पिढी बदलली. काळ बदलला आहे. आज भारताच्या दिल्लीतही बदललेल्या काळाचे प्रतिनिधी हवे आहेत असा विचार गेल्या साली श्री. स. का. पाटील यांनी पुण्यात मांडला होता. तो विचार हा लेख लिहिताना मला आठवला. महाराष्ट्राचेही हे दुःख आहे की आमच्या गरजा, मागण्या व हक्क दिल्लीत नीट ओळखले जात नाहीत. ते कृष्णा-गोदावरी पाण्याचे असोत, गोवा-बेळगाव सीमेचे असोत की, समाजवादी वाटचाल करणाऱ्या महाराष्ट्राला लागणाऱ्या कर्ज-भांडवलाचे असोत. जुन्या पिढीचा लढाऊ मराठा ज्या शब्दात बोलेल ती भाषा कळणारी मंडळी दिल्लीतून कमी झाली आहेत. आमचे काकासाहेब दिल्लीत एका वरच्या पट्टीत बोलत तेव्हा नेहरू-सरदार-आझाद ते ऐकत. आता तो सूर बोलणारे आणि ऐकून घेणारेही कमी झाले, पण महाराष्ट्राचे प्रश्न कायमचे आहेत. दिल्लीतले प्रश्न तेथेच सोडवून घ्यावे लागतात.

वसंतरावजींचा वाढदिवस म्हटल्याबरोबर अनेक विचार मनात येऊन गेले. नवा महाराष्ट्र निर्माण झाल्यानंतर पुणे-कोल्हापूरच्या मराठी मनाला वऱ्हाडी स्निग्धतेची गोड जोड मिळाली आहे याची सुखद स्मृती झाली. 'आम्ही करून राहिलो आहे' सारखे शब्द कानात घुमू लागले. आमचे अर्थमंत्री वानखेडे अरे तू केव्हा आलास असे एकेरी विचारतात, त्या एकेरीतले प्रेम आठवले. 'पुलदे'ना दिसलेला काकाजी कसा रसाळ आहे, कसा नबाबी आहे ते आठवले. आणि वाटले की, खरोखर मराठी जीवन समृद्ध आणि पूर्ण होण्याला सह्याद्रीच्या कडेकपारीतल्या खळखळाटाबरोबरच विदर्भातल्या कपाशीचा शुभ्र, मऊपणा हवा होता. या अनेक रंगतरंगांचे मिश्रण वसंतरावजीत दिसते. ते जीवनात सेंच्युरी बॅटस्मन ठरोत.



स्वराज्याच्या पंढरीतला विठोबा

प्रा. पुंडरीक धुमाळे

मला पुसदची एक सभा आठवते . . . वसंतरावजी बोलण्याच्या आव-
शात म्हणाले, 'नाल्याओढ्याचे पाणी अडवून जमीन भिजवा. तेही न
जमले तर डोक्यावर पाणी आणून जमीन भिजवा, ओंजळीने पाणी
आणा, तेहि न जमले तर घाम गाळून जमीन भिजवा— पण जमीन
ओलित करा.' अक्षरशः शहान्यांनी अंग मोहून गेले हे वाक्य
ऐकल्यावर.

गेल्या मे महिन्याच्या एकोणीस तारखेला पुसदला विदर्भ मराठवाडा घनगर
परिषद मोठ्या घामवुर्मात यशस्वी झाली. विदर्भातून आणि मराठवाड्यातून सुमारे
सातआठ हजार प्रतिनिधी या परिषदेला हजर होते. या परिषदेसाठी एवढी ही प्रचंड
गदी उसळली होती याचे मुख्य कारण म्हणजे मुख्यमंत्री श्री. वसंतराव नाईक प्रमुख
पाहुणे म्हणून येणार होते. त्यांच्या उपस्थितीत झालेल्या या परिषदेत काहीतरी भरीव
सुधारणा घनगर समाजाच्या दृष्टीने होतील अशी खात्री प्रतिनिधींना वाटत होती.
त्यामुळे अक्षरशः हजारांच्या संख्येने हे प्रतिनिधी पुसदला एकत्रित झाले होते.

आणि ही त्यांची अपेक्षा संपूर्णतया सफळ झाली. योगायोग असा की, त्याच
तारखेला पंढरपुरात श्री. राजारामबापू पाटील यांच्या उपस्थितीत पश्चिम महा-
राष्ट्र घनगर परिषद होती. तिचा उल्लेख करून स्वागताध्यक्ष श्री. येडतकर आपल्या
भाषणात म्हणाले होते की, " पंढरपूरच्या घनगर परिषदेत विठोबा उपस्थित आहे
किंवा नाही मला माहीत नाही पण या पुसदमध्ये —लो. टिळकांनी गौरविलेल्या या
'स्वराज्याच्या पंढरीत' मात्र, जनतेचा पांडुरंग नाईकसाहेबांच्या रूपाने उपस्थित आहे."
हे मार्मिक उद्गार स्वागताध्यक्षांनी काढताच समोरच्या अशिक्षित, फेटेवाल्या हजारां
प्रतिनिधींनी टाळ्यांचा अक्षरशः कडकडाट करून आपला आनंद प्रदर्शित केला होता.
आणि परिषद संपल्यानंतर तर शेकडो प्रतिनिधी एकमेकांना सांगत होते, " विठोबा

आपल्याला पावला . . .” प्रत्येकाच्या चेहऱ्यावर आनंद नाचत होता. परिषद यशस्वी झाल्याची तृप्ती आणि समाधान प्रत्येकाच्या चेहऱ्यावर जणू ऊतू जात होते.

कारण विलक्षण सहानुभूतीने श्री. वसंतराव नाईक यांनी त्यांच्या अडचणींचा आणि मागण्यांचा विचार केला होता. घनगर ही जमात शेड्यूल्ड ट्राईब्समध्ये समाविष्ट करण्यासाठी केंद्रामध्ये कसून प्रयत्न करण्याचे अभिवचन दिले होते. पुसदला निघणाऱ्या घनगर विद्यार्थ्यांच्या वसतिगृहाला मागितल्याप्रमाणे पंधरा हजार रुपये मुख्य मंत्र्यांच्या निधीतून दिले आणि लहान सहान मागण्या तर सर्वच मान्य केल्या.

मागण्या मान्य केल्या आणि पंधरा हजार रुपये दिले म्हणून केवळ प्रतिनिधींना आनंद झाला नव्हता. तर हे सर्व देताना मुख्य मंत्र्यांनी ज्या भावना व्यक्त केल्या, ज्या शब्दात व्यक्त केल्या त्यामुळे सर्व श्रोत्यांना श्री. नाईक यांनी जिंकून घेतले. मुख्य मंत्र्यांच्या निधीतून पंधरा हजार रुपये दिल्याचे जाहीर करताना मुख्य मंत्री म्हणाले होते “यांत मी काही विशेष केले असे नाही. मागासलेल्या प्रत्येक जमातीला पुढे येण्याचा हक्क आहे. मी आपल्यावर उपकार केले नाहीत.” या शब्दांनी मुख्य मंत्र्यांनी ती परिषद पूर्णपणे जिंकली. सर्व श्रोते अशा या भाषणाने इतके खुष झाले की, कार्यक्रम आटोपून जेव्हा श्री. वसंतराव नाईक त्या विशाल मांडवातून बाहेर पडले तेव्हा त्यांच्याभोवती असंख्य श्रोत्यांनी गर्दी केली. आणि मागच्या भागात बसलेले हजारो श्रोते उठून त्यांच्या मोटारीच्या दिशेने माना उंच करीत धावू लागले. श्री. वसंतराव नाईक यांना जवळून पाहण्यासाठी त्यांची घडपड चाललेली पाहून स्वर्गीय पंतप्रधान जवाहरलाल नेहरू यांचे जवळून दर्शन घेण्याची उत्सुकता ज्याप्रमाणे प्रत्येक भारतीयाच्या मनात असे, आणि त्यासाठी लोक जशी गर्दी करीत, त्या गर्दीचीच मला आठवण झाली.

मागासलेल्या समाजात श्री. वसंतराव नाईकांनी पं. नेहरूंचेच स्थान मिळविले आहे यात शंका नाही. कारण स्वतः एका मागासलेल्या समाजात त्यांनी जन्म घेतलेला असल्यामुळे, त्यांचे दरिद्री जीवन ते स्वतः जगलेले असल्यामुळे त्यांच्या दुःखांची, अडचणींची त्यांच्याइतकी स्पष्ट जाणीव इतरांना असणे शक्य नाही. श्री. वसंतराव नाईक यांच्या मृदू अंतःकरणांत या मागासलेल्या वर्गाबद्दल खळखळून वाहणारी सहानुभूती, प्रेम आणि जिव्हाळा आहे याचे हे खरे कारण आहे. मागासलेल्या वर्गाच्या मोठमोठ्या सभातून भाषणे करताना म्हणूनच श्री. नाईकांच्या शब्दांतून जिव्हाळा वाहू लागतो आणि म्हणूनच त्यांचे जवळून दर्शन घेण्यासाठी लोक त्यांच्याभोवती प्रचंड गर्दी करतात.

भारतासारखा विशाल देश वेगाने पुढे यायचा असेल तर यापुढे मागासलेल्या जातीजमातींचे श्री. नाईकांसारखे नेतेच मोठमोठ्या अधिकाराच्या पदावर विराजमान व्हायला पाहिजेत आणि ते होणारच. जागृत झालेल्या या नव्या काळाची ही मागणी आता कोणीहि डावलू शकणार नाही. या दृष्टीने विचार केला तर मुख्यमंत्री

श्री. वसंतराव नाईक हे लोकशाहीच्या यशस्वितेचे एक जिवंत आणि विकासोन्मुख उदाहरण होय. लोकशाहीची ही फडफडणारी एक पताका आहे. मुख्यमंत्री वसंतराव नाईकांच्या नेतृत्वाखाली मागासलेले समाज वेगाने पुढे येत आहेत. महाराष्ट्रात आणि आंध्र-म्हैसुरांत बंजारा जमात फार मोठ्या प्रमाणात आहे. ती गेल्या दोन वर्षापूर्वीच श्री. वसंतराव नाईकांच्या केंद्रातील प्रयत्नामुळे शेडचूल्ड ट्राईब्लजमध्ये अंतर्भूत झाली. महाविद्यालयातून हजारो बंजारा विद्यार्थी शिष्यवृत्ती मिळाल्यामुळे उच्च शिक्षण घेत आहेत. रानावनात, उघड्या अंगाने उन्हातान्हात रावणारा हा समाज आता वेगाने पुढे येत आहे. या समाजाचे आणि पर्यायाने राष्ट्राचे, देशाचे चित्र लवकरच बदलून जाणार अशी नवी आशा लोकांच्या मनात निर्माण झाली आहे.

मुख्यमंत्री श्री. वसंतराव नाईक यांनी हे मागासलेले सर्व समाज पुढे आणण्याच्या दूरदृष्टीने आपल्या मंत्रीमंडळांत श्री. दिगंबरराव पडवी हे त्या समाजाचे एक खास मंत्री घेतले. मागासलेल्या जातीजमातींचा इतका जिव्हाळयाने आणि व्यावहारिक दृष्टीने यापूर्वीच्या कोणत्याही मुख्यमंत्र्याने विचार केला नव्हता.

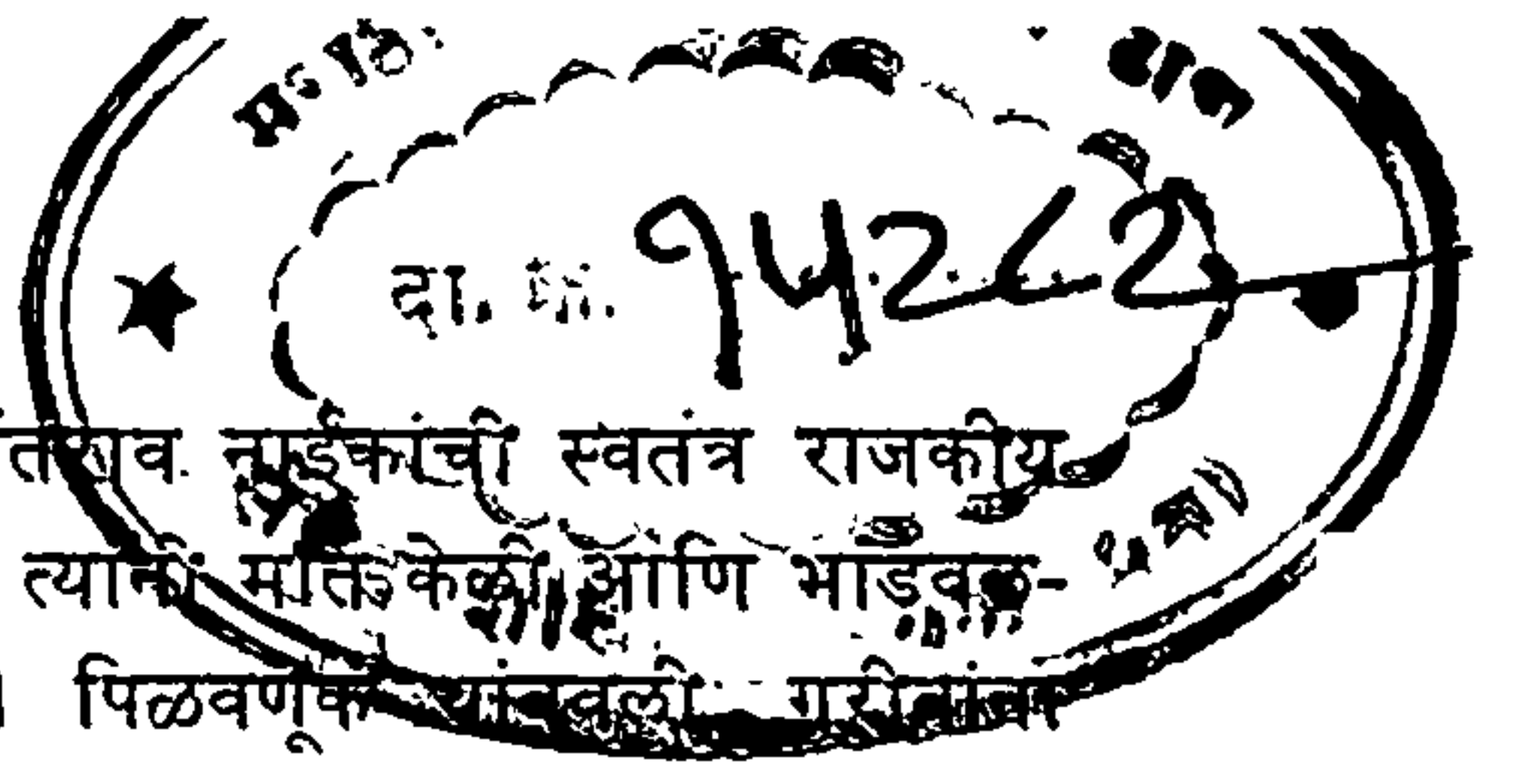
या मागासलेल्या वर्गाचा दुसरा महत्वाचा भाग म्हणजे शेतकरी. “अधिक धान्य पिकवा” ही पंडित नेहरूंच्या काळापासून करण्यात येत असलेली एक राजकीय घोषणा होती. परंतु ती केवळ घोषणाच होती. तिचा आवाज, तिचे सामर्थ्य, तिची शक्ती केवळ जाहिरातीपर्यंतच मर्यादित होती. ती घोषणा पोस्टर्सवर होती; नेत्यांच्या भाषणात होती, वार्तापटात होती. एवढेच काय—शेतकऱ्यांच्या कानापर्यंत जाऊन ती भिडली होती. पण तिथेच ती थांबली. त्यासाठी नेमके काय केले पाहिजे, कोण-कोणते प्रयत्न कसे कसे केले पाहिजेत याचा शेतात रावणारांना गंधही नव्हता. आणि म्हणून मौलिक विचार अडाणी श्रोत्यांच्या कानावरून जावे तशा त्या घोषणा केवळ हवेत विरत होत्या. बोलणे—भाषणे भरपूर, काम कमी अशी स्थिती आजपर्यंत होती.

मुख्य मंत्री झाल्यापासून वसंतराव नाईकांनी शेतीच्या क्षेत्रातील ही परिस्थिती पार बदलून टाकली हे कोणी सांगायला पाहिजे असे नाही. शेतीच्या आणि अन्नधान्याच्या क्षेत्रांत वसंतराव नाईकांनी महाराष्ट्रात आज एक खळबळ माजवून दिली आहे. मुख्यमंत्री झाल्याबरोबरच भारतीय पार्श्वभूमीवर ते ठळकपणे लोकांच्या नजरे-समोर आले. त्यांचे दारूबंदीविषयक नवे क्रांतिकारक धोरण, सीमाप्रश्नावर आलेल्या मोर्चाला सामोरे जाऊन त्यांनी दाखविलेली सहानुभूति, राहूरीच्या काँग्रेस शिबिरात काँग्रेस श्रेष्ठीवर आणि दिल्लीच्या दुष्ट वर्तुळावर मोठ्या धाडसाने ओढलेले कोरडे, ह्या सर्व घटना पाहिल्या म्हणजे विधायक विकासाच्या दृष्टीने विविध क्षेत्रात खळबळ माजविणे हा श्री. वसंतराव नाईकांच्या राजकीय प्रतिभेचा स्थायीभाव आहे असे वाटू लागते. आणि ह्या सर्व खळबळजनक घटनांचा कळस म्हणजे महाराष्ट्रास दोन वर्षांत स्वयंपूर्ण करण्याची त्यांनी केलेली भीष्मप्रतिज्ञा.

महाराष्ट्राला दोन वर्षात अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण करण्याची त्यांनी केलेली प्रतिज्ञा, ज्या शब्दांत त्यांनी केली तो आविष्कार अनेकाना आवडला नाही. "नांहीतर मला फाशी द्या," अशी वाक्यरचना महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्रीपदावर कारभार करण्याच्या जबाबदार माणसाला कांहीशी अशोभनीय आहे खरी, परंतु त्या भाषेत प्रचंड आत्मविश्वास आहे. नव्या दिशेने राक्षसी कर्तव्य करण्याची ईर्ष्या आहे आणि संपूर्ण यशाची शंभर टक्के खात्री आहे. पैजेची, हात कलम करण्याची किंवा अन्य प्रकारची भाषा सामान्य माणसे प्रत्यही वापरतात. परंतु या प्रतिज्ञेत काळाचे प्रखर आणि प्रतिकूल आव्हान स्वीकारण्याची जिद्द आहे. आणि प्रारंभी विचित्र वाटणाऱ्या या घोषणेचा आणि प्रतिज्ञेचा भरघोसपणा, भरदारपणा गेल्या एका वर्षाच्या काळात महाराष्ट्राने जे प्रचंड प्रयत्न केले, त्यावरून जनतेला आला आहे.

नांगपूरच्या धनवटे रंगमंदिरात अधिवेशनकाळात काँग्रेस कार्यकर्त्यांची जी सभा झाली, त्या संभेत भाषण करताना संरक्षणमंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण यांनी प्रारंभीच याची कबुली दिली होती. ते म्हणाले होते, "धान्योत्पादन वाढविण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने केलेले आणि ते करीत असलेले प्रयत्न पाहिले म्हणजे या प्रतिकूल परिस्थितीवर शासनाने एक प्रकारची आपली घट्ट पकड रोवली असल्याचा आणि ती परिस्थिती काबूत आणल्याचा प्रत्यय येतो."

वस्तुतः दोन वर्षात महाराष्ट्राला अन्नाच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण करणे ही गोष्ट सोपी नाही. निसर्गाची प्रतिकूलता, वाढती लोकसंख्या, सांडेबाजी, भाववाढ ह्या सर्व मानवी आणि नैसर्गिक शत्रूंनी झगडून हे ध्येयस्वप्न साकार करावयाचे आहे. पण जे अशक्य वाटते, जे आटोक्याच्या बाहेरचे वाटते तेच शक्य असल्याचे जो आपल्या क्रान्तदर्शी, भेदक, दूरदृष्टीने पाहतो आणि त्या दिशेने जनतेला नेतो तोच खरा नेता. अशक्याला शक्य करून दाखविणारी घोषणा तीच खरी प्रतिज्ञा. हिमालयावर संकट आले तर सह्याद्री त्याच्या मदतीला धावून जाईल ही यशवंतरावांची तेजस्वी आणि अत्यंत ओजस्वी प्रतिज्ञा आणि वसंतरावांची प्रतिज्ञा एकाच जातीची नव्हे काय ? भारतात यशवंतरावांनी जे शौर्य आणि पराक्रम गाजविला तेच शौर्य आज वसंतराव शेतीच्या रणांगणावर नांगरवखराची आयुधे घेऊन गाजवीत आहेत. नव्या काळाचे अत्यंत प्रतिकूल आव्हान त्यांनी हसत हसत स्वीकारले आहे. आणि त्या दिशेने योग्य पावले टाकली आहेत. जलसिंचनाच्या योजना त्यांनी सुरू केल्या. 'अधिक धान्य पिकवा' अशा पोकळ घोषणा करण्याऐवजी शेतकऱ्यांना अँईल एंजिन्स दिले, बी-बियागे दिले, जमिनी दिल्या, खते दिली, हायब्रीड सीडच्या नव्या आश्चर्यजनक शोधाचा प्रचंड प्रमाणावर प्रचार आणि प्रसार केला. गरीब शेतकऱ्यांना पैसा दिला. अशा रीतीने अत्यंत व्यावहारिक दृष्टीने शेतकऱ्यांना भरपूर साधने दिली. त्यांनी पिकवलेल्या मालाला भरपूर भाव देऊन त्यांच्या शक्तीला प्रचंड प्रमा-



णोवर चालना दिलीं. एकाधिकार खरेदी ही वसंतराव नाईकांची स्वतंत्र राजकीय प्रतिभा म्हटली पाहिजे. धान्यतुटीवर या प्रयत्नाने त्यांनी मत्त केलेली आणि भाडूक दाराकडून, साठेबाजाकडून होणारी शेतकऱ्यांची पिळवणूक थांबवली. गरीबांचा धान्य मिळण्याची सोय झाली.

आणि या सर्व साधनांच्या जोडीला शेतकऱ्यांमध्ये असलेले मनुष्यबळाचे सुप्त सामर्थ्य एखाद्या ज्वालामुखीसारखे त्यांनी जागवले जवळ सर्व काही आहे परंतु मनात तळमळ, धडपडण्याची स्फूर्ती नसेल तर काय होणार ? शेतकऱ्यांना खडबडून जागे करण्यासाठी त्यांनी केलेली स्फूर्तिदायक भाषणे पुन्हा एकदा लक्षपूर्वक ऐकण्यासारखी आहेत. कोरडवाहू शेतीपेक्षा ओलित करून अधिक धान्य पिकविण्यासाठी त्यांनी लहान लहान बंधारे बांधायला सांगितले. आज त्यांच्या विलक्षण प्रचाराचे एक उदाहरण म्हणजे—कोणी कोण जाणे—पण एका विशिष्ट बंधाऱ्यालाच 'वसंत बंधारा' असे नाव दिलेले आहे. काही तरी करून जमिनी भिजवा हे त्यांनी गेल्या वर्ष सहा महिन्यातल्या प्रत्येक जाहीर सभेत सांगितले आहे. मला पुसदची एक सभा आठवते. जमिनी ओलित करण्याचा मुद्दा अत्यंत कळकळीने स्पष्ट करता करता एक वाक्य असे कांहीं ते बोलून गेले की त्यांतली स्फूर्ती, प्रेरणा आणि अर्थचमत्कृती एखाद्या प्रतिभावंत पंडितालाही साधणार नाही. ते बोलण्याच्या आवेशात म्हणाले, 'नाल्या ओढ्याचे पाणी अडवून जमीन भिजवा. ते न जमले तर डोक्यावर पाणी आणून जमीन भिजवा, ओंजळीने पाणी आणा, तेहि न जमले तर घाम गाळून जमीन भिजवा—पण जमीन ओलीत करा'. अक्षरशः शहाऱ्यांनी अंग मोहरून गेले हे वाक्य ऐकल्यावर.

प्रतिकूल काळाचे आव्हान स्वीकारण्याची महाराष्ट्राची प्राचीन परंपरा आहे. महाराष्ट्रात प्रतिज्ञा काय एका माणसाने केली ? अहो, प्रतिज्ञा करावी तर महाराष्ट्रीय माणसानेच ! 'स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे आणि तो मी मिळवणारच' ही प्रतिज्ञा, अमृतालाहि जिंकणारी मराठी निर्माण करण्याची प्रतिज्ञा, 'इष्ट असेल ते बोलणार आणि योग्य असेल ते करणार' ही प्रतिज्ञा, हिमालयाच्या मदतीला धावून जाण्याची प्रतिज्ञा आणि महाराष्ट्राला दोन वर्षात स्वयंपूर्ण करण्याची प्रतिज्ञा. ह्या सान्या प्रतिज्ञा एकाच जातीच्या आहेत. महाराष्ट्राच्या मातीने हजारो वर्षापूर्वी केलेल्या गर्जनेशी या प्रतिज्ञेचा सूर बरोबर जुळतो. फाशी देण्याची भाषा या प्रतिज्ञेत असली तरी आत्मविश्वास, ईर्ष्या, कर्तृत्व हे प्रतिज्ञेतले ओजस्वी गुण एकाच जातीचे आहेत यात शंका नाही. प्रतिकूल काळाचे उन्मत्त आव्हान मोठ्या आत्मविश्वासाने स्वीकारण्याची महाराष्ट्राची संस्कृती आहे. ज्ञानेश्वर या 'पहिल्या बंडवाल्याने' ही परंपरा महाराष्ट्रात सुरू केली ती आजतागायत सुरू आहे. महाराष्ट्राचा हा कणखर पिंड आहे.

मुख्यमंत्री श्री. वसंतराव नाईक यांच्या स्फूर्तिदायक नेतृत्वाने सारा शेतकरी वर्ग जागा झाला आहे. ईर्ष्येने आणि आत्मविश्वासाने तो शेतीत प्रचंड प्रगती करू लागला

आहे. खांद्यावर निशाण घेऊन, हा 'नवा शिपाई'—श्री वसंतराव नाईक—जोपर्यंत त्यांच्या-समोर वाट दाखवीत मोठ्या जोमाने आणि जोषाने पुढे चालले आहेत तोपर्यंत प्रत्येक शेतकऱ्याच्या मनात यशाची उमेद आहे. त्या सान्यांची एकच मूळ मागणी आहे— आज महाराष्ट्राला आणखी काही वर्षे श्री. वसंतराव नाईक यांची नेता म्हणून जरूर आहे. आमच्या समोर वसंतराव नाईक हवेत. मग पाहा आम्ही काय काय चमत्कार करून दाखवतो ते !



जरूर आमच्या अनेक अडचणी आहेत, विशेषतः धान्याची अडचण महाराष्ट्रा-मध्ये फार होती, आजही आहे. परंतु महाराष्ट्राने निश्चय केलेला आहे, निर्धार केलेला आहे की, जर अमेरिकेला वाटत असेल आम्ही गहू पाठवीत आहोत त्याच्या मोबद-ल्यात तुम्ही स्वाभिमान द्या, तर मी त्यांना निक्षून सांगतो की, महाराष्ट्राची जनता उपाशी मरेल पण स्वाभिमान देणार नाही. आणि एवढेच नव्हे तर आम्ही उपाशी का मरावे ? आमच्यामध्येही काही मर्दुमकी आहे, आम्हीही काही पुरुषार्थ गाजवू शकतो! या भावनेने मी यशवंतरावांना आपणातर्फे सांगू इच्छितो की, महाराष्ट्रामध्ये आज भारताच्या $\frac{1}{3}$ धान्याची तूट आहे. या दोन वर्षांमध्ये महाराष्ट्राने धान्याची तूट भरून काढली नाही तर तुम्ही आम्हाला फासावर द्या, आम्ही तयार आहोत. धान्याकरिता स्वाभिमान जाऊ देणे ही गोष्ट महाराष्ट्र कधीही सहन करणार नाही. महाराष्ट्रामध्ये जर पुरुषार्थ नसेल तर तो कोणाकडून मिळेल अशी अपेक्षाही करणे बरोबर नाही. आणि म्हणून मी जे आपल्याला बोललो ते केवळ 'स्लोगन' बोलण्याच्या भावनेने बोललो नाही. तो निर्धार आहे आमचा. आम्ही तो पूर्ण करणार याच भाव-नेने बोललो.

—ना. वसंतराव नाईक

(पुणे येथे शनिवारवाड्यापुढील भाषण : ता. ४।१२।१९६६).

माँ. वत्सलाबाईंच्या दृष्टिकोनातून वसंतरावजी

मुळाखत : शरद अकोलकर

आता हेच पहा ना ! कधी कधी आम्ही विरंगुळा म्हणून पत्ते खेळतो. परंतु पत्त्याच्या खेळातही वसंतराव जिंकतात आणि आम्ही इतर खेळणारे त्यांना म्हणतो, “ पत्ते देखील तुमच्या बाजूचे आहेत. ”

करं र.... कच्च....

ड्रायव्हरने गाडीचा ब्रेक दाबला अन गाडी उभी करून तो म्हणाला, “लिजीये साहव, मुख्यमंत्रीजीका बंगला आ गया.” क्रॉफर्ड मार्केटवरून मलबार हिलपर्यंत टॅक्सीने पोहोचायला लागणारा पंधरा मिनिटांचा वेळ कसा निघून गेला हेही मला कळल नव्हत. वळणा वळणान पुढे धावणाऱ्या गाडीच्या काचातून दिसणाऱ्या इंद्रधनुष्याच्या सप्तरंगात बुडालेली मुंबापुरी मी न्याहाळत होतो. तोच मलबार हिलवरील वसंतराव नाईकांच्या बंगल्यापुढं टॅक्सी उभी राहिली.

वसंतराव नाईकांच . . . महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्र्यांच निवासस्थान. प्रवेशद्वारावर मी क्षणभर उभा राहिलो. हिरव्या वनराईन वसंतराव नाईकांचा बंगला वेढला होता. लगतच्या अरबी समुद्रावरून वाहणारा वारा हिरव्या ताडामाडाशी, नारळी पोफळीशी, केळी अन् आम्रपल्लवांशी मुक्त मनान विहार करीत होता. हिरवी वृक्षवेली हलत होती. त्यांच्यातील पोपटी चैतन्य ओसंडत होत. प्रवेशद्वारातून आंत प्रवेश करताना माझ लक्ष द्वारफलकावर गेल. त्यावर अक्षर कोरली होती ‘ वर्षा. ’

षड्ऋतूंच्या चक्रात अवनी आपल वेगवेगळ रूप धारण करते. वर्षा ऋतूत सृष्टी हिरवी इरकली परिधान करते. मेघमल्हार ह्याचं ऋतूत गाईला जातो. कालिदासाच्या निर्वासित यक्षान रामगिरी पर्वतावरून जलदाबरोबर ह्याच ऋतूत आपल्या प्रियेला संदेश पाठविला होता. पण वर्षाऋतूच खर महत्व वाटत ते उघड्या धरित्रीवर काम करणाऱ्या किसानांना. कारण त्यांच्या आशेच केंद्रस्थान म्हणजे वर्षा !

महाराष्ट्राचा मुख्य मंत्री जिथ राहतो त्या स्थानाच नावही वर्षाच आहे. माझ्या मनात आल, किती सार्थ नाव आहे.

विचाराच्या तंद्रीतच मी बंगल्याच्या दाराशी येऊन पोहोचलो. नेहमीप्रमाणे काही लोक तेथे वाट पहात उभे होते. मुख्यमंत्र्यांचे निजी सचीव श्री. पाठक ह्यांचेशी बोलत मी बंगल्याबाहेर उभा होतो. तोच कुठल्याशा कामाला बाहेर जाण्याकरता म्हणून वसंतराव नाईक बंगल्याबाहेर पडले. माणसांच्या गर्दीतून अचानक त्यांच लक्ष माझ्याकडे गेल आणि उमलत्या स्मितान ते मला म्हणाले,

“अरे तू केव्हा आलास ?”

थोड त्यांच्याजवळ जाऊन मी म्हणालो “दोन दिवस झाले. ‘ग्रामदूत’ साप्ताहिकाचा येत्या १ जुलै रोजी विशेषांक काढतोय. त्याच मुखपृष्ठ तयार करून घ्यायच होत. थोडा वेळ मिळाला म्हणून इकड आलो. आपल्याला वेळ नाही ह्याची मला जाणीव आहे. आणि म्हणूनच काकूची (सौ. वत्सलाबाई नाईक) मुलाखत मिळू शकली तर प्रयत्न करावा म्हणून आलोय.”

“अस्स होय! पण आज तिला तर वेळ नसेल. तरी पण तू प्रयत्न कर.” अस सांगून वसंतराव निघून गेले. लागलीच मी चपराशाच्या हातून सौ. वत्सलाबाईंच्याकडे मुलाखतीला वेळ मिळावा म्हणून चिठ्ठी पाठविली. आणि लागलीच मला बंगल्यात बोलावल गेल.

मी बंगल्यात प्रवेश केला त्यावेळी सौ. वत्सलाबाई आपल्या छोट्या निरंजनला शिकवीत होत्या. परंतु मला वाटतं शिकविण्याची वेळ संपलेली असावी. लागलीच त्या येऊन दाखल झाल्या. चहा आणि फराळाच माझ्या पुढ्यात ठेवल गेल. मी माझी ओळख करून देण्यापूर्वीच त्या म्हणाल्या, ‘तुम्ही यवतमाळचे . . . मागल्या सार्वत्रिक निवडणुकीचे वेळी पुसद तालुक्यात मी असताना आमच्या सोबत तुम्ही होता . . .’

मला जरा वरं वाटलं. आणि आम्ही दोघांनीहि चहासोबतच चर्चेलाहि सुरवात केली.

“तुमच्या दृष्टीकोनातून वसंतराव नाईकांच व्यक्तिमत्व” हा माझ्या मुलाखतीचा विषय असल्याच मी त्यांना सांगितल. त्या वेळी त्या उत्तरल्या, “हे बघा ! वसंतरावांच्या जीवनात जर माझे दृष्टीने सर्वात मोठी कोणती गोष्ट असेल तर ती त्यांचा सोशीकपणा, सहनशीलता.”

“निरंजनला शिकविण्याच्या कामात मी व्यत्यय तर नाही ना आणला ?”

त्यावर त्या म्हणाल्या, “छे: छे: शिकवायचं काम संपलं होतं म्हणूनच मी तुम्हाला वेळ दिला होता.”

“हे बघा ! मी जर आपल्याला काही प्रश्न विचारले तर चालेल का ?” मी विचारलं.

आणि त्यावर त्यांनी लागलीच आपली संमतीही दिली.

मी प्रश्न केला “वसंतरावांच्या सार्वजनिक व राजकीय जीवनाच्या प्रारंभकालापासून आपण त्यांच्या घर्मपत्नी म्हणून त्यांचे सहवासात आहात. तेव्हा अगदी सुरवातीपासून वसंतरावांच्या व्यक्तिमत्वात कोणकोणती वैशिष्ट्ये होती व त्यांचा कसकसा विकास झाला ?”

माझा प्रश्न ऐकून घेतल्यानंतर सौ. वत्सलाबाई उत्तरल्या, “१९४१ साली मी वसंतरावांशी विवाह केला. विवाहानंतर आम्ही पुसद व गहुली येथे राहू लागलो. वसंतरावांच्या सार्वजनिक जीवनाला ह्याच काळात प्रारंभ झाला. एल्. एल्. वी. होऊन त्यांनी पुसद येथे वकीलीच्या व्यवसायास सुरवात केली. त्यावेळी आम्ही पुसद येथेच राहात होतो. फक्त वकीली करणे हा काही वसंतरावांचा एकमेव उद्योग नव्हता, तर वकीलीपेक्षाहि ते शेतीत जास्त लक्ष घालीत असत. सामाजिक कामे करण्याचा तर त्यांनी नित्यनियमच केला होता. पुसदजवळील खेड्यात जाऊन साक्षरताप्रसार, दारूबंदी, ग्रामसुधारणा व जुन्या चालीरीती टाकण्याची मोहीम त्यांनी सुरू केली होती. मला वाटत वसंतरावांना राजकारणापेक्षा सामाजिक सुधारणेचे कार्य करण्यातच अधिक रस होता. त्यांच्या जीवनात अगदी सुरवातीपासूनच एकाकीपणाला थारा नव्हता. रोजचे जेवण ते एकटे कधीच घेत नसत. तर त्यांचे सोबत पंक्तीला चार सहा तरी लोक असायचे. आणि एखाद्या दिवशी पंक्तीला जर कोणी नसेल तर त्यांना जेवणच जात नसे. आपल्या सोबत जेवावयाला असलेल्यांची वडदास्त ठेवण्यात त्यांना खूप आनंद वाटायचा. आदरातिथ्य हा वसंतरावांच्या जीवनाचा स्थायीभाव आहे असे अगदी सुरवातीपासून मी बघत आले आहे. आदरातिथ्याबरोबरच इतरांना मदत करण्याची वृत्तीही त्यांचेजवळ सुरवातीपासूनच आहे. कुणाचे कांही अडले तर त्याला मदत करण्यात वसंतराव कधीही मागेपुढे पाहत नसत. आम्ही पुसदला असताना अधून-मधून गहुलीला शेतीवर जात असू. एकदा मी आणि वसंतराव शेती पाहावयासाठी गहुलीला गेलो असताना एक माणूस वसंतरावांच्याकडे आला आणि त्याने आम्हाला ५०० रुपये उसने मागितले. त्यावेळी त्यांनी त्या माणसाला ५०० रुपये लागलीच दिले. इतरांना कोणतीही मदत करण्याची त्यांची वृत्ती आजही कायम आहे. आदरातिथ्य व दुसऱ्याच्या उपयोगी पडण्याच्या त्यांच्या या वृत्तीप्रमाणेच वसंतरावात मी आणखी एक गुण पाहिला आणि तो म्हणजे त्यांचा निर्व्याज स्वभाव. कोणी कितीही चुका केल्या तरी चूक करणाऱ्या माणसावर ते रागावलेले मी कधीही पाहिलेले नाही. उलट ज्याचे हातून चूक झाली असेल त्याला शांतपणे त्याची चूक ते समजावून देतील. सहनशील स्वभावामुळेच त्यांनी अनेकांना जिंकले आहे असे मला वाटते.”

वत्सलाबाई बोलत होत्या परंतु त्यांना मध्येच थांबवून मी प्रश्न केला—

“वसंतराव आज महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्रीपदावर आहेत. म्हणजे आज ते

राजकीय क्षेत्रात आहेत. राजकारणात तर मुत्सद्दीपणा हवा असतो. डावपेच जाणणारा माणूसच राजकारणात पुढे येतो. परंतु वसंतरावांच्या जीवनात तर डावपेच नाहीत. तेव्हा ते मुख्यमंत्रीपदापर्यंत कसे पोहचू शकले ? आपण त्यांच्या अगदी निकट असल्यामुळे आपण हे अधिक चांगल्या रीतीने जाणू शकता.”

“होय ! वसंतराव सहनशील आहेत, आदरातिथ्य करण्यात त्यांना अतिशय आनंद वाटतो आणि अगदी मोकळ्या मनाने सर्वांशी वागण्याचीहि त्यांची वृत्ती आहे. तरीहि ते राजकीय क्षेत्रात प्रगती करीत राहिले आणि ह्याचे कारण म्हणजे त्यांचे भाग्य. त्यांचे नशीब इतके बलवत्तर आहे की, पुसदला वकीली करीत असतानाच ते जसे सामाजिक सुधारणेत लक्ष घालायचे तसेच राजकीय क्षेत्रातहि हळहळू त्यांचा योगायोगाने शिरकाव होत होता. पुसद नगरपालिकेचे अध्यक्ष म्हणून ज्या वेळी ते प्रथम निवडले गेले तेव्हाच त्यांच्या राजकीय जीवनाला प्रारंभ झाला. आणि पुढे अगदी योगायोगानेच त्यांना त्या वेळच्या मध्यप्रदेश विधान सभेचे तिकीट मिळाले. वास्तविक काँग्रेसचे तिकीट मिळावे म्हणून त्यांनी अर्जही केला नव्हता. परंतु योगायोगाने त्यांना काँग्रेसचे तिकीटहि मिळाले आणि ते नुसतेच विधान सभेत निवडून आले नाहीत तर त्यांना उपमंत्रीपदही मिळाले. हा सर्व योगायोग होता व त्या वेळच्या मध्यप्रदेशात उपमंत्री झाल्यापासून आज मुख्यमंत्री होईपर्यंत कुठलेही राजकीय डावपेच न लढवता, केवळ नशीबाने म्हणा, योगायोगाने म्हणा वा त्यांच्या स्वभावामुळे म्हणा आज ते मुख्य मंत्री झाले आहेत”

वत्सलाबाईंना मध्येच थांबवून मी म्हणालो, “छे: एवढ्या मोठ्या महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्रीपद कोणाला केवळ नशीबाच्या जोरावर मिळत नसते तर त्यासाठी अशा माणसाची सेवा जनतेजवळ ऋजू व्हावी लागते. तशी त्यांच्या सेवेची ठेव जनतेजवळ असल्यामुळे स्वतःच्या कर्तृत्वाने नाईकसाहेब आज मुख्य मंत्री झाले आहेत . . .”

माझे बोलणे संपते न संपते तोच वत्सलाबाई म्हणाल्या, “तुमचे म्हणणे खरेही असेल परंतु माझे म्हणणे मात्र खोटे नाही. वसंतरावांच्या जीवनात नशीबाची साथ त्यांना सदैव मिळालेली आहे व तेही हे मान्य करतात. आता हेच बघा ना ! कधी कधी आम्ही विरंगुळा म्हणून पत्ते खेळतो. परंतु पत्त्याच्या खेळातही वसंतरावच जिंकतात. आणि आम्ही इतर खेळणारे त्यांना म्हणतो पत्तेदेखील तुमच्याच बाजूने आहेत.”

मी पुन्हा प्रश्न केला, “वसंतराव मुख्यमंत्री झाल्यापासून त्यांना खूप कामे करावी लागतात. तेव्हा वैयक्तिक जीवनाकडे लक्ष देण्यास त्यांना फारशी उसंत मिळत नाही. अशा वेळी आपण कोणती दक्षता घेता ?”

सौ. वत्सलाबाई माझा प्रश्न विचारून संपताच उत्तरल्या, “वसंतराव मुख्यमंत्री झाले म्हणूनच त्यांच्याकडे खूप कामे असतात असे नाही तर त्यांचे राजकीय जीवन सुरू झाल्यापासूनच त्यांच्या धावपळीच्या जीवनाला सुरवात झाली आहे. मुख्यमंत्री

झाल्यापासून त्यांचे धावपळीचे जीवन अधिक गतिमान झाले हीही गोष्ट खरी आहे. तेव्हां त्यांची पत्नी या नात्याने त्यांच्या प्रकृतीला जपण हे माझ कर्तव्यच आहे. त्या दृष्टीने ते रात्री लवकर झोपावेत व सकाळी लवकर उठावेत असा मी प्रयत्न करते. परंतु आजपर्यंत मला त्यात फारसे यश येऊ शकले नाही. कितीही कामे असली तरी ती करण्यात वसंतरावांना कंटाळा म्हणून कधी येत नाही. चिकाटीने काम करण्याची सवय त्यांना अगदी सुरवातीपासून झाली आहे. साधारणतः संसारातील स्त्रिया आपल्या पतीची जी काळजी घेतात तीच काळजी अर्थातच मलाही घ्यावी लागते.”

वत्सलाबाईंनी बोलणे थांबविलेले बघून मी पुन्हा प्रश्न केला, “मला वाटत सामान्य लोकांच्या स्त्रियापेक्षा राजकीय क्षेत्रातील लोकांच्या स्त्रियांना काही जास्तीच्या जबाबदाऱ्या पाळाव्या लागतात आणि त्या सोबतच काही सुखदुःखहि त्यांच्या वाटचाला आलेली असतात !”

माझ्या प्रश्नावर वत्सलाबाई म्हणाल्या, “इतर स्त्रियांच्या संसारात धावपळीला वाव नसतो. ते संधपणे चालू असतं. परंतु राजकीय क्षेत्रातल्या पुरुषांच्या जीवनात धावपळ, गडबड सदा चाललेली असते व त्याबरहुकूम त्यांना आपल्या जीवनाचा सूर लावून घ्यावा लागतो. सामान्य संसारातील स्त्रियांपेक्षा काही सुखदुःख राजकारणात असलेल्या पुरुषांच्या पत्नींना असतातच. आता हेच बघाना ! वसंतरावांबरोबर आमच्या छोट्या निरंजनला नेहमी बोलावस वाटत. परंतु वसंतराव नेहमी गडबडीत असतात. त्यामुळे ते आवश्यक तेवढाही वेळ घरात देऊ शकत नाहीत ह्याची जाणीव झाल्याखेरीज राहत नाही.”

बराच वेळ झाला होता म्हणून मी शेवटचा प्रश्न केला.

“राजकीय जीवनातून वसंतराव निवृत्त झाल्यानंतर काय करू इच्छितात?”

माझ्या प्रश्नाला उत्तर देताना वत्सलाबाई म्हणाल्या, “राजकीय क्षेत्रातून निवृत्त झाल्यानंतर आपण एखाद्या शेतात घर बांधू, त्यात सुंदरशी बाग लावू आणि शेतकरी म्हणून जीवन व्यतीत करू असे वसंतराव नेहमी म्हणतात . . .”

माझी मुलाखत संपली होती. मी वत्सलाबाईंचा निरोप घेतला आणि परतायला लागलो त्यावेळी वत्सलाबाईंनी उच्चारलेले शेवटचे शब्द पुनः पुनः कानात घुमू लागले : वसंतराव शेती करू इच्छितात.

वसंतरावांचे जीवन समाजसुधारक, वकील व राजकीय पुढारी अशा क्रमाने विकसित झाले असले व त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचे हे पैलू असले तरी वसंतरावांचा खरा पिंड शेतकऱ्याचाच आहे.

दुतर्फा असलेल्या हिरव्या वृक्षराईमधल्या वाटेन मी परतत होतो. वाऱ्यावर फडफडणाऱ्या पानांच्या कोमल ध्वनीत बंगल्याच्या मागच्या बाजूस असलेल्या समुद्राच्या गर्जनेचा स्वर मिसळला होता आणि त्यातच आम्रवृक्षावर असलेल्या कोकिळें आपलाही स्वर गुंफला. . . . ‘कुहूऽ कुहूऽ’.



निश्चयी व्यक्तिमत्त्व

डा. भि. जि. खताळ

अगदी अलिकडच्या एका ताज्या घटनेने त्यांच्या निश्चयी व्यक्तिमत्त्वाची साक्ष पुन्हा प्रत्ययाला आली आहे. आणि ती म्हणजे मुंबई शहरातील पाणी टंचाईची समस्या. प्रसंग मोठा बिकट होता पण. . . .

महाराष्ट्राने राष्ट्राला वेळोवेळी अनेक क्षेत्रातील अधिकारी पुरुष द्यावे, ही धटना काही नवीन नाही. गत इतिहासाचे अवलोकन केले तर याची सहज साक्ष पटू शकेल. आणि यातील एक वैशिष्ट्य असे म्हणता येईल की, ज्या ज्या वेळी भारत आणि भारतीय संस्कृती संकटात आली त्या त्या वेळी महाराष्ट्रातील कर्त्या पुरुषांनी भारताच्या व भारतीय संस्कृतीच्या रक्षणार्थ परिश्रमांची शर्थ केली आहे. अगदी अलिकडचे ताजे उदाहरण म्हणजे आपले संरक्षण मंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण यांचे देता येईल.

प्रतिकूल परिस्थितीतून परिश्रमांची शर्थ करून मार्ग काढणे महाराष्ट्राच्या जणू अंगवळणीच पडले आहे आणि अशा समरप्रसंगीच अनेक झाकलीं माणके महाराष्ट्रातून उदयाला आली आहेत. श्री. वसंतराव नाईक यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचे खरे दर्शनही मुख्य मंत्रीपदाची घुरा स्वीकारल्यानंतर प्रतिकूल परिस्थितीत त्यांनी यशस्वी रीतीने केलेल्या परिश्रमानेच झाली. आणि यातही अन्नधान्याच्या बाबतीत महाराष्ट्राला येत्या दोन वर्षात स्वयंपूर्ण करण्याच्या निर्धारपूर्वक प्रयत्नाने त्यांनी अखिल भारतीयांचे लक्ष आकर्षून घेतले आहे हे नमूद करण्यासारखे आहे.

वसंतरावांचा मूळ पिंडच शेतकऱ्याचा आहे, असे म्हटले तर अतिशयोक्ती होणार नाही. शेतकऱ्याला अधिकाधिक सुखी जीवन कसे प्राप्त होऊ शकेल याचा सुप्त विचार त्यांच्या मनात सतत असतो आणि त्यामुळेच गेल्या वर्षातील अन्नधान्याची राज्याची परावलंबिता त्यांच्या हृदयाला जाऊन भिडली असावी. अन्नधान्याच्या उत्पादनातील तुटीबद्दल शेतकऱ्याचा दोष मुळीच नाही याची त्यांना खात्री

होती आणि म्हणूनच जिवापाड मेहनत करणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या परिश्रमाचे चीज व्हावे या दृष्टीने त्यांनी महाराष्ट्रात प्रयत्न करण्याचे निर्धारपूर्वक ठरविले आहे. शेतीला हमखास पाणी पुरवठा, उत्तम अवजारे, दुप्पट पीक देणारे बी-बियाणे, अधिकाधिक पडित जमीन शेतीयोग्य करणे अशा अनेक योजना आखून शासनाला शेतकऱ्यांच्या पाठीशी उभे करूनच वरील निर्धार वसंतरावांनी जाहीर केला आहे. आणि मला खात्री आहे की त्यांच्या प्रयत्नाला महाराष्ट्रातील संपूर्ण जनतेचा प्रतिसाद मिळून त्यांची अन्नधान्याच्या स्वयंपूर्णतेची प्रतिज्ञा महाराष्ट्र फलद्रूप करून दाखवील.

वसंतरावांच्या व्यक्तिमत्वातील दुसरे एक वैशिष्ट्य म्हणजे सहकार्याचे. प्रसंग कसलाही असो, संबंधितांशी चर्चा करून त्यांचे सहकार्य मिळविण्याची वसंतरावांची किमया वाखाणण्यासारखी आहे. देशावर परकीयांचे आक्रमण झाले त्यावेळी एक-दिलाने राष्ट्रनेत्यांमार्गे उभे राहण्याची नितांत आवश्यकता होती. महाराष्ट्र या बाबतीत आघाडीवर राहिला याचे एक कारण म्हणजे वसंतरावांचे प्रयत्न. त्यांनी उद्योग-पती, कामगार, व्यापारी इत्यादी सर्व क्षेत्रातील प्रतिनिधींची बैठक बोलावली. त्यांच्याशी विचारविनिमय केला आणि साऱ्यांचे सहकार्य मिळवून आवश्यक त्या सर्व त्यागाला महाराष्ट्रातील जनता सिद्ध असल्याचे आश्वासन दिले. समस्या कसलीही असो दोन्ही बाजूंचे म्हणणे ऐकून त्यांना अधिकाधिक सहकार्य देण्याचे प्रयत्न वसंतरावाकडून सतत होत असतात आणि म्हणूनच संघर्षातून यशस्वी रीतीने मार्ग काढण्यात त्यांना यश येत असते.

अगदी अलिकडच्या एका ताज्या घटनेने त्यांच्या निश्चयी व्यक्तिमत्वाची साक्ष पुन्हा प्रत्ययाला आली आहे आणि ती म्हणजे मुंबई शहरातील पाणी टंचाईची समस्या. प्रसंग मोठा बिकट होता. पण नेहमीच्या आपल्या पद्धतीप्रमाणे वसंतरावांनी उद्योग-पती, कामगार, आणि सर्व संबंधितांची बैठक घेतली. चर्चा केली आणि त्यांच्याकडून सहकार्य मिळवून या संकटातूनही मार्ग काढण्याची तयारी केली. म्हणतात ना, निष्ठापूर्वक प्रयत्न करणाऱ्यांच्या पाठीशी देव उभा असतो. मुंबईकरांना मुंबई सोडून दुसरी-कडे हालविण्याची वसंतरावांनी तयारी केलेली पाहून निसर्गानेही त्यांच्या प्रयत्नापुढे हात टेकले आणि पर्जन्यवृष्टी करून त्यांच्या प्रयत्नांना यश दिले.

वसंतरावांच्या कार्याचे यश त्यांच्या निष्ठापूर्वक प्रयत्नात आहे आणि हे प्रयत्न करीत असताना सर्व संबंधितांचे सहकार्य घेऊन ते आपल्या प्रयत्नांना अधिक बळकट करीत असतात. आणि म्हणूनच महाराष्ट्रातील व भारतातील जनतेलाही त्यांच्या व्यक्तिमत्वाची ओळख इतक्या अल्पावधीत होऊ शकली.



मला भेटलेला एक तरुण

पां. श्रा. गोरे

माझी कविता त्यास आवडल्यामुळे व त्या कवितेचा जनक मी पुसद येथे असल्याचे त्यास कळल्यामुळे तो तरुण माझ्या भेटीस आला होता. . .

सन १९३६ चे ते साल. सर्वत्र सुटलेल्या मधुमासाच्या हवाईचे ते लगीन सराईचे दिवस ! वसंतराज हा आपल्या तेजाने आकाशात तळपत होता. यवतमाळवरून पुसद येथे माझी नुकतीच बदली झाली होती. माझ्या कामाचा चार्ज घेऊन पुरता आठवडाही लोटला नव्हता. नित्याप्रमाणे मी कार्यालयातील माझ्या खोलीत कामकाजाचे कागद पाहत बसलो होतो. एवढ्यात पाणीदार डोळ्यांचा आणि सुदृढ बांध्याचा, एक तेजस्वी तरुण माझ्या खोलीत आला. येताक्षणीच अदबीने नमस्कार करून 'आपणच कवी पां. श्रा. गोरे काय ?' असा त्याने मला प्रश्न केला. होकारार्थी मान हलवून मी समोरच्या खुर्चीवर बसावयास त्यास खुणावले व त्याबरोबर माझ्याकडे येण्याचे कारणही विचारले. खुर्चीवर स्थानापन्न झाल्यानंतर त्या प्रसन्न मुद्रेच्या तरुणाने त्यावेळी कॉलेजमध्ये चालू असलेल्या 'विदर्भवीणा' या काव्यसंग्रहातील 'शेतकऱ्याचे गाणे' ही माझी कविता त्यास आवडल्यामुळे व त्या कवितेचा जनक मी पुसद येथे असल्याचे त्यास कळल्यामुळे तो तरुण माझ्या भेटीस आला होता हे त्याच्याशी झालेल्या संभाषणातून मला कळले. 'साहित्यसम्राट तात्यासाहेब कोल्हटकर यांनी प्रशंसा केल्यामुळेच ती कविता आपणास आवडली का ?' असा मी त्यास खोचक प्रश्न केला. त्यावर तो तरुण शांतपणे म्हणाला, 'हे पहा, कोणत्याही कवीची प्रत्येक कविता ही चांगलीच असते. पण वाचकांची जिथे लय लागते तिथे तो समाधिस्त होतो.' मी हंसत म्हटले, 'पण काय हो ती त्यांची सविकल्प समाधी असते का निर्विकल्प ?' माझ्या या प्रश्नावर तो खूपच हसला. मीही हंसलो. नंतर औपचारिकपणा गुंडाळून मी त्याला सरळच विचारले, 'काय, आपणास चहा चालेल का कॉफी ?' तो म्हणाला 'हे पहा, तुम्हाला चहा देण्याच्या इराद्याने तर मी आपणाकडे आलो. तेव्हा तुम्हीच माझ्याकडे चला. आणि चहा घेऊन आमची

छात्रालयाची झोपडीही पहा.' त्या तरुणांचा प्रेमळ आणि सरळ स्वभाव पाहून मी विशेष आढेवेढे न घेता त्याच्याबरोबर निघालो आणि त्यान सांगितलेल्या झोपडीवजा छात्रालयात आलो. छात्रालयाच्या एका गवताने शाकारलेल्या खोलीत, एक व्यक्ती जवळ-जवळ वृद्धातच जमा होती ती, हातात वासला घेऊन लाकडे ताशीत बसलेली दिसली. त्या व्यक्तीकडे अंगुलीनिर्देश करून 'मला आजतागायत शिक्षण देणारे हेच माझे परमपूज्य पिताजी' असे उद्गार त्या तरुणाच्या मुखातून एकदम बाहेर आले.

“प्रसन्नता तेज मुखी झळाळे
यन्मानसी मार्दव नित्य खेळे
परोपकारात मती जयाची
तो लोककर्मी तनु नित्य वेची”

उपरोक्त सुभाषितात केलेले वर्णन त्या व्यक्तीस पूर्णतया लागू पडत होते. त्या व्यक्तीला मी प्रेमाने नमस्कार केला. तिनेही मला प्रतिनमस्कार केला. रुबावदार चेहरा, आनंदी वृत्ती, कामात आपल्या दक्ष पण चोहीकडे लक्ष असलेली ती व्यक्ती पाहताच नकळत तिच्याविषयी माझी मती जागृत झाली व मी त्या व्यक्तीस म्हटले 'नाईक साहेब, आपण आपल्या मुलास उच्च शिक्षण देऊन स्वतःचेच नव्हे तर समाजाचे देखील कल्याण साधले आहे. पर्यायाने हा पुढे मागे देशाचे देखील नाव उजळील.' माझ्या बोलण्यावर ती व्यक्ती म्हणाली, 'हे पहा बापु ! आम्ही वखरावरचे विष्णु. आम्ही सह्याजीराव असल्यामुळेच आमचे नाव उजळले नाही. तेव्हा आम्हास आमच्या बापाने शिक्षण दिले नाही, म्हणून आम्ही आमच्या लेकरास शिक्षण देण्याच ठरवल. एवढेच नव्हे तर आमच्या समाजातील पोर शिक्षित करण्याच्या उद्देशानेच मीही त्यांच्यासाठी बोर्डिंगची इमारत बांधण्याच्या ह्या सध्या उद्योगात आहे. बसल्या बसल्या काय कराव म्हणून मी हातात वासला घेऊन दवाखान्यासाठी रोज लाकडे ताशीत बसतो. बापु, आम्हा जुन्या लोकांना काम केल्यावाचून गमत नाही.' त्या व्यक्तीचे भाषण मी मन लावून एकाग्रतेने ऐकत होतो. त्या व्यक्तीने हातातील वासला वाजूला ठेवला व ती बोलू लागली, 'गाई गोठ्यात, पैसा भुईत, बायका दारापर्यंत आणि गणगोत स्मशानापर्यंत. शेवटी देह हा बिचारा एकटाच मारित जातो. त्याच्याबरोबर शेवटी कोणीच येत नाही. काय येत असेल तर त्याचे ते कर्म !'

त्या व्यक्तीची 'अ' ची पाठ फोडण्यापर्यंत शिक्षणाची मजल गेली होती किंवा नाही याबद्दल मला जबरदस्त शंका आहे, पण मला त्या दिवशी त्या व्यक्तीने खऱ्या शिक्षणाचा पाठ दिला खरा ! 'लोण्यापरी सज्जन चित्तवृत्ती.' पण मला या व्यक्तीच्या बाबतीत ही 'काव्यवाणी नच दे प्रतीती' असे झाले. कारण लोणी हे आपल्याच तापाने विरघळते. पण सज्जन हा दुसऱ्यास झालेल्या तापाने द्रवतो. यावरून लोण्याची उपमा सज्जनास लागू पडत नाही.

ज्या व्यक्तीचा सहवासलेश, मला सत्पुरुषोपदेश झाला ती व्यक्ती आणि पाहता-क्षणीच माझ्या मनावर ज्याच्या गुणाची मोहिनी पडली तो तेजस्वी तरुण, ह्या व्यक्ती कोण ? म्हणून, प्रिय वाचक ! आपण जरा विचारात पडला असाल. पण आपणास त्या अवस्थेत न ठेवता मी स्पष्ट करतो की ज्याच्या नावाने पुसद येथे महाविद्यालय सुरू आहे ते फुलसिंग नाईक व ज्यांचे भाषण ऐकताना शेतकऱ्यांच्या साऱ्या अवयवांचे कान आणि डोळे होतात ते आपले आजचे महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री श्री. वसंतराव हे ते पिता-पुत्र होत. मान मिळण्यास दान करावे लागते. तो सहजासहजी लाभत नसतो.

‘लाभे सदा गौरव दानभार्गो—
न लाघतो संचय वृद्धियोगे
मिळे नभी उन्नती त्या घनाला
पावे परी अब्बी अघोगतीला’

मनुष्याचा गौरव हा दानाने, धनसंचयाने नव्हे. कारण केवळ जलसंचय करणाऱ्या अभागी समुद्राला पृथ्वीवर अधोभागी स्थान आहे, उलट जलदान करणारा मेघ उंच आकाशात विराजमान झाला आहे. श्री. फुलसिंग नाईक यांनी स्वकष्टाने संपत्ती जोडली. वास्तविक रीत्या—

‘संपत्तीचा संग घडे जयास—
न जाणती ते परवेदनास.’

पण फुलसिंग नाईक हे यास मात्र अपवाद होते. चित्तात प्रीती उदय पावणारा वसंत दर्शनाचा वसंत ऋतु समय, मला आजन्म अविस्मरणीय असाच राहिल. त्या प्रसंगानंतर श्री. वसंतरावच्या बऱ्याच गोड आठवणी माझ्या संग्रही आहेत. पण विस्तारभयास्तव मी एकच नवी आठवण देऊन वाचकांचा निरोप घेतो.

चाफ्याचे झाड अरण्यात गुप्त ठिकाणी जरी असले तरी वायु त्याचा सुगंध दाही दिशांना नेतो. तसेच गुणवान कोठेही असला तरी त्याच्या अंगचे गुण लपून राहत नाहीत. त्याच्या अंगच्या गुणांनी तो तात्काळ प्रसिद्ध होतो एवढे मात्र खरे.

‘समर्थता जोवरी ये न अंगी
तो पूर्ण एकांत सुशील भोगी’

पुसदचे वसंतराव आज आपल्या या महाराष्ट्र राज्याचे मुख्यमंत्री झाले आहेत. पण हा लाभ त्यांना सहजासहजी झाला नाही. परोपकार, निष्कपट मित्रत्व आणि गोड भाषण ह्या तीन गोष्टी वसंतरावच्या ठिकाणी स्वाभाविक आहेत. म्हणूनच हा वसंत सर्वांना पसंत पडला. ऊस हा रसाला कितीही गोड असला तरी उत्तरोत्तर तो नीरस होतो. पण वसंतरावच्या ठिकाणी ती उत्तरोत्तर होणारी रसाची हानी नाही, उलट त्याची गोडी ही दिवसेंदिवस वाढीस लागणार. वसंतराव हे मुख्यमंत्री झाल्यावर.

यवतमाळला आले. त्या वेळी आमच्या यवतमाळकरांचा तो अमाप उत्साह काय वर्णावा ? कारण वसंतराव हे आमचे आणि आम्ही त्यांचे असा त्यांचा आमचा घनिष्ट संबंध. ते इथे आल्यानंतर थोर पुरुषाचं रिक्त हस्ताने दर्शन घेणे उक्त नव्हे म्हणून माझ्या कादंबरीची एक प्रत मी त्यांना अर्पण केली. शंकराला जुईचे नव्हे तर रूईचे फूल अर्पण केले असता तो प्रसन्न होतो. जुन्या वस्त्राच्या दर्शनाने शशी देखिल आनंदित होतो तसेच सज्जन केवळ नमस्कारानेच प्रसन्न होतात. एवढेच नव्हे तर प्रतिनमस्कार करतात अशी कव्युक्ती आहे. वसंतरावांनी माझ्या पुस्तकाचा स्वीकार करतांना मला दुरून नमस्कार केला नाही तर, माझा हात आपल्या हातात घेतला आणि 'अत्युच्चिं पदि थोरही विघडतो' हा खरा असलेला बोल खोटा पाडला.

'विष्णू द्रवे केवळ तो स्तुतीने' पण 'संतोषती साधु करांजलीने' हे शेवटी खरं ठरलं.

आपल्या या महाराष्ट्राच्या वैभवाची वेल वाढण्याकरिता आणि तिला सुख-समुद्धीची फळे येण्याकरिता या महाराष्ट्राच्या वसंतान्त परमेश्वर श्रुतायु करो एवढीच हार्दिक इच्छा !



विद्यार्थ्यांनी विद्याभासाला अग्रक्रम द्यावा व याच काळात शिस्तीने काम करण्याची संवय करावी. प्राध्यापक गुरुजनाविषयी आदर असावा. आपण ज्या समाजात राहातो त्याची सुखःदुखे आपण ओळखली पाहिजेत. जपानचे उदाहरण सांगतो. नोकरी मिळावी म्हणून तेथे कोणीही शिकत नाही. नोकरी हे शिक्षणाचे व विद्यार्थीजीवनाचे ध्येय असू नये.

—द्विग्रस येथे ना. वसंतरावांनी विद्यार्थ्यांपुढे
केलेल्या भाषणातून.

आदिवासींचा आधार

ना. दिगंबरराव पाडवी

‘आधी केले, मग सांगितले’ याप्रमाणे नाईकसाहेबांचे वर्तन असल्याने महाराष्ट्रातीलच नव्हे तर अखिल भारतामधील आदिवासी जन त्यांना आपले नेते मानतात. त्यामुळेच महाराष्ट्रामधील आदिवासींच्या सर्वांगीण उत्कर्षासाठी त्यांनी जे निकराचे प्रयत्न चालविले आहेत त्याचे अनुकरण भारतातील इतर राज्यांमधूनही होत आहे. महाराष्ट्रामधील प्रयत्नांची हकीगत . . .

महाराष्ट्राचे नेते नामदार श्री. वसंतराव नाईक हे एक मागासलेल्या समाजापैकी असून त्यांना मागासलेल्या समाजाच्या अडीअडचणींची संपूर्ण कल्पना आहे. त्या अडचणी सोडविण्याची त्यांना एक प्रकारची तळमळच लागून राहिली आहे. महाराष्ट्रातील मागासलेला समाज कोणत्या प्रकाराने पुढे येईल ही एक त्यांची चिंताच आहे असे म्हटल्यास वावगे होणार नाही.

महाराष्ट्र राज्यामध्ये १९६१ च्या खानेसुमारीनुसार वर्गीकृत जमातींची लोकसंख्या २३९७१५६ म्हणजेच एकूण लोकसंख्येच्या ६.०६ टक्के आहे. आदिवासी लोकसंख्येनुसार महाराष्ट्र राज्याचा क्रमांक ५ वा लागतो. महाराष्ट्रातील वर्गीकृत जमातीत ६१ जमातींचा समावेश होतो. त्यापैकी भिल्लांची संख्या सगळ्यात अधिक म्हणजे ५७५०२२ असून तिचे राज्यांतील एकूण आदिवासी लोकसंख्येशी प्रमाण २४ टक्के पडते. कोळी महादेव, गोंड, वारली आणि कोकणा या इतर चार जमातींची संख्या दोन लाखाहून अधिक आहे तर ठाकूर, काथोडी आणि गामित ह्या तीन जमाती एक लाखावर लोकसंख्येच्या आहेत. वरील आठ जमातीत एकूण आदिवासींपैकी ८२.६५ टक्के लोकांचा समावेश होतो. ग्रामीण भागातील आदिवासींचे प्रमाण ९६.२५ टक्के पडते. राज्यातील एकूण साक्षरतेचे प्रमाण २९.८२ टक्के आहे तर आदिवासीमध्ये तेच ७.२१ टक्के आहे. म्हणजे आदिवासीमध्ये साक्षरतेचा प्रसार फारच थोडा झालेला आढळून येतो.

राज्यातील वर्गीकृत जमातींचा मुख्य घंदा शेती आहे. या जमातींचे काही लोक झाडे तोडण्याचा, लाकूड कापण्याचा, कोळसा तयार करण्याचा तसेच जंगलातील किर-कोळ माल गोळा करण्याचा घंदा करतात.

वर्गीकृत जमाती डोंगराळ भागात अगदी अलग अशा राहतात. त्यामुळे या जमातींचे लोक आर्थिक व शैक्षणिक दृष्ट्या मागासलेले आहेत. त्यांच्या उन्नतीकरिता शासनाने विविध योजना आखल्या आहेत. आदिवासी कल्याण योजना मुख्यतः तीन विभागांत विभागल्या जातात: १) शैक्षणिक; २) आर्थिक उन्नती आणि ३) आरोग्य, घरवांधणी व इतर. सध्याच्या मुख्यमंत्र्यांच्या कारकीर्दीत आदिवासींच्या प्रश्नाकडे विशेष लक्ष देण्यात येऊन आदिवासींच्या कल्याणार्थ ज्या योजना आखण्यात आल्या आहेत त्यात वरीच प्रगती झालेली आहे. मुख्यमंत्री या राज्यातील आदिम जाती सल्लागार मंडळाचे अध्यक्ष असून त्यांच्या देखरेखीखाली आदिवासींचे विविध प्रश्न सोडविले जातात. आदिवासी विकास योजनेसंबंधाने मुख्यत्वेकरून खालील वावतीत सध्याच्या मुख्य मंत्र्यांच्या मार्गदर्शनाखाली वरेच पुढे पाऊल टाकण्यात आले आहे.

आदिवासींचे शिक्षण

महाराष्ट्र राज्यातील आदिवासीमध्ये साक्षरतेचे प्रमाण फारच कमी म्हणजे शेकडा ७.२१ टक्के आहे हे वर म्हटलेच आहे. आदिवासी पुरुषांमध्ये ते १२.५५ टक्के आहे व स्त्रियांमध्ये फक्त १.७५ टक्केच आहे. याच्या उलट सर्वसाधारण लोकसंख्येमध्ये साक्षरतेचे प्रमाण २९.८२ टक्के, पुरुषांमध्ये ४२.०४ टक्के व स्त्रियांमध्ये १६.७६ टक्के आहे.

आदिवासींकरिता शासनाने कार्यान्वित केलेल्या शैक्षणिक योजनांमध्ये खालील मुख्य योजनेचा समावेश होतो. सर्व आदिवासी विद्यार्थ्यांना त्यांची गुणवत्ता किंवा उत्पन्न लक्षात न घेता सर्व थरातील शिक्षण मोफत आहे. खाजगी शिक्षणसंस्थांना यामुळे सोसावी लागणारी आर्थिक झीज शासनातर्फे शुल्क अनुदानाच्या रूपाने भरून काढली जाते. परीक्षा शुल्क सुद्धा आदिवासी विद्यार्थ्यांना माफ आहे. या व्यतिरिक्त आदिवासी विद्यार्थ्यांना पाट्या, पुस्तके व इतर शैक्षणिक वस्तु खरेदी करता याव्यात यासाठी शिष्यवृत्त्या देण्यात येतात. त्यांचा दर प्राथमिक शाळेतील इयत्ता १ व २ मधील विद्यार्थ्यांना वार्षिक रुपये ३ पासून इयत्ता ११ वीतल्या विद्यार्थ्यांना वार्षिक रुपये २४० पर्यंत आहे.

तिसऱ्या पंचवार्षिक योजनेत आदिवासींचे शिक्षणासाठी तरतूद रुपये ४९.१३ लक्ष केली होती व खर्च रुपये ३५.३० लक्ष झाला.

आदिवासी विद्यार्थी व विद्यार्थिनींसाठी स्वयंस्फूर्त संस्थांतर्फे वसतिगृहे चालविण्याची मोठ्या प्रमाणावर योजना आहे. तिसऱ्या पंचवार्षिक योजनेखाली यासाठी

रुपये ८ लक्षांची तरतूद करण्यात आलेली होती. त्या संदर्भात एकूण खर्च रुपये ९.८३ लक्ष झालेला आहे. महाराष्ट्र राज्यात आदिवासींकरिता एकूण २२० वसतिगृहे असून त्यापैकी १७८ वसतिगृहे मुलांसाठी व ४२ मुलींसाठी आहेत. अदमासे ७००० आदिवासी विद्यार्थी या वसतिगृहांचा लाभ घेतात.

या व्यतिरिक्त संमिश्र वसतिगृहात राहाणाऱ्या ७५० आदिवासी विद्यार्थ्यांचा सर्व खर्च शासनातर्फे अनुदानाच्या रूपाने करण्यात आला.

शैक्षणिक क्षेत्रात अत्यंत महत्वाची योजना म्हणजे आश्रम शाळा होय. आश्रम शाळांमध्ये मूलोद्योग शिक्षणावर भर देण्यात येत असून त्यामध्ये शेती व तत्सम इतर व्यवसाय यांचा समावेश होतो. महाराष्ट्र राज्यात एकूण ३७ आश्रमशाळा आदिवासीकरिता सुरू करण्यात आल्या असून त्यापैकी १२ तृतीय पंचवार्षिक योजनेत सुरू करण्यात आल्या आहेत. १९६५-६६ साली आश्रम शाळांकरिता २० ८४ लक्ष रुपये खर्च करण्यात आला आहे.

तृतीय पंचवार्षिक योजनेच्या अखेरपर्यंत आदिवासी मुलींच्यासाठी एकूण ४७ छात्रालये स्वयंस्फूर्त संस्थांनी चालविलेली आहेत. याखेरीज शासनाने चतुर्थ पंचवार्षिक योजनेच्या पहिल्या वर्षी म्हणजे १९६६-६७ साली सुरू केलेली ३ छात्रालये खालीलप्रमाणे आहेत .

- १ जव्हार (जिल्हा-ठाणे)
- २ तळोदा (जिल्हा-बुलढे)
- ३ धारणी (जिल्हा-अमरावती)

स्वयंस्फूर्त संस्थांच्या मान्यता पावलेल्या छात्रालयांना पुरेसे अनुदान दिले जाते. याशिवाय स्वयंस्फूर्त संस्थांनी चालविलेल्या वसतिगृहांना स्वतःची इमारत उभारण्यासाठी दर विद्यार्थ्यांमागे ५०० रु. प्रमाणे मंजूरी संख्येच्या मर्यादेपर्यंत अनुदान म्हणून देण्यात येते.

याशिवाय शासकीय मुलींचे वसतिगृहात मुलींचा खाण्यापिण्याचा, कपड्यांचा, राहण्याचा, तसेच पुस्तके व इतर लागणाऱ्या सामानावरचा खर्च केला जातो. या वसतिगृहावर देखरेख करण्यासाठी म्हणून वॉर्डनची नेमणूक करण्यात आलेली आहे.

याशिवाय मुंबई, पुणे, नागपूर व औरंगाबाद येथे मागासवर्गीय मुलींकरिता वसतिगृहे आहेत.

८ एप्रिल १९६५ रोजी धारणी येथे आदिवासींचे एक अधिवेशन बोलविण्यात आले होते. या प्रसंगी श्री. वसंतराव नाईक, मुख्यमंत्री महाराष्ट्र राज्य, यांनी मेळघाट तहसीलमधील प्राथमिक शिक्षणावर विशेष जोर दिला. या अधिवेशनात असेही सुचविण्यात आले की, या विभागातील सर्व प्राथमिक शाळा जिल्हा परिषदेकडे सोप-

विण्यात याव्या. तसेच नव्या प्राथमिक शाळा उघडून या विभागातील आदिवासी जनतेमध्ये शिक्षणाचा प्रसार व्हावा.

आदिवासी विकासगट

दुसऱ्या पंचवार्षिक योजनेमध्ये केंद्र सरकारच्या गृहमंत्रालयाने देशामध्ये ४३ विविधोद्देशीय आदिवासी विकासगट स्थापन केले. त्या पैकी चार विकासगट महाराष्ट्र राज्याला मिळाले. डॉ० व्हेरियर एल्विन यांच्या अध्यक्षतेखाली नेमलेल्या समितीच्या शिफारशीनुसार तिसऱ्या पंचवार्षिक योजनेत मोठ्या प्रमाणात आदिवासी विकासगट सुधारलेल्या पद्धतीनुसार सुरू करण्यात आले. त्यापैकी महाराष्ट्रात एकूण ४० आदिवासी विकास गट उघडण्यात आले. अशा तऱ्हेने महाराष्ट्रात एकूण ४४ आदिवासी विकासगट चालू असून त्याखाली १११४२ चौरस मैल प्रदेश येतो. या भागाची एकूण लोकसंख्या १५ ते १६ लक्ष असून त्यापैकी ११.७४ लाख आदिवासी आहेत. या विकास गटांखाली राज्यातील ६६ $\frac{२}{३}$ आदिवासी लोकसंख्येचे प्रमाण असलेले सर्व भाग व्यापले गेले आहेत व राज्यातील एकूण आदिवासीं पैकी ४९ टक्के आदिवासींना या योजनेखाली फायदा मिळत आहे.

तृतीय पंचवार्षिक योजनाकाळात या ४४ आदिवासी विकासगटांवर एकूण २ कोटी ९५ लक्ष रुपये खर्च करण्यात आले. त्यापैकी १९६५-६६ साली १ कोटी २९ लक्ष रुपये खर्च करण्यात आले होते. वरील रकमेपैकी साधारण ६० टक्के भाग आर्थिक विकासावर, २५ टक्के दळणवळणाच्या सोयीसुधारणा यांवर व उरलेली १५ टक्के रक्कम इतर योजनांकरिता याप्रमाणे डॉ० एल्विन समितीचे शिफारशीनुसार खर्च करण्यात आले.

चतुर्थ पंचवार्षिक योजनेत महाराष्ट्र राज्यात नवीन ३४ आदिवासी विकासगट सुरू करण्यात येणार असून त्याखाली ५० टक्क्यांवर आदिवासी लोकवस्तीचे प्रमाण असलेले सर्व भाग व्यापले जाणार आहेत. त्याशिवाय आजपर्यंत चालू झालेले ४४ आदिवासी गटसुद्धा चालू राहणार असून या आदिवासी विकासगटांवर चतुर्थ पंचवार्षिक योजनेत एकूण ७ कोटी रुपये खर्च करण्यात येणार आहेत. त्यापैकी १९६६-६७ सालात ४ आदिवासी विकासगट सुरू करण्यात येतील व या योजनेवर एकूण ९३ लक्ष रुपये खर्च करण्यात येतील. यापैकी ६ लक्ष रुपये आदिवासी विकास गटावाहेरील परंतु एक हजार संख्येच्या गटाने राहणाऱ्या आदिवासींच्या विकासासाठी खर्च होणार आहेत.

पालेमोड पद्धतीचे निर्मूलन

पालेमोड पद्धत ही आदिवासी क्षेत्रात बहुधा अस्तित्वात आहे. या क्षेत्रातील सामान्य शेतकरी नेहमीच आर्थिक अडचणीत असतो. पावसाळ्याच्या सुरवातीस

आणि पावसाळ्यात तो सावकाराकडून कर्ज घेतो आणि हंगामानंतर ते कर्ज २०० ते ३०० टक्के व्याजासह परत करतो. खावटी तगाईकरिता दिलेल्या मदतीचा या आदिवासीवर काही परिणाम होत नाही आणि म्हणून ही पद्धत समूळ नष्ट करण्याकरिता आणि गरीब आदिवासी शेतकऱ्यांना सावकारांच्या पंजातून सोडविण्याकरिता दीर्घ मुदतीची योजना कार्यान्वित करणे शासनाला आवश्यक वाटते. परंतु अशी दीर्घकालीन योजना सुरू करण्यासाठी काही कालहरण होण्याची शक्यता असल्यामुळे आणि ठाणा जिल्हा परिषद ही योजना १९६५-६६ मध्ये कार्यान्वित करण्याकरिता अतिउत्सुक असल्यामुळे शासनाने ठाणे जिल्ह्यापुरती मर्यादित स्वरूपाची योजना प्रयोगादाखल १९६५-६६ मध्ये कार्यान्वित करण्याचे ठरविले. ह्या योजनेप्रमाणे प्रत्येक आदिवासी शेतकऱ्यास रु. १०० ते रु. २०० तगाई वाटपाच्या स्वरूपात देण्यात येतात. याकरिता एकूण २० लक्ष रुपये देण्याला सन १९६५-६६ मध्ये मंजूरी दिली. वरील तरतुदीतून १९६५-६६ साली १९,०२,५७४.७५ रुपये तगाई वाटप स्वरूपात खर्च झाला व या योजनेमुळे ठाणे जिल्ह्यातील गरीब आदिवासींची सावकारी पाशातून मुक्तता होण्यास काही प्रमाणात मदत झाली. या वर्षीदेखील ठाणे जिल्ह्यात ही योजना कार्यान्वित होत आहे व चालू वर्षी ही योजना नाशिक जिल्ह्यास लागू करण्यात आली आहे.

वनग्राम

आदिवासींच्या आर्थिक उन्नतीसाठी जंगल खात्यातर्फे जंगलविभागात आदिवासींच्या ४५९ खेडी वसविण्यात आली आहेत. ह्यांना जमीन व निरनिराळ्या प्रकारची आर्थिक मदत अस्तित्वात असलेल्या नियमानुसार देण्यात येत आहे. या खेडुतांचा सर्वांगीण विकास करण्यासाठी शासन प्रयत्नशील आहे. तथापि या लोकांच्या निरनिराळ्या प्रश्नांचा विचार करण्यासाठी शासनाने दिनांक २४ मे १९६५ रोजी एक समिती माझ्या अध्यक्षतेखाली नियुक्त केली आहे. ही समिती आदिवासी जंगलव्याप्त खेड्यांत फिरून त्यांच्या सर्व प्रश्नांचा सांगोपांग विचार करित आहे. पूर्ण चौकशीनंतर तिचा अहवाल शासनास सादर केला जाईल.

इतर योजना

आदिवासी विभागात शिवाजी एज्युकेशन सोसायटी मार्फत बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय चिखलदरा येथे दिनांक २-१०-१९६५ रोजी सुरू करण्यात आले आहे. या महाविद्यालयामुळे आदिवासी विभागात प्रशिक्षणाची सोय उपलब्ध झाली आहे.

देशमुख कमिटीच्या सूचनेप्रमाणे सरकारी नोकऱ्यांत आदिवासी जमातीकरिता लोकसंख्येच्या आधारावर शेकडा ७ जागा राखून ठेवण्याचे आदेश

१९६५ साली काढण्यात आले आहेत. सरकारी नोकरीतील सर्व श्रेणींमध्ये ह्या राखीव जागा ठेवण्यात आल्या आहेत. ह्या जागा ह्या समाजातील उमेदवारांनी त्याच्या लायकीच्या आधारावर मिळविलेल्या जागांच्या व्यतिरिक्त राहतील.

आदिवासींच्या विकासासाठी कार्यान्वित केल्या गेलेल्या योजनांमध्ये जंगल कामगार सहकारी संस्था, घरबांधणी सहकारी संस्था, फिरती आरोग्य केंद्रे इत्यादींचाहि समावेश होतो .

दुसऱ्या पंचवर्षिक योजनेच्या अखेरपर्यंत २८२ जंगल कामगार संस्था अस्तित्वात होत्या. तिसऱ्या पंचवर्षिक योजनेच्या काळात १३२ संस्थांची भर पडली आहे.

आदिवासींच्या सरकारी घरबांधणी योजनेसाठी तृतीय पंचवर्षिक योजनेखाली ८.०२ लक्ष रुपये खर्च करण्यात आले असून ५३७ घरे बांधण्याकरिता अनुदान व कर्जे देण्यात आली आहेत.

महाराष्ट्र राज्यात आदिवासी विभागामध्ये २२ फिरती व स्थायी स्वरूपाची आरोग्य केंद्रे उघडण्यात आली आहेत. त्यापैकी पाच तृतीय पंचवर्षिक योजनेत आली आहेत.

विदर्भातील अनुसूचित जमातीचे लोक जे निर्धारित क्षेत्राबाहेर राहातात त्यांची अशी मागणी आहे की, निर्धारित क्षेत्रात राहणाऱ्या त्यांच्या आदिवासी बांधवांप्रमाणे त्यांना शासनाकडून शैक्षणिक व इतर सवलती देण्यात याव्या. क्षेत्रनिर्बंध काढून टाकणे ही बाब केंद्र शासनाच्या क्षेत्रात असल्यामुळे राज्य शासनाने केंद्र शासनास अशी शिफारस केली आहे की, या लोकांची मागणी मंजूर करण्यात यावी व त्याप्रमाणे संसदेने सध्याच्या सूचीमध्ये कायद्यान्वये दुरुस्ती करावी. निर्वासित क्षेत्राबाहेरील आदिवासी जमातीतील लोकांचा जरी अजून कायद्यान्वये क्षेत्रनिर्बंध दूर करण्यात आला नसला तरी त्यांना जंगल सहकारी संस्थेच्या योजनेचा फायदा देण्यात आला आहे.

आदिवासींमध्ये शिक्षणाची प्रगती शीघ्र गतीने घडवून आणण्याच्या उद्देशाने शासनाने माझ्या अध्यक्षतेखाली एक कमिटी नेमली होती. त्या कमिटीने आपला अहवाल शासनास सादर केला असून त्यावर विचार चालू आहे.

भूमिहीन आदिवासींना मदत देण्याच्या दृष्टीनेही महाराष्ट्र सरकारने वस्तुनिष्ठ व पुरोगामी धोरण आखले आहे. नामदार नाईक यांनी या धोरणाचाच हिरीरीने पाठपुरावा चालविला आहे.

आदिवासींच्या शैक्षणिक, सामाजिक किंवा आर्थिक गरजांना प्राधान्य मिळावे व समाजाचा सन्मान्य घटक होण्याची संधी त्यांना मिळावी म्हणून नाईकसाहे-

वांच्या मार्गदर्शनाखाली महाराष्ट्र राज्यात प्रयत्न चालू आहेत. या प्रयत्नांना सफलता आणणे हे सर्व जनतेच्या सहकार्यावर अवलंबून आहे. जोपर्यंत मागासलेल्या समाजाचा उद्धार होत नाही तोपर्यंत महाराष्ट्राचा उद्धार होणार नाही व पर्यायाने भारताचा ही !



मानवाची सेवा करणारे शास्त्र सर्व मानवांना समप्रमाणात उपलब्ध करून देणे ही आजची गरज आहे. यासाठी डॉक्टरांनी शहराबरोबरच ग्रामीण भागातही वैद्यकीय सोयी उपलब्ध करून देण्याच्या कामी सहकार्य दिले पाहिजे.

-ना. वसंतराव नाईक.

सही अर्थों में जनता के प्रतिनिधि

रामकृष्ण बजाज

यह हमारा सौभाग्य है कि एक किसान हमारा मुख्यमंत्री है जो किसानों की समस्याओं के हर पहलू को समझता है ।

श्री. वसंतरावजी के बारे में कुछ लिखना आसान नहीं । उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रखर नहीं है । उनमें कोई बहुत बड़ी विशेषता हो या कोई विशेष कमजोरी हो ऐसा भी नहीं है । उनका व्यक्तित्व बड़ा विवादास्पद हो, स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण हिस्सा लिया हो और नाम कमाया ऐसी बात भी नहीं है, जहां तक मैं जानता हूं उस दौरान वे जेल भी नहीं गये हैं ।

लेकिन फिर भी उनमें ऐसी कुछ विशेषता है जिसके कारण आज वे महाराष्ट्र जैसे बड़े व महत्वपूर्ण प्रांत के मुख्यमंत्री हैं । आम तौर पर यह माना जाता है कि बम्बई जैसी उद्योग-व्यवसाय प्रधान नगरी जिस प्रांत की राजधानी है, उस प्रांतका मुख्यमंत्री किसी शहरका रहवासी हो और उसमें शहर के रहन-सहन, तोर तरीकों व चमक-दमक का प्रभाव हो, बोलचाल में, पहराव में, व्यक्तित्व में एक खास रुआब हो ।

लेकिन बम्बई व महाराष्ट्र के लोगों ने ऐसे आदमी की बजाय जनता के सादे व सच्चे प्रतिनिधी को अपना नेता चुना । आज भी वसंतरावजी को अपने आप को एक मामूली किसान मानने और कहने में गौरव अनुभव होता है । व्यवसाय से वे एक वकील रहे हैं । लेकिन स्वभाव से तो अब भी किसान ही हैं । अपनी धरू खेती में वे हमेशा से काफी दिलचस्पी लेते रहे हैं । भारत के किसान में जो कुशाग्र व्यवहार-बुद्धि होती है वह उनमें है । इस कारण जनता का हित किसमें है इस बात को वे तुरंत पकड़ते हैं । बिना किसी दिखावे के वसंतरावजी बड़े प्रेम से सब लोगों के साथ हिल-मिलकर मित्रता के नाते बातचीत करते हैं, सलाह-मशविरा करते हैं और जो बात उनको जंच जाती है उसको अमल में लाने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता । विरोधियों का दिल जीतने में भी वे काफी सफल हुए हैं, यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वे

विरोधियों को अपने मन के अनुकूल बनाने के लिए जरूरत से ज्यादा प्रयत्न करते हैं। सत्ता पर होते हुए भी आज उनका कोई शत्रु नहीं। इसका मुख्य कारण यही है कि जहां तक उनसे बन पड़ता है हर किसी की मदद करने की सदिच्छा उनकी रहती है।

कई बोटों के सिलसिले में मेरा उनसे संपर्क हुआ है। हर बार मैंने यह पाया है कि जो भी समस्या उनके पास आती है उसका हल ढूंढने में वसंतरावजी सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

जिन-जिन लोगों का संबंध आता है उन लोगों के साथ बातचीत करके और सौहार्द्रता से समस्या का हल ढूंढने की वे कोशिश करते हैं। उन्हें यह कहने में जरा भी संकोच नहीं होता कि भाई, यह बात तो मेरे दायरे की नहीं, मैं नहीं समझता हूं, आप अच्छी तरह से समझाइये और क्या हल हो सकता है बताइये। यदि दूसरे की बात उनको जंच जाती है तो चाहे वह विरोधी पक्ष ने ही क्यों न कही हो, उसे तुरंत मान लेने में उन्हें संकोच नहीं होता।

आज सारे देश के सामने सबसे बड़ी समस्या अनाज की है। महाराष्ट्र में भी यह समस्या बनी हुई है। यह हमारा सौभाग्य है कि इस समय एक किसान हमारा मुख्य मंत्री है जो किसानों की समस्याओं के हर पहलू को समझता है, उन्हें दूर करने की खाहिश भी रखता है तथा उस तरफ पूरे प्रयत्न से लगा हुआ है। इस समस्या को हल करने के पीछे जिस लगन से वे लगे हुए हैं, यदि प्रकृति ने कुछ साथ दिया तो मुझे भरोसा है कि वे जरूर सफल होंगे और महाराष्ट्र की अनाज की कमी, जो कि सारे भारतवर्ष की कमी की एक तिहाई है, जरूर दूर हो जायगी। इससे केवल महाराष्ट्र की ही नहीं बल्कि सारे देश की समस्या को हल करने में बड़ी मदद मिलेगी।

आज हमारे देश में ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जो रूढ़ि व परंपरागत दृष्टिकोण को छोड़कर देश के हितों की दृष्टि से व्यावहारिक नीति अपनाये। तभी हमारा देश अधिक तेजी से आगे बढ़ सकता है। श्री नारिक में कुशलता और व्यावहारिकता का एक अद्भुत सम्मिश्रण है और उनकी सफलता का यह एक मुख्य कारण है।



शिकारी मुख्य मंत्री

य. बा. शास्त्री

घनदाट जंगलातील अंधुक प्रकाशात आमच्या दृष्टीस जे पडले नव्हते ते वसंतरावजींच्या सराईत दृष्टीने नेमके हेरले होते. रानडुकरांचा एक मोठा कळप दूर अंतरावरून चालला होता. वसंतरावांनी जीप थांबविण्यास सांगितली. त्यांनी रायफलचा नेम धरला. 'सूं आी आी आी' करीत गोळी बाहेर पडली . . .

मंत्रीपदावर आरूढ होणाऱ्या व्यक्तीशी संबंधित असे जे अनेक अपसमज जनमानसात बद्धमूल होत चालले आहेत त्यापासून श्री. वसंतराव नाईक हे अपवादभूत होऊन राहिले आहेत ही गोष्ट मला आवर्जून सांगावीशी वाटते. उपमंत्री, मंत्री आणि मुख्यमंत्री ह्या तीनही अवस्थातून जाताना मी श्री. वसंतरावजींना जवळून पाहिले आहे. ते होते तसेच आजही आहेत. मंत्रीपद लाभले म्हणून त्यांनी तिरपी पांढरी टोपी डोक्यास चिकटविण्याचा ढोंगीपणा कधी केला नाही. खादीचे जाडेभरडे धोतर आणि चुरगळलेला लांब झोळ अंगरखा शरीराभोवती लटकवत ठेवला नाही. बनारसी सिल्कचा त्यांचा बदामी झाक असलेला पॅण्टकोट कायम आहे. उपमंत्री झाल्यानंतर कित्येक दिवस ते रेशमी 'नेकटाय' वापरीत असत. काही वर्षांपासून ते बंद गळ्याचा कोट वापरू लागले आणि नेकटाय सुटला. पूर्वीचा त्यांचा 'पाईप' किंवा 'गोल्डफ्लेक' सिगारेट आजही कायम आहे. चर्चिलचा जसा चिरूट तसा वसंतरावजींचा 'पाईप.' पं. जवाहरलाल नेहरू असोत नाही तर लालबहादूर शास्त्री असोत त्यांच्या बैठकीत बसले असताना वसंतरावजींनी आपला 'पाईप' लपवून ठेवून, अनायासे आदर दाखविण्याचा कृत्रिमपणा कधी केला नाही. त्यांची 'जैसे थे' वृत्ती होती तशी आजही कायम आहे. मी अनेक मंत्री आणि मुख्य मंत्री पाहिले आहेत. या सर्वापेक्षा वसंतरावजींचे व्यक्तिमत्व निराळे आहे. त्यांनी आपले वैशिष्ट्य कायम ठेवले आहे. बेडर वृत्ती राखून ठेवली आहे. गरिबासंबंधीची कणव

अधिक जागृत केली आहे. अनेक श्रेष्ठ पदे भूषविल्यानंतर आणि आज भूषवित असतानाही त्यांनी आपले स्वत्व सोडले नाही, हेच वसंतरावजींचे खरे व्यक्तिमत्व आहे. वसंतरावजी हे खरोखरच सज्जन आणि उमदे मुख्य मंत्री आहेत.

आणि वसंतरावजींच्या ह्या गुणामुळेच त्यांच्याबद्दल लोकांना आदर आणि आपुलकी वाटत आली आहे. माझ्या दृष्टीने, त्यांच्या व्यक्तिमत्वाला उजाळा देणारी आणखी एक गोष्ट आहे, आणि ती म्हणजे त्यांच्या अंगात भिनलेली शिकारीची आवड. वसंतरावजी पट्टीचे शिकारी आहेत ही गोष्ट फार थोड्या लोकांना ठाऊक असेल. नेपाळचे राजे महेंद्र हे वसंतरावजींच्या निमंत्रणावरून काही महिन्यापूर्वी चांदा जिल्ह्यातील ताडोबाच्या जंगलात शिकारीला आले होते. त्यावेळी नेपाळ नरेशासोबतच वसंतरावजींनीही एका वाघाची शिकार केल्याची वार्ता जेव्हा प्रसिद्ध झाली तेव्हा कुठे महाराष्ट्राचा मुख्य मंत्री सराईत शिकारी असल्याचा मागोवा लोकांना लागला. उत्तम शिकारी हा वृत्तीने घोट, मनाचा मोकळा आणि वागण्यात खिलाडू असतो. हे तीनही उमदे गुण आमच्या उमद्या मुख्यमंत्र्यांच्या अंगी आहेत. मंत्री होणारा माणूस शिकारीही असू शकतो, असे कुणाला स्वप्नातहि वाटणार नाही. पण आमचे मुख्य मंत्री अब्बल दर्जाचे शिकारी आहेत. राजकारणातील मुत्सद्देगिरीच्या डावपेचावरोबरच त्यांनी जंगलातील वाघासारखी श्वापदेही लीलया हाताळली आहेत. दुसऱ्या कोणत्याही मुख्य मंत्र्यात हा गुण असेल असे वाटत नाही. एका शिकारीच्या प्रसंगाच्या निमित्तानेच मी व वसंतरावजी आणखी जवळ आलो होतो.

जुन्या मध्यप्रदेशाच्या राजवटीत त्यावेळी वसंतरावजी उपमंत्री होते. त्यावेळची ही गोष्ट आहे. त्या वेळेपर्यंत मी शिकार हा प्रकार प्रत्यक्षात पाहिला नव्हता. युद्धाच्या आणि भूतपिशाच्चांच्या कथा जशा रम्य असतात, तशाच शिकारीच्या कथाही रम्य असतात. अशा कित्येक कथा मी ऐकल्या होत्या. त्यामुळे शिकार करण्यापेक्षा शिकार करताना पाहण्याची इच्छा मनात बळावली होती. जगप्रसिद्ध शिकारी जिम कॉर्बेटची पुस्तके वाचून काढली होती. शिकारीचा प्रकार प्रत्यक्षात पहावयाचे राहून गेले होते. वसंतरावजींना शिकारीची आवड असल्याचे मला ठाऊक होते. त्यांनी पुसद तालुक्याचा दौरा करण्याचा मानस मला सांगितला व आपल्या वरोवर सोबत येण्याचे आमंत्रणही दिले. मी एका पायावर तयार झालो. पुसद तालुक्यात जंगल आहे काय, अशी मी वसंतरावजींकडे विचारणा केली व तेथे जंगल तर आहेच, पण त्यात वाघही सापडतात असे कळताच दौऱ्यात शिकारीचा प्रसंग घडवून आणण्याचे त्यांच्याकडून मी अभिवचन घेतले. दौऱ्यात आमच्यासोबत तत्कालीन आमदार श्री. अण्णासाहेब खडसे हेही येणार होते. ते त्यावेळी पार्लमेंटरी सेक्रेटरी होते.

पुसद तालुक्यातील दरोडेखोरांच्या गोष्टी ऐकून भारावलेल्या मनःस्थितीत मी असतानाच, त्या दिवशी दुपारची जेवणे आटोपून किनवटच्या जंगलात शिकारीला

जाण्याचा मानस वसंतरावजींनी बोलून दाखविला. अक्षरशः मी उडी मारली. प्रत्यक्ष शिकार पहावयास मिळणार. जीप गाडीत बसून आम्ही निघालो. समोर वसंतराव रायफल घेऊन बसले होते. मागे मी, अण्णासाहेब खडसे व एक चपरासी असे तिघे होतो. वसंतरावांशेजारी बसलेला ड्रायव्हर निष्णात होता. मे महिन्याचे दिवस होते. रणरणत्या उन्हात आम्ही निघालो होतो. किनवटच्या घनदाट अरण्यात उन्हाळ्यात अंगात अक्षरशः हुडहुडी भरली. आम्ही हळूहळू पुढेपुढे जात होतो.

एकाएकी वसंतरावजींनी ड्रायव्हरला इषारा केला आणि जीपचा वेग मंदावला. निष्णात शिकार्याची नजर तीक्ष्ण असते. आमच्या दृष्टीस जे पडले नव्हते, ते वसंतरावजींच्या दृष्टीने नेमके हेरले होते. त्यांनी आम्हाला उजव्या बाजूस समोर पाहण्यास सांगितले. रानडुकरांचा एक मोठ्ठा कळप दूर अंतरावरून जाताना आम्ही पाहिला. वसंतरावजींनी जीप थांबविण्यास सांगितली. आम्ही सर्व आत बसून होतो. रानटी जनावरांच्या विशिष्ट संवयी असतात. वसंतरावांना त्या ठाऊक असाव्यात. 'हा कळप आता रस्ता ओलांडून डावीकडे जंगलात जाईल' असे त्यांनी सांगितले आणि खरोखरच जवळ जवळ दोन-अडीच फर्लागांवरून तो कळप रस्ता ओलांडताना आम्ही पाहिला. हळू हळू जीप पुढे नेण्यास वसंतरावजींनी सांगितले. ज्या ठिकाणी रस्ता ओलांडून कळप जात होता तेथे जीप उभी करण्यास त्यांनी सुचविले. त्या जागी सर्व खाली उतरलो.

कळप डावीकडे जंगलात निघून गेला होता. पण वसंतरावजींना त्याचा सुगावा असावा. त्यांच्यासोबत आम्ही सर्व जंगलात शिरलो. सुमारे मैलभर आत गेलो. जंगल हा काय प्रकार आहे हे मी त्यावेळी प्रथम पाहिले. घनदाट वृक्षांची सायंकाळसारखी छाया, सूर्यप्रकाश कवडशासारखाच. आत प्रवेश करावयाचा. जमिनीवर पिवळट रंगाचे वाळलेले गवत आणि पानांचा साठलेला पाचोळा. त्यावरून चालताना विचित्र आवाज होई. अधुनमधून त्या गवतातून वर डोकावणाऱ्या काळ्या दगडाच्या शिळा आडव्या येत.

आम्ही हळूहळू पुढे जात होतो. रायफलीची नळी पुढे सरसावून वसंतरावजी सामोरे होते. आम्ही त्यांच्या पाठीमागे असलो, तरी ह्यावेळी खऱ्या अर्थाने तेच आमचे 'पाठीराखे' होते. रानडुकरांचा कळप आम्हाला दिसत नव्हता. इतक्यात हाताने खूण करून आम्हाला थांबण्याची सूचना वसंतरावजींनी दिली. वसंतरावजींच्या दृष्टीने कुठेतरी काही तरी पडले असावे. आम्हाला मात्र काहीच दिसत नव्हते.

वसंतरावजींनी रायफलचा नेम धरला. 'सूं ई ई ई' करीत गोळी बाहेर पडली. वसंतरावजींचा नेम लागला होता. आम्ही सर्व जागच्या जागी खिळन होतो. इतक्यात बरीचशी जनावरे पळत जात असल्याचा आवाज ऐकू आला. पाठोपाठ जनावर

किंचाळल्याचा आवाज काही अंतरावरून ऐकू आला. गोळी लागलेले जनावर गवतात पडले असावे. नंतर आमचा शोध सुरू झाला. वसंतराव म्हणाले, 'जनावर इथेच कुठे तरी गवतात पडले असावे. संशय येईल तेथे दगड मारून पहा.' गवतात काळा रंग (दगड) दिसेल त्यावर श्री. अण्णासाहेब खडसे दगड मारू लागले.

दगड मारण्याचा हा उपक्रम चालता चालता चालू होता. दगडावर दगड मारला गेला की, 'खट' असा आवाज होई. पण अण्णासाहेबांचा एक दगड एके ठिकाणी लागला आणि 'घव्व' असा आवाज झाला. पुन्हा दगड मारला. पुन्हा 'घव्व' असा आवाज झाला. मरून पडलेले ते सावज रानडुकर होते.

एका झाडाजवळ गवतात ते मरून पडले होते. झाडाचा बुंधा जवळ जवळ चार इंच आत व फूटभर लांब चिरला गेला होता आणि त्या ठिकाणी सावजाचे रक्त माखले होते. रायफलीची गोळी लागल्यानंतर जखमी झालेले ते रानडुकर गोळी आली त्या दिशेने आपल्याला जखमी करणाऱ्या व्यक्तीवर उलट वार करण्याच्या इराद्याने धावून जात असताना त्या वृक्षाशी त्याची टक्कर झाली होती व त्याच्या दातांच्या सुळ्यांनी तो वृक्ष कापला गेला होता. डुकराच्या सुळ्याचे जे खोलवर वार त्या झाडाच्या बुंध्यावर झाले होते, ते पाहून कोणत्या भयानक वेगाने ते डुकर धावत आले असावे याची कल्पना करता आली. झाड आडवे आले नसते आणि त्या जखमी डुकराने आम्हाला गाठले असते, तर कोणता भयानक प्रसंग ओढवला असता याचीही दुसऱ्याच क्षणी जाणीव होऊन अंगावर काटा उभा राहिला. मी तर सदैव होऊन गेलो.

शिकार्याने शिकार केल्यानंतर सावज जंगलाबाहेर न्यावे असा शिरस्ता आहे. ते डुकर रस्त्यापर्यंत ओढून नेण्याची कामगिरी आम्हा पांचजणावर येऊन पडली आणि ती क्रमप्राप्त होती. ड्रायव्हरने धावत जाऊन जीपमधून एक जाड दोरखंड आणले. त्याने आणि अण्णासाहेबांनी मिळून सावजाचे पाय दोराने बांधले. भयानक डुकर होते ते. जवळ जवळ पांच फूट उंच. दाताचे सुळके साडेचार इंच लांब. अंगावरील केस बाभळीच्या काट्यासारखे.

वूड कसेवसे रस्त्यावर आणून बाहेर टाकले. शेजारच्या गावी जीप पाठवून शिकारीची वर्दी दिली. गावकरी धावत पळत आले. त्यांच्या स्वाधीन तो डुकर केला. त्यांचा आनंद गगनात मावेना. आज गावकऱ्यांना जंगी मेजवानी मिळणार होती.

माझ्या आयुष्यात मी जी पहिली शिकार प्रत्यक्षात पाहिली ती वसंतरावजींच्या बरोबर. म्हणूनच ही आठवण माझ्या बाबतीत कायमची स्मरणात राहिल अशी झाली आहे.

वसतरावजीच्या त्रेपन्नाव्या वाढदिवसाच्या निमित्ताने पूर्वसूरीच्या काही आठवणी जागृत होणे साहजिक होते त्यातल्याच ह्या काही आठवणी वसतरावजी काल उपमंत्री नि मंत्री होते आज ते मुख्य मंत्री आहेत ते कितीही मोठे झाले तरी शिकारीचा त्यांना विसर पडणार नाही महाराष्ट्राचा मुख्य मंत्री असा शिकारी बाण्याचा निघडा पुरुष आहे



सरक्षण आघाडी आणि अन्न आघाडी साभाळण्यासाठी आपण जशी प्रयत्नाची पराकाष्ठा करीत आहोत त्याचप्रमाणे कुटुंब नियोजनाच्या आघाडीकडेही आपण तितकेच लक्ष देणे आवश्यक आहे. म्हणून प्रत्येक नागरिकाने राष्ट्रीय कार्य म्हणून कुटुंबनियोजनाचा अवलंब केला पाहिजे.

—ना. वसतराव नाईक.

कष्टकरी शेतकऱ्यांची स्फूर्ती

ना. शंकरराव पाटील

गेल्या वर्षी अवर्षणाच्या संकटात सापडलेल्या शेतकऱ्यांना दिलासा देण्यासाठी ते महाराष्ट्रभर वाऱ्यासारखे फिरले. दुष्काळाचे आव्हान स्वीकारण्यास मराठी किसानास त्यांनी हिम्मत दिली.

देश अत्यंत आणीबाणीच्या काळातून जात असतानाच महाराष्ट्राच्या मुख्य-मंत्रीपदाची जबाबदारी ना. वसंतराव नाईक यांच्याकडे आली. राज्यकारभाराची सूत्रे हाती घेतल्याबरोबर अनेक विकट प्रश्न त्यांना हाताळावे लागले. चीन व पाकिस्तान यांच्या आक्रमणामुळे निर्माण झालेल्या समस्या, राज्यांतर्गत शांतता व सुरक्षितता टिकविणे, अन्नटंचाई व गतवर्षातील अवर्षणाचा तडाखा, शेती व औद्योगिक क्षेत्रातील उत्पादन वाढ इत्यादी विविध प्रश्नांना तोंड देण्याची जबाबदारी त्यांच्यावर पडली. परंतु अत्यंत धीमेपणाने व कौशल्याने हे प्रश्न यशस्वी रीतीने हाताळून अवघ्या दोन अडीच वर्षांच्या अल्पावधीत एक कुशल व कार्यक्षम प्रशासक म्हणून ना. नाईकसाहेब यांनी संबंध भारतात आपला लौकिक प्रस्थापित केला.

कोणत्याही प्रश्नाचा सखोल अभ्यास करून वास्तववादी दृष्टिकोणातून मार्गकाढण्याचा त्यांचा सतत प्रयत्न असतो. साचेबंद तत्वज्ञानाची निष्फळ चिकित्सा करण्याच्या भानगडीत सहसा ते पडत नाहीत. परिस्थितीशी मिळते-जुळते घेऊन ते आपल्या धोरणाची दिशा ठरवितात. कोणतेही धोरण ठरविताना संबंधितांचे निरनिराळे दृष्टीकोण ते सहिष्णुवृत्तीने समजाऊन घेतील, प्रदीर्घ चर्चा करतील आणि मगच कोणत्याही प्रश्नाबाबत आपले निर्णायक मत बनवतील. अशा तऱ्हेने एकदा विचारपूर्वक ठरविलेले धोरण मात्र निश्चयीपणाने, धैर्याने पण संयमपूर्ण रीतीने अंमलात आणण्याचा ना. नाईकसाहेबांचा कटाक्ष असतो. त्यामुळेच आपल्या कोणत्याही धोरणाबद्दल वसंतरावजी आत्मविश्वासाने व निश्चयीपणाने बोलतात, आपल्या सहकाऱ्यांमध्ये आणि जनतेमध्येही तितकाच आत्मविश्वास निर्माण करू शकतात.

दुसऱ्याच्या मताबद्दल आदर ठवूनही स्वतःचे मत निर्भिडपणे पण संयमाने पटवून देण्याच्या शैलीने वसंतरावजी ऐकणाराच्या मनावर ताबडतोब आपला प्रभाव पाडू शकतात. सौजन्य व संयम हा त्यांच्या स्वभावाचा स्थायीभाव. सर्वांना सांभाळून घेणे ही त्यांची वृत्ती. या अंगभूत गुणामुळे राजकीय व सामाजिक क्षेत्रात त्यांना असंख्य मित्र व अनन्यसाधारण लोकप्रियता मिळाली.

ना. नाईकसाहेब कायद्याचे पदवीधर, पण वकिलीचा पेशा त्यांच्या प्रकृतीला कधीच मानवला नाही. लहानपणापासून समाजसेवेचे बाळकडू मिळाल्यामुळे समाजोन्नतीच्या विधायक कार्याकडेच त्यांची अधिक ओढ होती. समाजसेवेच्या या अंगभूत प्रेरणेमुळे नाईकसाहेब पुसदच्या सामाजिक व राजकीय जीवनात लवकरच कार्यरत झाले. सन १९४५ ते १९५१ पर्यंत ते पुसद नगरपालिकेचे अध्यक्ष होते. नगरपालिकेचा कारभार एकमताने चालवून एक कर्तबगार व लोकहितदक्ष नगराध्यक्ष म्हणून त्यांनी लौकिक कमावला. नगरपालिकेच्या अध्यक्षपदाची ही कारकीर्द म्हणजे त्यांच्या राजकीय क्षेत्रातील यशोमंदिराचे प्रवेशद्वार समजावे लागेल. १९५२ साली मध्यप्रदेश मंत्रीमंडळात त्यांनी महसूल खात्याचे उपमंत्रीपद भूषविले. १९५६ साली द्विभाषिक मुंबई राज्य झाले. वसंतरावजींच्या अंगी असणारे उत्तम प्रशासकाचे गुण पाहून ना. यशवंतरावजींनी आपल्या मंत्रीमंडळात त्यांची प्रथम शेती खात्याचे व नंतर महसूल खात्याचे मंत्री म्हणून नियुक्ती केली. यशवंतरावजींसारख्या कुशल व दूरदृष्टी असणाऱ्या प्रशासकाच्या कसोटीस उतरणे ही सामान्य बाब नव्हती. पण अल्पावधीतच आपल्या सचोटीने, कार्यक्षमतेने व शासकीय कर्तृत्वाने नाईकसाहेबांनी ना. यशवंतरावजींचा विश्वास संपादन केला. आणि म्हणूनच शासनाच्या अनेक महत्त्वाच्या जबाबदाऱ्या यशवंतरावजींनी त्यांच्यावर सोपविल्या. लोकशाही विकेंद्रीकरणाचा एक अभ्यासपूर्ण अहवाल शासनाला सादर करून पंचायत राज्याची मूर्तमेढ महाराष्ट्रात रोवण्याचा मान त्यांनी मिळविला. महाराष्ट्रातील पंचायत राज्याचे जनक म्हणून भावी इतिहास गौरवाने त्यांच्या नावाचा उल्लेख करील. महसूल मंत्री असताना सीलींगसारखा किचकट व वादग्रस्त कायदा करण्याची अवघड कामगिरी यशस्वी करून जमीन सुधारणा कायद्याच्या क्षेत्रात एक क्रांतिकारक पाऊल टाकले. इतर कोणत्याही राज्यात खाजगी साखर कारखान्यांच्या जमिनीला सीलींग अॅक्ट लागू नसताना महाराष्ट्रात मात्र हा कायदा सर्व खाजगी साखर कारखान्यांना लागू करून त्यांच्याकडील सुमारे एक लक्ष एकर जमीन काढून घेण्याची तरतूद त्यांनी या कायद्यात केली. त्यांच्याच मार्गदर्शनाखाली या जमिनीचे रूपांतर स्टेट फार्ममध्ये करून महाराष्ट्रात एक अभिनव प्रयोग सुरू करण्यात आला.

शेतीचा खरा विकास नुसते जमीनसुधारणेचे कायदे करून होणार नाही, त्यासाठी शेतीच्या मूलभूत प्रश्नांना हात घातला पाहिजे हे त्यांचे पूर्वीपासूनचे मत.

शेती व्यवसायातील वारीकसारीक समस्यांची पूर्ण जाणीव असल्यामुळे कृषिमंत्री असताना शेतकी खात्याच्या घोरणात त्यांनी आमूलाग्र बदल केला. देशाच्या आर्थिक जीवनात कृषी व्यवसायास मानाचे स्थान मिळाले पाहिजे ही त्यांची अत्यंतिक तळमळ. त्यातूनच नवीन कृषिविषयक घोरणाचा जन्म झाला. शेतकीमंत्री असताना नाईक-साहेबांनी शेती विकासाच्या अनेक महत्वाच्या मूलगामी योजना सुरू केल्या. महाराष्ट्रातील साडेतीन कोटी एकर जमिनीस बांध-बंदिस्ती घालण्याच्या कामास वेगाने सुरवात झाली. त्यांच्याच कारकीर्दीत ट्रॅक्टरची योजना सुरू होऊन शेतीच्या यांत्रिकीकरणाला पाया घातला गेला. शेतकऱ्यांची कर्ज मिळण्याची पत वाढवून महाराष्ट्रात हजारो विहिरी पाडण्याचा कार्यक्रम घेण्यात आला. प्रत्येक तालुक्यात सुधारलेले बीजोत्पादन केंद्र काढण्यात आले.

दोन वर्षांत महाराष्ट्र अन्नधान्याचे बावतीत स्वयंपूर्ण करण्याचा निर्धार वसंतरावजींनी जाहीर केला. शासनाची चक्रे त्या दिशेने फिरू लागली. वसंतराव हाडाचे शेतकरी. महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांनी अंतःकरणपूर्वक या आव्हानाचा स्वीकार केला व मुख्य मंत्र्यांच्या निर्धाराला साद देण्यासाठी कंबर कसली. शेतकऱ्यांना उत्पादन वाढीची नवी दृष्टी त्यांनी दिली. त्यांच्या वाढदिवसानिमित्त अभिष्ट चिंतन करताना आपल्या संरक्षणमंत्र्यांनी सार्थ उद्गार काढले, “मी महाराष्ट्राचा मुख्य मंत्री झालो तव्हा ‘शेतकऱ्यांचा मुलगा’ मुख्य मंत्री झाला असे लोकांनी म्हटले. आता वसंतरावांच्या रूपाने प्रत्यक्ष ‘शेतकरीच’ मुख्य मंत्री झाला आहे आणि त्यांच्या हातात महाराष्ट्राचे भवितव्य सुखरूप आहे.”

गेल्या वर्षापासून धान्योत्पादन वाढविण्याच्या अनेक योजना आखल्या गेल्या. दहा लाख एकरात दुवार पीक घेतले. पुढील दोन वर्षांत तीस लाख एकर दुवार पिकाचे उद्दिष्ट साध्य होईल असा आत्मविश्वास निर्माण झाला. ३० हजार एकरात संकरित बियाणे उत्पादन करण्याच्या कार्यक्रमास त्यांच्या मार्गदर्शनाखाली सुरवातही झाली.

उत्पादनवाढीइतकेच शेतकऱ्यांच्या मालाला भावाची हमी मिळणे महत्वाचे आहे हे त्यांचे पूर्वीपासूनचे आग्रही मत. म्हणून पेरणीच्या हंगामापूर्वी शेतमालाचे भाव वाढवून देण्यास महाराष्ट्रात त्यांनी सुरवात केली. भावाच्या निश्चितीमुळे उत्पादनवाढीस चालना मिळून शेतकऱ्यांच्या जीवनास स्थैर्य प्राप्त झाले. केंद्र सरकारचे अनुकूल मत नसतानाही त्यांनी एकाधिकार पद्धतीने सरकारमार्फत ज्वारी व भात खरेदी करण्याची योजना महाराष्ट्रात सुरू केली. या दिशेने पाऊल टाकणारे महाराष्ट्र भारतातील पहिले राज्य आहे. आपल्या राज्यात या योजनेला आलेले यश पाहून केंद्र सरकार व इतर राज्येहि आता एकाधिकार धान्य खरेदी योजनेचा पुरस्कार करू लागली आहेत. परवाच मुंबईत भरलेल्या अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटीच्या अधिवेगनात

शेतीसंबंधीचा प्रस्ताव ना. वसंतरावजींना मांडावयास सांगून राष्ट्रीय नेतृत्वाने महाराष्ट्राच्या शेतीविषयक प्रगमनशील धोरणाचा एक प्रकारे गौरवच केला आहे असे म्हणावे लागेल.

ना. वसंतरावजींना महाराष्ट्राच्या समृद्धीचा घ्यास क्षणभरहि उसंत पडू देत नाही. गेल्या वर्षी अवर्षणाच्या संकटात सापडलेल्या शेतकऱ्यांना दिलासा देण्यासाठी ते महाराष्ट्रभर वाऱ्यासारखे फिरले. राज्यात ५००० दुष्काळी कामे काढून प्रत्येकाला आपल्या गावी राहून काम मिळेल अशी व्यवस्था केली. निसर्गाने दिलेले दुष्काळाचे आव्हान स्वीकारण्यास मराठी किसानास त्यांनी हिम्मत दिली. पंतप्रधान इंदिराजी व आपले संरक्षणमंत्री ना. यशवंतरावजी या दोन्ही नेत्यांनी महाराष्ट्रातील कार्य पाहून मुख्यमंत्र्यास धन्यवाद दिले.

महाराष्ट्राच्या समृद्धीसाठी अहर्निश झटणारे धीरगंभीर, प्रशांत व विवेकी असे आपले मुख्य मंत्री कष्टकरी महाराष्ट्रीय शेतकऱ्यांची स्फूर्ती आहेत. महाराष्ट्र समृद्ध व स्वयंपूर्ण बनविण्याचे सर्व सामर्थ्य परमेश्वर त्यांना देवो हीच सदिच्छा.



संकल्प सोडले, योजना तयार केल्या, कार्यक्रम आखले तरी कोणत्याही कार्याचे यश हे अखेरतः लोकांच्या प्रयत्नांवरच अवलंबून असते. महाराष्ट्रातील जनतेने आजवर अनेक क्षेत्रात घडाडीने कामे पार पाडली व भारताची शाबासकी मिळविली. लोकांची निष्ठा, जिद्द व घडाडी याचा हिशेब पं-पंशात मांडता येण्यासारखा नसला तरी अंतिमतः कोणत्याही कार्यक्रमाची सर्वात मोठी शक्ती व साधनसामुग्री तीच असते. महाराष्ट्रातील जनतेने या गुणांची साक्ष एकदाच नव्हे तर अनेक वेळा पटवून दिली आहे. आणि म्हणूनच चवथ्या पंचवार्षिक योजनेचा काहीसा महत्वाकांक्षी कार्यक्रम पार पाडण्याची हिम्मत व विश्वास आपण बाळगून आहोत. आपण आपली सारी शक्ती एकवटून हा कार्यक्रम तडीस नेऊ या आणि देशातील दारिद्र्य, अज्ञान व मागासलेपण निपटून काढून भारतात लोकशाही समाजवादी समाजाची उभारणी करण्याच्या कार्यातील आपला वाटा उचलूया.

—ना. वसंतराव नाईक.

आमचे साथी

आमदार आबासाहेब देशमुख, पारवेकर

शास्त्रीजींनी त्यांना विचारले, ' इस लिफाफेमे क्या आदेश है, आपको मालुम है ? ' वसंतरावांनी 'जी, मालुम नही ' असे उत्तर दिले. शास्त्रीजी यावर म्हणाले, 'अगर आपको काँग्रेस उम्मेदवार करके घोषित नही किया गया तो आप क्या करेंगे ? ' वसंतराव यावर उत्तरले की, ' मैं काँग्रेस उम्मेदवार जो रहेगा उसकी मदद करूंगा. '

श्री. वसंतराव नाईक हे आमच्या मित्र परिवारांच्या राजकीय कुटुंबाचे प्रमुख. 'राजकीय कुटुंब' हा शब्दप्रयोग एवढ्याकरताच की, गेल्या २०-२२ वर्षांपासून वसंतरावजी आपल्या यवतमाळ जिल्ह्यातील मित्रपरिवारासह केवळ राजकीय क्षेत्रातच नेते राहिले नाहीत तर मित्रपरिवाराला एक कुटुंब समजून ते प्रत्येकाच्या सुखदुःखात सहभागी झाले. आमच्या या दीड तपाच्या सहजीवनाच्या अनेक आठवणी आहेत. त्यापैकी मी या ठिकाणी काही नमूद करीत आहे.

१९५२ सालच्या निवडणुकीत वसंतरावांची पुसद मतदार संघातून काँग्रेस तिकीटाकरिता उमेदवार म्हणून यवतमाळ जिल्हा काँग्रेस कमिटीने शिफारस केली. विदर्भ प्रदेश काँग्रेस कमिटीने देखील या नावाला मान्यता दिली. त्यामुळे दिल्लीच्या काँग्रेस हायकमांडकडूनही या नावावर अंतिम शिक्कामोर्तब होईलच असे आम्हाला वाटत होते. परंतु जेव्हा अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटीतून विदर्भातील काँग्रेस उमेदवारांची अंतिम अधिकृत यादी घोषित झाली तीत वसंतरावाचे नाव नव्हते. पुसदचे अॅडव्होकेट श्री. ए. आर्. महाजन यांचे नाव पुसद मतदार संघातील काँग्रेस उमेदवारीकरिता जाहीर करण्यात आले होते. ऐन वेळी वसंतरावांचे काँग्रेस तिकीट काटण्यात आल्यामुळे आम्हा मित्रमंडळींना जबरदस्त धक्का बसला.

ही बातमी रात्री कळताच त्यावेळी श्री. रा. कृ. पाटील यांना दिल्लीला कळविण्यात आली. काँग्रेस श्रेष्ठींनी निवडणूक यंत्रणेची कांही जबाबदारी श्री. रा. कृ.

पाटील यांच्यावर सोपविली होती. त्यामुळे काँग्रेस हायकमांडच्या नेत्यांशी श्री. पाटील-साहेबांचा चांगलाच संबंध येत असे. आचार्य दादा घर्माधिकारी ह्यांना मध्यरात्री झोपेतून आम्ही उठविले. दादांचे वसंतरावांवर व माझ्यावर अतिशय प्रेम होते. वसंतरावांचे तिकीट काटल्याची सविस्तर माहिती दादांना सांगताच दादांनी ताबडतोब श्री. रा. कृ. पाटील यांना पत्र लिहून दिले व आम्ही त्याच रात्रीच्या विमानाने वसंतरावांना दिल्लीला रवाना केले. दिल्लीला पोहचताच श्री. रा. कृ. पाटील यांची भेट झाली. त्यांनी लागलीच श्री. लालबहादुर शास्त्रीजींच्या कानावर ह्या घटनेची माहिती घातली. श्री. शास्त्रीजी म्हणजे काँग्रेसच्या निवडणूक यंत्रणेची कर्तुम्-अकर्तुम् शक्ती ! ते वसंतरावला अगोदरपासूनच चांगले ओळखत असत. एकदा दिग्रसला अखिल भारतीय वंजारा समाजाच्या अधिवेशनाच्या निमित्ताने श्री. लालबहादुर शास्त्री हे वसंतरावांच्या निमंत्रणावरूनच आले होते. वसंतरावांच्या नावाचा काँग्रेस हायकमांडला फेरविचार करणे शास्त्रीजींनी भाग पाडले व वसंतरावला अशा रीतीने काँग्रेसची उमेदवारी पुसदमधून पुन्हा मिळाली. ह्या अधिकृत उमेदवारीबद्दलचे पत्र विदर्भ प्रदेश काँग्रेस कमिटीचे त्यावेळचे अध्यक्ष श्री. ब्रिजलालजी बियाणी यांना स्वतः श्री. शास्त्रीजींनी लिहिले व हे पत्र असलेले बंद पाकीट शास्त्रीजींनी वसंतरावांना दिले. वसंतरावांना त्या अगोदर त्या पाकीटातील पत्रात काय लिहिलेले आहे याबद्दल व स्वतःच्या तिकीटाबद्दल काय निर्णय झाला हे माहित नव्हते. शास्त्रीजींनी हे बंद पाकीट वसंतरावालाही दिल्यावर त्यांना नमस्कार करून वसंतराव परत फिरू लागले त्यावर शास्त्रीजींनी त्यांना रोखले व विचारले, 'इस लिफाफेमे क्या आदेश है, आपको मालुम है ?'—वसंतरावाने 'जी मालुम नही' असे उत्तर दिले. शास्त्रीजी आणखी यावर म्हणाले, 'अगर आपको काँग्रेस उम्मेदवार करके घोषित नहीं किया गया तो आप क्या करेंगे ?' वसंतराव त्यावर उत्तरले की, 'मैं काँग्रेस उम्मेदवार जो रहेगा उसकी मदद करूंगा.'

शास्त्रीजींनी हा लिफाफा उघडण्यास सांगितले. वसंतरावांनी लिफाफा उघडला. त्यात वसंतरावलाच पुसद मतदार संघातून काँग्रेस उमेदवार म्हणून अधिकृतपणे निवडले असल्याबद्दलचे पत्र विदर्भ प्रदेश काँग्रेस कमिटीचे अध्यक्ष श्री. ब्रिजलालजी बियाणी यांना दिले होते. वसंतराव कृतज्ञतापूर्वक शास्त्रीजींना नमस्कार करून तेथून रवाना झाले. अशा रीतीने वसंतराव नाईकांना १९५२ सालच्या निवडणुकीच्या वेळी पहिल्यांदाच काँग्रेस तिकीट मिळाले व ते प्रचंड बहुमताने विजयी झाले.

निवडणुका झाल्यानंतर यवतमाळ जिल्ह्यातील नवनिर्वाचित आमदार-खासदारांचा भव्य सत्कार समारंभ माझ्याच 'पारवा' या गावी झाला. मध्यप्रदेशाच्या मंत्रीमंडळात या वेळेपावेतो यवतमाळ जिल्ह्याला प्रतिनिधीत्व मिळाले नव्हते. म्हणून पारवा येथे झालेल्या या समारंभप्रसंगी एक ठराव संमत करून मध्यप्रदेशाच्या मंत्री-

मंडळात यवतमाळ जिल्ह्याच्या प्रतिनिधीला स्थान मिळावे अशी जोरदार मागणी करण्यात आली व आमदारांचे एक शिष्टमंडळ त्यावेळच्या मध्यप्रदेशाचे मुख्य मंत्री पंडित रविशंकर शुक्ला यांना भेटले. मंत्रिमंडळाची यादी राज्यपालांना सादर करण्याच्या फक्त एक तास अगोदर पं. रविशंकर शुक्ला यांनी यवतमाळच्या आमदार मंडळींना पाचारण करून तुम्ही द्याल त्यांना मंत्रिमंडळात 'उपमंत्री' म्हणून घेण्याचे ठरविले असे सांगितले. यवतमाळची सर्व मंडळी एकत्र बसून सर्वांनी वसंतराव नाईकांचे नाव सर्वानुमते सुचविले व पं. शुक्लांच्या मंत्रिमंडळात वसंतरावांची १९५२ साली महसूल खात्याचे 'उपमंत्री' म्हणून नियुक्ती करण्यात आली. अशा रीतीने वसंतरावांचे मंत्रिमंडळात पहिले पदार्पण झाले.

१९५६ साली मुंबईचे विशाल द्विभाषिक राज्य स्थापन झाले. या राज्याच्या मुख्यमंत्रीपदाकरिता श्री. मोरारजीभाई देसाई विरुद्ध श्री. भाऊसाहेब हिरे यांच्यात नेतेपदाकरिता स्पर्धा लागली. दोघेही नेते रिंगणात उतरले. यवतमाळ जिल्हा काँग्रेस कमिटीचे काँग्रेस कार्यकर्त्यांचे एक शिबीर त्या वर्षी यवतमाळलाच झाले होते. त्या शिबीराचे उद्घाटक व समारंभाचे अध्यक्ष म्हणून श्री. यशवंतरावजी चव्हाणांना यवतमाळला आम्ही मंत्रिमंडळींनी पाचारण केले होते. यशवंतरावांची यवतमाळला ही पहिली भेट. वसंतराव नाईक व यशवंतराव चव्हाण यांची पहिली ऐतिहासिक मुलाखत याच वेळी झाली. या वेळी वसंतरावांनी यशवंतरावांना आपण त्यांच्या मागे असल्याचा स्पष्टपणे पाठिंबा दिला होता. विदभतून यशवंतरावांना उघड उघड व स्पष्टपणे पाठिंबा देणारे वसंतराव हे पहिले विदर्भीय नेते. त्या घटनेमुळे यशवंतराव व वसंतराव यांची मैत्री पहिल्याच भेटीने दृढ झाली व यशवंतराव विश्वास घेऊन यवतमाळवरून गेले. श्री. मोरारजीभाईविरुद्ध श्री. हिरे यांचे नाव सुचविले गेले. परंतु श्री. मोरारजीभाईंची एकमताने निवड न झाल्याने त्यांनी स्वतः श्री. यशवंतराव चव्हाणांचे नाव मुख्यमंत्रीपदाकरिता सुचविले. यशवंतराव चव्हाण व भाऊसाहेब हिरे ही लढत होऊन यशवंतराव मुख्यमंत्रीपदाकरिता निवडले गेले. आणि यशवंतराव चव्हाणांच्या विशाल द्विभाषिक मुंबई राज्याच्या पहिल्या मंत्रिमंडळात वसंतराव नाईकांची 'सहकार मंत्री' म्हणून नियुक्ती करण्यात आली. अशा रीतीने वसंतरावांनी कर्तृवाच्या विशाल दालनात प्रवेश केला.

यशवंतराव-वसंतराव यांची मैत्री दिनप्रतिदिन दृढ होत चालली. दोघेही पुरोगामी विचाराचे. गोरगरीब जनतेचे कैवारी. त्यामुळे यशवंतरावजी मोठ्या विश्वासाने वसंतरावांकडून अनेक महत्वाच्या जबाबदाऱ्या पार पाडीत. कुळांना मालकी देणारे विधेयक, जमिनीची कमालमर्यादा ठरविणारे विधेयक आणि लोकशाही पद्धतीने सत्तेचे विकेंद्रीकरण करणारा पंचायत राज्याचा नाईक समितीचा अहवाल या एका-मागून एक अशा क्रांतिकारक बदल घडवून आणण्याच्या जबाबदाऱ्या वसंतरावांनी

यशस्वीपणे पार पाडल्या व महाराष्ट्राच्या इतिहासात आपले नाव अजरामर करून ठेवले.

१९६३ च्या डिसेंबरमध्ये वसंतराव नाईक मुख्य मंत्री म्हणून महाराष्ट्र राज्याची घुरा वाहू लागले. मुख्यमंत्रीपदाची शपथ घेतल्यानंतर अवघ्या सहा दिवसांनीच वेळगाव कारवार विभागातील जनतेचा प्रचंड मोर्चा महाराष्ट्राच्या विधानसभेवर सीमा प्रकरणी दाद लावून घेण्यास आला होता. नेहमीच्या शिरस्त्याप्रमाणे या मोर्चाला पोलिसांनी मुंबईच्या फोर्ट विभागात काळ्या घोड्याजवळ अडविले. मुख्य मंत्री श्री. नाईक हे स्वतः आपल्या विधानसभेतील कार्यालयातून उठून मोर्चाचे स्वागत करावयाला चालत सामोरे गेले आणि मोर्चा आणणाऱ्या लोकांना भेटले व त्यांच्यापुढे त्यांनी भाषण केले. त्यांच्या या कृतीचे वृत्तपत्रांनी त्यावेळी स्वागत केल्याचे आठवते.

यशवंतराव चव्हाण भारतीय स्वातंत्र्याचे रक्षण करण्यास संरक्षण मंत्री म्हणून दिल्लीला गेले. महाराष्ट्राचा सह्याद्री हिमालयाच्या मदतीला घावला. देशाची आघाडी यशवंतराव यशवंतपणे सांभाळीत होते तर महाराष्ट्रातील अंतर्गत आघाडी यशस्वीपणे सांभाळण्यास वसंतराव कटिबद्ध झाले होते. महाराष्ट्र राज्य अन्नधान्याच्या बाबतीत तुटीचे राज्य; शिवाय दरवर्षी काही जिल्ह्यांत नेहमी दुष्काळ. परदेशातून धान्याची प्रचंड प्रमाणात आयात करून जनतेला जगविणे ही स्वाभिमानी व स्वतंत्र राष्ट्राला शरमेची गोष्ट आहे, ह्याचे वसंतरावांना दुःख होत होते. त्यांच्यामधला शेतकरी बाणा जागृत झाला. त्यांनी मुंबईला भरलेल्या पंतप्रधान लालबहादुर शास्त्री यांच्या १० लाख लोकांच्या जाहीर सभेत जनतेला साक्षी ठेवून घोषणा केली, 'जर महाराष्ट्र राज्य येत्या दोन वर्षांत अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झाले नाही तर मला फासावर द्या'. या प्रतिज्ञेचे सर्वत्र प्रचंड स्वागत तर झाले. परंतु महाराष्ट्राच्या शेतकऱ्यांवर एक भयंकर जबाबदारी पडली. सर्व जिल्ह्यांतील सरकारी यंत्रणा, कार्यकर्ते व जनता मुख्यमंत्र्यांनी केलेली प्रतिज्ञा पूर्ण करण्यास अहमहमिकेने कार्य करू लागले. सर्व चाके गतीने फिरू लागली. सर्व महाराष्ट्रात भगीरथ प्रयत्न सुरू झाले व अशा प्रकारे महाराष्ट्रातील शेतकरी जीवनाला वसंतरावांनी जबरदस्त व विधायक धक्का दिला आहे. नवा संजीवनी मंत्र शेतकऱ्याला दिला आहे. त्यामुळे जनतेला विश्वास वाटू लागला आहे. या महत्त्वपूर्ण कार्याबद्दल देशातील पंतप्रधानापासून अनेक थोर व्यक्तींनी वसंतरावांची मुक्त कंठाने प्रशंसा केली आहे. महाराष्ट्राच्या शेतीचा कायापालट वसंतरावांच्या नेतृत्वाखाली आज झपाट्याने चालू आहे. त्यांची भीष्मप्रतिज्ञा आज प्रत्यक्ष व्यवहारात उतरताना पाहून माझ्यासारख्या मित्रमंडळींना पराकाष्ठेचा आनंद होत आहे.



प्रभावी व्यक्तिमत्व

प्रा. प्रभाकर ऊर्ध्वरेषे

आपल्या खेड्याचा, आपल्या जमातीचा, आपल्या जिल्ह्याचा, आपल्या विभागाचा सर्वांगीण विकास व्हावा म्हणून वसंतरावांनी निष्ठापूर्वक जी घडपड केली त्यातूनच त्यांच्या आजच्या प्रभावी व्यक्तिमत्वाचा उदय झाला आहे.

महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री श्री. वसंतराव नाईक यांचे व्यक्तिमत्व महाराष्ट्राच्या नेतृत्वाची जबाबदारी यशस्वी रीत्या पार पाडण्याइतके खचित प्रभावी आहे. इतकेच नव्हे तर महाराष्ट्राच्या राजकीय व सामाजिक जीवनाला नवे वळण लावण्याला व नवा दृष्टिकोन देण्याला समर्थ आहे.

श्री. वसंतराव नाईक पुसद तालुक्यातील गहुली गावाचे. वसंतरावांच्या आजोबांनी गहुली येथे शेतीच्या जोडीला सुतारकामाचा जोडघंदा सुरू केला आणि या कष्टातूनच त्यांनी जमीन खरेदी केली. त्यांच्यानंतर वसंतरावांचे वडील श्री. फुलसिंग नाईक यांनी शेतीचा पसारा आणखी वाढविला आणि त्या विभागात उत्तम शेतकरी व सर्वांच्या उपयोगी पडणारा गृहस्थ म्हणून नावलौकिक मिळविला.

श्री. बाबासाहेब नाईक (राजूसिंग नाईक) आणि श्री. वसंतराव नाईक हे दोघे बंधू राम-लक्ष्मणासारखे वाटतात. वसंतरावांच्या व्यक्तिमत्वाला तयार करण्यात बाबासाहेबांचा फार मोठा वाटा आहे. पुसद तालुक्यात बाबासाहेबांचे कर्तृत्व प्रसिद्ध आहे. वसंतरावांच्या गैरहजेरीत कुटुंबाचा व शेतीचा व्याप सांभाळून काँग्रेसचे सर्व राजकारण ते आपल्या बंगल्यात बसून प्रसिद्धीपराङ्मुख राहून करतात. सर्व प्रश्न सामोपचाराने मिटवायचे असतील तर जावे बाबासाहेबांकडे आणि वडीलबंधूंची ही कार्यपद्धती वसंतरावात पुरेपूर भिनलेली आहे. भांडण, तंटा, द्वेष, कलह ही नाईक कुटुंबाची परंपराच नव्हे. सगळ्यांना वरोवर घेऊन चालणे, न कंटाळता सर्वांच्या अडचणी दूर करणे व त्यासाठी प्रसंगी पदराला खार लावून झटणे हे त्यांचे ब्रीद.

शिक्षण चालू असताना व वकीलीचा व्यवसाय सुरू केल्यानंतरहि त्यांची शेतीची आवड कायम होती. ओलिताकरिता विहिरीवर पंप लावून फळांची आणि फळभाज्यांची लागवड स्वतःच्या देखरेखीखाली ते करून घेत असत. रात्रीवेरात्री शेतीला एक चक्कर मारून येणे म्हणजे त्यांना काहीच वाटत नसे.

आमदार व मंत्री झाल्यानंतरहि त्यांची शेतीची आवड कमी न होता उलट वाढली. राज्यकारभार पाहताना शेतीविषयक ज्ञान त्यांनी अनेक ठिकाणी फिरून मिळविले आणि त्याचा उपयोग घरच्या शेतीकरिता केला. कापसाच्या नवीन जाती, लागवडीच्या नव्या पद्धती समजावून घेतल्या, आणि गेल्या तीन चार वर्षांत द्राक्ष लागवडीबाबत तर त्यांनी ध्यास घेतला. त्याकरिता नाशिक, कोल्हापूर या भागातील बागायतीची त्यांनी माहिती मिळवून त्याचे प्रात्यक्षिक आपल्या शेतीत सुरू केले. आज गहुली व सेलू येथे द्राक्षांचे मळे आहेत. द्राक्षांच्या निरनिराळ्या जातींची शेकडो कलमे जुम्हाला येथील मळ्यात मिळतील.

सुधारलेल्या पद्धतीने शेतीचा विकास, बागाईत, इरिगेशन यांचे वेड स्वतःच्या शेतीपुरतेच त्यांचे मर्यादित नाही तर महाराष्ट्राच्या प्रत्येक शेतकऱ्याने बागाईतदार झाले पाहिजे आणि त्याद्वारे घनधान्याचे कोठार उभारले पाहिजे, संपन्नता प्राप्त करून घेतली पाहिजे, असा त्यांचा आग्रह असतो. शेतीवर त्यांचे मनस्वी प्रेम आहे. शेती-पुधारणा व शेतकऱ्यांची समृद्धी याविषयीची कळकळ वसंतरावांच्या बागण्याबोलण्यातून दिसून येईल. ग्रामीण भागाचा आर्थिक विकास फक्त शेतीद्वाराच होईल असे ते मानीत नाहीत. ग्रामीण विभागात सूतगिरणी, जिनींग, प्रेसिंग, किंवा लहानमोठे कारखाने व्हावेत असे त्यांचे स्वप्न आहे.

पुसद नगरपालिकेचे अध्यक्ष असताना त्यांनी पुसदला ग्रेन मार्केटची स्थापना केली. शेतकऱ्यांना आपला माल बाजारात व्यापाऱ्यांना कमी भावांत विकवा लागतो ही त्यांना जाणीव होताच त्यांनी ग्रेनमार्केट सुरू करून शेतकऱ्यांच्या मालाला भाव मिळेल अशी व्यवस्था केली.

१९५२ पासून त्यांनी राजकारणात प्रत्यक्ष भाग घ्यावयास सुरवात केली. १९५२ मध्ये ते मध्यप्रदेशात विधानसभेवर निवडून आले आणि त्यांना उपमंत्रीपद मिळाले. त्यानंतर विशाल मुंबई राज्यात विदर्भ सामील झाल्यावर मंत्रीपद मिळाले. या काळात त्यांनी सहकार, शेती व महसूल या खात्यांचा कारभार सांभाळला. याही खात्यात त्यांचा दृष्टिकोन एकच. शेतकऱ्यांचा व खेडे विभागातील जनतेचा आर्थिक व सामाजिक विकास कसा होईल यासाठी त्यांनी खेडोपाडी रस्ते, वीज, शाळा व सहकारी संस्था यांची वाढ करण्यात पुढाकार घेतला. खेडोपाडी वीज नेल्यास शेतीला पाणीपुरवठा होऊन शेतीचे उत्पादन वाढावे हाच ध्यास त्यांना होता आणि आहे.

सहकारी चळवळीच्या बाबतीतही श्री. नाईक यांचे कार्य उल्लेखनीय आहे. यवत-माळ जिल्ह्यात शेतकी खरेदी विक्री संघ, ग्राहक सोसायट्या, सहकारी बँकेच्या शाखा, संयुक्त सहकारी शेती यांचे जाळे खेडोपाडी पसरविण्यास त्यांनी फार श्रम घेतले. अशा संस्थांची व त्यांत कार्य करणाऱ्या कार्यकर्त्यांची संख्या जिल्ह्यात खूप आहे. सहकारी जिनींग फॅक्टरी प्रथम पुसदला स्थापन झाली. आता तिचे लोण जिल्ह्यात पसरले असून बऱ्याच ठिकाणी आता सहकारी जिनींग फॅक्टऱ्या आहेत. त्यामुळे शेतकऱ्यांच्या मालाला योग्य भाव मिळतो आहे.

तसेच शेतकऱ्यांच्या मालाला योग्य भाव मिळावे, त्या कच्च्या मालाची प्रक्रिया येथेच व्हावी या दृष्टीने जिल्ह्यात सहकारी सूत गिरणी निघावी अशी त्यांनी आपली योजना कार्यकर्त्यांपुढे मांडली. आणि त्याचे मूर्तस्वरूप दिसून येऊ लागले आहे. केंद्र सरकारकडून ह्या गिरणीला मान्यता प्राप्त झाली आहे. सऱ्या महाराष्ट्रात सहकारी चळवळीद्वारे शेतकऱ्यांचा आर्थिक विकास घडवून आणण्यात त्यांचा फार मोठा वाटा आहे आणि आता तर ते मुख्यमंत्री असल्यामुळे यावरच त्यांचे लक्ष केंद्रित झालेले आहे. शेतकरी हा बागाईतदारच नव्हे तर कारखानदार व व्यापारी व्हावा असे त्यांचे स्वप्न आहे. शेतीच्या मालाची किंमत जास्तीत जास्त मिळाली पाहिजे. आणि त्या मालाची प्रक्रिया करणारे कारखाने शेतकऱ्यांनीच चालविले पाहिजेत ही त्यांची धारणा आहे. शेतकी खात्याचे मंत्री असताना त्यांनी पाणीपुरवठा व बांध घालणे (ताली) यावर फार भार दिला आणि त्यामुळे शेतीच्या उत्पादनात भर घातली.

ही आत्मियता, हा जिऱ्हाळा फक्त शेतकऱ्यापुरताच श्री. नाईक यांचेजवळ नाही तर सर्वांचे भले करणे हे त्यांच्या स्वभावात आहे. तो त्यांचा उपजत गुण आहे. बड्या सरकारी अधिकाऱ्यांपासून साध्या कारकुनापर्यंत ते सर्वांचे गाऱ्हाणे ऐकून घेतात व त्यावर निर्णयही घेतात. प्रत्येकाला स्वाभिमानाने माणसासारखे जगण्याचा हक्क आहे ही त्यांची यामागील भावना. आणि हीच सौजन्यपूर्ण वागणूक विरोधकांच्या बाबतीत ते दाखवितात. खाजगी चर्चेत किंवा जाहीरपणे त्यांनी विरोधकांविषयी अनुदार किंवा वावगे उद्गार कधी काढलेले कुणी ऐकलेले नाही. मागील १९६२ च्या सार्वत्रिक निवडणुकीत विदर्भात विदर्भवाद्यांच्या चळवळीला विशेष जोर होता. विरोधी पक्षाकडून काँग्रेसवर, नाईकांवर व त्यांच्या सहकाऱ्यांवर अनेकवार हिणकस हल्ले होत होते. पण श्री. नाईक यांनी त्या प्रचाराला सौजन्याने उत्तर दिले. आणि त्याचाच परिणाम म्हणजे त्या निवडणुकीत त्यांचा प्रचंड विजय झाला. गेली अकरा वर्षे मंत्री या नात्याने त्यांना मिळालेला अनुभवही त्यांनी जागरूकपणे आत्मसात केलेला आहे. शेकडो माणसे जवळ करून त्यांच्या द्वारे अनेक योजना जशा त्यांनी कार्यान्वित केल्या आहेत तसेच सचिवालयातील फायली, रिपोर्ट, समित्यांचे कामकाज यांच्याशी समरस होण्याची कलाही त्यांनी साध्य करून घेतली आहे. पूर्वीचा समग्र

मध्यप्रदेश व आता सारा महाराष्ट्र हा सर्व भाग त्यांनी जवळून पाहिला आहे व तेथील लोकांची व प्रश्नांची बारकाईने माहिती मिळविलेली आहे. सचिवालयातील प्रत्येक मोठा अधिकारी, जिल्ह्यातील व तालुक्यातील सर्व कलेक्टर, तहसीलदार, बी. डी. ओ. या मंडळींची त्यांना अचूक माहिती आहे. त्यातला खरा कोण आणि खरे-पणाचा आव आणणारा कोण आणि अधिकाऱ्यांच्या गुर्मीत राहणारा अन स्वतःचा स्वार्थ साधून घेणारा कोण याचेही ते निरीक्षण करीत असतात. कूळ कायदा, जमिनीचे सीलींग, जिल्हा परिषदांना जन्म देणारा सत्ता विकेंद्रीकरण समितीचा अहवाल या त्यांच्या खास कामगिन्या आहेत. पण या सर्व योजना अंमलात आणीत असतानाच सरकारी काराभारात भ्रष्टाचार, लाल फीत यांचे साम्राज्य कसे पसरले आहे आणि त्यामुळे लोकांना सरकारी योजनांचा फायदा मिळण्यास कशी अडचण पडते याचीही त्यांना जाणीव आहे. याकरिता शिक्षणाने निव्वळ कारकुनी माणसे तयार न करता शिक्षणातून पुढे देशाचे उत्पादन वाढविणारा, देश बलवान कसा होईल या जाणिवेने कार्य करणारा सुशिक्षित माणूस तयार व्हावा असे त्यांचे मत आहे. प्राथमिक शाळेपासून कॉलेजपर्यंत आपल्या व्यवसायात गोडी असणारे, देशाच्या गरजांची जाणीव असणारे शिक्षकही पाहिजेत अशी त्यांची धारणा आहे.

खेड्यात उद्योगधंदे वाढावे, बागाईत वाढावी, कोरडवाहू शेतीचे इरिगेटेड शेतीत रूपांतर व्हावे, दरडोई उत्पन्न वाढावे, दर एकरी उत्पन्न वाढावे, सर्वप्रकारे शेतीचे उत्पादन वाढून धनधान्यांची विपुलता होऊन शेतकऱ्यांना त्याचा भरपूर फायदा मिळावा हे त्यांचे स्वप्न आहे. शेतकऱ्यात स्वाभिमान, पुरुषार्थ वाढावा, ते कारखानदार व्हावेत असे त्यांना वाटते. शेतकरी हा आपल्या राष्ट्राचा कणा आहे, तो मानी, धनवान, ताठ बनावा अशी त्यांची निष्ठा आहे.

वसंतरावांचे विचार अन व्यक्तिमत्व हे वऱ्हाडच्या मातीचा गुण कणाकणातून भिनलेले, अस्सल खानदानी दिलदारपणा आणि फार मोठे मन व ओतप्रोत जिऱ्हाळा यांनी संपन्न झालेले आहे.



वैदर्भिय जीवनाची प्रतिमा

ना. म. बोंडे

विदर्भच्या जीवनात जे जे चांगले आहे, आदर्श आहे ते ते सारे वसंतरावजींच्या आयुष्यात वधायला मिळते.

मा. वसंतराव नाईक यांचा पहिला परिचय घडला तो ५१-५२ या साली. सार्वत्रिक निवडणुकीचे वर्ष. निवडणुकीची गडबड होती आणि काँग्रेस कार्यालय गजवजलेले होते. विदर्भ काँग्रेस कमेटीच्या कार्यालयात श्री. वसंतराव नाईक यांचा पहिला परिचय झाला आणि मैत्रीची सुरुवात झाली. १९५२ च्या सार्वत्रिक निवडणुकीत वसंतरावजी काँग्रेस उमेदवार म्हणून विजयी झाले व लगेच मध्यप्रदेशाच्या मंत्रीमंडळात उपमंत्री म्हणून दाखल झाले. पुसद नगरपालिकेचे ते अध्यक्ष होते. राजकीय जीवनाची सुरु झालेली वाटचाल आजही अव्याहतपणे सुरु आहे. कर्तृत्व आणि विद्वत्ता यांच्या जोरावर वसंतरावजींनी राजकीय जीवनातील आपले स्थान मिळविले. आज ते महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री आहेत. महाराष्ट्र राज्याच्या उच्चपदावर ते आरूढ झालेले आहेत.

पण विदर्भ काँग्रेसच्या कार्यालयात सुरु झालेली मैत्री त्यांनी आजही कायम ठेवली. महाराष्ट्र राज्याची संपूर्ण घुरा खांद्यावर वाहून नेणाऱ्या या महापुरुषांच्या दृष्टीने त्या जुन्या मैत्रीलाही तितकीच किंमत आहे.

काही दिवसापूर्वीची गोष्ट. मी मुंबईला गेलो होतो. वसंतरावांना भेटण्यासाठी त्यांच्या बंगल्यावर गेलो. मुख्य मंत्र्यांचा वंगला. भेटणाऱ्यांची किती गर्दी होती. सारेच भेटणारे. परंतु वसंतरावजींना श्री. निजलिंगप्पा यांच्या भेटीसाठी बंगलोरला जावयाचे होते. ते गडबडीत होते. भेट होईल की नाही आणि झाली तर ती किती होईल याची शंका मनात होती. भेट घेण्यासाठी म्हणून चिठ्ठी पाठविली. आणि उभा राहिलो. थोड्याच वेळात वसंतरावजी स्वतःच बाहेर आले व माझा हात धरून घेऊन गेले. त्यांचा जास्त वेळ घ्यायचा नाही असा विचार करूनच आत गेलो. वसंतरावजींनी ज्या

आत्मीयतेने मित्राचे स्वागत केले ती आत्मीयता मी कधीच विसरणार नाही. हात धरून त्यांनी मला त्यांच्या कोचावर बसविले. गप्पा सगळ्या घरगुतीच. शेतात काय पेरले. पिकांची काय अवस्था आहे यावर बोलणे झाले. मुलाबाळांची चौकशी झाली. ती महाराष्ट्राच्या मुख्य मंत्र्यांची भेट नव्हती तर एका सहृदय आणि सच्चा मित्राची भेट होती. मुख्यमंत्रीपद त्या भेटीच्या आड आले नाही, मंत्रीत दुरावा निर्माण करू शकले नाही. मोठ्या मनाची आणि हृदयाची माणसेच अशी वागू शकतात. वसंतराव महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री होऊनही त्यांनी जुन्या मंत्रीचे घागे जोपासले आहेत. अशा भेटी घडल्या म्हणजे जीवन कृतार्थ झाल्यासारखे वाटते.

वसंतरावजी म्हणजे वैदर्भीय जीवनाची प्रतिमा आहे. विदर्भाच्या जीवनात जे जे चांगले आहे, आदर्श आहे ते ते सारे वसंतरावजींच्या आयुष्यात बघायला मिळते. कर्तृत्व आहे, विद्वत्ता आहे आणि या गुणांच्या सामर्थ्यावर मिळालेले मुख्यमंत्रीपद आहे पण त्याचसोबत आहे. निगर्वीपणा, साधेपणा, मोठ्या मनाची आणि हृदयाची विशालता, सामान्य लोकांसाठी झिजण्याची तळमळ. ते खऱ्या अर्थाने विदर्भाचे शेतकरी आहेत. विदर्भाच्या मातीशी त्यांचे संबंध कमालीच्या जिन्हाळ्याचे आणि आत्मीयतेचे आहेत. ते नाते कधीही न तुटणारे नाते आहे. आणि म्हणूनच त्यांच्या कारकीर्दीत महाराष्ट्र हा तुटीचा प्रदेश राहूच शकणार नाही. शेतकऱ्यांच्या अडचणींची त्यांना ओळख आहे. शेतकऱ्यांच्या सुख-दुःखाशी ते समरस झाले आहेत. नव्हे, त्या त्यांच्याच अडचणी आहेत, ती त्यांचीच सुखदुःखे आहेत. सचिवाल्याच्या भव्य इमारतीतील कार्यालयात बसून शेती सुधारणांची योजना करणारे ते नाहीत. प्रत्यक्ष काळ्या मातीशी संबंध जोडून तिच्या उत्थापनाचा प्रयत्न करणारे ते तिचे सुपुत्र आहेत. ते तसे आहेत म्हणूनच शेतकऱ्यांना ते आपले आहेत असे वाटते.

त्यांच्या कर्तृत्वाची वाटचाल आजही सुरूच आहे. नव्यानव्या क्षेत्रात ते प्रभाव टाकीत आहेत. त्यांच्या या वाटचालीकडे महाराष्ट्राची माती अभिमानाने बघत आहे. वसंत यशवंत होवो हा विदर्भाचा त्यांना आशीर्वाद आहे.

आणि माझ्यासारखा त्यांचा एक मित्र त्यांच्या पुढच्या यशाकडे आतुरतेने बघत आहे. हे यश मिळविण्यासाठी, सामान्य जनतेच्या उत्थापनासाठी प्रयत्न करणाऱ्या वसंतरावजींना परमेश्वर उदंड आयुष्य देवो.



मराठी भाषेचे अभिमाना

डॉ. विं. भिं. कोळते

बी. ए. ची परीक्षा उत्तीर्ण झाल्यानंतर मॉरिस कॉलेजमध्येच एम्. ए. साठी मराठीच्या वर्गात त्यांनी प्रवेश घेतला होता आणि काही दिवस हा अभ्यास त्यांनी चालूही ठेवला होता. . . सुदैवाने, ते मुख्य मंत्री असताना मराठीला राज्यभाषेचे स्थान प्राप्त झाले आहे.

श्री. वसंतराव नाईक यांचे नाव मी प्रथम ऐकले ते सुमारे २६-२७ वर्षापूर्वी. त्यावेळी ते मॉरिस कॉलेजमध्ये म्हणजे सध्याच्या नागपूर महाविद्यालयात शिकत होते. शांत पण घडाडीचे विद्यार्थी म्हणून त्यांचे नाव विद्यार्थ्यांत गाजत होते. त्याच वेळी कुमारी घाटे या नावाची एक विद्यार्थिनी त्याच महाविद्यालयात शिक्षण घेत होती. श्री. वसंतराव आणि कुमारी घाटे यांच्या परस्पर प्रेमाचा परिमल महाविद्यालयाच्या वातावरणात मंदगतीने पसरून वातावरण धुंद करून सोडीत होता. त्यामुळे "आश्चर्य-वत् पश्यति कच्छिदेनम्" त्यांच्याकडे विद्यार्थी आश्चर्याने आणि कुतूहलाने पाहत होते. पुढे श्री. वसंतरावांनी मॉरिस कॉलेज सोडले. त्यांनी लॉ कॉलेजमध्ये प्रवेश केला आणि काही दिवसानंतर त्यांचा प्रेमविवाह झाल्याची बातमी सर्वत्र पसरली. या बातमीने इतरांच्या बरोबर माझेही लक्ष वेधून घेतले. मॉरिस कॉलेज हे माझे कॉलेज, या महाविद्यालयाशी माझा अतिशय निकटचा आणि जिव्हाळ्याचा संबंध जडलेला. त्यामुळे महाविद्यालयातील घटना ऐकण्याविषयी मी नेहमीच उत्सुक. यापूर्वी या महाविद्यालयातील अनेक प्रेमविवाहाच्या कथा कानी आलेल्या होत्या. काही विवाह नुसते प्रेमविवाह नव्हते तर आंतरजातीय विवाहही होते. एका भिन्नधर्मी प्रेमी जोडप्याचा निराशेमुळे झालेला दुःखद अंत, एकमेकांच्या गळ्यात गळा घालून आणि आर्लिंगन-पाशाने एकमेकांना आवळून घेऊन दोघांनी केलेली इहलोकीच्या जीवनाची समाप्ती आणि त्यामुळे या महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांच्याच नव्हे तर नागपुरातील सर्व-सामान्य जनतेच्या डोळ्यातून ओघळलेले सहानुभूतीचे अश्रू मी पाहिले होते. आणि

त्यामुळे श्री. वसंतरावांचा कुमारी घाटे यांच्याशी प्रेमविवाह झालेला ऐकताच मन आतुरतेने या घटनेकडे वेधले गेले. दोघांच्याही विषयी मनात कौतुकाची भावना निर्माण झाली. विशिष्ट वातावरणात आणि परिसरात वावरणाऱ्या कुमारी घाटे यांच्यासारख्या कॉलेज कुमारीचे प्रेम संपादन करण्याचे गुण वसंतरावांच्या ठिकाणी असल्याचे पाहून त्यांच्या स्वभावाविषयी आणि गुणवत्तेविषयी जशी कौतुकमिश्र आनंदाची भावना मनात निर्माण झाली तशीच ती कुमारी घाटे यांच्याविषयीही झाली.

मी वसंतरावांना त्यावेळी पाहिले नव्हते. त्यांचा परिचय होण्याचा प्रसंग मला आला नव्हता. त्यांनंतरही अनेक वर्षेपर्यंत या तरुणाशी बोलण्याचालण्याचा योग कधी घडून आला नाही.

त्यानंतर त्यांचे नाव मी ऐकले ते पूर्वीच्या मध्यप्रदेशात उपमंत्री म्हणून त्यांची नेमणूक झाली तेव्हा. मंत्री मंडळातील त्यांची नेमणूक ही त्यावेळी आम्हाला ते मॉरिस कॉलेजचे भूतपूर्व विद्यार्थी म्हणून एक अभिमानाचा विषय वाटला. त्यावेळी मी नागपूरला बदलून आलो होतो. अनेक प्रसंगी त्यांना मी पाहिले पण शिक्षण खात्याशी त्यांचा संबंध नसल्यामुळे त्यांच्या प्रत्यक्ष भेटीगाठीचा प्रसंग कधी उद्भवला नाही. आणि अशा स्थितीत राज्य पुनर्घटनेची चक्रे फिरू लागली. नाना प्रकारच्या घडामोडींनी नागपुरातील वातावरण दुमदुमून गेले. मुंबईचे द्विभाषिक राज्य निर्माण झाले. मा. यशवंतराव चव्हाण यांच्या नेतृत्वाखाली नवीन मंत्रीमंडळ तयार झाले. आणि त्यात नागपूर महाविद्यालयातील अनेक भूतपूर्व विद्यार्थ्यांचा समावेश झाला. आम्हा सर्वांना ही घटना फार आनंदाची आणि अभिमानाची वाटली. नागपूर महाविद्यालयाचा प्रमुख या नात्याने मी त्यांना अभिनंदन-पत्रे पाठविली. आणि पुढे याच निमित्ताने माझा त्या सर्वांशी जवळचा संबंध येऊ लागला. श्री. वसंतराव यांच्याशीही संबंध आला. त्यातूनच त्यांच्या व्यक्तित्वाची आणि कर्तृत्वाची थोडीफार ओळख मला होऊ शकली.

लाँ कॉलेजमधून एल्. एल्. बी. ची परीक्षा उत्तीर्ण झाल्यानंतर ते पुसदला वकिली करू लागले. त्यांचा पिंड समाजसुधारकाचा होता हे जसे त्यांच्या विवाहप्रसंगाच्या निमित्ताने दिसून आले तसेच वकिलीचा व्यवसाय करीत असतानाही त्यांनी चालविलेल्या समाजसेवेच्या कार्यावरून दिसून आले. आपल्या मूळ गावाची त्यांनी जी पुनर्रचना केली ती प्रत्यक्ष पाहिली म्हणजे मी काय म्हणतो ते कळून येईल. भोवताली पसरलेल्या अज्ञानाचा, दारिद्र्याचा नाश करून त्यातून गरिबांसाठी सुव्यवस्थित व सुंदर जीवन उभे केले पाहिजे याची जणू त्यांना तळमळ लागून राहिली होती आणि त्यातूनच त्यांची लोकसेवेच्या कार्याची पाउले सतत पुढेपुढेच पडत गेली. क्रमाने आपले खेडे, आपला तालुका, आपला जिल्हा यांतील जनतेशी मिसळून तेथील जनतेचे जीवन उन्नत होईल अशी अनेक लोकोपयोगी कार्ये करून बहुजनसमाजाची

मने जिंकून घेतल्यामुळे यवतमाळहून त्यांना नागपूरला यावे लागले आणि येथून अधिक उच्च अधिकारावर मुंबईला प्रयाण करावे लागले. आरंभीच्या वर्षात तेथे असताना त्यांनी दाखविलेल्या कार्यनिष्ठेमुळे लवकरच महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्रीपद त्यांच्याकडे चालून आले. एवढ्या अल्पावधीत प्राप्त झालेल्या या यशाचे श्रेय त्यांच्या कार्यनिष्ठेला, विवेकशील दृष्टीला आणि स्वभावाला आहे असे मला वाटते.

एक प्रसंग मी कधीही विसरणार नाही. श्री. वसंतराव त्यावेळी महसूल मंत्री होते. इतर काही कारणामुळे मी त्यांच्या भेटीला गेलो असता, पुसदला महाविद्यालय स्थापन करण्याविषयीची आपली इच्छा त्यांनी मला सांगितली. ती सांगताना शिक्षणाविषयीची जी तळमळ त्यांच्या शब्दांतून व्यक्त होत होती ती माझ्या मनावर फार मोठा परिणाम करून गेली. खेड्यापाड्यातील जीवन, तेथील गरीब विद्यार्थी, यांच्या ठिकाणी सुप्त गुणवत्ता गंजून पडत आहे पण अनुकूलतेच्या अभावी तिला उजळा मिळू शकत नाही. अशा त्या बहुजन समाजातील तरुणांची शिक्षणाची सोय करून देण्याची आवश्यकता, इच्छा व पोटतिडिक त्यांच्या तोंडून बाहेर पडणाऱ्या शब्दांतून साकार होत होती. पण याहीपेक्षा महाविद्यालयाच्या स्थापनेचे आणि तेथे घडवून आणावयाच्या नवीन प्रयोगाचे जे स्वप्न त्यांनी माझ्यासमोर चितारले ते ऐकून त्यांच्या विशाल व व्यापक दृष्टिकोनाची मला कल्पना आली. तो पुस नदीचा काठ, त्या काठावर महाविद्यालयासाठी वापरावयाची ती शेतजमीन, त्यातील एका भागात महाविद्यालयाची इमारत, दुसऱ्या भागात भोवतालच्या खेड्यापाड्यातून येणाऱ्या विद्यार्थ्यांना राहाण्यासाठी बांधून काढावयाच्या वसतिगृहाची जागा आणि त्याही पलीकडे पुस नदीचे पाणी नळाने घेऊन त्याच्या साह्याने या ठिकाणी पिकवावयाच्या शेतमळांची कल्पना, त्यांच्याद्वारे विद्यार्थ्यांना आवश्यक असलेले जीवनोपयोगी शिक्षण देण्याची योजना, हे शिक्षण वेत असताना विद्यार्थ्यांनी गाळलेल्या घामातून निर्माण झालेल्या उत्पन्नाचा पुन्हा महाविद्यालयाच्या प्रगतीकडे उपयोग करण्याची सदिच्छा, इत्यादी इत्यादी महत्वाकांक्षी कल्पनांचे त्यांनी काढलेले चित्र पाहून मी मोहून गेलो. त्या महाविद्यालयाच्या स्थापनेस विद्यापीठातील त्यावेळचा एक कार्यकर्ता या नात्याने मला जी अल्पस्वल्प सेवा करता येईल ती करण्याचा मी मनात निश्चय केला. आरंभीच्या औपचारिक बाबी संपल्यानंतर महाविद्यालय तेथे स्थापन झाले. श्री. वसंतरावांच्याच प्रयत्नांनी एकदोन वर्षातच महाविद्यालयाची इमारत तयार झाली आणि त्यांचे अर्ध स्वप्न साकार झाल्याचे दृश्य मी पाहिले आणि अनुभवले. त्यांच्या इच्छांच्या मागे पुसद विभागातील जी प्रचंड जनशक्ती उभी आहे तिचाही साक्षात्कार मला त्या वेळी झाला. श्री. वसंतरावांचे वडील त्या विभागातील एक थोर कार्यकर्ते होते. त्यांच्या नावाने हे महाविद्यालय स्थापन करून त्यांच्या लोकसेवेचा आदर्श तरुणांच्या पुढे ठेवण्याची कृतज्ञतेची सेवाभावना वसंतरावांच्या ठिकाणी उत्कर्ष पावत असलेली पाहून

भोवतालच्या जनतेने ही कल्पना उचलून धरली आणि त्यासाठी आवश्यक ते आर्थिक साह्य तडकाफडकी उभे केले.

महाविद्यालय स्थापन झाल्यानंतर त्याचा पहिला वाढदिवस मा. बाळासाहेब देसाई यांच्या अध्यक्षतेखाली झाला. त्यावेळी वसंतरावांचे झालेले भाषण मला मोठे परिणामकारक वाटले. कोणत्याही कार्याची तळमळ पोटात असली म्हणजे ओठातून ती कशी ओजस्वीपणाने बाहेर पडते याचे प्रत्यंतर मला त्यावेळी मिळाले. सर्वांगीण उन्नतीचा मूळ पाया म्हणजे शिक्षण. त्यासाठी खेड्यापाड्यातील मागासलेल्या जनतेने का व कसा प्रयत्न करायला पाहिजे आणि तिचे नेतृत्व स्थानिक पुढाऱ्यांनी कसे करायला पाहिजे याचे अतिशय सुंदर चित्र त्यांनी त्यावेळी रेखाटले. माझ्या मनावर उमटलेल्या त्या चित्राच्या प्रतिबिंबाचे रंग अजून कायम आहेत.

श्री. वसंतरावांना ज्या ज्या वेळी भेटण्याचा प्रसंग आला त्या त्या वेळी व्यक्त झालेल्या त्यांच्या स्वभाव विशेषांचा निर्देश केला पाहिजे. शांतपणा आणि विवेकशीलता ही त्यांच्या स्वभावाची वैशिष्ट्ये म्हणून सांगता येतील. इतरांचे म्हणणे शांतपणे ऐकून घेऊन त्याची मनमोकळेपणाने चर्चा करणे आणि चर्चेच्या प्रसंगी कोणत्याही प्रकारची कटुता निर्माण होऊ न देणे हे त्यांच्या भेटीत अनेकदा माझ्या निदर्शनाला आलेले आहे आणि मला वाटते हा त्यांचा विशिष्ट स्वभावच त्यांच्या लोकप्रियतेला आणि यशस्वी राजकीय कर्तृत्वाला कारणीभूत झालेला आहे. त्यांच्या स्वभावातील प्रामाणिकपणाही वाखाणण्यासारखा आहे. त्यांच्या एका चिरपरिचिताकडून ऐकलेली आठवण या ठिकाणी देण्याला हरकत नाही. पुसदला वकिली करीत असताना निरनिराळ्या कामांनिमित्त त्यांना वारंवार नागपूरला यावे लागत असे. अशाच एका वेळी नागपूरला येऊन आपल्या या मित्राकडे ते बसले असताना एकमेकांच्या खुशालीसंबंधीची बोलणी सुरू होती. त्यांच्या मित्रांनी त्यांना प्रश्न केला— “काय वसंतराव, वकिलीचा व्यवसाय कसा काय चालला आहे?” वसंतराव म्हणाले, “तसा ठीक चालला आहे, पण विशेष नाही.” मित्रांनी पुन्हा विचारले “का ? असे का ?” वसंतरावांनी उत्तर दिले, “त्याचे असे आहे, मी आहे साधा आणि सरळ माणूस, वकिलीच्या व्यवसायात कित्येक लोक जे डावपेच लढवितात ते मला पसंत नाहीत आणि मला ते जमतही नाही. मी जे काम घेतो ते प्रामाणिकपणे करतो. एखाद्याचे वकीलपत्र घेऊन त्याच्याशी मी कधी अप्रामाणिकपणा केला नाही. आमच्या या घंघ्यात काही लोक आपल्या अशीलाकडून तर पैसे घेतातच पण त्यांच्या विरोधी पक्षाकडूनही पैसे घेतात, आणि आपल्या घंघ्यात अप्रामाणिकपणाचे वर्तन करतात. अशा लोकांची पोळी खूप पिकते आणि ते मोठे हुशार आणि धूर्त समजले जातात. मी तसे कधीही केले नाही. आणि दुसरे असे की आपल्या अशीलाला यश मिळवून देण्यासाठी वरिष्ठांशी मी कधी सलगी किंवा लाचारी दाखविली नाही, त्यांचे हात ओले

करण्याचा प्रयत्नही केला नाही.” “म्हणजे,” मित्राने आश्चर्याने विचारले, “तुम्हाला असे म्हणावयाचे आहे काय की एखाद्याचे काम करून देण्यासाठी वरिष्ठ अधिकारी” “छे, छे, या संबंधी मी याहून अधिक स्पष्टपणे काही बोलणे इष्ट नाही. . . .”

मित्रांच्या संवादातून व्यक्त झालेला श्री. वसंतराव यांचा हा स्वभावगुण प्रशंसनीय नाही काय ? मी ऐकलेला आणखी एक प्रसंग सांगण्यासारखा आहे. नागपूर महाविद्यालयाच्या एका स्नेहसंमेलनप्रसंगी मा. वसंतराव मुख्य पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. त्यांचा परिचय करून देताना प्राचार्य डॉ. माधवराव देशमुख यांनी सांगितले की, “आपले सन्माननीय पाहुणे याच महाविद्यालयाचे विद्यार्थी होते, ते येथे ४ वर्षे स्नातकपूर्व विभागात अध्ययन करीत होते. . . .” वगैरे.

भाषणोत्तर झालेल्या खासगी संभाषणात “तुम्ही सांगितलेली माहिती बरोबर नाही. मी तसा चाराहून अधिक वर्षे या कॉलेजमध्ये होतो.” असे त्यांनी प्रांजळपणाने सांगून टाकले. आपण महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री आणि परीक्षेत विशिष्ट कालावधीत हमखास यश मिळवू शकलो नाही हे सांगितल्याने आपल्या मोठेपणाला आणि प्रतिष्ठेला काही बाधा येते असे त्यांना वाटले नाही. प्राचार्यांनी त्यांचा परिचय करून देत असताना या गोष्टीचा निर्देश केला नाही, यात जसे त्यांचे प्रसंगोचित सौजन्य दिसून येते तसेच त्या गोष्टी आपणहून निवेदन करणे यात श्री. वसंतरावांचा प्रामाणिकपणा आणि मोकळेपणा दिसून येतो.

बी. ए. ची परीक्षा उत्तीर्ण झाल्यानंतर मॉरिस कॉलेजमध्येच एम. ए. साठी मराठीच्या वर्गात त्यांनी प्रवेश घेतला होता आणि काही दिवस हा अभ्यास त्यांनी चालही ठेवला होता. पुढे हा अभ्यासक्रम अपुरा सोडून व्यावहारिक दृष्टीने त्यांनी कायद्याचा अभ्यास पूर्ण केला ही गोष्ट निराळी. तथापि काही काळ का होईना पण मराठी विषयाचा एम्. ए. साठी अभ्यास करण्यात त्यांचे मराठी भाषा आणि साहित्य याविषयीचे प्रेम व्यक्त होते. सुदैवाने ते मुख्य मंत्री असताना मराठीला राज्यभाषेचे स्थान प्राप्त झाले. त्या संबंधीचा कायदा तयार झाला तो त्यांच्याच अमदानीत आणि त्याची अंमलबजावणी आता सुरू झाली आहे तीही त्यांच्या मुख्यमंत्रीपदाच्या कारकीर्दीतच. हा केवळ योगायोग आहे असे वाटत नाही. किंवा महाराष्ट्र राज्य स्थापनेच्या सुमुहूर्ताविर त्यावेळचे मुख्य मंत्री माननीय यशवंतराव चव्हाण यांनी केलेल्या मराठी राज्यभाषेविषयीच्या घोषणेची ही केवळ क्रमप्राप्त पूर्ती होय असेही नाही. ह्या दोन्ही गोष्टी तर आहेतच पण त्याच्यामागे श्री. यशवंतरावांच्या प्रमाणेच श्री. वसंतराव यांचे मराठी भाषा आणि साहित्य याविषयीचे प्रेम कारणीभूत असले पाहिजे. त्यामुळे हे कार्य शक्य तितक्या थोड्या कालावधीत आकाराला आले आहे. लोकशाहीच्या काळात राज्याचा कारभार लोकभाषेतूनच चालला पाहिजे ह्या तत्वज्ञानाशी सुसंगत अशाच प्रकारचे महाराष्ट्राच्या या मुख्य मंत्र्यांचे धोरण आणि कार्य-



वसंतराव (१९४०)

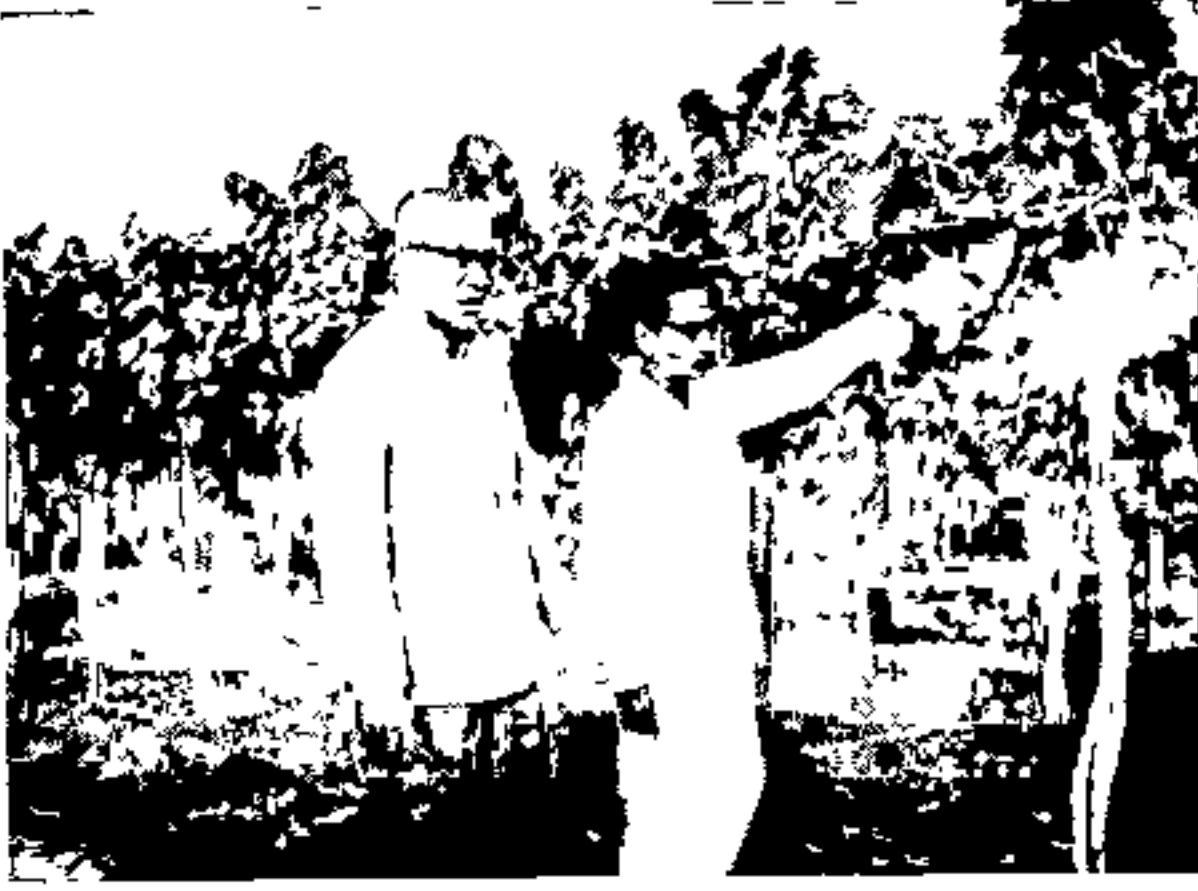


सौगडी जिवाभावाचे
श्री. रत्नाक, वसंतराव व श्रीधर घाटे

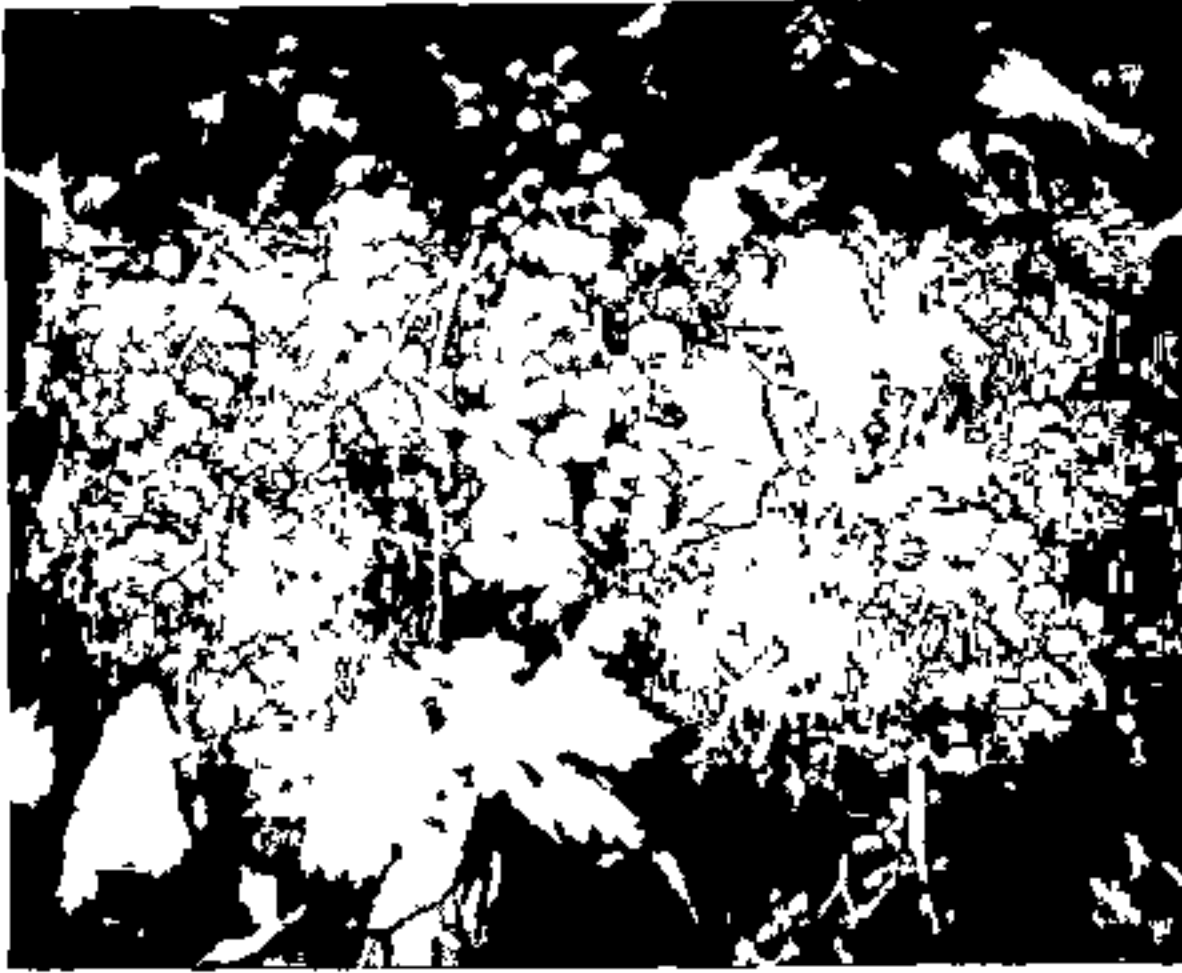


वसंतोद्गम...

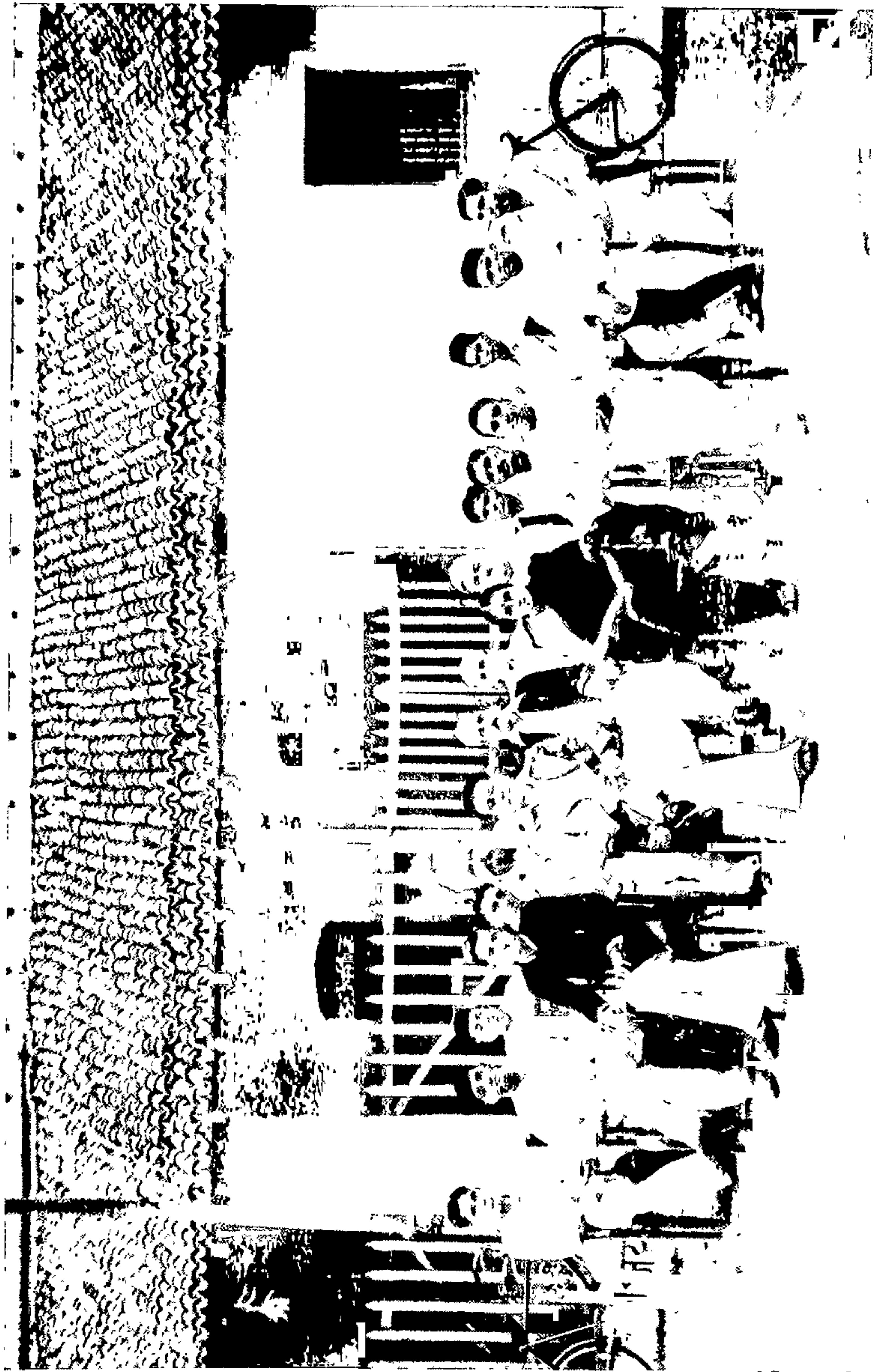




अथे सापडे सूर जीवनी



बहरे तिये अगूर रसखनी



मा. वसंतरावजी पुसद नगरपालिकेचे सात वर्षे अध्यक्ष होते.



आदिवासी शेतकरी होतात . . .



. . . आणि शेतकरी कारखानदार होतात.



गांवाकडची विचारपूस



सशोधनाचे कौतुक



आर्चबिशप कार्डिनल ग्रेस व इतर पाहुणेमंडळी

मजूर नेते मिस्टर फ्रेजर ब्रॉकवे
म्हणतात—

“तुमच्या व्यक्तिमत्वात खऱ्या
लोकशाहीचा साक्षात्कार मला
होत आहे.”



पद्धती आहे. राज्यभाषाविषयक विधेयकाची अंमलबजावणी आता नुकतीच कुठे सुरू झाली आहे. या अंमलबजावणीत काही अडचणी आहेत याची जाणीव सर्वांनाच आहे. पण त्या अडचणींचा डोंगर ओलांडून श्री. वसंतराव यांच्यासारख्या मराठी भाषेच्या आस्थेवाईक अभिमान्याकडून ही अंमलबजावणी अधिक जलद आणि यशस्वी रीतीने होईल आणि थोड्याच वर्षात महाराष्ट्राच्या राज्यकारभारात मराठीला तिचे न्याय्य स्थान प्राप्त होईल अशी आशा करण्याला हरकत नाही.



महाराष्ट्र राज्य झाले, मराठी भाषेला पण आज राजभाषेची प्रतिष्ठा व दर्जा मिळाला. आता देशातील दारिद्र्य, विषमता व अज्ञान या त्रिदोषांचे निर्मूलन करण्याच्या कामी आपण आपली अधिक शक्ती लावली पाहिजे. आपण या महान कार्यात गुंतलो असता, महाराष्ट्र राज्याच्या एकात्मतेला कोणत्याही प्रकारे बाध येईल आणि गेल्या सहा वर्षात बसलेली राज्याची घडी विसकटेल अशा प्रकारची भूमिका कोणी घेतल्यास तो केवळ जनशक्तीचा अपव्यय ठरेल. अशा प्रयत्नांपासून जनतेने पूर्ण अलिप्त राहिले पाहिजे. महाराष्ट्राचा इतिहास मोठा आहे, तसाच त्याचा भविष्यकालही उज्वल आहे. लोकशाही समाजवादाच्या आपल्या ध्येयावर दृष्टी ठेवून महाराष्ट्रातील चार कोटी लोक हातात हात घालून आपल्या या प्रगतीची वाटचाल धोराने व नेटाने करीत राहतील अशी माझी दृढ श्रद्धा आहे.

— ना. वसंतराव नाईक.

‘तैसे चि मन देता लोका । नालोची जो ॥’

प्रा. वामन कृष्ण चोरघडे

वसंतरावजींशी भेटता-बोलताना जणू आपण आपलेच रूप आरशात बघतो असे वाटते. त्यांच्याजवळ आपले दुःख सांगताना लाज वाटत नाही; आनंद सांगताना तो दिठावेल अशी भीती वाटत नाही. त्यांच्या अस्तित्वात एक प्रकारचा सुरक्षितपणा वाटतो.

आमच्या या मराठमोळा, कणखर, पण सोशिक महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री मान्यवर श्री. वसंतरावजीं नाईक तारीख एक जुलायला त्रेपन्न वर्षांचे झाले. एकोणिसशे सहा-सष्टच्या या दिवशी या महाराष्ट्रात किती तरी माणसे त्रेपन्नच काय पण व्याहत्तर, त्र्याण्णव वर्षांची झाली असतील. जुलायमध्ये जन्माला आलेले मूल वृत्तीने श्रद्धाळू, कलेबद्दल आस्था असणारे, भावनेच्या प्रसभाने कार्यप्रवण होणारे असते असे म्हणतात. खरे खोटे, देव जाणे, दैव जाणे.

‘तुमच्या आयुष्यात शंभर शरदऋतु येवोत’ अशी शुभेच्या माझ्यासारखा एखादा अनाहूतपणे करतो तेव्हा त्याच्या अंतरात प्रश्न उठतो की का ? कशा-साठी ? या प्रश्नाचे माझ्या मनाचे निःशंक उत्तर असे की, वसंतरावजीं माणूस, सामान्य माणूस आहेत आणि माणसाच्या जगण्या जगविण्याची घडपड करणे हे पवित्र काम आहे. सामान्य माणसाने काय व्हावे, कोठपर्यंत मजल मारावी याचे मोजमाप ठरलेले नाही; राजा, युवराज; राणी, युवराज्ञी यांनी काय, कुणाशी, कसे बोलावे, वागावे याबद्दल यम असतात, नियम असतात. त्यामुळे त्यांना आहे त्यापेक्षा उंच जाता येत नाही. खालीही येता येत नाही. अशाने उत्पात अधःपातापासून त्यांचा बचाव होतो असे म्हणतात. सामान्य माणसाला ही बंधने नसतात. जीवित श्रेणीच्या, आकांक्षांच्या किती पायऱ्या त्याने चढाव्या अन् किती उतराव्या हे ठरलेले नसते. तो चढला तर दुनिया म्हणते, शाबास ! पडला तर कधी म्हणते, हाय हाय ! तर कधी म्हणते, घत् तेरी.

ही दुनिया, अन तिच्याशी जुळवून घ्यायला शिकावी लागणारी दुनियादारी ! आजची दुनिया कशी उकळते आहे, उफाळते आहे! बघावे तिकडे आग, जाळ, जंजाळ!

इथे शिकायचे काय अन कसे ? इथे पोटच्या पोराला हाक घायची तरी ओरडावे लागते. त्या ओरडण्यात वात्सल्य टिकवावे लागते. नुसती माया, नुसती निष्ठा, नुसता त्याग, निव्वळ तप— कोण विचारणार ? इथे कुणाला तरी सांगावे लागते, कुणी ऐकेल असे करावे लागते, कुणाचे तरी प्रशस्तीपत्र घ्यावे लागते. ते मिळाले नाही तर आत्मसंतोषासाठी कवित्व वेठीस धरून आक्रंदावे लागते —“ Many a flower is born to blush unseen; To waste its sweetness in the desert air !”

अशा या दुनियेला जेव्हा माणूस म्हणजे काय हे समजावून द्यावे लागते तेव्हा सर्वार्थाने ज्याच्याकडे बोट दाखविता येईल असा सामान्य माणूस दिसणे हेच त्या सामान्यातले असामान्यत्व ! या अर्थाने वसंतराव असामान्य माणूस ! फार दुरून मजल-दरमजल करीत चौऱ्या गड गाठावा अन् मग तर्जनीने मोठ्या महादेवाचे निर्देशन करता यावे , अशीच मजल दरमजल चंद्रभागेच्या पाण्यात पाय बुडवून निवविली की गगनात गेलेला सोन्याचा कळस दिसतो आणि मन उद्गारते —“तो हा विठ्ठल बरवा, तो हा माधव बरवा !”

स्वामी चक्रघरांनी कुठल्याशा संदर्भात एक दृष्टान्त वापरला. चंद्राचे शीतल किरण भानुकरतप्त पाषाणावर पडतात आणि चंद्रकान्तावरही पडतात. पाषाण निवतो, चंद्रकांत द्रवतो! तथापि या दुनियेत आमच्या परी काही दगड असतात. ते द्रवत नाहीत, निवतही नाहीत ! केवळ अहंकाराने आपलेपण हुंकारीत असतात. या हुंकारात आत्मनेपद हे प्रेय ! रामाच्या नावे जो तुकिला, मोजला गेला तो तुकाराम. आम्ही आत्मनेपदीच दुसऱ्यास मोजतो अन मग औदार्याने पृच्छा करतो—“काहो, माणूस म्हणजे काय ?” उत्तर काय देणार ! दिसला तर एखादा माणूस दाखवावा.

वसंतरावांना मी निमूट, गरीबपणे बसताना बघितले आहे. कुठे ? नागपूरच्या मॉरिस कॉलेजच्या परिसरात—त्या झाडांखाली, ज्यांची सावली अनेकांना शीतलता देते आजही ! त्या झाडांची पाने त्यावेळी वसंतरावांच्या डोक्यावर पडली असतील, काही त्यांच्याशी बोलली असतील ! ती पाने पिकून सुकून नामशेष झाली असतील. त्यांनी वसंतरावांना कानगोष्ट सांगितलीही असेल की, “ बाबारे, तू जेव्हा खरोखरीचा माणूस होशील तेव्हा आम्ही रहाणार नाही. म्हणून आजच आम्ही आमच्या रूपातले सोने मोती तुझ्यावर उघळतो. पुढे असाच येशील तेव्हा आमची मुलेबाळे तुला असाच अभिषेक करतील ! ये मात्र, अगदी जरूर ये, विसरू नकोस !”

वसंतरावांना स्वच्छ, दिलखुलास हसताना मी बघितले आहे. गेल्या निवड-णुकीच्या अगोदर महाबळेश्वरला एक शिबिर भरले होते. यशवंतरावजींच्या योजनेने राजकारणाशी संबंध नसलेली आमच्या सारखी काही मंडळी सादर निमंत्रित होती. पाहुणेराचे आम्ही अधिकारी ; आमचा इतमाम खास. त्या मैफलीत वसंतरावजी यायचे, असे उशा सरकावून पलंगावर रेलायचे, पाईप शिलगावून मजेत झुरक्यागणिक हंसा-

यचे; आमच्याहून लहान होण्याची किमया करांयचे. अन् मग भानावर येऊन म्हणा-
यचे. —“ तुमचू काय बावा, भाग्यवान लोक तुम्ही ! आमच नशीब तिकडे आमच्या
नाकान शंख करीत आहे. हा राहिला पाईप, जातो आम्ही ! ”

वसंतरावांना मी रडताना—नाही; मी वधितले नाही ! तेवढे घैर्य असते तर मग
काय हवे ! पोटचा गोळा—त्याच्या निर्घृण वास्तवाने स्तिमित होवून वसंतराव पुनः
महाबळेश्वरलाच गेले होते. स्वतः जाऊ वजलो नाही, परहस्ते आखर पाठविण्याचा
उपचारही मनी आला नाही. मी ज्ञानदेवांना धीर मागितला. त्यांनी सांगितले—

“आणि मातलिया इंद्रियांचे वेग । का प्राचीने खवळले रोग ।

अथवा योग वियोग । प्रियाप्रियांचे ॥

आकाशी धूमाची रेखा । उठिली बहुवा आगळिका ॥

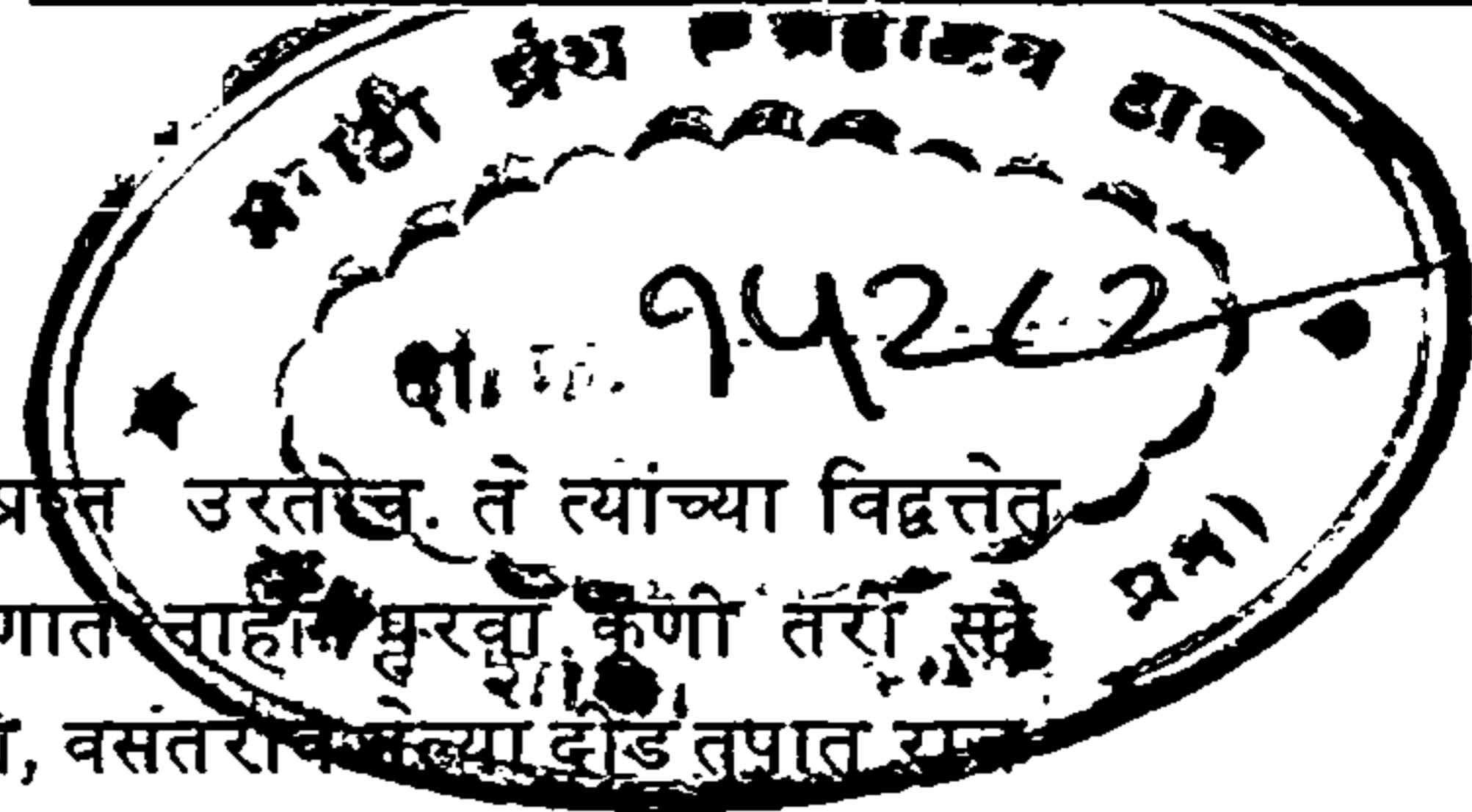
ते गिळी येकी झुळुका । वारा जेवी ॥”

चित्त क्षोभाच्या अवसरी अविचल राहण्याचे घैर्य कर्मनिष्ठ माणसाला देव देतो.

वसंतराव देव मानतात की नाही ठाऊक नाही पण देवाने त्यांना मात्र खूप
दिले आहे, त्यांच्यासाठी खूप केले आहे; जणू त्याने त्यांना वरदान दिले आहे की, “भिऊ
नकोचि आलास दैवी संपत्ति जोडुनी !”

वसंतराव माणूस आहेत म्हणजेच त्यांच्याही मागे सहा तस्कर आहेतच. ते
कुणाला सोडतात थोडेच ! सुख आहे, दुःख आहे, राग लोभ सर्वच आहे. पण या सर्वांवर
मात करणारा एक सरळपणा, प्रामाणिकपणा त्यांच्यात असल्याने त्यांना तस्कर काय,
रिपू काय, अभिभूत करू शकत नाहीत. त्यांचा निर्व्याजपणा हा सहजघर्म आहे. कुणाशी
दोन हात करायचे तर त्यांचे आयुध हेच ! आता हेच बघा की, स. का. पाटलांच्या-
सारखा दर्पोभिमानादि पंचप्रसभांनी युक्त असा प्रतापी पुरुषर्षभ ! मुसंडी मारण्याचा
त्यांचा प्रयत्न एका गजश्रेष्ठाला. मार्फतीने कुणाच्या तर एका ‘माळिये जेऊते नेले
तेऊते निवांतचि गेले’ अशा वृत्तीच्या व्यक्तीच्या ! ती व्यक्ती जेव्हा ‘अमोघाचेनि वळे’
आपले आयुध वापरील तेव्हा काय गत होईल हे बघायला आमच्यासारखी माणसे
आपल्या मनाचा आतुर डोळ्यांच्या वातीत सरसावतील !

वसंतरावांशी भेटता बोलताना जणू आपण आपलेच रूप आरशात बघतो असे
वाटते. त्यांच्याजवळ आपले दुःख सांगताना लाज वाटत नाही; आनंद सांगताना तो
दिठावेल अशी भीती वाटत नाही. समोरच्याला आधार, दरारा, धीर वाटेल असे काहीं-
चे व्यक्तिमत्व असते, त्यांच्या अस्तित्वात एक प्रकारचा सुरक्षितपणा वाटतो, त्यांच्या
कृपेची याचना निःसंकोच करता येते, संकटात त्यांना हाक मारता येते पण मुलाच्या
वारशादिवशी जेवणाचे निमंत्रण देण्याचा काही धीर होत नाही; पण वसंतराव येतील
अन त्यांच्या येण्याने वारशाचे लाडूच नव्हे तर सगळा सोहळाच गोड होऊन जाईल!



तरी वसंतरावांचे मोठेपण कशात आहे हा प्रश्न उरतेच. ते त्यांच्या विद्वत्तेत नाही, त्यांच्या वक्तृत्वात नाही, त्यांच्या मुत्सद्दीपणात नाही. त्यांच्या वत्सलाताईची मुलाखत घेतली. त्यांना विचारले की, वसंतरावांच्या दोड तपात सत्तरी क्षेत्रात सतत यशावर यश घेत आहेत, आणि आज एका प्रगत, मातबर प्रांताचे मुख्य मंत्री आहेत. या यशाचे रहस्य काय ?

प्रश्न अडचणीचा पण वत्सलाबाई चटकन सरळ उत्तर देऊन मोकळ्या झाल्या; म्हणाल्या, “ते राजकीय क्षेत्रात आले हे त्यांचे बलवत्तर भाग्य!” पुरुषाच्या भाग्याचा थांग देवालाही लागत नाही मग मानवाची कोण केवा ? आणि या बलवत्तर भाग्याने वसंतरावांवरच का येवढा कृपेचा पाऊस पाडावा ? शिवाय, भाग्य म्हटले की मानवी प्रयत्न काय फोल ठरवायचे ?

असे नसावे, खरेच नसावे. मग काय असेल ?

ज्ञानेश्वरांनी ऋजुत्वाची लक्षणे सांगताना एक चित्र रेखाटले आहे—
“तरी आर्जव ते ऐसे । प्राणाचे सौजन्य जैसे । आवडतेयाही दोसे एकचिगा ॥
का तोंड पाहूनि प्रकाशु । न करी जेवी चंडांशु । जगा एकुचि अवकाशु ।
आकाश जैसे ॥ तैसे जेयाचे मन । मानुषप्रति आनान ॥ नाहि आणि वर्तन ।
ऐसे पै ते ॥ वारेयाची घाव । तैसे सरळ भाव । शंका आणि हाव । नाही जेया ॥
मायेपुढे बाळका । रिगता न पडे चि आवाका । तैसे मन देता लोका । नालोची
जो ॥ दिठी नोहे मिणघी । बोलणे नाही संदिग्धी । कवणेची हीन बुद्धि
राहाटिजे ना ॥ दाही इंद्रिये प्रांजळे । निष्प्रपंचे निर्मळे । पाच ही पालव
मोकळे । आठही पाहर ॥ (१३, ३५४ ते ३६५)

एखाद्या सुजाण कलानिधीने वसंतरावांचे चित्र काढावयाचे ठरविले तर तो याहून वेगळे काढू शकणार नाही. वसंतरावांच्या यशाचे सारसर्वस्व या ‘आर्जवा’त आहे. यातूनच त्यांची करणी, त्यांची वाणी प्रस्फुट झाली आहे. म्हणूनच त्यांच्या वाणीला अध्ययनादींची आणि करणीला अनुभवाची गरज पडत नाही. कारण—

“ तो पुरुष सुभटा । आर्जवाचा आंगवटा ॥

जाण तेथेचि घरटा । ज्ञाने केला ॥”

वसंतराव जेव्हा बोलतात तेव्हा चरख्याच्या त्राकेसारखे सरळपण तकाकते. पाकिस्तानशी संघर्षाच्या वेळी ते सहज बोलले—“ मार द्यायचा तो अर्धवट देऊ नये.” यशवंतराव विजयी होऊन पुण्याला आले. त्यांच्या त्या सलामीच्या प्रचंड सभेत वसंतरावांनी आपला निश्चय जाहीर केला—“ दोन वर्षात महाराष्ट्र अन्नस्वावलंबी झाला नाही तर मला फाशी द्या.” मद्यपानबंदीबद्दल ते निःसंदिग्ध बोलले—“ मला महाराष्ट्र हे गुन्हेगारांचे राष्ट्र करायचे नाही. ”

अशा वाक्यांना फार मोठी ताकत लागते. या वाक्यातून वसंतरावांचे तेजोबल प्रकट झाले आहे. नेपोलियन म्हणायचा—“मला सहा तास इंग्लिश खाडी द्या, मी जग जिंकून दाखवितो.” चर्चिल म्हणाला होता—“ साम्राज्याचे दिवाळे काढायला मी पंत-प्रधान झालो नाही.” मॅझिनी स्वप्नसुंदर वाक्य बोलला —“ Where there is no vision, people perish !” चर्चिल, नेपोलियन, मॅझिनीची ही सुभाषिते आम्हाला पाठ आहेत. वसंतरावांची नाहीत कारण ते अगदीच आमचे, आमच्यातले आहेत. तथापि जेव्हा कधी तेजाला आवाहन करायची वेळ येईल तेव्हा ही वाक्ये, स्फुरणाच्या बाहूवर बिरुदासारखी खचित बांधली जातील !

या ऋजुत्वाच्या बैठकीमुळेच वसंतरावांचा पिंड विचारनिष्ठाचा नाही, बुद्धि-निष्ठाचा आहे. बुद्धिनिष्ठा म्हणजे आपल्यासारखीच इतरांना बुद्धी आहे हे जाणणे ! विरोधी पक्षाचा सल्लामशविरा ते स्वीकारतात, कुणाशीही चर्चा करायची त्यांची तयारी असते. त्यावेळी अहंकाराचा वारा त्यांना शिवत नाही. मुख्यमंत्रीपदाची धुरा त्यांचेवर आली तेव्हा काय, कसे, हा संभ्रम त्यांना वाटला नाही. नम्रत्वे, व्रतनिश्चये ते कामाला लागले. या देशाचा कृषिवल हे वसंतरावांचे प्रेयस् त्याच्या पाठीवर नुसता हात फिरविण्यात त्यांना तृप्ती नाही. जणू वसंतरावांचे मन त्यांना खाते, की आपण त्यांच्यासाठी काही केले नाही, करायचे आहे; केलेच पाहिजे, त्याशिवाय हे ऋण फिटायचे नाही.

“आपणेत्या उचिता, स्वधर्म राहाटला, जे पडेल ते निवांता, साहूनि जावे. ” इतक्या सहजपणे वसंतरावांनी मंत्रीपद पेलले ते या त्यांच्या बुद्धिनिष्ठेच्या बळावर ! येवढी सत्ता हाती असून तिचा उपभोग घेणे त्यांना सवडले नाही, सवडणार नाही. ते त्यांच्या स्वभावात नाही. त्यांच्या हाती सत्ता म्हणजे संस्थानिकाच्या कमरेची रत्न-जडित तलवार ! वर्षातून एकदा स्वच्छ करावयाची उलट यातायात, उपयोग काही नाही !

एखाद्या इंग्रज मुत्सद्याला वसंतरावांचे वर्णन करावेसे वाटले, तर तो म्हणेल —“A neatly, nicely, alertly dressed gentleman”. माणसाच्या अंतर्गुणाचे प्रतिबिंब त्याच्या बाह्यरूपात, सवयीत प्रतिबिंबित होते. गवाळपण, गाफिलपण वसंतरावांमध्ये दिसायचे नाही. पंडित नेहरूंना वसंतराव हवे होते, शास्त्रीजींना ते हवे होते आणि आता इंदिराबाईंनाही ते हवे आहेत याचे कारण वसंतरावांची प्रांजळ बुद्धिनिष्ठा !

मुख्य मंत्री झाल्यावर वसंतराव “सह्याद्री” वर राहायला गेले नाहीत. पूर्वीच्या “वर्षा” मध्येच राहिले. गंधवती, क्षमावती धरित्रीला आई म्हणून हाक मारणारा “वर्षा” मध्येच सुखावू शकेल, अन्यत्र नाही !

शरदबाबूंनी एकदा टागोरांना गळ घातली की तुमचे हितशत्रू तुमच्यावर चिखल-फेक करतात; तुम्ही त्यांचा प्रतिकार का करीत नाही? टागोरांनी उत्तर दिले की ते ज्या शस्त्रांनी माझ्याशी लढतात ती शस्त्रे मजपर्यंत पोचूच शकत नाहीत. ! बेळगाव सीमावाद, गोवा विलीनीकरण, गोदावरी पाणीवाद, एक ना दोन हजारो कोलिते विरोधकांच्या हाती असून देखील वसंतराव बेदखल, बेखबर आपली कामे शांत निवांत अविरामपणे करीत आहेत. त्यांच्या प्रांजळपणाच्या ओलाव्याने विरोधाची धग निवून जात आहे.

लाहोर काँग्रेसचे अध्यक्षपदी पं. नेहरू विराजले तेव्हा मं. गांधीना अपार कौतुक झाले. नेहरूंच्या पाठीवर हात फिरवीत त्यांनी ग्वाही दिली— “He is truthful beyond suspicion; *et jure sans reproach*; The nation is safe in his hands !”

भारताच्या राजकीय नभोमंडळात आता असा मायेचा, वडिलधारा, धिवसा देणारा वरदहस्त उरला नाही तथापि आजही हजारो मराठी मने क्षणाचाही विलंब न लावता उत्स्फूर्तपणे उद्गारतील की राष्ट्राची वात आम्ही जाणत नाही; तेवढी आमची अवकात नाही; भविष्याची वार्ता आम्ही काय जाणो? पण आमचा महाराष्ट्र वसंतरावांच्या हाती सुरक्षित आहे !

वसंतरावांबद्दल मनःपूर्वक शुभ कामना !

आयुरारोग्याच्या शुभेच्या व्यक्त करताना वसंतऋतूला आवाहन न करता शरदः शतं जीव असे म्हणून शरदाचा निर्वाळा का देतात हे वसंतरावासारख्यांना शुभेच्छा देताना कळून येते. वसंतानंतर ग्रीष्म येतो, वर्षाऋतूत नद्या तुडंबतात पण गढूळ असतात, ग्रीष्मात पाणीच ओसरते, सुकते ! शरदात मात्र निर्मळ, स्वच्छ, भरपूर जलप्रवाह खळखळतो. या शरद ऋतूतील गंगेसारखा वसंतरावजींच्या जीवनसरितेचा प्रवाह दोन्ही काठावरील जमीन ओलवीत, पोषित, पेरती करीत, पिकवीत अखंड वाहो हीच महाराष्ट्राच्या मायभवानीच्या चरणी प्रार्थना !



नत्या पिढीचे पहिले पाईक

डॉ. मा. गो. देशमुख

तीस वर्षापूर्वी मॉरिस कॉलेजात आपण ज्याला शिकविले तो विद्यार्थी राज्याचा मुख्य मंत्री झालेला पाहून गुरूचे हृदय उचंबळून येणे स्वाभाविक आहे. प्राचार्य देशमुख यांना वसंतरावांच्या रूपाने स्वातंत्र्योत्तर काळातील नवे नेतृत्व साकार होत असल्याचे दिसत आहे.

H. F. Rathod (हाजूसिंग फुलसिंग राठोड) या नावाने १९३३ साली नागपूरच्या मॉरिस कॉलेजमध्ये प्रवेश घेतलेला, अंतर्मुख वृत्तीचा, अबोल पण हसऱ्या चेहऱ्याचा एक शेतकऱ्याचा मुलगा एका सुंदर सकाळी V. P. Naik हे नवे नाव धारण करून महाराष्ट्राचा मुख्य मंत्री होतो, ही घटना वरवर पाहता आश्चर्यचकित करणारी असली तरी तिच्यात अघटित असे काही नाही. एखाद्या अनघड सुरवंटाचे हळुहळू मनोहर अशा फुलपाखरामध्ये रूपांतर व्हावे, इतके हे परिवर्तन स्वाभाविक आहे.

शेतकऱ्यापासून मुख्य मंत्र्यापर्यंतच्या पदावर चढलेल्या या व्यक्तीचा जीवन-प्रवास इतका स्वाभाविक, सुसंगत आणि संथ आहे की त्यात काही असामान्यत्व नाही हेच त्याचे वैशिष्ट्य आहे.

यापुढे आपल्या देशात ज्या एका नव्या पिढीचे नेतृत्व उदयास येणार आहे त्या पिढीचे पहिले पाईक म्हणजे माननीय वसंतराव नाईक होत. या पिढीने आपल्या लहानपणी देशातील अद्भुत आणि इतिहासप्रसिद्ध असा एक स्वातंत्र्यसंग्राम पाहिला, त्यातील रोमहर्षक दृश्ये आदरमिश्रित कौतुकाने न्याहाळली, त्याची वर्णने जिवाचे कान करून ऐकली. या स्वातंत्र्यसंग्रामात या पिढीतील तरुणांनी भाग घेतला नाही; पण त्यांची स्वीकृत कार्यावहलची निष्ठा मात्र अत्यंत प्रखर राहिली. त्यांनी कोणत्याही महान नेत्याचा गंडा बांधला नाही किंवा एखाद्या पक्षातील अनुयायांची संघटना केली नाही; पण सर्वसामान्य लोकांच्या आशाआकांक्षांचे प्रतिनिधित्व त्यांनी

अत्यंत प्रामाणिकपणाने केले. स्वातंत्र्याच्या संग्रामात सेनापतित्वच काय पण साध्या सैनिकाचेही काम त्यांनी केले नाही. अर्थात कोणत्याही नात्याने देशासाठी केलेल्या महान त्यागाचे भांडवल या पिढीजवळ नाही; पण आधीच्या आदरणीय आदर्शातील अनुकरणीय अंश आपल्या आचरणात आणण्यासाठी त्यांनी आटोकाट प्रयत्न केला.

त्या काळच्या राजकीय आंदोलनात प्रचलित झालेली घोषवाक्ये या पिढीने पाठ केली नाहीत, इतकेच काय पण सत्याग्रह, बहिष्कार, असहकार तसेच ग्रामसफाई, सूतकताई, प्रभातफेरी किंवा पत्रपांडित्य, स्तंभलेखन, संस्थासंचालन हे जुन्या जमान्यातील शब्द देखील या पिढीच्या शब्दकोषात आढळत नाहीत; पण या सर्व प्रकारच्या विचारविज्ञानामागील तत्वबोध त्यांनी जाणून घेतला आहे व त्यातील सारसर्वस्वाची त्यांनी कदर केलेली आहे.

त्या काळात आपल्या देशात इतके पक्षभेद आणि मतभेद माजलेले होते की त्यातील एखाद्या विशिष्ट पंथामध्ये विलीन न होता, या नव्या मनूतील नव्या दमाच्या शूर शिपायांनी त्यांच्या भिन्नभिन्न तत्त्वप्रणालीकडे साक्षीदाराच्या अलिप्त भूमिकेतून पाहिले. जातीयवाद, हिंदुत्वनिष्ठा किंवा पंथीय श्रद्धा आपल्या ध्येयसाफल्यासाठी कितपत लाभदायक होतील याबद्दल ते सतत साशंक वृत्तीनेच वागत राहिले. सर्व एकान्तिक भूमिकांना त्यांनी कमी लेखले, आणि...

ब्राह्मण नाही, हिंदुही नाही, न मी एक पंथाचा

तेच पतित की आखडतीं जे प्रदेश साकल्याचा ।

अशा व्यापक भूमिकेवरून काँग्रेस हा एक 'साकल्याचा प्रदेश' आहे अशा भावनेने ते या पक्षाला मिळाले.

ज्याला गांधीवादी म्हणता येईल असा कोणताही क्रियाशील कार्यक्रम त्यांनी आपला म्हणून मानला नाही. हा त्यांचा एक मोठा गुण आहे असे नाही किंवा हा एक फार मोठा अवगुण आहे असेही नाही. ही वस्तुस्थिती आहे. एक काळ असा होता की, जेव्हा एखाद्याला अमुक एका पक्षाचा म्हटला की त्याला त्या पक्षाचे एखादे बोधचिन्ह घेऊन मिरवावे लागे. काँग्रेस पक्षाचा म्हटला की त्याने खादीची पांढरी टोपी घालावी हा एक अलिखित संकेत होता.

माननीय मुख्य मंत्री वसंतराव नाईक यांनी हे संकेत पाळले नाहीत. जुन्या जमान्यातील मंत्र्यांप्रमाणे ते घोतर नेसत नाहीत किंवा गांधी टोपी घालीत नाहीत, ही घटना वरवर पाहता अगदी क्षुल्लक आहे. ही गोष्ट ते काही हेतू मनात धरून करतात असे नाही. यावरून त्यांची पक्षनिष्ठा किंवा खादीनिष्ठा कोणत्याही तत्त्वनिष्ठ कार्यकर्त्यां-हून कमी प्रतीची ठरते असेही नाही. पण घटना साधी दिसत असली तरी ती अर्थपूर्ण आहे. अशा प्रकारच्या खुणा धारण करीत नसलेल्या माझ्या भावंडापेक्षा मी वेगळा नाही, याची मनोमन जाणीव आणि तिची अभावित अभिव्यक्तीच या वरवर क्षुल्लक दिसणाऱ्या घटनेच्या मुळाशी आहे.

जिकडे जावे तिकडे माझी भावंडे आहेत,
 सर्वत्र खुणा माझ्या घरच्या मजला दिसताहेत ।
 कोठेही जा- पायाखाली तृणवृता भू दिसते,
 कोठेही जा- डोईवरती दिसते नीलांबर ते !

याच दृष्टिकोनामधून पक्षनिष्ठेपेक्षा राष्ट्रनिष्ठा आणि राष्ट्रनिष्ठेपेक्षाही माणु-
 सकी ही श्रेष्ठ समजून तिची त्यांनी उपासना आणि जोपासना केली. नाही तरी शेत-
 कऱ्याला केवळ आपल्यापुरते पाहून चालत नाही, केवळ आभाळाकडे पाहूनही त्याचे
 भागत नाही. त्याचे डोळे आकाशाकडे लागलेले असले तरी त्याचे पाय जमिनीला टेक-
 लेले असावे लागतात.

“ येत्या दोन वर्षांत शेतकी उत्पादनाच्या बाबतीत महाराष्ट्राला स्वयंपूर्ण करून
 दाखवीन, नाही दाखविले तर मला फासावर चढवा ! ” अशी दर्पोक्ती उसन्या उत्सा-
 हाच्या उमाळ्याने किंवा केवळ भंपक भावनेच्या भरात मुखावाटे निघू शकत नाही.
 या उत्स्फूर्त उद्गारांच्या पाठीमागे शेतकी व्यवसायात मुरलेले मन आहे, असीम
 आशावाद आहे आणि दुर्दम्य आत्मविश्वासही आहे.

एकले अवधान देइजे । मन सकलसुखासी पत्र घेइजे
 हे प्रतिज्ञोत्तर माझे । उघड आइका ।

अशी गगनभेदी गर्जना ' या बड्या बंडवाल्यात ज्ञानेश्वर माने पहिला ' असा ज्ञाने-
 श्वरच करू शकतो. वसंतराव नाईकांच्या सहजस्फूर्त शब्दांच्या मुळाशी आपल्या
 उपाशीपोटी राहणाऱ्या देशबांधवांच्या कल्याणासाठी तळमळणारे अंतःकरण आहे;
 त्यांच्या वेदना मी कोणत्या उपायाने दूर करू शकेन याबद्दलची पोटतिडीक आहे.

आरंभी आरंभी अगदी लहानसहान बैठकीत देखील अडखळत अडखळत आपली
 भूमिका मांडणारे वसंतराव अलीकडे मोठमोठ्या परिषदांसमोर आणि प्रचंड जनसमु-
 दायसमोर अस्खलितपणे ओजस्वी आणि प्रभावी वक्तृत्व करताना दिसतात. तेव्हा
 यापुढे उदयास येणारे नवे नेतृत्व हे कोणत्या दर्जाचे आहे, त्याची प्रत कशी आहे, त्याला
 कोणते निकष लावता येतात, याचा कयास बांधता येतो. केवळ महाराष्ट्रातच नव्हे
 तर अखिल भारतात नव्याने निर्माण होणाऱ्या नेतृत्वाचे प्रसादचिन्ह म्हणजे नामदार
 वसंतराव नाईक हे होत. ते जेव्हा सभामधून भाषणे देतात किंवा शेतातील बहरलेली
 पिके पाहतात तेव्हा असे वाटते की जणू काही शंभर वर्षांपूर्वी जन्मलेला महाकवी
 केशवसुत त्यांच्याच मुखाने गणगुणत आहे ...

सावलीत गोजिरी मुले

उन्हात दिसती गोड फुले

बघता मन हर्षून डुले

ती माझी मी त्यांचा—एकच ओघ आम्हातुन आहे,

नव्या मनूतिल नव्या दमाचा मी शूर शिपाई आहे !



समाजवादी महाराष्ट्राचे नेतृत्व

ना. मधुकरराव चौधरी

अन्नधान्य टंचाईला तोंड देण्यासाठी महाराष्ट्राने कृषिक्रांतीचा मूलगामी व लढाऊ कार्यक्रम स्वीकारावा म्हणून वसंतरावजींनी गेली दोन वर्षे पराकाष्ठेचा प्रयत्न चालविला आहे. यशवंतरावजींनी महाराष्ट्राला जो समाजवादी क्रांतीचा रस्ता दाखविला त्यावरचे पुढील पाऊल वसंतरावजींच्या मार्गदर्शनाने टाकले जात आहे.

राज्यपुनर्रचनेनंतरच्या गेल्या पांच-दहा वर्षांच्या कालखंडावरून नजर टाकली तर भारतातील विविध राज्यांनी आपापली प्रगती वेगवेगळ्या पद्धतीने केलेली आढळते. तथापि, अनेक बाजूंनी विचार केला तर असे म्हणावेसे वाटते की महाराष्ट्र राज्याने प्रगतीसाठी जी घडपड चालविली आहे त्याची शान काही वेगळीच आहे. असे विधान करताना कोणतीही आत्मतृप्ततेची किंवा आत्मप्रौढीची भावना माझ्या मनात नाही. शक्य तितक्या तटस्थपणे चालू इतिहासाचा विचार करून महाराष्ट्राच्या प्रगतीमधील वेगळेपणा शोधण्याचा प्रयत्न मी करीत आहे.

वैशिष्ट्य कशात ?

महाराष्ट्राच्या निर्मितीनंतर त्याच्या सर्वांगीण विकासाला योग्य दिशा लावणे अत्यंत महत्वाचे तसेच जोखमीचे होते. आणि हे काम आपल्या नेत्यांनी अचूकपणे वजावले आहे. यातच महाराष्ट्राच्या प्रगतीचे वैशिष्ट्य व नेतृत्वाचे यश सामावलेले आहे असे मला वाटते.

इतर कोणत्याही राज्यापेक्षा महाराष्ट्र राज्य अस्तित्वात येण्यामध्ये काही विशिष्ट अडचणी निर्माण झाल्या होत्या हे सर्वश्रुत आहेच. मुंबई शहराचा समावेश महाराष्ट्रात असावाच असा मराठी जनतेचा हट्ट होता आणि मुंबई शहर महाराष्ट्रापासून वेगळे राखावे असा विरोधी शक्तींचा प्रयत्न चालला होता.

हा जो संघर्ष महाराष्ट्र राज्याच्या निर्मितीबाबत निर्माण झाला तो अपघाती स्वरूपाचा किंवा तात्कालिक कार्यकारणभाव असणारा होता असे नव्हे तर मराठी

जनतेच्या राजकीय, सामाजिक व आर्थिक आशाआकांक्षांचा जो टप्पा आपण ब्रिटिश-विरोधी चळवळीच्या कालखंडात गाठला होता त्याची नैसर्गिक परिणति त्या संघर्षात झालेली होती.

वाळशास्त्री जांभेकर, महात्मा फुले, न्यायमूर्ती रानडे, लोकमान्य टिळक, सुधारकाग्रणी आगरकर, ना. गोखले, इत्यादी लोकनेत्यांच्या व हजारो त्यागशील देशभक्तांच्या प्रयत्नाने महाराष्ट्राच्या समाजमनाला स्वातंत्र्यपूर्व चळवळीत एक विशिष्ट आकार लाभला होता. १८१८ ते १९४७ या प्रदीर्घ कालखंडांत महाराष्ट्रात जेवढी वैचारिक आंदोलने झाली, राजकीय व सामाजिक ध्येयवादाचा शोध घेतला गेला आणि त्याकरिता शेकडो संस्था व हजारो कार्यकर्ते स्वयंस्फूर्त वृत्तीने कार्यप्रवण झाले, तितक्या प्रमाणात इतर प्रांतात घडलेले दिसत नाही. म्हणूनच महात्मा गांधी महाराष्ट्राला कार्यकर्त्यांचे मोहोळ म्हणत असत. त्यामुळे महाराष्ट्र राज्य ज्या दिवशी अस्तित्वात आले त्या दिवशी या आपल्या राज्याच्या जनतेला स्वप्नपूर्तीचा आनंद जरी झाला होता तरी ध्येयपूर्तीचे समाधान लाभलेले नव्हते. मराठी भाषा राजसिंहासनावर वसविण्यात जरी यश आले असले तरी भाषिक सलगता असलेली राज्य-निर्मिती हे साध्य नसून ते एक साधन आहे असेच मानण्याकडे सर्वांचा कल होता.

दूरचे क्षितिज

ध्येयपूर्तीचे जे दुसरे क्षितिज विचारवंतांना, राजकीय पक्षांना व जनतेला दिसत होते त्याचा त्या प्रसंगी अत्यंत अनुरूप व उत्कट शब्दांत जर कोणी उच्चार केला असेल तर तो महाराष्ट्रीय जनतेच्या हृदयसिंहासनावर विराजमान झालेले नेते व महाराष्ट्र राज्याचे पहिले मुख्य मंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण यांनीच होय. श्री. चव्हाण यांनी मराठी जनतेच्या मनातील हुरहुर व विचारवंतांच्या मनातील आकांक्षा नेमकी हेरली आणि ध्येयपूर्तीचे भावी काळातील उद्दिष्ट शब्दरूप करताना अत्यंत आत्म-विश्वासाने उद्गार काढले की, "भारतातील कोणत्या राज्यात प्रथम समाजवाद येईल तर तो महाराष्ट्रातच होय. महाराष्ट्राची भूमी ही समाजवादाला अनुकूल आहे."

यशवंतरावजींनी जेव्हा हे उद्गार काढले त्यावेळी महाराष्ट्रातील विचारवंतांनी, कार्यकर्त्यांनी व जनतेने त्या ध्येयदर्शी सहजोद्गारांचे उत्स्फूर्तपणे स्वागत केले. महाराष्ट्रातील साऱ्या जनतेला-मध्यवर्गीयांना, शेतकऱ्यांना व कामगारवर्गाला-एक समान ध्येय लाभले होते आणि त्या ध्येयाचा आत्मविश्वासाने उच्चार करणारा नेताही लाभला होता.

संयुक्त महाराष्ट्राचे भाषिक राज्य स्थापन होण्याचा क्षण हा अशा प्रकारे मराठी जनतेच्या आगामी कालखंडातील ध्येयदर्शी वाटचालीचा सुमुहूर्त ठरला होता. त्यामुळेच यशवंतरावांचे नेतृत्व महाराष्ट्रातील बुद्धिवाद्यांनी किंवा सुशिक्षित

वर्गाने जेवढे उत्साहाने स्वीकारले तेवढेच ग्रामीण विभागातील जनतेने अन् कामगार वर्गाने त्या नेतृत्वाचा श्रद्धेने स्वीकार केला.

चैतन्यदायी नेतृत्व

लोकमान्य टिळकांच्या नेतृत्वानंतर एवढे चैतन्यदायी व सर्वसमावेशक नेतृत्व महाराष्ट्रात प्रथमच निर्माण झाले असा अभिप्राय विचारवंत देऊ लागले. सामान्यांना तर यशवंतरावांच्या रूपाने आपला व आपल्या आशाआकांक्षांचा साक्षात्कार झाला. काँग्रेस व काँग्रेसेतर पक्षात आणि राजकीय पक्षांबाहेरील विचारवंतात एक समान आकांक्षेचे सूत्र निर्माण झाले. संयुक्त महाराष्ट्राच्या चळवळीत विरोधाचा, कुचेष्टेचा व टीकाखोरपणाचा जो गदारोळ उठला होता तो कोठच्या कोठे दबून गेला.

नवमहाराष्ट्राची उभारणी नवमूल्यांच्या आधारावर करण्याची यशवंतरावजींची प्रतिज्ञा क्रमाक्रमाने त्यांच्या जाहीर भाषणातून, काँग्रेस पक्षाच्या सभातून अगर बैठकीतून आणि शासनातर्फे अंगिकारल्या जाणाऱ्या कार्यातून जसजशी प्रकट होऊ लागली तसतशी जनतेची त्यांच्या नेतृत्वासंबंधीची अपेक्षा वाढू लागली. यशवंतराव काय बोलतात, कोणता नवा विचार देतात याकडे लोक अत्यंत उत्कंठेने पाहू लागले. त्यांची विधानसभेतील कांही भाषणे, मुंबईच्या कामगार मैदानावरील भाषणे, पुण्याच्या शनिवारवाड्यापुढे दिलेली भाषणे यांची जी इतिवृत्ते त्या काळात वृत्तपत्रात आली त्यामुळे मराठी जनतेला एक अलोट प्रकारचे बौद्धिक व सांस्कृतिक समाधान लाभू लागले.

याच संदर्भात त्यांनी सांगली येथे आपल्या ४७ व्या वाढदिवसाच्या प्रसंगी केलेल्या भाषणाचा उल्लेख अवश्य केला पाहिजे. "सह्याद्रीचे वारे" या ग्रंथात यशवंतरावजींनी विविध प्रसंगी केलेल्या उत्कृष्ट भाषणांचा संग्रह केलेला आहे व त्यातील जी काही भाषणे विचारवंतांनाही अत्यंत मार्गदर्शक ठरलेली आहेत त्यांत सांगलीच्या भाषणाचा समावेश आवर्जून केला जातो हे स्वाभाविकच आहे. इतरही अनेक भाषणे त्या त्या काळी गाजली; परंतु त्यातल्या त्यात महाबळेश्वर येथे काँग्रेस शिविराच्या प्रसंगी (मे १९६१ मध्ये) त्यांनी जी मार्गदर्शनपर भाषणे केली त्यांचा क्रमांक खूपच वर लावला पाहिजे. मला तर असे वाटते की ही कांही भाषणे म्हणजे चव्हाणांनी महाराष्ट्राला जे समाजवादी नेतृत्व दिले त्याची मीमांसा करणारी, त्याचे तत्वज्ञान सांगणारी, अविष्कार करणारी गाथाच आहे.

यशवंतरावजींचे आकर्षण साहित्यिक, पत्रकार, शिक्षक, प्राध्यापक, कलावंत, समाजसेवक इत्यादि सर्व घटकांना वाटू लागले आणि महाराष्ट्रातील विविध क्षेत्रातील सर्व महत्वाच्या सभासंमेलनांना यशवंतरावांना निमंत्रित करून त्यांचे विचार ऐकण्याची अहमहमिका सर्वत्र दिसून येऊ लागली. हा काळ १९६० ते १९६२ (म्हणजे

यशवंतराव दिल्ली येथे डिसेंबर १९६२ मध्ये जाईपर्यंत) असा सुमारे तीन वर्षांचा होय. या काळात यशवंतरावांनी महाराष्ट्रात शेकडो व्याख्याने दिली, हजारो कार्य-कर्त्यांशी वैचारिक व भावनात्मक संबंध निर्माण केले आणि उभ्या महाराष्ट्राला आपल्या तेजस्वी व्यक्तिमत्वाने अक्षरशः वेडे केले.

वैचारिक भूमिका

महाराष्ट्रात समाजवाद निर्माण होण्यास अनुकूल अशी वैचारिक भूमिका जशी यशवंतरावांनी अल्पावधीत निर्माण केली त्याचप्रमाणे त्यांनी समाजवादाची वाटचाल भक्कम पायावर सुरू व्हावी म्हणून शासनातर्फे अगर शासनाची मदत देऊन स्वयंस्फूर्त संस्थांतर्फे अनेक कार्यक्रमांना कार्यान्वित केले. थोडक्यात सांगावयाचे झाले तर असे म्हणता येईल की, यशवंतरावांच्या आधीच्या कालखंडातील नेत्यांपुढे कल्याणकारी राज्यामधील विकासाचे तत्वज्ञान होते व त्या तत्वज्ञानाने त्यांचा राजकीय व्यवहार कार्यप्रवण झालेला होता. त्याऐवजी यशवंतरावांनी महाराष्ट्राच्या विकासाच्या प्रत्येक कार्यक्रमाला समाजवादी धोरणाचा संजीवनी मंत्र दिला आणि महाराष्ट्राच्या विचाराला अन् आचाराला नवी दिशा दिली, नवा बहर आणला.

तथापि, इतिहासपुरुषाच्या मनात काही वेगळाच संकल्प होता. महाराष्ट्रासारख्या एका राज्यव्यापी क्षेत्रात यशवंतरावांचे कर्तृत्व कोणून पडावे हे त्याला मान्य नव्हते. इतिहासाची एक नवी लाट चिनी आक्रमणाच्या निमित्ताने आली व यशवंतरावांना ती भारतरूपी विशाल कार्यक्षेत्रात घेऊन गेली.

दिल्लीला जाण्याचा निर्णय घेताना तसे पाहिले तर यशवंतरावांना फारसे स्वातंत्र्य राहिलेले नव्हते. त्यांनी ज्यांना नेते मानले होते त्या पंडितजींचाच त्यांना तो आदेश होता. एका दृष्टीने राष्ट्राची हाक होती ती.

तथापि, महाराष्ट्रात आपण आरंभिलेले काम—युगायुगानंतर हाती येणारे क्रांतिकारक कार्य—आपणाला मध्येच सोडून द्यावे लागत आहे याची तीव्र वेदना त्यांना कमालीची अस्वस्थ करीत होती. त्या गंभीर क्षणी यशवंतरावांची मनःस्थिती कशी झाली होती हे माझ्यासारख्या ज्या सहकाऱ्यांनी ती जवळून पाहिली त्यांना अद्यापही पुरेपूर आठवत असेल.

राजकारणातल्या माणसाचे जीवन हा अनिश्चिततेच्या पटावर खेळला जाणारा डाव असतो व त्यामुळे अनपेक्षित होणारे बदल व घडणाऱ्या घटनांना तोंड देण्याची शक्ती प्रत्येक राजकारणी पुरुषाला कमवावीच लागते. परंतु यशवंतरावांवर जो प्रसंग त्यावेळी आला त्याला महाराष्ट्राच्या आधुनिक इतिहासात दुसरे समांतर उदाहरण सापडणे कठिण आहे.

दिल्लीला जाण्यापूर्वी यशवंतरावांनी महाराष्ट्राच्या भावी प्रगतीसंबंधी काही अपेक्षा व्यक्त केल्या होत्या. महाराष्ट्राच्या जनतेबद्दल, तसेच काँग्रेस संघटनेमधील पुरोगामी शक्तींबद्दल त्यांना जो विश्वास वाटत होता तो त्यांत व्यक्त झाला होता.

महाकवी

यशवंतराव हे राजकारणी असले, मुत्सद्दी असले, प्रशासक असले तरी पिंडाने ते कवी अन विचारवंत आहेत. समाजवादी महाराष्ट्राच्या अभ्युदयाचे स्वप्न रंगविणारा हा महाकवी संरक्षण मंत्रीपदाची सूत्रे हाती घेताना पुन्हा पुन्हा मागे वळून पहात राहिला असला तर त्यात काय नवल ! समाजवादाच्या प्रतिष्ठापनेसाठी मुंबई शहरापासून लहानात लहान खेड्यापर्यंत आपण ज्या पुरोगामी शक्ती उभ्या केल्या त्या यापुढेही कार्यक्षम राहोत अशीच प्रार्थना तो करीत असेल.

आणि महाराष्ट्राचे सुदैव असे की समाजवादी क्रांतीवर संपूर्ण श्रद्धा असणाऱ्या घुरीणांच्या हातीच महाराष्ट्राच्या नेतेपदाची सूत्रे यशवंतरावानंतर राहिली आहेत.

कै. दादासाहेब कन्नमवार यांची कारकीर्द जरी अल्पकालीन ठरली तरी एका दृष्टीने चमकदार होऊन गेली. “यशवंतरावजींनी जो विचार व आचार आपल्याला दिला आहे तो मी श्रद्धापूर्वक भारताच्या निष्ठेने पुढे नेईन” अशी प्रतिज्ञा त्यांनी सुरवातीलाच केली आणि ती अखेरपर्यंत पाळली.

कन्नमवारजींना गरिबांविषयी व श्रमजीवी वर्गाविषयी कमालीचा कळवळा होता. ते स्वतः अत्यंत गरिबीतून वर आले होते. समाजवादी नेतृत्वाला आवश्यक असणारा मनोधर्म त्यांच्या चित्तात मुरलेला होता. त्यामुळेच त्यांनी समाजातील खालच्या थराचे जे काही प्रश्न शासनाकडून दुर्लक्षित राहिले होते त्याकडे लक्ष वेधले. मुंबईसारख्या शहरात राहणाऱ्या झोपडपट्टीतील श्रमजीवींचा प्रश्न सोडविण्यासाठी शासनाने अग्रक्रम द्यावा असा त्यांनी आग्रह धरला.

कन्नमवारजींच्या आकस्मिक निधनानंतर ज्यांच्या हातात महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्रीपदाची सूत्रे आली ते श्री. वसंतरावजी नाईक हे तर मनाने व विचाराने यशवंतरावजींच्या समाजवादी स्वप्नांनी भारावून गेलेले होते. सुरवातीलाच त्यांनी जाहीर केले की, “ मी यशवंतरावजींना नेता मानतो ” व त्यात औपचारिकपणाचा भाग यत्किंचितही नव्हता. यशवंतराव हे आता एक व्यक्ती राहिलेले नसून एक विचार झाले होते या वस्तुस्थितीची नोंद त्यात घेतली जात होती आणि महाराष्ट्राला समाजवादाच्या रस्त्यावरून घेऊन जाण्याचा जो संकल्प, जो ध्येयवाद त्यांनी जाहीर केला होता त्याचा मनोमन स्वीकार त्यात स्पष्ट होत होता.

कर्तबगार मंत्री

मुख्यमंत्रीपदावर आरूढ होण्यापूर्वी वसंतराव नाईक यांना महाराष्ट्र ओळखत होता तो एक कर्तबगार मंत्री म्हणून. आदिवासी समाजातून ते वर आले आहेत व त्यामुळेच त्यांचे विचार समाजपरिवर्तनाचे असणार एवढे जरी महाराष्ट्र जाणून होता तरी यशवंतरावांच्या अपुऱ्या कार्याचा गाडा हा नवा मुख्य मंत्री किती तडफेने व जाणिवेने हाकू शकेल याबद्दल जनतेत व विचारवंतांमध्ये साशंकतेची भावना होतीच.

तथापि, वसंतरावजींशी जवळून संबंध आलेल्या माझ्यासारख्या अनेक कार्यकर्त्यांना असे खात्रीपूर्वक वाटत होते की महाराष्ट्राच्या अपेक्षा पूर्ण करण्याचे सामर्थ्य या नव्या नेत्यात निश्चितपणे आहे. १९५१-५२ पासूनच वसंतरावजींना मी ओळखत असलो तरी १९६० ते १९६२ या दोन वर्षांच्या कालखंडात त्यांचा उपमंत्री म्हणून काम करण्याचे सद्भाग्य मला लाभले. त्यामुळे वसंतरावजींचा राजकीय ध्येयवाद कोणत्या स्वरूपाचा आहे व तो प्रत्यक्षात आणण्यासाठी ते किती निष्ठेने व घडाडीने कार्य करू शकतात याची मला कल्पना होती.

जुन्या परंपरागत शक्तिकेंद्रांना कमी शक्तिमान करून नव्या पुरोगामी शक्तिकेंद्रांना वेगाने संचालित करण्याचा जो दूरदृष्टीचा व लढाऊ कार्यक्रम यशवंतरावजींनी आखला तो प्रत्यक्षात आणण्यासाठी जे घटनात्मक व कायदेशीर बदल करण्याची गरज होती ती पूर्ण करण्याची जबाबदारी त्यांनी कांही महत्वाच्या बाबतीत वसंतरावजींवरच टाकली होती. ग्रामीण विभागांतील परंपरागत हितसंबंध बदलून तेथे सामाजिक व मानसिक क्रांती कार्यान्वित करण्यासाठी जी महत्वाची विधेयके - उदाहरणार्थ जमिनीच्या सीलींगचे व कसेल त्याची जमीन-तयार झाली त्याची प्रमुख जबाबदारी वसंतरावजींनाच उचलावी लागली होती. त्याचप्रमाणे सत्तेच्या विकेंद्रीकरणाच्या विधेयकाचा मसुदा तयार करण्यासाठी जी समिती यशवंतरावजींनी नेमली होती तिचे अध्यक्षपदही नाईकसाहेबांकडेच होते.

जणू काही काळाची पाउले यशवंतराव हेरीत होते किंवा योगायोग तसा जमून आला असे पाहिजे तर म्हणा. परंतु वस्तुस्थिती मात्र अशी घडून आली की ज्या सहकाऱ्याकरवी त्यांनी ग्रामीण भागाशी संबंधित अशी तीन प्रमुख विधेयके कार्यान्वित करून घेतली, त्याच कर्तबगार सहकाऱ्याच्या हातात राज्याची सूत्रे येण्याची घटना घडून आली.

प्रतिकूल वातावरण

श्री. वसंतरावजी यांच्या कारकीर्दीची सुरुवात मात्र अत्यंत प्रतिकूल वातावरणात झाली हे कबूल केलेच पाहिजे. चिनी आक्रमणामुळे देशात जी आणिबाणीची परिस्थिती निर्माण झाली त्यामुळे विकासाचे कार्यक्रम मागे पडणार, समाजवादी

दृष्टीला मुरड घालावी लागणार असा घोका निर्माण झाला. त्यानंतर मे १९६४ मध्ये पंडित नेहरूंचे निर्याण झाले व राष्ट्राच्या एकूण स्थैर्यालाच आणखी एक जबर-दस्त धक्का बसला. शास्त्रीजींच्या नेतृत्वामुळे पुन्हा घडी बसणार अशी आशा निर्माण झाली. परंतु तेवढ्यात पाकिस्तानने कटकटी सुरू केल्या व अखेरीस सप्टेंबर १९६५ मध्ये भारताच्या सीमेवर आक्रमण केले. त्यानंतर जानेवारी १९६६ मध्ये शास्त्री-जींचे अनपेक्षितपणे निधन झाले व भारतापुढे प्रचंड प्रश्न उभे राहिले.

या प्रतिकूल राजकीय घटनांच्या जोडीलाच एका महाप्रचंड निसर्गसंकटाला-ही याच काळात भारताला तोंड द्यावे लागले व अद्यापही लागत आहे. हे संकट म्हणजे अवर्षणाचे. या संकटामुळे भारतात जी अन्नधान्य टंचाई निर्माण झाली तिचे दुष्परिणाम सान्या अर्थव्यवस्थेला भोगावे लागत आहेत. परदेशी धान्याची मदतही, काही इतर कारणांमुळे कमी झाल्यामुळे व रुपयाच्या बाह्य किंमतीचे अवमूल्यन याच कालखंडात करावे लागल्याने नाईकसाहेबांच्या कारकीर्दीत समस्यांचा डोंगरच उभा राहिलेला दिसत आहे.

तथापि अभिमानाची अन समाधानाची गोष्ट अशी की या संकट परंपरेमुळे नाईकसाहेब यत्किंचितही गांगरून गेलेले नाहीत. मुख्य मंत्री पदावर ते आरूढ झाल्याला आता तीन वर्षे पूर्ण होत आली आहेत आणि या काळाचा आढावा घेताना मनावर जो ठसा उमटतो तो वसंतरावांच्या धैर्यशाली, कणखर पण सौजन्यशील, वाणेदार नेतृत्वाचा.

या तीन वर्षांच्या कारकीर्दीचा मागोवा घेताना नाईकसाहेबांच्या नेतृत्वाची विधायक बाजूही नजरेत प्रकर्षाने भरते. केंद्र सरकारच्या एकतर्फी मदतीने व मार्गदर्शनाने किंवा परिस्थितीमधून निर्माण होणाऱ्या अपरिहार्य दबावांनी त्यांच्या धोरणाने आकार घेतलेला नाही. महाराष्ट्रातील विशिष्ट परंपरेचा व प्राप्त परिस्थितीचा शांतपणे विचार करून त्यांनी वेळोवेळी निर्णय घेतले आहेत आणि केंद्र सरकारलाही आपल्या विचारांचा अचूकपणा प्रसंगी पटवून दिलेला आहे.

ज्या सर्वात महत्वाच्या बाबीसंबंधी श्री. वसंतरावांनी महाराष्ट्राच्या समाजवादी पिंडाचे दर्शन केंद्राला घडविले ती म्हणजे अन्नधान्य समस्येवर तोडगा शोधण्यासंबंधी होय. अर्थात या बाबतही केवळ विचार मांडून नाईकसाहेब दूर उभे राहिले नाहीत, तर या अडचणीच्या काळात महाराष्ट्र प्रयत्नांची पराकाष्ठा करील असे आश्वासन त्यांनी केंद्रीय नेत्यांना दिले.

क्रांतिकारक घोषणा

नाईकसाहेबांनी महाराष्ट्राला अन्नधान्यासंबंधी दोन वर्षात स्वावलंबी बनविण्याची घोषणा ज्या दिवशी उच्चारली, त्याच दिवशी महाराष्ट्राच्या समाज-

वादाला नवा अर्थ अन् नवा जोम प्राप्त झाला. कारण त्या आधी महाराष्ट्राच्या आर्थिक विकासाची जी उद्दिष्टे ठरविण्यात आली होती व त्यासाठी करावयाच्या प्रयत्नांचा जो क्रम ठरविण्यात आला होता त्यात यापुढे महत्वाचा बदल करण्याची गरज तीव्रतेने निर्माण होणार होती.

संबंध भारतात जेवढी धान्य तूट दरवर्षी भासते त्यातील जवळ जवळ एक-तृतीयांश एकट्या महाराष्ट्राच्या तुटीमुळे असते ही वस्तुस्थिती महाराष्ट्राच्या स्वाभिमानाला धक्का देणारी होती यात मुळीच शंका नाही. महाराष्ट्राच्या अर्थरचनेचा कायाकल्प करीत असताना शेतीचे उत्पादन वाढविण्याकडे सर्वात जास्त लक्ष दिले तर ही परिस्थिती खात्रीपूर्वक बदलता येईल यासंबंधी वसंतरावजींना जेवढा विश्वास वाटत होता तेवढा इतर कोणालाही वाटत नव्हता ही वस्तुस्थिती आहे.

वसंतरावजी हे अनुभवी शेतकरी आहेत. अशा जमातीतून ते वर आले आहेत की जीत निसर्गदत्त संकटांशी झुंज देण्यासाठी लागणारा चिवटपणा स्वभावातच भिन्नलेला असतो. सभोवतालच्या परिस्थितीमधील प्रतिकूलता हीच ज्यांना स्वाभाविक वाटते व या प्रतिकूलतेशी झुंज देणे हाच ज्यांना पुरुषार्थ वाटतो अशा सामाजिक परंपरेतून वसंतरावजी उदयाला आलेले आहेत.

महाराष्ट्राचे हे थोर भाग्य आहे की महाराष्ट्रातील समाजवादाची भाषा कुणीतरी वरिष्ठ वर्गातील अगर वरिष्ठ जातीतील किंवा भांडवलशाही अगर सरंजामशाही कुळातील व्यक्ती बोलत नसून योग्य थरातील व योग्य पार्श्वभूमीच्या व्यक्तीकडे नियतीने ते काम सोपविले आहे.

हाडाचा शेतकरी

यशवंतरावांच्या रूपाने महाराष्ट्राच्या नेतृत्वाची वाटचाल उच्चवर्णीयांकडून सामान्यांच्याकडे व शहराकडून खेड्याकडे आली तर वसंतरावांच्या नेतृत्वाने ती सामान्यांमधल्या देखील शेवटच्या थरापर्यंत आणि खेड्यातच नव्हे तर खेड्या-वाहेरच्या दऱ्याखोऱ्यातील झोपडीपर्यंत जाऊन पोहोचली.

यशवंतराव एकदा बोलताना म्हणाले, “वसंतराव हे खरे शेतकरी. मी शेतकऱ्याचा मुलगा. त्या दृष्टीने वसंतराव हेच खरे शेतकरी-मुख्यमंत्री. माझ्या बाबतीत जरी लोक तसे म्हणत तरी ते मर्यादित अर्थानेच खरे होते. वसंतरावांच्या बाबतीत ते पूर्णांशाने सत्य आहे. ”

आपण व वसंतराव या दोघांच्या पार्श्वभूमीतला जो फरक यशवंतरावजींनी सांगितला तोच त्या दोघांनी महाराष्ट्राच्या उत्कर्षासाठी जे कार्यक्रम आखले त्यात असलेल्या तपशीलातील फरकाच्या मुळाशीही आहे. यशवंतरावांचीच राज्यनीती व अर्थनीती वसंतरावांनी पुढे चालविली आहे यात शंका नाही. तथापि, कृषिक्रांतीचा

जो सर्वव्यापी, लढाऊ व शास्त्रीय कार्यक्रम वसंतरावांनी अंगिकारलेला आहे आणि शेतकऱ्यांमध्ये व शासनामध्ये त्यासंबंधी जागृती तयार केली आहे त्याचे वैशिष्ट्य अवश्य लक्षात घेतले पाहिजे. समाजवादी उद्दिष्टे सफल करण्याच्या दृष्टीने हे पुढील पाऊल ठरणार यात मुळीच शंका नाही. मला तर अनेकदा असे वाटते की, नेतृत्वाच्या बाबतीत महाराष्ट्र भाग्यवान म्हटला पाहिजे. महाराष्ट्र निर्मितीपूर्वीच्या राजकीय दृष्टीने अत्यंत बिकट, अस्थिर गुंतागुंतीच्या काळात महाराष्ट्राचे तारू कोठे भरकटत जाणार या भीतीने मराठी मन व्याकुळ, शंकाकूल असता यशवंतरावांच्या सारखे मुत्सद्दी, कुशल, धीरोदात्त व सव्यसाची नेतृत्व महाराष्ट्राला लाभले व महाराष्ट्र यशवंत झाला. आज आर्थिक संकट व अन्नधान्याच्या तुटीमुळे निर्माण झालेल्या अत्यंत बिकट परिस्थितीतून राष्ट्र व महाराष्ट्र जात असता कृषिकांतीसाठी अनुरूप असलेले, ध्येयवाद व व्यवहारवादाची सांगड घालणारे हाडामासाचे, मनाचे शेतकरी नेतृत्व वसंतरावांच्या रूपाने आपल्याला लाभले आहे.

शेतीच्या अद्यावतीकरणाचा ध्यास वसंतरावांना केवढा लागला आहे याचा अनुभव महाराष्ट्रातील विविध घटकांना गेल्या दोन-तीन वर्षांत वारंवार आलेला आहे. ते कोठेही गेले, लहान-मोठ्या कोणत्याही समारंभाला गेले, उद्योगपतींच्या मेळाव्यात गेले किंवा साहित्यिकांच्या संमेलनाला गेले तरी न चुकता आपला कृषिकांतीचा कार्यक्रम समजावून सांगत असत. अन्नधान्य हा प्रत्येक व्यक्तीचा आत्यंतिक गरजेचा विषय असल्याने तो त्याच्या आत्यंतिक जिव्हाळ्याचाही विषय बनला पाहिजे अशी अपेक्षा जणू त्यातून व्यक्त होत असे. मला आठवते की मुख्य मंत्री झाल्यानंतर सुरवातीलाच जेव्हा त्यांनी शेतीचा विषय प्रत्येक व्यासपीठावरून तपशीलाने मांडा-व्यास सुरवात केली तेव्हा अनेक शहरी स्वभावाच्या श्रोत्यांना व कसलेल्या पत्रकारांनाही धक्का बसू लागला. वास्तविक, शेतीसंबंधीचा प्रत्येक विषय—मग तो तृषार्त भूमीला सजल करण्याचा असो, शास्त्रीय पद्धतीने तिची नांगरणी करण्याचा असो, नव्या पद्धतीचे वि-बियाणे वापरण्याचा असो, पिकांवर येणारे रोग टाळण्याचा असो अगर काळ्या मातीतून सोने पिकविणाऱ्या आपल्या बांधवाला रास्त मोबदला देण्याचा असो—शहरात राहाणाऱ्या अगर कचेऱ्यातून कामे करणाऱ्या नागरिकांच्याही आस्थेचा व जिव्हाळ्याचा वनविण्याची गरजच होती. त्या अभावीच कृषिकांतीला आवश्यक असणारे मानसिक वातावरण वृत्तपत्रात, साहित्यात, सुशिक्षितांच्या गप्पागोष्टीत अगर कारखानदार-व्यापाऱ्यांच्या व्यवहारातून व संघटनांमधून महाराष्ट्रात केव्हाच परिपोषित झालेले नव्हते.

श्रोत्यांना धक्का

परंतु नेमके तेच काम वसंतरावजींनी रूढ लोकमताची पर्वा न करता निग्रहाने हाती घेतले. मुख्य मंत्री आले की त्याच्या पाठोपाठ शेतीचा विषय येतो हे हळूहळू लोकांच्या

अंगवळणी पडू लागले. मला आठवते की ताजमहालसारख्या अलिशान हॉटेलात भरलेल्या बड्या बड्या कारखानदार व व्यापारी मंडळींच्या एका सभेत वसंतरावांनी शासनाने आखलेला शेतीचा कार्यक्रम सांगून श्रोत्यांना धक्का दिला. परंतु प्रारंभी प्रारंभी वसंतरावजींच्या शेतीविषयक विवेचनाने औचित्यभंग होत आहे असे मानणारी परंपरानिष्ठ मंडळी आता त्या विषयाचे सार्वभौम महत्व मान्य करू लागली आहेत. म्हणून मला तर असे अभिमानाने म्हणावेसे वाटते की वसंतरावजींच्या चिकाटीच्या प्रयत्नामुळे गेल्या दोन वर्षांत महाराष्ट्रात शेतीला व शेतकऱ्याला प्रतिष्ठा प्राप्त होत चालली आहे. ज्यांना शहरात राहून व्यापार व कारखानदारीमध्येच सारा पुरुषार्थ आहे असे वाटत होते ती कर्तवगार मंडळी शेतीच्या अंतःसामर्थ्याने प्रभावित होऊन त्या दिशेने पाउले टाकतांना दिसत आहेत. शहरी वातावरणातील ज्या विचारवंतांना, साहित्यिकांना, कलावंतांना, पत्रकारांना शेतीच्या आधुनिकीकरणाची शक्यता व तिचे नवसमाजनिर्मितीच्या प्रयत्नांमधील महान सामर्थ्य यांचा मनोमन साक्षात्कार झालेला नव्हता त्या सर्वांना महाराष्ट्राला अन्नधान्यात स्वावलंबी करण्याच्या एका उत्तुंग ध्येयाने व महान स्वप्नाने भारावून टाकले आहे. वसंतरावजींनी हे मौलिक कार्य केले आहे.

शेतीच्या उत्पादनवाढीसंबंधी वसंतराव यांनी एक चार कलमी कार्यक्रम महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांपुढे ठेवला आहे. वसंतरावजींचे म्हणणे असे की, शेती हा पूर्वीपेक्षा वेगळ्या प्रकारे करावयाचा व्यवसाय आहे. शेती ही आता आधुनिक अर्थाने कारखानदारी समजली पाहिजे. नवभारतात उद्योगधंद्यांना महत्व द्या असे आपण नेहमी ऐकतो मग 'शेती याच सर्वांत मोठ्या उद्योगधंद्याला प्राधान्य का देत नाही' असा प्रश्न ते विचारतात. जर सत्तर टक्के जनतेची उपजीविका जमिनीवर आहे तर मग शेतीला अग्रक्रम देणे अगत्याचे नाही का? शिवाय शेतीमध्ये अन्नधान्याशिवाय दूधदुभते, अंडी, कापूस, ताग, औषधे, रसायने, यासारखा विविध कारखान्यांना लागणारा कच्चा माल तयार होत असतो. या दृष्टीने भारतामधील शेतीचे अद्यावतीकरण करणे ही एक अटळ गरज आहे.

नियोजनविषयक तत्वज्ञानाला धक्का

भारताच्या नियोजनविषयक तत्वज्ञानाला धक्का द्यावा असाच हा क्रांतिकारक विचार आहे आणि तो मांडणारी व्यक्तीही 'आधी केले मग सांगितले' ह्या पंथातील असल्याने या विचाराचा प्रभाव भारताच्या केंद्रस्थानी पडणे अपरिहार्यच झालेले आहे.

गेल्या वर्ष दोन वर्षांत नाईकसाहेब महाराष्ट्रातील शेतीचे अद्यावतीकरण करण्यासाठी, तिला पाणी देण्यासाठी, संकरित बी-बियाणे देण्यासाठी, तायचुंग-सारखे नवे पीक काढण्यासाठी व शेतमालाच्या किंमती आधी ठरवून देऊन शेतक-

च्याला उत्साहित करण्यासाठी रात्रंदिवस जे परिश्रम करीत आहेत त्याकडे भारताच्या विविध विभागातील जाणते लोक उत्सुकतेने पहात आहेत. या संदर्भात महाराष्ट्राच्या प्रयोगासंबंधी अमेरिकेतील 'बाल्टिमोर सन' या वृत्तपत्रात जो मजकूर आला आहे तो जिज्ञासूंनी अवश्य पहावा. परदेशी निरीक्षकांना महाराष्ट्राच्या भूमीत जे प्रयोग चालू आहेत त्यासंबंधी केवढी उत्सुकता वाटत आहे व आतापर्यंत केलेल्या कामाविषयी केवढा आदर वाटत आहे हे पाहून क्षणभर आपला ऊर नाईकसाहेबां-विषयीच्या प्रेमाने भरून आल्याशिवाय राहात नाही.

भारतात जो समाजवाद येणार त्याचा प्रमुख आधार कृषिक्रांतीच असला पाहिजे हे निश्चितपणे दिसत आहे. या कृषिक्रांतीसाठी ग्रामीण विभागात राजकीय व सामाजिक क्षेत्रात नवे नेतृत्व तयार करण्यात महाराष्ट्राने कशी आघाडी मारली आहे याचे वर्णनही वर उल्लेख केलेल्या 'बाल्टिमोर सन'च्या उतान्यात केलेले आहे. केवळ शेतीचे आधुनिकीकरण करणे एवढाच उद्देश नजरेसमोर धरला तर भांडवल-दारांच्या व जमीनदारांच्या साहाय्याने मोठाली फार्मस् यांत्रिक दृष्ट्या अद्ययावत पद्धतीने चालवून उत्पादन वाढीचा प्रश्न काही अंशी सोडविता आला असता. परंतु समृद्धीच्या आशेने सामाजिक अन्यायावर पांघरूण घालण्यास किंवा नवी सामाजिक व आर्थिक विषमता तयार होऊ देण्यास महाराष्ट्राचे समाजवादी नेतृत्व तयार नाही. यशवंतरावांच्या विचाराची ही देणगी आहे व नाईकसाहेबांनी ती संपूर्णतया आत्मसात केलेली आहे.

समाजवादाची प्रयोगभूमी

त्यामुळे महाराष्ट्राच्या खेड्यापाड्यातून आपण हिंडलो तर अलिकडे तेथील वातावरणात नवचैतन्याचा संचार झालेला आपणाला निश्चितपणे जाणवतो. त्यामुळेच समाजवादाच्या निर्मितीच्या दृष्टीने महाराष्ट्र ही एक प्रयोगभूमी ठरत आहे असे मला वाटते. दुष्काळाचे संकट गेल्या वर्षी व चालू वर्षी देशावर आले नसते तर वसंतरावजींच्या निग्रही घोषणेच्या निमित्ताने महाराष्ट्राच्या समाजवादाला नवा अर्थही प्राप्त झाला नसता. त्या दृष्टीने निसर्गाने दिलेले आव्हान ही एक संधीच ठरली आहे. वाईटातून चांगले निघावे अशी कदाचित नियतीची योजना असावी. प्राप्त संधीचा लाभ घेऊन कृषिक्रांतीचा मूलग्रामी व लढाऊ कार्यक्रम साकार करणे आवश्यक आहे. चालू असलेल्या प्रयत्नांत व ठिकठिकाणच्या स्थानिक नेतृत्वात काही अपूर्णताही असेल परंतु येत्या काही वर्षांत या कार्यक्रमाचा आशय अधिकाधिक स्पष्ट होत जाईल आणि त्यातून महाराष्ट्राच्या अंगावर समाजवादाचे बाळसे येऊ लागेल असे मला निश्चितपणे वाटते.



कृषिक्रांतीचा नवा संदेश

जवाहरलाल दंडा

शेतीला जसे पाणी तसाच कार्यकर्त्यांना नवा कार्यक्रम असा दुहेरी लाभ देणारा वसंतरावजींचा व्यवहारी संदेश होता. नव्या घर्तीची शेती ही स्वतंत्र भारताची सर्वांत महत्त्वाची गरज आहे ही गोष्ट त्यांच्या लक्षात पंधरा वर्षांपूर्वीच आली. त्याआधारेच त्यांनी विदर्भातील काँग्रेस संघटनेत नवचैतन्य निर्माण केले आणि शेतीला अन् शेतकऱ्याला प्रतिष्ठा प्राप्त करून दिली.

१९५८ च्या जानेवारी महिन्यातील गोष्ट. नागपूर येथे काँग्रेसचे वार्षिक अधिवेशन भरले होते. त्या अधिवेशनात वसंतरावजींनी कृषिक्रांतीच्या द्वारा प्रत्यक्षात आणावयाच्या सहकारी समाजवादाचा अत्यंत महत्त्वाचा ठराव मांडला होता. त्या ठरावावरील त्यांचे भाषण अतिशय प्रभावी झाले. अधिवेशनासाठी भारताच्या कोनाकोपऱ्यातून आलेल्या हजारो सर्वसामान्य कार्यकर्त्यांचीच नव्हे तर श्रेष्ठ नेत्यांचीही मने वसंतरावजींच्या मर्मभेदक वक्तृत्वाने भारावून गेली. त्या प्रसंगी जाणत्यांच्या लक्षात ही गोष्ट येऊन चुकली की या तरुण, तडफदार व अनुभवी व्यक्तीच्या रूपाने ग्रामीण भागातील भारत नव्या उत्साहाने, नव्या विचाराने व नव्या कार्यक्रमाने जागा होऊ लागला आहे.

वसंतरावजींच्या भाषणाचा, विशेषतः त्या पाठीमागे जाणवणाऱ्या जमीन-विषयक प्रश्नांच्या प्रत्यक्ष अभ्यासाचा व जमीनविषयक प्रश्नांकडे पहाण्याच्या नव्या दृष्टिकोनाचा, परिणाम त्यावेळी महाराष्ट्राबाहेरील शेकडो अभ्यासू व ज्येष्ठ काँग्रेस कार्यकर्त्यांवर किती खोलवर झाला हे त्यावेळी मला अत्यंत जवळून पाहता आले. अनेकजणांनी जवळ येऊन त्यांचे अभिनंदन केले व कृषिक्रांतीचा जो रस्ता तुम्ही आज दाखविला आहे तो आम्हाला पसंत आहे असे सांगितले.

शेकडो काँग्रेस कार्यकर्त्यांकडून व पुढाऱ्यांकडून उत्स्फूर्तपणे मिळालेल्या या पावतीमुळे वसंतरावजींचे अंतःकरण हेलावून गेल्याशिवाय राहिले नाही. आम्ही

यवतमाळ जिल्ह्यातील जे कार्यकर्ते त्यांच्या भोवती होतो त्यांना वसंतरावजींच्या मनोवृत्ती त्याप्रसंगी उत्साहित झालेल्या पाहून कमालीचा आनंद वाटला. आमच्या नेत्याबद्दल आम्हाला अभिमान वाटू लागला.

नागपूर अधिवेशन संपवून आम्ही जेव्हा यवतमाळला परतलो तेव्हा वसंतरावजींनी आम्हाला पुन्हा एकत्र बोलाविले व आमच्यावर पडलेल्या नव्या जबाबदारीची आम्हाला जाणीव करून दिली. ते म्हणाले, “मित्रांनो, कृषिकांतीचा जो कार्यक्रम मी नागपूरला मांडला तो माझा एकट्याचा नाही. तुमचा व माझा सर्वांचा आहे. गेली कांही वर्षे आपण हा कार्यक्रम आपापल्या शक्तिनुसार अमलात आणीत होतो. त्यातूनच मी जे शिकलो ते नागपूरला मांडले. यवतमाळ जिल्हा ही माझी प्रयोगभूमी आहे. प्रयोग केला आपण सर्वांनी. पण अजून तो अपुरा आहे. तो आता आणखी पुढे नेऊ आणि हाच संदेश विदर्भातल्या इतर जिल्ह्यांना देऊ. आधी केले मग सांगितले असे आपण वागूया. नुसत्या बोलघेवड्या माणसाला या जगात कोणी विचारत नाही. वन्हाडचा शेतकरी आळशी असतो असे लोक म्हणतात. तो नव्या गोष्टी, नवे संशोधन स्वीकारीत नाही असा आरोप आहे. हा आरोप खोटा पाडूया. नवा शेतकरी निर्माण करूया. नवा शेतकरी, नवी शेती, नवी अर्थरचना अशी वाट आपण चोखाळूया. त्यातून नवा भारत निर्माण होईल असा विश्वास बाळगा.”

यवतमाळच्या ‘गांधी भवन’ मध्ये त्या दिवशी वसंतरावजींनी जे भाषण केले ते माझ्या स्मरणात कायम राहिल. अत्यंत स्फूर्तिदायक भाषण होते ते. नागपूर अधिवेशनातील यशाने आपल्यावर मोठी जबाबदारी टाकली आहे याची पुरेपूर जाणीव त्यात होती. यवतमाळ जिल्ह्यात व विदर्भात नवे तारे निर्माण करून दाखविण्याची हिंमत त्यात स्पष्टपणे दिसत होती.

यवतमाळमधील कार्यकर्त्यांनी वसंतरावजींच्या संदेशाला ताबडतोब रुकार दिला. खरी गोष्ट अशी आहे की, यवतमाळ जिल्ह्यातील अनेक कार्यकर्ते त्यापूर्वीच त्यांच्या मताचे झाले होते. परंतु ज्या मंडळींनी अजून त्यांचा नवा संदेश आत्मसात केला नव्हता त्यांनी त्या दिवशी त्याप्रमाणे वागण्याचा आपला निश्चय व्यक्त केला.

‘गांधी भवन’ मधील सभा आटोपल्यानंतर दुसऱ्या दिवसापासून वसंतरावजी विदर्भाच्या दौऱ्यावर निघाले. तो त्यांचा दौरा अत्यंत झंझावाती झाला. सार्वजनिक सभांतून त्यांनी कमी भाषणे दिली. मुख्यतः काँग्रेस कार्यकर्त्यांच्या सभातून ते बोलले. व्यक्तिशः शेकडो कार्यकर्त्यांजवळ त्यांनी चर्चा केली व त्यांची मने नव्या कार्यक्रमाने प्रभावित केली.

गेली कांही वर्षे असे होऊ लागले होते की नव्या पिढीतील काँग्रेस कार्यकर्त्यांजवळ त्यांना पसंत पडेल व स्वतःच्या कर्तृत्वाला आव्हान देणारा वाटेल असा योग्य

प्रकारचा कार्यक्रमच नव्हता. स्वातंत्र्यपूर्व लढ्याच्या काळातून जी मंडळी वर आली होती त्यांचे विचार व संस्कार वेगळे होते. महात्मा गांधींनी काँग्रेस कार्यकर्त्यांने जी विधायक सेवा करावी असा आदेश तेव्हा दिला होता तो त्यांची जीवननिष्ठा बनलेला होता. खादी, ग्रामोद्योग, साक्षरताप्रसार, अस्पृश्यता निवारण, दारूबंदी या प्रकारचे कार्यक्रम जो हाती घेतो तो विधायक किंवा क्रियाशील कार्यकर्ता अशी स्वातंत्र्यपूर्व काळातील व्याख्या बनली होती. थोरांपासून लहानांपर्यंत हजारो नव्हे लाखो काँग्रेससेवकांचे आचरणही त्या काळात त्याप्रमाणे घडत होते.

तथापि, स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर देशाचे प्रश्न बदलले, जनतेपुढे नवी आव्हाने तयार झाली. पंडित नेहरू नियोजनाची व आर्थिक समृद्धीची नवी भाषा मांडीत होते व त्याप्रमाणे सरकारतर्फे नवे कार्यक्रम आखीत होते. तथापि, या नव्या कालखंडातील कार्यक्रमांमध्ये आपला वाटा कोणता याचे स्पष्ट दिग्दर्शन सर्वसामान्य काँग्रेस कार्यकर्त्यांला अद्यापि झाले नव्हते.

त्यामुळे ठिकठिकाणचे कार्यकर्ते गोंधळात पडले होते. जुन्या स्वरूपाच्या विधायक कार्यक्रमाची जागा घेणारा नव्या घर्तीचा कार्यक्रम त्यांना हवा होता.

श्री. वसंतरावजी यांचा मोठेपणा यातच आहे की त्यांनी कार्यकर्त्यांची ही अडचण हेरली होती. कारण ते स्वतः स्वातंत्र्योत्तर काळातील प्रेरणा आत्मसात केलेले नेते आहेत. लोकशाही व समाजवाद यांच्या आधारेच भारत सुखसमृद्धीचे स्वप्न साकार करू शकेल यावर त्यांची श्रद्धा आहे.

त्यामुळेच भारत स्वतंत्र झाला त्या सुमारास त्यांचे विचार शेतीच्या उद्वाराच्या दिशेने वाहू लागले होते हे मला आठवले. गेली वीस बावीस वर्षे मी त्यांच्या परिचयात आहे. त्यांच्या विचारांची उत्क्रांती मी जवळून पाहिली व अभ्यासली आहे. तसे भाग्य मला लाभले आहे.

वसंतरावजी शिक्षणाने वकील असूनही त्यांचे चित्त जे शेतीकडे आकर्षित झाले ते त्यांच्या राष्ट्रीय विचारांमध्ये जी नवी दृष्टी निर्माण झाली होती त्यामुळेच होय. पंडित नेहरू व काँग्रेस यांच्याकडे ते याच ध्येयवादामधून आकर्षित झाले असेही मला निश्चितपणे वाटते.

आपल्या कुटुंबाची शेती त्यांनी स्वतः करावयाला सुरवात केली ती १९४०-४२ सालापासून. हळू हळू त्यात त्यांची आवड वाढत गेली. सुमारे दहा वर्षांत त्यांनी आपल्या शेतीचे स्वरूप पालटून टाकले. एखादा चमत्कार पहावा तसे त्यांच्या शेतीचे परिवर्तन पाहून लोकांना वाटू लागले. दूरदूरची माणसे त्यांचे सेलूचे व गहुलीचे शेत पहायला येऊ लागली.

१९५२-५३ साली जेव्हा भारतात दुष्काळाचे वातावरण निर्माण झाले तेव्हा तर अन्नधान्य समस्या हीच भारताची महान समस्या आहे हे त्यांच्या मनावर

पुन्हा ठसले. मात्र, या बिगट प्रसंगी भारताची शेती व शेतकरी हे आव्हान स्वीकारण्याच्या वावतीत मुळीच कमी पडणार नाहीत, प्रयत्न मात्र योग्य दिशेने केले पाहिजेत असा विचार ते आम्हा कार्यकर्त्यांपुढे मांडू लागले.

त्या काळापासूनच हळहळू त्यांनी आम्हा काँग्रेस कार्यकर्त्यांपुढे एक क्रांतिकारक विचार ठेवावयास सुरवात केली. ते म्हणाले, 'काँग्रेस कार्यकर्ता तोच की जो स्वतः २ ते ५ एकर जमीन ओलित करतो.'

विदर्भाच्या शेतीमधला एक महान दोष त्यांनी हेरला होता. शेवटच्या एका पावसाच्या अभावी किंवा अवेळी पाऊस पडल्याने शेतकऱ्यांचे वर्षभराचे कष्ट मातीमोल ठरतात. दुर्दैवाने निसर्गाच्या लहरीवरच शेतीचा संसार उभा केलेला असतो. निसर्गाची लहर अनेकदा दुर्दैवाने फिरते आणि आमचा शेतकरी फिरून कर्जाच्या चक्रात गुरफटत जातो. त्यामधून तो डोके वर काढूच शकत नाही.

या आपत्तीवर वसंतरावजींनी जो खरा उपाय काढला तो असा की, शेतकऱ्यांमध्ये ओलिताच्या पाठीमागे लागण्याची वृत्ती व धमक निर्माण केली पाहिजे. थोड्याशा अखेरच्या पाण्यासाठी निसर्गावर अवलंबून राहणे हा भोळेपणा आहे, मूर्खपणा आहे. त्याऐवजी जेव्हा पाणी मिळते तेव्हा थोडा साठा करून ठेवण्याचे कष्ट घेतले पाहिजेत. त्याकरिता प्रत्येक शेतकऱ्याने विहीर, गड्डे खणले पाहिजेत, छोटे बंधारे बांधले पाहिजेत.

हा विचार त्यावेळच्या विदर्भात क्रांतिकारक होता. शेतीला व शेतकऱ्यांना तो दुवा देणारा ठरणार होता. परंतु तो प्रत्यक्षात कसा येणार? त्याकरिता निष्ठावंत कार्यकर्ते हवेत. त्यांनी हा विचार स्वतः आचरणात आणून दाखवायला पाहिजे. एकदा ते घडले की मग सर्वसामान्य शेतकरी मागे राहणार नाही, असा वसंतरावजींचा विचार होता. शेतकऱ्यांच्या व्यवहारबुद्धीवर त्यांचा अतोनात विश्वास आहे. परंतु आपला शेतकरी परंपरेच्या शृंखलेत अडकून पडलेला असतो, त्यामुळे त्याला सहाय्याचा, सहकार्याचा हात हवा असतो.

काँग्रेस संघटनेमधील एकूण एक क्रियाशील सभासदांनी ओलिताचा मंत्र स्वतः आत्मसात करावा व त्यांनी आपल्या भागातील शेतकरी बंधूंना सहकार्याचा हात द्यावा असा हा कार्यक्रम वसंतरावजींनी विदर्भाच्या दौऱ्यात त्यावेळी गावोगावी पुढे मांडला व त्या विचाराला प्रतिसाद उत्तम मिळाला. विदर्भातील काँग्रेस संघटनेत त्या वर्षापासून नवे वारे निर्माण झाले, विदर्भाच्या शेतकऱ्याला नवा कार्यक्रम मिळाला असे वाटले व देशाला नवा संदेश देणारा नेता लाभला आहे असे अनेकांना वाटले.

वसंतरावजींच्या शेतीसंबंधीच्या नव्या दृष्टिकोनाचा स्वीकार केल्यामुळे विदर्भातील अनेक काँग्रेस कार्यकर्त्यांना आपल्या कार्यात अधिक सफलता व समाधान

लाभू लागले. चर्चा, व्याख्याने, परिषदा यामध्ये भाग घेणारा जुन्या छापाचा कार्यकर्ता मागे पडू लागला. स्वतःची शेती कष्टाने जो यशस्वी करून दाखवील तोच आदर्श कार्यकर्ता ठरू लागला.

त्यामुळेच आमच्या भागातल्या शेतीच्या व्यवसायाला व शेतकऱ्याला नवी प्रतिष्ठा लाभली. काँग्रेसचा मंत्री व कार्यकर्ता हा नव्या धर्तीची शेती करणारा प्रागतिक शेतकरी असतो असे दृश्य लोकांना पहावयास मिळू लागले व ते त्यांना आवडू लागले. विदर्भातील जी अनेक माणसे आपल्या शेतीवर स्वतः क्वचितच जात असत ती आता दररोज शेतावर जाऊन शेतीमध्ये रस घेऊ लागली. 'शेती हा सर्वात महत्त्वाचा उद्योगधंदा आहे व तो शास्त्रीय पद्धतीने केला तर अत्यंत भरभराटीचा होतो' हा नाईकसाहेबांचा संदेश सर्वांना अनुभवाने पटू लागला. स्वतःची उन्नती व देशभक्ती अशा दोन्ही बाबींचा संयोग शेती करण्यात होतो हा व्यवहारी मंत्र कार्यकर्त्यांनी आत्मसात केला. त्यामुळे नाईक साहेबांसारखी शेती आपणही करून दाखवावी अशी चुरस शेकडो गावांतून निर्माण झाली.

आज त्यांच्या ५३ व्या वाढदिवशी प्रसिद्ध होणाऱ्या गौरव ग्रंथात लिहावयाच्या या लेखाच्या निमित्ताने माझ्या या जुन्या आठवणी जागृत झाल्या आहेत. नागपूरच्या काँग्रेसच्या पूर्वीचे वसंतरावजींचे विचार नागपूर काँग्रेसमधील ठरावाच्या रूपाने देशाच्या कोनाकोपऱ्यात पोचले आणि कार्यक्रमाच्या दृष्टीने विदर्भामध्ये वद्धमूल झाले. त्यानंतर त्यांच्या विचाराचा प्रभाव प्रतिवर्षी वाढतच गेला आहे. गेल्या दोन वर्षांत महाराष्ट्रातील सर्व जिल्ह्यांमध्ये दौरे काढून कृषिकांतीचा नवा संदेश त्यांनी लहानात लहान खेड्यापर्यंत पोचविला आहे. त्यामुळे सारा महाराष्ट्र जागा झाल्याचे स्फूर्तिदायक दृश्य आपल्याला दिसत आहे.

इतकेच नव्हे तर वसंतरावजींच्या कृषिकांतीविषयक कार्यक्रमाचा प्रभाव केंद्र सरकारच्या घोरणावर व नियोजन मंडळाच्या विचारसरणीवर पडू लागला आहे हे सर्वांना माहितच आहे. परदेशी तज्ज्ञ निरीक्षकही त्यांच्या दूरदृष्टीची व व्यवहारी घोरणाची प्रशंसा करीत आहेत. वसंतरावजींच्या घोरणाचा अंगिकार देशात वाढत्या प्रमाणात होत राहो व भारताची अन्नधान्यविषयक लाचारी लवकर संपुष्टात येवो अशी प्रार्थना वसंतरावजींच्या ५३ व्या वाढदिवसाच्या निमित्ताने मी करीत आहे.



श्री गुरुदेव सेवाश्रम,
गुरुकुंज-आश्रम (अमरावती),
दिनांक १३-१०-६६

आजचे महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री ह्या नात्याने मी बोलत नसलो तरी वसंतराव नाईक हे बहुजन समाजाच्या हितासाठी बहुजन समाजाशी समरस होऊन कार्य करण्या-मध्ये आपले उभे आयुष्य त्यांनी घातले आहे. हे मी अनेक वर्ष त्यांच्या घराण्यापासून पहात आहे.

मागासलेला समाज शिक्षणाशिवाय उन्नत होणे शक्य नाही हे त्यांचे वडील अत्यंत वृद्धापकाली सुद्धा माझ्या जवळ डोळ्यांत पाणी आणून सांगताना मी पाहिले आहे. गरीब मजुरापासून तो सुशिक्षित माणसापर्यंत मित्रत्वाच्या नात्यांनी वागताना मी अनेकदा त्यांना पाहिले आहे.

आपल्या मुख्यमंत्री पदावरून वागताना त्यांच्या स्वभाव न थोडाही फरक झालेला मला आढळलेला नाही. त्यांचे चिंतन देशाच्या नवनिर्मित लोकां व लक्ष मजदूर व गरीब शेतकरी उन्नत होतील ह्याकडेच असते. ही विदर्भाची मायभूमी अशा अनेक रत्नांना प्रसवली आहे. त्याच इतिहासाची साक्ष पटविण्यासाठी स्वर्गीय श्री. कन्नमवारानंतर त्यांनीही लोकजनमनावर आपला वारसा उत्तम तऱ्हेने चालविला आहे.

मला त्यांच्या संपूर्ण चरित्राची माहिती नसली तरी शितावरून भाताची परीक्षा करण्यामध्ये जे अनेक सद्गुण आढळले त्यावरून मी हे सांगत आहे. त्याही पुढे या विशाल महाराष्ट्राच्या प्रगतीसाठी त्यांचे जीवन देशव्यापी होवो अशी त्यांच्या गौरवपत्रिकेला माझी शुभ-कामना आहे.

तुकड्यादास

MY OLD COLLEAGUE

B. A. Mandloi

His approach to many knotty problems has been judicious and practical. He possesses the courage of his convictions and has the strength to put them in practice.

Shri V. P. Naik was my colleague as Deputy Minister (Revenue) in old Madhya Pradesh in Ravishanker Shukla's Ministry till the formation of the new State of Madhya Pradesh, in November 1956. Thus we worked together for about 5 years and enjoyed the full confidence of our Chief Minister, the late Pt. R. S. Shukla. We continued to hold the important portfolio of Revenue for about 5 years. The old feudal systems of Malguzari, Zamindari and Ijardari had very recently come to an end in old Madhya Pradesh and on our assuming office as Minister and Deputy Minister we were confronted with various problems and we were anxious and keen to introduce various reforms in the revenue system for which there was a pressing and popular demand. In this task, my friend Shri Naik was of great help to me and in course of time we were successful in having an uniform Land Revenue Code for the whole of the Province incorporating therein many of the reforms suggested by the Planning Commission and thus giving protection to actual cultivators and landless persons.

In old Madhya Pradesh, there were three different Land Revenue systems with a set of different laws for different regions, i.e., for (1) Berar districts, (2) Merged States in Chatisgarh region and (3) rest of the Province. Our first task was to have a uniform Land Revenue Code. We were able to prepare the draft code and introduce the bill which was enacted into law after necessary amendments. I am happy to state that in this task we received

the guidance and blessings of our late Chief Minister. My friend Shri Naik, who himself is a successful agriculturist, has been in the know of genuine difficulties of cultivators and landless persons, made many important, useful and practical suggestions which were incorporated in the Code.

The next important problem for which there was a popular demand has been to put a ceiling on agricultural holdings and the Government was equally keen to pass necessary legislation at an early date. The M. P. Government appointed 'Land Reforms Committee' under the chairmanship of Revenue Minister and Shri Naik was a member of the Committee along with other members. After examining the distribution of agricultural lands in our Province and examining a large number of cultivators, the Committee made a tour of the other Provinces also to know how the problem was being tackled in other States. Extreme views prevailed on this knotty problem amongst the various sections of the public. A series of meetings were held from day to day and the Committee was able to present a near unanimous report on the subject to the Government. Shri Naik, though holding radical views on the subject, yet, I am glad to say that his approach to this subject was always practical and useful.

The other important problem after the termination of intermediaries has been the rural agricultural financing and credit facilities in general and to small holders of land in particular. On our request, the Government appointed "Taccavi Policy Committee."

We were strongly of the opinion that the agricultural financing should not be the responsibility of Government as it tends to create relation of creditor and debtor between the Government and the Ryot which is not desirable. The only practical and proper solution of the problem is to create a spirit of cooperation and faith in the cooperative movement. The responsibility of the Government should be confined only to help the Ryot in times of distress and natural calamities. The rural financing should be canalised through the cooperative movement. I am glad that the recommendation of the Committee has been accepted by the Government. Bulk of the rural financing is now carried on through the agency of co-operatives which has created an awakening in the rural areas and has contributed to the material prosperity of the agriculturists.

On account of the impending re-distribution of Provinces, the necessary legislation with respect to ceiling on agricultural holding could not be passed in old Madhya Pradesh. I am, however, glad to state that in new Madhya Pradesh, the ceiling law of agricultural holdings has been passed, based mainly on the report of the Land Reforms Committee and with the general approval of the Planning Commission.

My long association with Shri Naik as a friend and a colleague has been very happy and cordial. I always found that his approach for solution of many knotty problems has been judicious and practical. He possesses the courage of his convictions and has the strength to put them in practice.

He is an ardent social reformer and has proved a sound administrator and has faith in democratic socialism. Above all he possesses a fine spirit of working in cooperation with colleagues. He has risen to the high office on account of his many fine and good qualities.

I wish him many happy returns and future success and happiness.



WIELDER OF POWER BY PERSUASION

Dr. Rafiq Zakaria

He is not only a democrat but also a humanitarian. He likes to be good to all, even to his known opponents.

Before I became a member of the Maharashtra State Legislative Council in May, 1960, I had not known Mr. V. P. Naik. I have had a glimpse of him, here and there, on some special occasions but there was no personal relationship. True, he was one of the most able and likeable colleagues of Mr. Y. B. Chavan, the then Chief Minister of Maharashtra, and had begun to charm the public in Bombay mainly by his sophisticated appearance. He used to be much better dressed then, more immaculate and elegant; but then, as now, he carries himself with tremendous grace and dignity and has very pleasing manners.

My earliest recollection of Mr. Naik was after the general election of 1957 when his election to the State Legislative Assembly was one of the earliest to be announced. He had won his seat by a thumping majority of about 25,000 votes, thus creating great hopes for Congress victory in the State, which seemed rather doubtful in the charged atmosphere created by the popular Samyukta Maharashtra movement. In Vidarbha and Marathwada these hopes were no doubt fulfilled but in Western Maharashtra, there was almost a rout of the Congress candidates with the result that the Congress Party just managed to retain power. In the months that followed Shri Chavan had a hard and bitter fight to put up with to counteract the mounting opposition to the running of the bilingual State of Bombay; in that task he found in Mr. Naik a trusted, sober and responsible lieutenant. He held then the important portfolio of Agriculture and put in herculean efforts

to improve the lot of the agriculturists in the State and win them over to the new Congress leadership as embodied by Mr. Chavan. It was also at this time that he paid a visit to China and studied at first hand the methods adopted by the Communist leadership to reorganize the agricultural structure in that country.

On the formation of the State of Maharashtra, Mr. Naik became the Revenue Minister and it was in that capacity that I came in close contact with him.

As the Chief Whip of the Congress Party in the Council, I had to rush to him often for work connected with the Council and I always found him courteous and helpful; it was a pleasure to work with him and to be guided by him. He is never domineering ; never interfering ; never gets ruffled; and allows the maximum of freedom of action to his colleagues. I also sat with him in the Joint Select Committee meetings on the controversial Land Ceilings Bill and admired both his patience with and tolerance of the opposition. He would spend hours trying to bring the members of the opposition to his point of view and would show no sign of irritation in the face of all the obstinacy that they displayed. Many of us would feel tired and exhausted but Mr. Naik would persevere till the last. He believes passionately in the good of winning over opponents; to him it is a sign of successful leadership.

Another of his great traits is his spirit of accommodation. I remember the day, when I took him to Bhiwandi, a place thirty miles away from Bombay for presiding over a function. I was told by some of my friends that it would be a big gathering. However, when we reached the place there were not even ten persons. Some one had obviously blundered. I felt ashamed but there was no trace of any annoyance on Mr. Naik's part. He waited for some more persons to come and went through the function, as if nothing untoward had happened. When I tried to apologise he just smiled and said that it was quite understandable. Ever since, I have wondered at the infinite capacity of the man to maintain his equilibrium in any situation; nothing irritates him and nothing unnerves him. He is calm as still water and sometimes deliberately unresponsive. It is difficult to provoke the Chief Minister; I would not like to recount the occasions but there have been many such in his life, when even friends and colleagues did

not hesitate to take undue advantage of his gentlemanliness and put him in embarrassing situations. But so great is his capacity, patience and tolerance that he has swallowed many a time the poison of personal hurt in order to serve the larger political interest, as he saw it.

The ability and courage that he showed in facing the conditions of drought in Maharashtra last year have earned him universal praise; from the peasant in the field to the Secretary of Agriculture in the United States his mastery of this problem is gratefully acknowledged. He knows the pangs and sufferings of the peasantry in India intimately and has provided lasting solutions for tackling them.

Similarly, his broad humanism is a part of his being; he is above all sectarian or communal considerations. He is not only a democrat but also a humanitarian, who is devoted to the largest good of the largest number. He likes to be good to all ; even against his known opponents, he rarely speaks, unless compelled to do so on some rarest possible occasions. A gentleman to his finger tips, Mr. Naik has carved out a place for himself in the hearts of the millions of people in the State of Maharashtra, over which he has presided with such distinction during one of the most critical periods in its long and chequered history.



A LEVEL-HEADED ADMINISTRATOR

Radhakrishna R. Ruia

The burden of responsibility that has fallen upon him is staggering and yet, he is calm and unperturbed. He is always pleasant and persuasive.

The problems presented by any developing country are enormous. This is particularly so in the case of India, which is faced with the stupendous task of ensuring the defence of her frontiers at the same time as she strives for her economic development. Ours is a country of continental size with a large and growing population which should be provided not only with the basic necessities of life but also with the decencies of life. That indeed is the aim of our five-year plans. Besides, we have to reckon with our two hostile neighbours in dealing with whom we should not only remember that the price of liberty is eternal vigilance, but also strengthen our defence at any cost. India has thus to accept the challenge of development and defence at the same time.

In this mighty task, Maharashtra has played and will continue to play an important part. With its excellent martial traditions, its contribution to the national defence services has indeed been impressive. In the domain of economic growth, which is as necessary as the organisation of defence, its role has been equally impressive. Though industrially advanced, Maharashtra is still essentially an agricultural State. Since his assumption of the Chief Ministership of the State in December 1963, Mr. Vasant Naik has been making earnest efforts to promote its agricultural growth so that it may become self-sufficient soon in its requirements of foodgrains and industrial raw materials. Mr. Naik was probably the first among the Chief Ministers to realise the importance of agriculture

to the Indian economy and to formulate his policies on the basis of that conviction.

Mr. Naik is most competent to speak on agriculture and allied subjects. Though a lawyer by training, he is by birth, upbringing and outlook a peasant. He has lived and laboured among the agricultural class and is fully conversant with its problems. He is convinced that India can become self-sufficient in foodgrains and in such essential raw materials as cotton and has set out to prove this by galvanizing the farm economy of his own State.

Every encouragement is being given to the agriculturist in Maharashtra to raise the acre yield by making fertilisers, improved seed and plant protection appliances readily available to him. He is also helped to secure assured supplies of water for his fields, wherever possible. Maharashtra is well-served by great rivers like the Tapi, Godavari, Bhima, Krishna, Wardha and Vainganga and their tributaries, but river water cannot reach the farm lands in all parts of the State. So, the agriculturist is encouraged to conserve every drop of water derived from rain and from ponds and tanks. He is induced to adopt bunding and lift irrigation on an extensive scale.

Mr. Naik holds that, besides helping the farmer to change over to modern agricultural practices, he should be offered an attractive remuneration for his produce. A fair return for the labour of the tiller of the soil will, Mr. Naik is convinced, enthruse him to exert himself to the utmost to solve the country's food problem. It is precisely because he has given effect to this policy in his own State that he is so confident about the ability of Maharashtra to become self-reliant before long in the matter of its foodgrain requirements.

The late Mr. Jawaharlal Nehru was deeply impressed with Mr. Naik's pragmatic approach to the food problem and invariably consulted him on that and allied subjects. His successor in office, Mr. Lal Bahadur Shastri did likewise. In fact, the agricultural policy of Maharashtra has served as a model to many States. Mr. Naik, the formulator of this policy, is equally interested in galvanizing the rural economy by other means. Generous State aid is being given to the traditional cottage and handicraft enterprises in

the villages. Small-scale industries also receive the Government's support so that the rural population may be gainfully employed in its own environment.

Apart from his responsibilities as Chief Minister, embracing the entire government of the State, Mr. Naik takes deep interest in industry. Maharashtra stands pre-eminent in this sector of the national economy and we may confidently look forward to its going from strength to strength in that direction under his fostering care.

Mr. Naik is no less keen on promoting the welfare of the working class. When, on behalf of the textile industry, we approached him for help in building a stadium for the industrial workers in Greater Bombay, he gave it to us in full measure. Thanks to his good offices, a convenient site for the stadium was secured from the Bombay Municipal Corporation. Mr. Naik is interested in the well-being of the workers in many other ways.

I have felt called upon to make these observations because we have at the helm of affairs a Chief Minister who has all the attributes of a statesman. He does not spare himself. His industry is indeed amazing. He works every day of the week from 9 A.M. to 1 A.M. Even so, he is always good tempered and soft-spoken. The burden of responsibility that has fallen upon him, especially at this juncture, is staggering and yet he is calm and unperturbed. He is always pleasant and persuasive and has never been harsh either in word or deed. His mental equipoise is indeed remarkable. He adds to this rare quality a quiet competence which greatly helps him to take quick and right decisions even on the most momentous issues. I do not want to smother Mr. Vasant Naik with superlative praise, but I do wish to take this opportunity of wishing him a long and active life so that he may continue to serve the State and the country with characteristic wisdom and moderation. A progressive and prosperous Maharashtra will undoubtedly be an asset to the country as a whole.



COURAGEOUS AND REALISTIC

S. L. Kirloskar

I think Vasantao's personality can be summed up in the two loves he has : the good earth he loves and the author he likes most. . . .Dale Carnegie.

In the confused atmosphere of self-righteous smugness in our politics, Vasantao Naik brought the earthly feeling and thinking of a farmer. I have dealt with farmers all my life and my experience has taught me that the farmer is one of the shrewdest individuals in our society. His feet and his thinking are firm on the ground and as he grows and lives, he takes his roots deeper and is firmer in his earthly sense.

Vasantao loves the good earth and has drawn his wisdom from it. He is a successful farmer and it does mean a good deal to me. You cannot feed the earth with either platitudes or moralising (our exclusive products in the international field and also at home) because the earth does not respond to such a diet. The farmer, therefore, thinks of work and crops, and costs and believe me, also of profits.

One of the most profitable contribution Vasantao made to our State is the freedom he gave to officers in the administration of our state. The administrator, according to my experience, is a man tied to the procedures without thinking of the purpose for which actions are initiated. By giving him the freedom to take action and also make mistakes in the course of his duties, Vasantao has turned his face to the purpose and made him take decisions.

He also brought a new desirable trait in the administration. His instructions are clear and the objectives are well-defined and

understood by men who carry out the instructions. As a businessman, I admire this change because, in business, confusion is a luxury your shareholders do not allow. The administration tends to pick up the evil habit and get wrapped up in the resultant confusion for which the citizens pay. I think by trying to come out of this cobweb, Vasantryao has rendered a valuable service to our State.

I admire the courage he showed in relaxing the rigid rules of our prohibition policy. It was a bold step and much against the wishes of those who are high in the Congress organisation.

I also admire his frankness and earthly wisdom in declaring that the farmer is a businessman and in order to keep his business going, he must earn reasonable profits. He got the Government to assure the farmer a floor price for his grain, in order to motivate him to farm better and earn more.

As a businessman and an engineer, I am a firm believer in the freedom of man to pursue his profession and demand a price for his ability, his skills and quality of his work and product can command. I apply the same principle to a farmer and therefore I admire Vasantryao's wisdom in backing the farmer to earn better price for his product.

I also believe in human ingenuity. That is one faculty which has brought more progress to human society than anything else. The other day a friend played a tape on which I heard our Chief Minister talking of such plans as the formation of a 'Water Grid' for the thirsty earth in Maharashtra. It may sound unconventional ...but then, the human society was always led by the unconventional and the rebels, with conformists toeing their line, no doubt, after a fairly long time.

On many problems, I hold different views than those of Vasantryao. But that does not diminish my appreciation for his abilities and the great burden he carries. It is heavy and full of complex factors. Even the most rational man can find the job trying. I am not in politics and never regretted not being in it. Vasantryao is in it a long time and as far as I can see, is well set to be in it a long time to come.

But basically he is a social worker. He has the traits still. He has the obstinacy...an earthly quality which the good earth gives

her sons...and also the sympathy. He reveals both. He married outside his caste and even though his father promptly disinherited him, stuck to his decision. In the end he won and held both, the woman he loved and the heart of his father.

I think Vasantao's personality can be summed up in the two loves he has. The good earth which he loves and the author he likes most...Dale Carnegie. He brought a new approach to farming in our State and in the administration, he is trying to teach the value of winning friends and influencing people.

At fifty-three, Vasantao is young. I wish him all the success.



A BORN LEADER

Dayanand Bandodkar

The arduous duties of a Chief Minister of one of the biggest States of the Indian Union has not dimmed his zest for a rich and varied life.

Maharashtra's soft-spoken, polished and superb Chief Minister is undoubtedly a tremendous asset. I have had the good fortune to have met him when he was the Revenue Minister in that State. He stayed with me for nearly a week. I had thus a good opportunity to have a close glimpse of my dear friend in his most informal moments.

Vasantrao, I observed, was a pure product of the soil and looked around him through the simple eyes of a farmer. Himself a cultivator, in a sense, he was greatly concerned about the masses of men and women, behind the plough who feed us all. I noticed that he was restless about the vagaries of the weather and looked up at the skies with the frequency and pining of the farmer in the field. I also noticed, as did Shri Y. B. Chavan, our Defence Minister, this particular trait and was indeed happy. The Defence Minister had jocularly remarked recently that even if someone were to sprinkle a few drops of water on Maharashtra's Chief Minister when he was asleep he would get up shouting "Rains! Rains!" I think this is a wonderful compliment and sums up his great and humane personality.

I said humane because, as Revenue Minister, he vigorously pushed ahead a vast variety of agricultural reforms, the tenancy legislation, land for the tiller, democratic decentralisation and other agrarian reforms of far-reaching consequence. These have been beacon lights for many States. Our late and lamented Prime

Minister Pandit Jawaharlal Nehru was tremendously fascinated by the vast and extensive bunding work that was done in Maharashtra during Shri Vasant Rao Naik's regime. Naturally, the State came in for very high compliments from the late Prime Minister for this excellent innovation.

Bunding has now taken deep roots in Maharashtra, thanks to Vasant Rao Naik and it is spreading outside the State also. What I appreciate most in him is that, he is not a tub-thumping orator, talking year in and year out, but he is a practical social worker who speaks less and does more concrete work. It would be difficult to find others who have done so much for so many in so short a time. A farmer loves harmony all around and being born one, Vasant Rao loves it intensely. That is why, perhaps, he has, with sweet reasonableness, travelled the arduous path, taking with him the Opposition in his stride. On many momentous and controversial issues, he has unhesitatingly taken the counsel of his party and the views of the Opposition and he has always come out with flying colours. I liked to watch him, calmly smoking his pipe, and undisturbed, solving many a tangled problem of the premier State in India. Nothing ruffled him. Taking over as Chief Minister at a critical juncture, he has piloted the destiny of the State and has firmly laid the foundation of a prosperous Maharashtra.

Vasant Rao Naik surely has the makings of a born leader, sprung as he did from the very masses and with an agrarian backdrop. But the arduous duties of a Chief Minister of one of the biggest States of the Union has not dimmed his zest for a rich and varied life. A keen shikari, I observed him sometimes, knocking off a dangerous bison, at other, a terrific drive to the onside on the occasion of a small-savings cricket match. At fiftythree, Vasant Rao Naik displays energy of one who is but thirtyfive !

I heartily congratulate and felicitate him on his 53rd birthday and wish him a long and eventful life so that the generations to come in India and in Maharashtra will ever remember with gratitude, what a colossus, the simple village of Gahuli in the Yeotmal District has offered to us all !



A TRUE DEMOCRAT

Homi J. H. Taleyarkhan

He is as much at home in the forest and the field as he is in the Cabinet or in a conference room.

Shri Vasant Rao Naik, Chief Minister of Maharashtra, is a leader who is known for his unruffled nature and for his strength of character. He has steered the State with great courage and dexterity in a difficult period and by his own intimate knowledge of agricultural methods has pulled out Maharashtra from a very serious food situation. His tact has been responsible for the solution of many problems and his firmness has shown that he knows that if a democracy is to succeed, it also requires discipline of attitude and behaviour.

His unassumingness is another trait which is greatly to be admired and however powerful his authority he has never sought to make a show or a parade of it.

Difficulties do not deter him. He has been quietly effective and determined in the implementation of the decisions once taken. He has kept the Cabinet working as one team and has been responsible for many of the beneficial schemes that have helped to improve the lot and the condition of the people of Maharashtra.

He has been held in the highest esteem in Delhi and greatly respected for his views, not only on agricultural policies but also on others.

Maintaining an admirable balance of views as he does, he has the knack of satisfying the largest number of people though naturally it is not possible to please one and all. He can do this because

though he is penetrating in his insight, he shows understanding in approach to problems.

In spite of his very heavy and multifarious duties as Chief Minister, Vasant Rao Naik is a very devoted husband and a very loving father. His other keen interest is in shikar. He is not only a sure shot but a very bold hunter sometimes to the point of being reckless regarding his personal safety.

He is as much at home in the forest and the field as he is in the Cabinet or in a conference room. Whether he is dealing with the man in the street or leaders of the nation, he is his same unruffled, reticent self, flexible but unflinching, persuasive but persistent, vigorous but not vociferous, courageous to the hilt but without bravado in the least.

Such is the stuff leaders are made of. All of us who know him so intimately for years, have come to appreciate these qualities in a man who weaves patterns of progress out of the very smoke-screen of inscrutability in which the smoke from his pipe, his constant companion, gives the impression of shrouding a personality, at once as outstanding as he is outspoken.



A GENTLEMAN TO THE FINGER TIPS

Anant Gopal Sheorey

I recall him as a quiet, modest, unassuming student who came from Pusad. I am happy to offer these felicitations not to a politician or a Chief Minister but to a gentleman and—a friend.

My first remembrance of Vasantryo Naik dates back to our college days. We both are old Morrisians, i.e. students of the Morris College which is now renamed as Nagpur Mahavidyalaya. Vasantryo was junior to me by a couple of years. I recall him as a quiet, modest, unassuming student who came from Pusad. It is almost on the outskirts of Yeotmal District bordering on the old Hyderabad State. The small progressive tahsil town assumed great significance when the Razakars in the old dominions of the Nizam were creating trouble and Sardar Vallabhbhai Patel, the then Home Minister of India was contemplating some kind of police action to bring the trouble under control.

Vasantryo comes from a forward-looking family of peasants. He has roots deep into the soil. That has given him a realistic and pragmatic outlook which never indulges in vague doctrinaire theories. His feet are always firm on the ground. He is far from sophistication and has a simplicity and open-heartedness of a typical Indian kisan.

Romance came to Vasantryo when he was in college. I happened to know something about it because his wife, Vatsalabai, is an intimate friend of a cousin of mine. She and Vatsalabai were teachers in the same girls' school. It was an inter-caste wedding and therefore, naturally, it did attract some curiosity and pleasant and friendly notice. His marriage has been a very

happy one and I have noticed that Vatsalabai has contributed a great deal to the happiness and success of Vasantrya Naik.

Later, I remember Vasantrya taking part in politics, particularly after the post-independence era. Though I have never taken any active interest in politics, at that time, I was in intimate touch with powers that be, and on account of my good impression about Vasantrya I thought it would be desirable that he came closer to the inner circle of political policy-makers. He soon made his headway and came into the old Madhya Pradesh Assembly as a member and was later on taken as a Deputy Minister in the Shukla Ministry.

Then there was the phase of our indirect association when, after the crisis created by Pandit D. P. Misra's resignation from the Congress in 1951, my distance from the nucleus of political power grew wide and I drifted farther away from politics and political personalities. But I was happy that Vasantrya continued to enjoy the confidence of those in power and that he was steadily building up his political position.

At that time the main link between him and me was through our daughters who were schoolmates. Our family relations continued to be maintained through this pleasant link.

I remember that when Vasantrya's daughter died under very tragic circumstances, I had felt a stab in my heart because by her association with my daughter, and my consequent emotional attachment to her, I could very well imagine the grief which a loving father could feel at the tragedy. I immediately wrote him a personal letter in my own handwriting, consoling him and telling him about my emotional involvement with his sorrow and that I stood by him in spirit if not in person. We always had a perfect personal understanding which had nothing whatsoever to do with politics.

My meetings with Vasantrya are very few and far between. Sometimes years passed without our seeing each other. His sphere of activity was politics while I drifted miles and miles away from it. My experience of politics has not been very happy. I have often found that even intimate personal friendships with politicians sometimes became vitiated because the politician fails to forget that he is a politician. He finds it difficult to rise above the political compulsions of his situation. And when I see that factor showing

its head on the stage, I feel it creating a benumbing effect on my sensitivity. Somehow, I am not given to political bargaining and give and take, and somehow, a politician, howsoever cultured and refined streak of nature he might possess, cannot absolutely forget that spirit of bargaining. Being essentially a man interested in the pursuit of literature and cultural renaissance, I react more easily to human approach rather than political approach. And, therefore, personal and intimate friendships with politicians which were capable of yielding handsome political dividends passed by my life leaving me unaffected and indifferent.

But my friendship with Vasantryao, if I may describe my relationship with him that way, was never political. Vasantryao has never behaved with me as a politician. He is essentially human, basically a person of healthy propensities. There is no deceit or mental reservation or intellectual machinations in him. He is a straightforward simple-hearted man who is incapable of doing harm to anybody. If at all he can, he will try to do good to others. He is a gentleman to the finger-tips. I like him because he is so likeable.

It was only the other day that I said in my presidential public speech at which Vasantryao was present—it was the inaugural function of a news service—that Vasantryao was a true democrat who believes in the freedom of the Press as a value. I publicly complimented him on the tolerant and liberal policy of his government towards the Press. Certain sections of the Press do sometimes cross the proper limits and yet his government has been reluctant to take any action. Rather, it dislikes to be required to do so. Mostly it is totally indifferent to what newspapers write. This indeed augurs well for a free society and government by free discussion, which, democracy undoubtedly is.

Vasantryao Naik reacts to public opinion. He is responsive to the opposition also. He does not have the hardened ego of the politician to make him assert dogmatically that he is always in the right. He is humble enough to admit his mistake if he feels he has committed one and apologises publicly for it. I remember the handsome apology he offered to the Legislature when his visit to Yugoslavia and return by the steamer of a private shipping company was

criticised on the floor of the House. He is not afraid to stoop and he generally conquers by his stooping.

I am some times surprised at the rapid political rise of Vasant Rao Naik. He had, so far as I know, never been to prison and does not belong to the old Gandhian group. Perhaps he was too young to do so. He does not possess the rugged ruthlessness of a hard-boiled politician nor the clever art of manipulation and wire-pulling which result in political pulls and pressures. And yet he could, within the short span of 17 years, rise from a humble Congress worker, to the Chief Ministership of a premier State like Maharashtra with Bombay as its centre of activity. It is rare that simple goodness and sincerity triumph in politics. Vasant Rao's success seems to be an exception to the rule. It also holds a hope and good augury for the future. If men like him can make a headway in the present political set-up which is deteriorating fast, it can provide a ray of hope to the view that goodness can also sometimes succeed.

I knew that by his soft and gentle nature, by his unassuming loyalty, he had won the confidence of Pandit Jawaharlal Nehru and, of course, Lal Bahadur Shastriji was very fond of him. I think, he has, comparatively speaking, very few enemies. I know that he is an admirer of Dale Carnegie. His best-seller book "How to Win Friends and Influence People" has impressed him. Perhaps he does not know, that, I too had studied Dale Carnegie a great deal during my prison days. Why, I even conducted study groups in jail on the basis of that book ! I know that Dale Carnegie has been criticised by some people as a superficial writer who has dramatised the science of living in over-simplified mechanical formulas. But he has done a tremendous service to society by underlining the importance of regard and consideration for the feelings of others as an essential cultural virtue. I have no doubt that Vasant Rao imbibes this virtue to a great extent.

I am glad to be able to contribute this small article to the Gaurav Granth which is being published in connection with his birthday.

I am happy to offer these felicitations—not to a politician or a Chief Minister, but to a gentleman and—a friend.



INSPIRING LEADERSHIP

Ramnath A. Podar

His zeal for bringing about an improvement in the States's agriculture and bettering the lot of the rural population has not come in the way of his recognising the need to step up the rate of the industrial growth in the State.

It is in the fitness of things that the 53rd birthday of our popular Chief Minister, Shri Vasant Rao Naik, who has made a substantial contribution to the building up of a strong, united and progressive Maharashtra, is being celebrated in a befitting manner and the Gaurav Grantha Committee, which is specially constituted, has decided to publish a Gaurav Granth in commemoration of his many-sided services to the nation in various spheres of activity.

Everybody in the State of Maharashtra knows about the life of Shri Vasant Rao and his many achievements. Vidarbha has given to the nation some eminent politicians and administrators and Shri Vasant Rao is one of them. His has been a life of dedication and selfless service to the nation. He started his life as a social worker right from his school days and worked ceaselessly for social reforms in various directions. He made a slow and steady beginning with a concentrated effort for the all-round progress of the village in which he was born. Gradually he extended his sphere of activities. He took part in politics by joining the Indian National Congress, contested civic elections and became President of the Pusad Municipal Committee from 1946 till he assumed office as Deputy Minister in the Government of the then State of Madhya Pradesh. Even during his Municipal Presidentship, Vasant Rao made a special contribution to the activities of the Municipality; it was due to his untiring effort and enthusiasm that a primary school was reorganised

into a model primary school as also the Bapu Balak Mandir which was established on the Montessori system of children's education. The ardent love and zeal which Shri Vasantryao exhibited for social work and public activity in his early days paved the way for the higher and higher positions he subsequently held in the public and administrative spheres.

What is the secret of Shri Vasantryao's success in life ? As already pointed out, he has risen to important positions in public life and achieved a great deal of success. This has been due to his qualities of head and heart. He believes in perseverance and steady application. To him practice is better than precept. He has proved by his own example that a person can attain success in life by dint of hard work and merit. He is of the opinion that whatever work is taken in hand should be done in the best possible manner. He is a man with a quick grasp. His another characteristic is modesty. The success which he has attained in life has not changed his sociable nature. Though highly intelligent and individualist, he is always ready to mix up with others and share their views and ideas on various problems. This quality of his has been seen in abundance during his tenure as Chief Minister of Maharashtra. He has tried to enlist the support and cooperation of all sections of people in the task of bringing about socio-economic advancement of this premier State in India. He has inspired confidence in them about his ability to take the State forward in its march towards progress and this has made his task and the task of Government easy. Truly, the State of Maharashtra, which is in the vanguard of the country's progress in several directions, is fortunate in having a man of the calibre of Vasantryao at the helm of its affairs and benefit from his inspiring leadership. He has not only maintained but also enriched the traditions which were set by his predecessors in office. Shri Vasantryao is a good judge of men and matters and is anxious to make use of the various persons for the right jobs. He believes in public cooperation which, according to him, is very essential for making progress on the right lines. He is a friend, philosopher and guide of the down-trodden. He champions their cause at any cost. He has sympathies for the poorer sections of the community and considers no sacrifice too great for improving their lot. I had the privilege of playing host to our beloved Chief Minister when he happened to be in Jaipur for the Session of the Congress

which was held there recently. I had opportunities of coming into close contact with him on that occasion and got sufficient evidence of the qualities of head and heart he possesses.

In economic matters, agriculture is his first love. Born in an agricultural family, he himself has plenty of experience of this primary economic pursuit. When he speaks about agriculture, he speaks with experience and knowledge. He has all the while laid stress on the development of agriculture of this State and this is rightly so. If India is to make economic advance, it must be based on development of agriculture; it is the basis of our economic progress. Agricultural development also means improvement of the lot of our rural population which forms the majority of the population of the country. The State of Maharashtra has benefitted and will further benefit from the accent which Shri Vasant-rao has been laying on agricultural development of the State. To him, it is a sore point that a premier State like Maharashtra, which is first and foremost among Indian States in so many other respects, should lag behind in the agricultural sphere. Ever since therefore, he assumed the office of the Chief Minister of the State, he has initiated various steps to improve the State's agriculture and particularly its food production. I have no doubt that under his inspiring leadership the State will make rapid strides in regard to agriculture.

One cannot lose sight of one important aspect of Shri Vasant-rao's administrative career. He is a great believer in decentralisation of power and is the principal architect of the new administrative system which is in force in the State at the District level, viz. Panchayat Raj. He has conceived it as a means of educating the rural population in the art of Government and he sincerely believes that it will give the people in the country-side an opportunity to solve their own problems according to their requirements. The Panchayat Raj is thus an important contribution of Vasant-rao to the State's administrative set-up.

His zeal for bringing about an improvement in the State's agriculture and bettering the lot of the rural population has not come in the way of his recognising the need to step up the rate of industrial growth of the State and he has always viewed with sympathy and concern the various problems and difficulties which are experienced by various industries and brought to his notice. He

himself is holding the portfolio of Industries in the Maharashtra Cabinet and takes keen interest in understanding the State's industrial problems. An important point which has loomed large in discussions about the prospect of further industrial development of the State is that arising from the imbalance in the levels of development in the rural and urban areas and in the developed and underdeveloped areas. The Government of Maharashtra has already shown awareness of this problem and the need to tackle it effectively. In 1964, package incentives were offered for shifting industrial enterprises into the industrially backward areas. It is a patent fact that these incentives have not yet yielded the desired results which were anticipated. Shri Vasant Rao is aware of the situation and has recognised the need to do something more to arrest the irresistible pull of industries towards the developed urban centres and to bring about a proper spread and dispersal of industries over the State.

As we have already seen, Shri Vasant Rao believes in cooperation from all persons concerned in any task that is undertaken. In the industrial sphere, therefore, he seeks the cooperation and assistance of the industrialists and businessmen. He has faith in the capacity and willingness of the entrepreneurs of the State to accelerate the pace of industrial development of the State. The understanding which has been subsisting between our successive Chief Ministers and the entrepreneurial class in the State is a happy augury for speeding up the rate of industrial progress of the State.

In Shri Vasant Rao, we have an eminent personality at the helm of affairs of the State, possessing qualities both of head and heart and I am sure, under his inspiring leadership, the State of Maharashtra will make rapid strides towards progress in various directions.



MEET THE MAN

Pratapsinh Shoorji Vallabhdass

At business conferences, he displays an accurate grasp of the subject ; he is armed with statistics and at the end of a serious meeting, disarms you with his wit.

I have had several occasions to meet Shri Vasant Rao P. Naik at business conferences as well as at social gatherings and elsewhere. Every occasion calls forth special traits from Shri Naik. At business conferences he displays an accurate grasp of the subject, he is armed with statistics and at the end of a serious meeting disarms you with his wit. You listen to him and you will find his arguments strong and convincing. It is not the first impression of his talk. Even when one recapitulates what he has said, the first impressions get confirmed.

All the time he is calm, cool and collected. He transmits to the conference his own confidence. One may attend with doubts in his mind, but he would drive those doubts out by submitting hard facts. Facts, figures and statistics may not always be available or relevant to the context, but still he transmits to others his own confidence.

Take his recent statement on the problem of evacuation from Bombay due to want of water supply. His message is—*Do not be scared*. Know the high ability of the man, the public would heave a sigh of relief, because the newspapers have given prominence to the subject of evacuation. This probability had made a large section gloomy. The four-word message would be a magic to soothe feelings and restore equilibrium.

There are several traits in his character. Next to inspiring confidence, one has to admire his forthright speech. He believes

in nailing facts. His information is that the disturbances by rail computers are not haphazard and thoughtless acts of an irritated crowd. He calls it a "well-planned scheme" and adds, "There is something deeper and some people are at the back of it." Just as his statements inspire confidence, this forthright statement should instil fear in the hearts of the wrong-doers. There is no doubt that his Government will deal efficiently with the situation.

While talking of zeal and efficiency, let us have a look at his policy to tide over the difficult food situation in the State. He wants official and non-official agencies to work with missionary zeal. He emphasises that food procurement and its distribution was as important as stepping up of production. He exhorts that food must reach the farthest corner of the State and none should starve. He has advised the Collectors to ignore routine procedure if it hindered proper food distribution, under intimation to Government.

He has outlined short-term and long-term measures with a thoroughness all his own. He has chalked out the following :—

- (1) 2 lakh acres to be placed under Taichung Native I paddy.
- (2) 1 lakh acres under Soura Mexican wheat
- (3) 1½ lakh acres under Jowar
- (4) 2 lakh acres under Maize.
- (5) 1 lakh acres under Hybrid Bajri.

Along with chalking the programme, he has taken care to see that fertilisers and insecticides are made available in sufficient quantities from the Central Government.

He has ordered 75,000 acres to be placed under parent seed, and it is expected that Taichung and Soura wheat seed would help to cover larger acreage up to one crore acres during 1967-68, and he hopes that if the seasons are good and agriculturists, Zilla Parishads and all their officials act in good team spirit, there would be no reason why the State should not be able to wipe out the food deficit by 1967-68. This is one of the instances of foresight and hope based on concrete work.

On the auspicious occasion of the celebration of the Maharashtra Day, he expressed his appreciation of the good role the farmers

in Maharashtra played in bringing additional land under cultivation and substantially increasing the area under double-cropping. Referring to the Pakistani aggression and the conditions of drought, he congratulated the farmers of Maharashtra for rising like one man to increase food production by bringing extensive areas under rabbi food crops by tapping every water source. These efforts earned a well-deserved compliment from our Prime Minister also.

Shri Naik is equally concerned about the welfare of workers. Speaking at a function organised by the Mukesh Textile Mills Employees Union, he observed that it had always been the endeavour of the State Government to provide sufficient labour incentives and to maintain the dignity of labour, and at the same time to avoid such matters as would create displeasure among them and result in creating the most undesirable sense of defeatism and lack of confidence in their minds. He advised them to refrain from going on strikes and thereby putting the country to a loss, because producing as much as we could was the *imperative need of the day*.

The humanitarian aspect of his life becomes evident when he pleads for the liquor addict to be treated as a patient rather than an offender. He opines—“We cannot expect an addict to change his long-pursued habit in a day only because the provisions of law demand it.” His Government had carried out some changes in prohibition law with a view to check the production and traffic of illicit liquor. The rationalised policy had helped to curb illicit liquor traffic to a great extent. His Government stood by the policy of prohibition.

On the question of devaluation, Shri Naik holds that it was the duty of everyone to see to it that the national prestige did not suffer. He exhorted the people to back the decision of devaluation with courage and take the maximum advantage of the opportunity it offered. Devaluation was the only solution to solve the economic problems faced by the country. The country had come to a stage when further progress was impossible without earning more foreign exchange. His calculations are that Maharashtra could earn foreign exchange worth Rs. 100 crores by increasing the export of plantains and cashewnuts. He emphasised the decision of his Government to take all steps to hold the price line.

An appreciation of Vasantnao Naik would be incomplete without a reference to the great qualities of head and heart of Shrimati Vatsalabai who has been his constant companion in his public activities and a social worker of repute in her own right.

A reference to his son Avinash would not be out of place. By his pluck and courage he saved the life of a drowning man at great personal risk. His parents are an honour to him and he has proved himself an honour to them.

A quotation from the Chief Minister's Republic Day message would bear repetition : He said—

“The tasks before us, especially on the food front and the economic front, are by no means easy, and we shall have to put all our energies to all the heavy tasks that face us. We have also to be vigilant in matters of defence of our country. I have full confidence that the people of our country whose unity and strength have always been in ample evidence at all crucial times, will never lag behind. On this auspicious day, let us, therefore, rededicate ourselves to the service of the Motherland.”

I wish Shri Vasantnao Naik a very long life of valiant public service. He never tires of repeating that he has promised to the people of the State, *a clean, efficient and popular administration*. He tries to fulfil this mission and repeatedly reminds his administration to help him fulfilling the same.



A TOTAL BLEND OF HEART AND MIND

S. P. Mandelia

He is soft without being timid, tough without being adamant, rational without being dogmatic.

To write about Mr. Naik is to write about a person who is a legendary combination of a shrewd politician and an able administrator. He is no office-seeker !

Mr. V. P. Naik, as I understand him, is soft without being timid, tough without being adamant, rational without being dogmatic and a vanguard of new values in politics without having any presumptions to it. In him heart and mind find a total blend!

Mr. Naik's shrewdness as an administrator comes to surface when he functions as the Minister of Industry. He never approaches a problem with pre-conceived notions. He will listen with patience to the conflicting views of the warring classes—industrialist and labour—and finds humour in it which is the fountain-head of his down-to-earth wisdom. He puts all the arguments and counterarguments in the right perspective, weigh them dispassionately and reaches his un-biased conclusions on which mainly depend his decision. How he brings both the parties to a total agreement is, if not startling, at least astonishing. He will withhold a thing without denying it and grant it without justifying it. He will never employ the notorious tool of red tapism as an alibi for his weakness or indecisiveness. If there is ample justification for his decision, he will decide and act and stand by it, come what may ! This is perhaps Mr. Naik's one of the most endearing qualities which has taken him nearer to electorate. How else can one explain the continuance of his unweaned popularity despite all that he has encountered during his three years' stay at the helm of the State affairs ? Mr. Naik has ridden alternately on the crest of strikes and morchas — inevitable curse of an

industrial hub ! His sincerity and an innate sense for right decision at the right moment have helped him emerge triumphant from these turmoils. Today he can justifiably claim that he has complete control over those who create disorder and those who maintain order !-

What astonishes one is not that Mr. Naik has managed the State affairs to utter perfection but that he can snatch moments of leisure from his gubernatorial obligations to nurture his childhood fancies. He keenly participates and encourages cricket matches and entertainment programme organised to boost various funds; receives sportsmen, listens to their joys and sorrows, their failures and achievements. Mr. Naik recurrently lapses in reminiscent mood and recounts nostalgically his previous recollections of his hunting spree—how many leopards he killed or of what size or on which occasions. Sometimes now even Mr. Naik snatches opportunity to pursue his hobby of shikar and last year he had bagged a tiger along with King Mahendra of Nepal.

When I first met Mr. Naik, I came back with an indelible impression that Maharashtra State was safe in his hands. He is sincere in what he thinks and passionate about what he does. He wants rapid industrialisation of Maharashtra, not ignoring the claim of other states. For him the term 'industrialisation' is not restricted to production but also embraces the cause of the labour class. With the growth of industries, he argues, its lot should also improve. And he is endeavouring for it.

To ignore Mr. Naik's personal qualities would be an error because they are inextricable from his person — amiable and genial. There is charm about his personality which lends enchantment to his company. Even in the hectic atmosphere and the grandeur of his chamber in the impressive Sachivalaya, one is unlikely to overlook Mr. Naik's buoyant style of conversation with a pipe tucked to his mouth, pleasant manners, warm smile and an understanding heart. His love for politics has not diminished his love for dressing well — almost immaculately !

Recollections of these thoughts on Mr. V. P. Naik would perhaps remain incomplete without a reference to Mrs. Naik who contributes appreciably to his personality—social and political. Mrs. Naik is an epitome of what is best in the Indian womanhood—hospitality and courtesy.



A UNIQUE PERSONALITY

S. V. Sonavane

Vasantrao is a realist ; he is neither a faddist nor a believer in dogmatic 'isms'. Nevertheless, he is a man of ideals and always works for the ideals.

The refulgence of the unique personality of our Chief Minister—Shri Vasantrao Naik—is felt everywhere. His magnanimity of heart knows no bounds. He is always cheerful, gracious and kind. His innocent smile is a sweet welcome to every visitor. He has endeared himself by his courtesy and obliging nature to both foes and friends alike. He is straight in his dealings and is open like a book. Hardly one comes across such a gracious personality.

Vasantrao is a realist and very practical in his approach. To my mind he is neither a faddist nor a believer in dogmatic 'isms'. He believes in realism and in a strong common sense. He never bothers to apply hackneyed yardstick to the solution of problems. On the contrary, he minutely studies and diagnoses every problem under the existing circumstances and finds out effective solutions even for intricate problems. It will not be an exaggeration if I say that he is a genius in finding out appropriate solutions. His bold decisions to tackle food situation as well as other political and labour problems proved this fact beyond all reasonable doubts.

Vasantrao has great enthusiasm and sincerity of purpose. He is a man of convictions. He identifies himself with his work and sets about it enthusiastically and tenaciously for its fulfilment. His work in regard to the food situation and the 'grow more food' campaign is a standing testimony to it.

Vasantrao is a farmer to the backbone. He dreams of a progressive, happy and strong peasantry. He holds agriculture as a primary base for the happiness and development of the State. He has therefore gone far in implementing the various schemes for the development of agriculture and well-being of agriculturists. Now others are following and taking inspiration from his work. There is hardly any doubt that his work will yield the desired results. His high position is really a boon to agriculturists and labour in Maharashtra State.

Vasantrao is a man of ideals and always works for ideals. He is far from groupism and casteism. He acts like a commander and also works like a soldier. He believes that his high post has devolved a great responsibility upon him and acts accordingly. He is unassuming. There is no posing of an aura of high post about him. He is far from publicity. He never tries to catch hold of followers. Followers are attracted towards him due to his work and qualities of his head and heart.

Vasantrao has insight, foresight and keen observation. He has ability to think, create and act. He has leading ideas of his own. He does everything with faith and confidence. He remains unruffled and, with great courage and determination, faces any situation. He has proved by his word and action that he is an administrator of a high order. He has led the State successfully through thick and thin. The State has been progressing well under his leadership.

May God bestow upon him a long life and the best of health to lead and guide the State in future !



MY TEN YEARS WITH VASANTRAOJI

Dr. N. N. Kailas

The path Vasantao has trodden is one of selfless service to the downtrodden people from whom he has sprung.

It has always been a great pleasure for me personally to work with Shri V. P. Naik as one of his colleagues in the State Cabinet and a co-worker in the political party to which we both belong. For the past three years Shri Naik has piloted the affairs of Maharashtra ably and well and the State has kept up all India renown for highest achievement in more than one field.

Under his calm and suave appearance, Shri Naik has a dynamic personality, which was more than proved by the way he took up the challenge of food scarcity in the State. Born in a farmer's family, Vasantao has all the finer qualities of a farmer—sound commonsense, natural shrewdness, sagacity and above all that sincerity of purpose which never fails to create about him a feeling of confidence among those who work with him. He never minces words or indulges in platitudes and is straight forward to a fault. Living in the metropolitan city of Bombay, which offers all the amenities of modern life, Vasantao's mind seems always to travel to the far-off villages, the parched fields and thirsty crops, working up schemes of irrigation and agricultural production. He has made cooperation and socialism as the guiding principles of his life's mission and, as I know him, he is a realist to the core who believes more in a pragmatic approach to things than that of a dreaming idealist.

Vasantao is a Sport who takes great delight in hunting the wild game in the thickest of forests. This is symbolic of his robust and healthy outlook on life, which has always helped him to keep his mind clean and fresh, working as it does under the tremendous

strain of the responsibilities of Chief Ministership of one of the bigger States in the country. From the tiny village of Gahuli in Yeotmal district to the great city of Bombay is certainly a far cry. But the path Vasantryao has trodden was one of selfless service to the down-trodden people from whom he has sprung. He has an excellent record of public life as a social worker and a municipal councillor in his home district before he came to the Legislature. As Minister of the State Cabinet in the former M. P. State and later in Maharashtra, he earned a well-deserved reputation for thoroughness. His calm confidence could be seen by us all as he did not cancel his programme of going to Nagpur for Assembly session even for a night, after knowing the mass resignations of Bombay M.L.A.s, which could have shaken any other politician. Let the younger generation in Maharashtra, nay in India, emulate the life of Vasantryao Naik and build up their character and conduct of life.



A GEM AMONG COMMONERS

Dr. N. R. Tawde

Vasantrao brings to bear on the policies and problems of the administration a logical, rational and realistic mind. He believes not in speeches but in deeds.

Before Vasantrao Naik became Chief Minister of our State, I had not even the least idea of the potentialities of this little-known person who had handled the portfolios, first of agriculture and then of revenue in the Maharashtra Cabinet. This was because, Vasantraoji figured very little then in news columns. He was not a man of words, but of action. He believed not in speeches and harangues but in deeds. Rightly, therefore, he was the 'find' of a man who equally excelled in these very qualities and who has risen high in the estimation of India by his actions—Shri Yeshwant-rao Chavan. There is a couplet by a poet “गुणाचे मोल कोणाला, गुणी जो असे त्याला”. Little wonder then that Yeshwantraoji could discover a gem from men of the soil in the moment of a chance meeting at Yeotmal rest-house, while on election tour. The gem is now shining with its own lustre on the high pedestal of Maharashtra administration.

He did his work sincerely but silently. The account of his ministerial tours and speeches did not figure prominently in news columns. He cared not for the same. That was his characteristic—the characteristic that brought out vividly the depth of the man and his personality. There was no shallowness around him ; no superficiality. He talked from the heart and talked only when he thought deeply over problems and was convinced about things. That means patience, that means analysis, reflection and above

all, strength of conviction and courage. These qualities in him were clearly demonstrated when he came out boldly with revision of the prohibition policy and accomplished it with equal vigour in spite of derision from the hierarchy of his party men, and wrath of some of his best associates and friends. Such realism, on the part of an individual, is hardly noticeable in the mechanics of present-day political party system of democracy. Herein lies the individuality and personality of our Chief Minister whose strength has radiated all the brighter in adversity. For, during the momentous days of Indo-Pakistani conflict he rallied Maharashtra around him with one voice and singular determination and devotion, in spite of the great calamity like food scarcity that threatened to bring his Government into contempt, ridicule and disrepute.

The speeches he made in Bombay during the three days from September 9 to 11, exhorting people to meet the challenge of Pakistani aggression, amply demonstrate the qualities of keen insight into various problems of national defence and deep sense of national consciousness. In one of his addresses to the trading community in those days of Indo-Pakistani conflict, he told his audience: " . . . We must all behave like responsible citizens of the State and we have to be very certain about it in times like these. We must all give a good account of ourselves to the country. You know better than I do, how to serve the people. You have been doing it. I trust that you will maintain your good tradition. You can create a confidence in the people that there is a community which is doing the best it can for society and for the country". Who can say these words of our Chief Minister are not appropriate even now, when our country is faced with unforeseen evil indications like spurt in internal prices following the rupee devaluation to meet the economic crisis ?

While paying these tributes to Vasant Rao on his 53rd birthday celebration, I cannot but admire the simplicity of a born farmer in him. The spontaneity with which the masses of his own home district Yeotmal came forward to greet him on this occasion with a substantial purse of a lakh and over, speaks volumes of this important trait in his life. This simplicity and for that matter, the human element reign supreme around him, while dealing with people and while formulating the policies and shaping the destinies of

the Maharashtra State as its Chief Minister. He brings to bear on these policies and problems of administration, a logical, rational and realistic approach without succumbing to fads and fancies.

May God spare him amongst us for many years for the good of Maharashtra and for the good of the nation !



DYNAMIC LEADERSHIP

Dr. A. U. Shaikh

The realignment of the differing revenue administrations of the State and the new Land Revenue Code are a monument to his deep insight. So also is his report on the decentralised Panchayati Raj institutions. His unorthodox and practical approach to the food problem in Maharashtra has established his claim as a national leader.

Shri Vasantaoji Naik is famous for his unorthodox and practical approach to national problems. He is also known for his sturdy commonsense in all matters of administration and the courageous lead that he is capable of giving in the most difficult of circumstances. Examples of this are not far to seek.

The realignment of the differing revenue administrations of the State and the new Land Revenue Code are a monument to his deep insight; So also is his report on the decentralised Panchayati Raj institutions which have flowered and flourished in the State of Maharashtra, much better than in any other State in the country. His extraordinarily bold proposal to review the prohibition policy in the light of practical application and utility has also been appreciated on all hands. It is, however, in times of distress of the people, such as in floods, famine etc., that Vasantaoji has always come out with all his sincerity and largeness of heart to help the people in their hour of need. This has been found repeatedly during the scarcity periods and floods in Vidarbha as well as during the present famine situation in the State. "That high public office is a trust which must be discharged with insight and courage, and is not an over-stuffed and bug-ridden 'gaddi' of

an indigenous capitalist" seems to be the motto of our Chief Minister.

However, in spite of the fact that he is so well known for his extraordinary initiative and frank speech, it came as a surprise to many when he publicly announced that he would hang himself if he did not achieve self-sufficiency in food matters in the State of Maharashtra in two years. And this was not a mere political pronouncement, for Shri Naik knows and practices on his large ancestral farms what he is preaching.

Immediately on seeing the extraordinary travails of the people in the wake of the national emergency, during which he again inspired the people tremendously, Shri Naik evolved a number of magic formulae to see to it that the State really did its very best in all directions to make itself self-sufficient. Even in the worst days of drought and scarcity, the decision to give, on nominal rental, over 7,000 pumps and engines and to cut down water from cash crops in order to see that the existing food crops were saved, showed the mettle of the man. Puritanic economists may say that diversion of water from cash crops, particularly sugarcane crops in the state of Maharashtra, might downgrade the General National Product of the State; but, knowing as Shri Naik does the practical aspects of agricultural prices and production, he straightaway pointed out that 2 or 3 hybrid and high-yielding seasonal crops during a year are worth as much, if not more than, the best of sugar crops from the point of view of the agriculturists' interests and certainly it is much more in the national interest than to go on producing more sugar when sugar worth Rs. 30 to 40 crores has to be kept locked up in cooperative godowns for months together at a high cost of interest on capital.

The main planks of his programme of self-sufficiency were very straightforward and simple. The first and foremost was that agriculturists must have incentive prices for the foodgrains they produced and, therefore, even while faced with scarcity and an obdurate Central decision to keep prices on par with surplus States, Naikji took a decision to give higher prices to the agriculturists for their produce and straightaway the prices of jowar and paddy were raised by at least 10 to 15 per cent. He has always maintained that he would like to give, if possible, even higher prices for the food

crops that generally the smaller agriculturists produce. Similarly, in giving assistance to the agriculturists by way of land mortgage bank loans for wells, motors, engines and pumping sets, he has always taken a generous view and resisted the increase in the rate of interest to the agriculturists and reduction of subsidies already made available to them. Recently, when there was a crisis and not enough money was available, the State Government stretched its resources to a limit and has subscribed over Rs. 10 crores as additional special contribution by the State to the land mortgage bank debentures. This has enabled the State Land Mortgage Bank to go ahead with a programme of over Rs. 20 crores this year. Besides construction and repairs to as many wells as possible, and utilising all electric connections to irrigation pumps, the Chief Minister has been extremely anxious that irrigation channels should be constructed quickly so that the utilisation of the waters of the major and medium works should be much faster than it has been in this or many other States. It has, therefore, been decided that the normal practice of the Irrigation Department to construct channels up to a discharge of $1\frac{1}{2}$ cusecs should be given up and channels should be constructed up to $\frac{1}{2}$ cusec discharge so that the last four or five agriculturists should take water directly through their own fields instead of waiting on the pleasure of recalcitrant neighbours.

The third and the most important step that he supported was the importation at heavy cost even by air from abroad of hybrid varieties of seeds of jowar, bajra and maize, and their sowing within a record time so as to cover as much acreage as possible under these giant crops even though it involved some risk of wicking, non-germination, etc., under summer and drought condition. The result has been that over 4000 to 4500 acres of land having been covered with parent seeds during the worst scarcity season in Maharashtra, though the seed programme suffered due to drought, the Department of Agriculture held a stock of over 50 per cent of the total hybrid seed in the country and has, therefore, planned a programme of over 7 to 8 lakhs of acres under the hybrid and highyielding varieties during 1966-67. Even if half a ton extra of foodgrains is produced per acre on an average through this effort, nearly 4 lakhs out of the 16 lakhs of tons of average shortfall in the State's granary would be wiped out. But this is

not all. The steps taken include cultivation of over 60,000 acres of parent hybrid seed during the year 1966-67 and over 2 lakh acres each of Taichung paddy and Sonora Mexican wheat seed so that the total seed available of these types in the year 1967-68 would be enough to cover under irrigation and/or surer rainfall conditions and even in dry crop areas and under wells etc., acreage of the order of half a crore so that the higher potential of production would be tapped to such an extent that not only our own deficit would be made good but we hope we may be able to spare some coarse grain for feeding our cattle, poultry etc. and help in taking up allied programmes of supplementary food production on a much larger scale as has been already planned and put into practice.

The objective of attaining self-sufficiency and, through that, restoring national self-respect being clearly perceived, the Chief Minister, a good shot as he is in his exploits of shikar, did not fail to perceive clearly that the inputs of fertilisers, insecticides etc are a must, and at the Chief Ministers' Conference in Delhi, he whole-heartedly supported the programme for additional fertiliser factories and allocate cooperative finance when he said that socialism or no socialism, we must have fertilisers and cooperative finance to produce more and to remove poverty.

The condition of the landless labourers and the small holders in Maharashtra has also come within his ken and a programme has been drawn up to cover by 100 blocks during the Fourth Five Year Plan period the areas where excessive fragmentation and marginal nature of holdings make it impossible for the rural population to eke out a decent living. A sum of over Rs. 5 crores is being set apart in the Plans to see that these backward and famished people attain a higher standard of living by being given subsidised cows, poultry, wells, bunding works etc. There are several other schemes which are on the anvil in order to see that the welfare State is not merely a party shibboleth but a reality that can be visibly seen in the lives of the common people of Maharashtra. For this we must all be most grateful to Shri Vasantaoji and we must pray so that his experience and enthusiasm will be available to the country for many years to come.



INDIA'S FUTURE LINKED TO LOCAL RULE

We reproduce below an article published in the BALTIMORE SUN on May 27, 1966. The contributor of the article, Mr. James S. Keat, a well-informed American journalist, pays tributes to Shri Naik's able stewardship in meeting the challenge posed by the drought conditions in Maharashtra State last year. —Ed.

JAMES S. KEAT

India's chances for success or failure in reviving agriculture can be measured in the difference between Maharashtra and Orissa States.

However sound planning in New Delhi, however much fertilizer and improved seed is available, India's hopes of quickly becoming self-sufficient in food will depend heavily on the skill of local administrators.

In Maharashtra and a few other States auguries are good. In Orissa and many other States they are not.

Both the States were severely affected by last summer's drought, worst in 50 years. Maharashtra reacted quickly to alleviate distress while officials in Orissa dawdled for months.

Differences between the two States' reactions to the drought are instructive, for the same officials will be responsible for carrying out India's ambitious programme for raising the food production by more than one-third in the next five years.

Officials in New Delhi have amassed convincing evidence that acute shortage of food in Western Orissa which caused a political storm was primarily a failure to provide the region's chronically poor farm labourers and small landowners with a means of earning a subsistence income when the harvest failed.

In Maharashtra where 22 of the 25 districts (counties) lost more than half the normal crop, there are no cries of starvation.

Some 500,000 men and women were quickly put to work on 4,500 emergency works projects. With the few exceptions they are building simple devices to improve irrigation facilities, conserve what rainfall the State gets and combat soil erosion.

Why different responses to the same crisis? Centralizations are tricky in India but a few factors are worth pondering for the future.

Maharashtra has a highly developed system of local Government with authority decentralized to a degree which is probably unique in India. It has a comparatively progressive State Government which, free of political quarrelling which marks most other States, can concentrate on the main task.

Only Gujarat which like Maharashtra was until six years ago part of the old Bombay State and Madras are in the same class as far as efficient administration and effective local Government are concerned.

Orissa, on the other hand, is in state of turbulent politics mostly because of internal feuds within the Congress party. Much of its

territory was ruled before independence by singularly reactionary princes who left behind no local machinery or semblance of initiative.

But Maharashtra inherited a region in Central India with similar characteristics when the State was created six years ago. Observers familiar with that region believe it is quickly catching up.

Four years ago, shortly before the then Chief Minister (governor) Yeshwantrao B. Chavan went to New Delhi as Defence Minister, Maharashtra transferred to locally elected district councils a large measure of responsibility for the public services.

These councils each have budgets of several million dollars and together administer more than half of the State's economic development funds. Each council has a staff headed by a young administrator from India's most prestigious cadre of Civil Servants.

Mr. Chavan and the present Chief Minister Vasant Rao P. Naik believe strongly in encouraging initiative and involvement in the rural areas and lower rungs of the administration. Their attitude contrasts with that prevailing in most of India, where centralized control is norm.

When impact of the drought was realized last fall, Mr. Naik told his District Officials : ' If you do nothing you will be replaced. If you take action but commit an honest mistake you have no fears.'

In a nation where bureaucratic buck-passing is an art and exercising initiative is no way for a junior official to win promotion, those were strange but effective words.

One administrator near Poona decided his area needed more projects than his funds allowed. He went ahead and authorized the work, then asked Bombay for money.

Headquarters bureaucrats who traditionally resist sharing authority provided the extra funds.

Comparative success of local Government in Maharashtra and its poor showing elsewhere can be ascribed to a number of factors.

This State was one of the hotbeds of independence movement and early developed a rural cadre of social and political workers. Not entirely by coincidence agricultural cooperatives have developed here as they have in few other parts of India.

Maharashtra peasant is also more accustomed to dealing with the Government because he was not subjected as in so much of North India to pre-independence system of feudal landlords standing between him and his rulers.

Finally, the Congress party is united here and is in overwhelming control of the State. Even opposition politicians here who have little good to say about the Congress party concede the State administration has dealt well with the food crisis.

Political element is important for the local Government and the cooperatives are intimately if unofficially tied with the party which provides much of the talent for them.

This too contrasts with most other major states where the party is beset by factionalism.



MESSAGES

**MINISTER FOR IRRIGATION & POWER,
INDIA.**

**New Delhi,
August 24, 1966.**

I offer my congratulations to my friend, Shri V. P. Naik, on his 53rd birthday and wish him many more years of active life in the service of the country.

Shri Naik ranks high among the architects of Maharashtra. Every field he has entered, beginning from Local Self-Government to the State Legislature, he has enriched by positive contributions of far-reaching significance. His work in the agricultural sector, his introduction of the Land Ceiling Act and Panchayat Raj in Maharashtra are true and strong foundations for socialism which the country has set out to achieve.

Shri Naik's political acumen and legislative and executive experience would, I feel, be of even greater value in coming years. May he be spared long to serve the motherland.

F. A. Ahmed.

**MINISTER
INFORMATION & BROADCASTING,
INDIA.**

**New Delhi,
July 25, 1966.**

I am glad to learn that a "Gaurav Grantha" is going to be published in honour of the Chief Minister, Maharashtra State, Shri V. P. Naik. Ever since I have come to know Shri Naik, he has struck me as a man of character and integrity. His simplicity, straight-forwardness and sincerity can hardly ever fail to impress even a casual visitor. He is a dependable friend and comrade.

On the happy occasion of the presentation of the 'Gaurav Grantha' to Shri Naik, I offer my sincerest good wishes and greetings. Long may he be spared for the true service of our dear motherland.

Raj Bahadur.

**MINISTER FOR FOOD & AGRICULTURE,
GOVERNMENT OF INDIA.**

**New Delhi,
August 13, 1966.**

I am glad to learn that a Birthday Celebration Committee, composed of eminent citizens of Maharashtra, has decided to bring out a **Gaurav Granth** on the occasion of the 53rd birth anniversary of Shri Vasant Rao P. Naik, the distinguished Chief Minister of Maharashtra. Shri Naik is not only an outstanding administrator but also a great humanitarian, and I sincerely join you in paying my tribute to this worthy son of India.

It has been my privilege to know and to hold in high esteem Shri Naik for the last several years, but what I have seen of him during the last two or three years in my capacity as Union Mini-

ster for Food and Agriculture, has raised him still further in my estimation. It was unfortunate that during the recent food crisis, parts of Maharashtra were badly affected by conditions of scarcity. I cannot forget the patriotic concern shown by Shri Naik for the people of his State. But what showed his real greatness and Statesmanship was the fact that in the pressure of his direct responsibilities for Maharashtra, he never lost sight of the overall requirements and situation in the country and always viewed his State's problems in the perspective of the national problem. That was one aspect of his character. Yet another aspect which showed the real man in him came a little later when he vowed to make Maharashtra self-sufficient in food within the next two years. This was no phony declaration. The way he has plunged into the task by bestowing personal attention to the ambitious agricultural programmes launched by the State, including attention to minute details, has raised high hopes. I have every confidence that, given the able guidance and keen supervision of Shri Naik, Maharashtra is bound to turn the corner as far as its food requirements are concerned. To my mind this is about the best contribution that an Indian leader can make in the context of the country's present difficulties.

Once again, I join you in wishing a long life and fruitful career to Shri V. P. Naik in the service of his State and the country at large.

C. Subramaniam.

July 15, 1966.

I know in what high esteem my father used to hold Shri V. P. Naik even as a private member. After assuming the office of the Deputy Revenue Minister in old Madhya Pradesh Government, Shri V. P. Naik immediately established a fine reputation for administrative efficiency and integrity. Although at that time he was a new comer, he was one of the most popular persons in the Vidhan Sabha Party. Usually during tea time in the morning, good many MLAs used to meet my father and while discuss-

ing the second line of leadership in Madhya Pradesh, I remember Pandit Shukla had remarked that in Shri V. P. Naik, Vidarbha and Madhya Pradesh will ultimately find its leader. Heart of all politicians and people in Central India were touched when Shri Naik immediately after assuming the Chief Ministership of Maharashtra erected a memorial in memory of Pandi Shukla by installing his bust in the Circuit House which used to be the Chief Minister's Residence and naming it after him. In new Madhya Pradesh, Shri V. P. Naik is still remembered as a fine and understanding administrator because of many fine traditions he has left behind as Deputy Revenue Minister of the State. The old timers in Madhya Pradesh still regard Shri V. P. Naik one of their own. This is not a small thing.

Vidya Charan Shukla.

**CHIEF MINISTER,
Madras,
July 21, 1966.**

Shri V. P. Naik, who has succeeded to an office which was held by an unbroken line of able administrators, has not only maintained the standards and traditions laid down by his predecessors but has improved on them. A patriot imbued with a spirit of service, a man of the people who understands their needs and aspirations and a leader who inspires faith and loyalty among the masses, Shri Naik has shown great sobriety, tact and practical wisdom in his work as Chief Minister of Maharashtra. I join the people of Maharashtra in wishing him many more years of useful service to his State and to the Country.

M. Bhaktavatsalam.

**Plot No. 168, Sir Lallubhal Park,
Samaldas Road, Andheri (West),
Bombay-58.
July 13, 1966.**

It is years that I went to the place from which Shri Vasantao Naik hails. He was out of station at the time of my visit. But I was received by the members of his family. Very few people know that he lived in deep tribal areas of Vidharbha which was then a part of the old Madhya Pradesh State. Shri Vasantao has naturally imbibed the spirit of compassion for the weak and the lonely. His response to the needs of this section of the society is immediate and profound. I have no doubt that in the years to come whatever post or position he might occupy, he will continue to do his utmost for that section of India's population.

U. N. Dhebar.

**Ahmedabad,
July 12, 1966.**

I am glad to learn that a Guarav Granth is being published to commemorate the 53rd birthday of Shri Vasantao Naik.

Under the leadership of Shri Naik, the State has been fruitfully engaged in the tremendous tasks of industrial and rural development throughout the vast expanse of the State and grappling with the multifarious complex problems endemic in one of the biggest industrial and commercial centres of the country, viz., Bombay.

The bonds of friendship between Gujarat and Maharashtra continue to be stronger during his stewardship.

I wish him many more happy years in the service of the nation.

Hitendra Desai.

**MINISTER OF STATE,
MINISTRY OF IRRIGATION & POWER,
New Delhi.**

It gives me great pleasure to offer hearty congratulations to Shri V. P. Naik on his 53rd birthday and to wish him many happy returns of this auspicious occasion.

Shri Naik is a constructive worker of the highest calibre which new India needs in their thousands if we have to realise the dream of economic prosperity and power for peace in the world. Shri Naik has consistently devoted himself in all his capacities as a public worker to progressive measures which have contributed no little to the forwardness of Maharashtra in several spheres. Maharashtra and Indian polity need his services for a long time to come, and it is my earnest prayer that he may be blessed with health and strength to serve his country in the many many years of activity before him.

K. L. Rao.

°
**DEPUTY EDUCATION MINISTER,
INDIA**

**New Delhi,
July 8, 1966.**

I was glad to learn that on the auspicious occasion of the 53rd birthday of Hon'ble Shri V. P. Naik, friends are proposing to present him a 'Gaurav Grantha'. As the title of the book itself signifies, it is surely going to be instrumental in enhancing the respect, in which Shri Naik is held in all parts of the country. From what I have seen of him, I can safely say that he is an ideal public man and an administrator. He combines in himself, the great qualifications of humility with firmness and efficiency. Maharashtra is fortunate in having him at the helm of its affairs. I am quite confident that under his stewardship, the State of Maharashtra will continue to make steady progress.

Please accept my heartiest felicitations for the complete success of your efforts.

Bhakt Darshan.

CHIEF MINISTER, WEST BENGAL

Calcutta,

July 15, 1966.

Friends, associates and admirers of Sri V. P. Naik propose to present to him a Gaurav Grantha on his fifty-third birthday. Sri Naik heads the administration of a progressive State, but not without its difficult problems and situations. He has fulfilled this very difficult political assignment with much courage, confidence and competence.

I join the people of Maharashtra in wishing Sri Naik another fifty three years and more of best of health and cheer in useful service of the people.

Prafulla Chandra Sen.

“PARNAKUTI”,

YERAVDA HILL

Poona,

July 17, 1966.

It was very kind of you to invite me to contribute an article on any aspect of the life and work of Shri Vasant Rao Naik, our Chief Minister. It is in fitness of things that the Celebration Committee has decided to publish “Shri V. P. Naik Gaurava Grantha.”

The State of Maharashtra has made a great progress under the able direction and guidance of Shri Naik. He has proved a worthy successor to Shri Yashavantarao Chavan. Shri Naik is essentially a farmer. His ambition to-day is to make the State self-sufficient in food within the shortest possible time and all his plans are oriented to this end.

Shri Naik is frank. He has undaunted courage in face of severe difficulties; at the same time he has a well developed sense of compromise. Studious by habit he always gives patient hearing to even those who are opposed to his views. He always tries to understand the problems confronting him from all points before he tries to solve them and so he commands confidence not only among his party people but also among his political opponents.

Shri Naik is never dogmatic. He always adopts a pragmatic approach. Recent events have amply proved this. The people of Maharashtra have great faith in him.

I wish him and Shrimati Vatsalabai long, happy, ~~active~~ on this occasion and earnestly hope that he will take us to our cherished goal of eradication of poverty and ignorance in the land.

Premlila V. Thackersey.

MINISTER OF STATE FOR RAILWAYS, INDIA

New Delhi,

July 18, 1966.

I congratulate the Gaurava Grantha Committee on their decision to publish "Shri V. P. Naik Gaurav Grantha" in celebration of his 53rd birthday.

Shri V. P. Naik is a well-known social worker. He has been taking keen interest in village uplift in Pusad Taluka through





चौधरी - नाईक

कलेचे पाईक
नटवर्य गणपतराव बोडस याच्या
सत्कार प्रसंगी





परिचयाचा उपचार...



आणि अनौपचारिक हास्य विनोद !





कौतुक बालजगताचे



भाषण देशसंरक्षणाचे





तें गंभीर हितगुज

. 1

आणि .

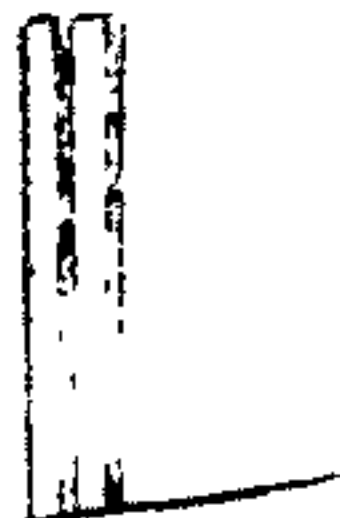
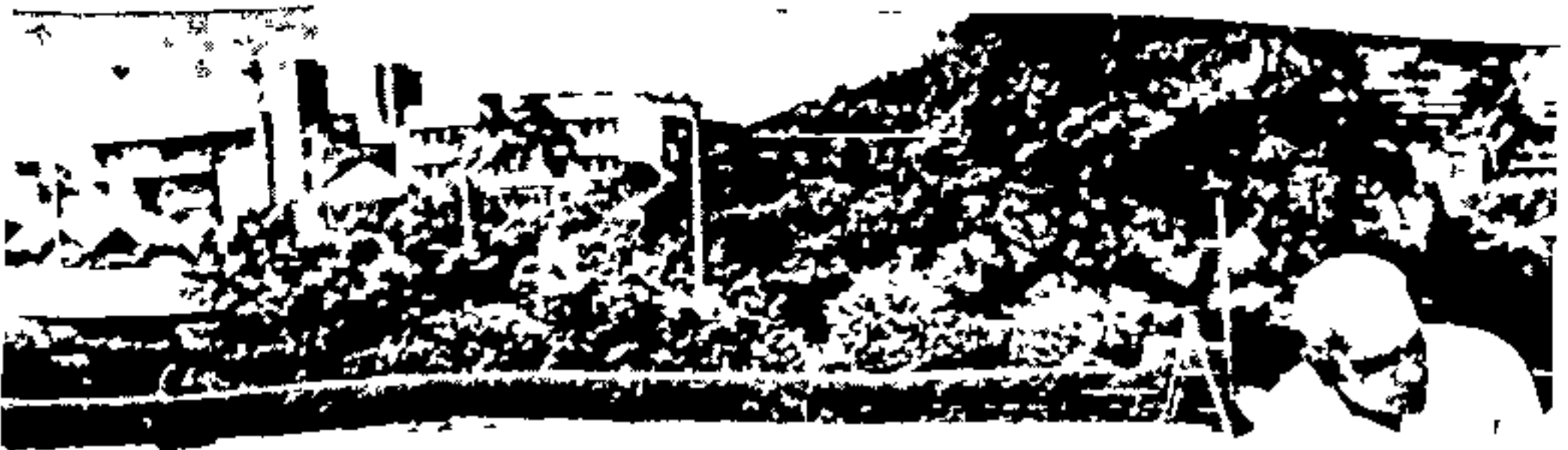
हे मुक्त हास्य





कौल कसाही लागो ।

- त्याची सदा खिलाडू वृत्ती



social education. His own village 'Gahuli' has been remodelled at his instance. He is a man of firm determination and his contributions towards the building up of a strong, united and progressive Maharashtra are substantial and praiseworthy.

I wish Shri Naik long and happy life so that he may continue to serve his motherland in the years to come.

Ram Subhag Singh.

DEPUTY MINISTER FOR HEALTH, INDIA
New Delhi,
July 16, 1966.

I am glad to know that a souvenir is to be presented to Shri V. P. Naik, Chief Minister, Maharashtra, on his Fiftythird birthday. Shri Naik is known for his dynamism and efficiency. His interest for the backward classes is praiseworthy. He has made Maharashtra grow from strength to strength in all directions. He richly deserves the tributes of his State and the commendations of the country. I wish your efforts all success.

B. S. Murthy.

MINISTER,
MINES AND METALS, INDIA.
New Delhi,
July 6, 1966.

I convey my heartiest felicitations to Shri V. P. Naik on his 53rd birthday. I have known him for many years and have been a long admirer of the forthrightness in his approach, the dynamism and dedication he brings into any mission he accepts

as his own. These qualities have grown at a steady pace since he took over the helm of the relatively new State of Maharashtra. I wish him long years of life in health and well-being so that he can continue to serve the cause of liberation of the vital people of Maharashtra from the evils of hunger, disease and ignorance and thus set a new pace for the emergence of the New India of our dream.

S. K. Dey.

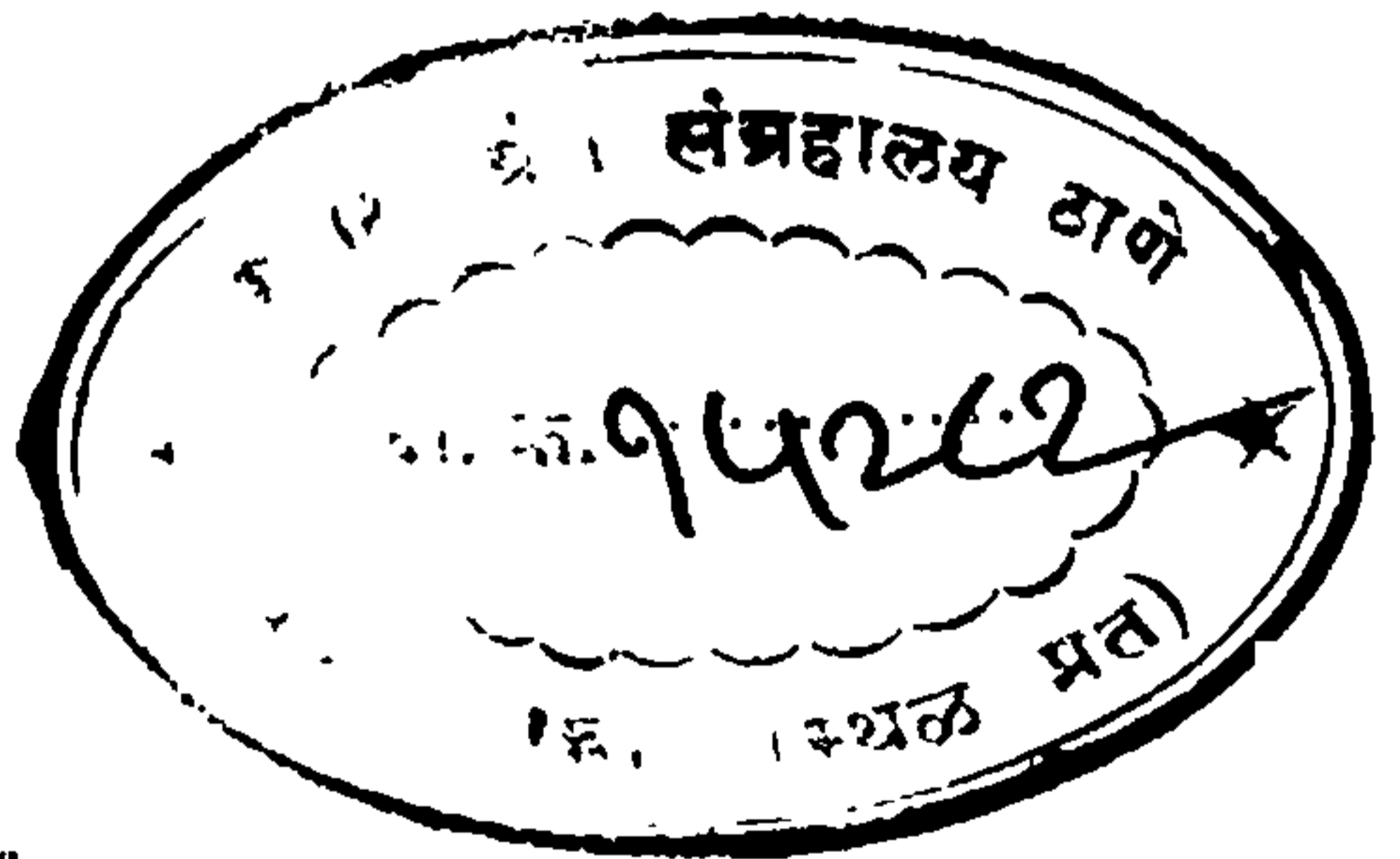


गेली त्रेपन्न वर्षे

- १९१३, जुलै १ - यवतमाळ जिल्ह्यातील पुसद तालुक्यातील गहुली येथे बंजारी जमातीच्या सधन शेतकरी कुटुंबात जन्म.
प्राथमिक शाळेसाठी त्यांना रोज चार मैल पायी चालत जावे लागत असे.
- १९३३ - मॅट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण. नागपूर येथील नील सिटी हायस्कूलमधून.
- १९३७ - बी. ए. पदवी परीक्षेचे शिक्षण मॉरिस कॉलेज (हल्लीचे नागपूर महाविद्यालय) नागपूर येथे.
- १९४० - युनिव्हर्सिटी कॉलेज ऑफ लॉ, नागपूर येथून वकिलीची परीक्षा.
- १९४१ - प्रारंभी अमरावतीचे प्रख्यात वकील बॅ. पंजाबराव देशमुख ह्यांच्याबरोबर व नंतर पुसद येथे स्वतंत्रपणे वकिली व्यवसायास प्रारंभ.
- समाज शिक्षणाद्वारे ग्रामसुधारणा करण्याच्या कार्यात विशेष रस घेण्यास प्रारंभ.
- समाज शिक्षणाबाबतच्या उल्लेखनीय कार्याबद्दल ' सोशल एज्युकेशन कम्मेमोरेशन सर्टिफिकेट ' मिळाले.
- पुसद तालुक्यातील 'आदर्श ग्राम चळवळी'त पुढाकार.
- त्यांच्या प्रयत्नांमुळे व तळमळीमुळे त्यांचे स्वतःचे गाव ' गहुली ' हे नमुनेदार बनले.
- १९४१ - प्रतिष्ठित ब्राह्मण घराण्यातील कु. वत्सला घाटे, बी. ए., यांचेशी विवाह. हा विवाह आंतरजातीय असल्यामुळे त्यांच्या बंजारी समाजात मोठी खळबळ उडाली व काही दिवस त्यांना वाळीत देखील टाकण्यात आले.
- १९४६ - पुसद म्युनिसिपालिटीचे अध्यक्ष म्हणून निवड. जुन्या मध्यप्रदेश राज्यात उपमंत्री म्हणून १९५२ मध्ये नियुक्ती होईपर्यंत याच पदावर होते. ह्या अवधीत अनेक सुधारणाविषयक कामे केली.

- १९४३-४७ - पुसद अँग्रिकल्चरल असोसिएशनचे अध्यक्ष.
- १९५० पासून - पुसद हरिजन मोफत वसतिगृहाचे व दिग्रस राष्ट्रीय मोफत छात्रालयाचे अध्यक्ष.
- १९५१ पासून - विदर्भ प्रदेश काँग्रेस कमिटीचे व तिच्या कार्यकारिणीचे सदस्य.
- १९५२-५६ - पहिल्या सार्वत्रिक निवडणुकीत मध्यप्रदेश विधानसभेत निवडून आले व मध्यप्रदेश मंत्रिमंडळात राजस्व उपमंत्री म्हणून नियुक्ती.
- ह्याच काळात मध्यप्रदेश गृहनिर्माण मंडळाचे अध्यक्षपद भूषविले.
- तसेच मध्यप्रदेश भू-सुधार समितीचे उपाध्यक्ष व मध्यप्रदेश सरकारच्या मेट्रिक समितीचे अध्यक्ष होते.
- १९५६-५७ - राज्य पुनर्रचनेनंतर जुन्या मुंबई राज्यात सहकार व कृषिमंत्री म्हणून नियुक्ती. त्यावेळी आरे दूध योजनेचे कामही त्यांच्याकडे होते.
- अखिल भारतीय काँग्रेसचे तसेच महाराष्ट्र विभागीय काँग्रेस कमिटीचे व तिच्या कार्यकारिणीचे तेव्हापासून सदस्य.
- १९५७ - इंडिया कौन्सिल ऑफ अँग्रिकल्चरल रिसर्चच्या स्थायी फायनान्स कमिटीचे सभासद म्हणून निवड.
- १९५८ - जपानला गेलेल्या आंतरराष्ट्रीय राईस कमिशनच्या भारतीय शिष्टमंडळात समावेश व जपानला भेट. टोकियो येथे एफ. ए. ओ. च्या बैठकींना हजर होते. ह्याच वेळी चिनी सरकारच्या शेतकी संघटनेच्या निमंत्रणावरून चीनला भेट.
- १९५९ - पुसद येथे 'फुलसिंग नाईक कॉलेज'ची स्थापना.
- १९६० - महाराष्ट्र राज्य स्थापनेनंतर राज्याच्या पहिल्या मंत्रिमंडळात महसूल मंत्री म्हणून नियुक्ती. ह्या वेळी शासनाने महत्वपूर्ण असा कमाल जमीन धारणा क्षेत्रासंबंधीचा कायदा पास केला.
- १९६०-६१ - आपल्या मंत्रीपदाच्या कारकीर्दीत त्यांनी लोकशाही विकेंद्रीकरण समितीचे अध्यक्ष म्हणूनही काम केले व महाराष्ट्रात पंचायती राज्याची मुहूर्तमेढ रोवली.

- १९६२ - सार्वत्रिक निवडणुकीत महाराष्ट्र विधानसभेवर यवतमाळ जिल्ह्यातील पुसद मतदार संघातून निवड होऊन पुन्हा महसूल मंत्री म्हणून नियुक्ती. आणि मुख्य मंत्री होईपर्यंत हेच खाते त्यांच्याकडे चालू राहिले.
- १९६३, डिसेंबर ५ मुख्य मंत्री श्री. दादासाहेब कन्नमवार ह्यांच्या निघनानंतर श्री. वसंतरावजी महाराष्ट्राचे मुख्य मंत्री झाले. तेव्हापासून आजतागायत ते त्या पदावर आहेत.
- १९६४, जुलै - युगोस्लाव्हियाचा दौरा आटोपून परत.
- १९६५, सप्टेंबर - भारत-पाक संघर्ष सुरू होताच ९ ते ११ सप्टेंबरला मुंबईत स्फूर्तिदायक व मार्गदर्शक भाषणे दिली. त्यामुळे महाराष्ट्रात चैतन्यदायी वातावरण निर्माण झाले. नंतर काही महिने युद्ध प्रयत्नांसाठी महाराष्ट्राचा दौरा केला.
- १९६५-६६ - शेती उत्पादनाच्या नव्या कार्यक्रमाचा प्रचार करण्यासाठी महाराष्ट्रातील २५ जिल्ह्यांचा ज्ञानावाती दौरा केला.
- १९६६, जुलै १ - मित्रांच्या व चहात्यांच्या आग्रहावरून ५३ व्या वाढदिवसाची भेट (रु. १,५३,१११ ची थैली) मुंबईतील एका घरगुती समारंभात संरक्षणमंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण यांचे हस्ते स्वीकारली व त्यात आपली रक्कम रु. ११,१५३ भर घालून या रकमेचा यवतमाळ जिल्ह्यातील समाजकार्यासाठी ट्रस्ट करण्याचे जाहीर केले.



REFBK-0015282



जिव्हाळ्याचे मार्गदर्शन

श्रेष्ठांचे